अंक 3 : अगस्त, 2021
चौ-मासिक, बेंगलूरु

Azim Premji University

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी

लर्निंग कर्व

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का प्रकाशन



शाला और समाज

सम्पादकीय कार्यालय
सम्पादक, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
Phone : 080-6614 4900
Fax : 080-6614 4900
Email: publications@apu.edu.in
Website: www.azimpremjiuniversity.edu.in

प्रकाशन समन्वयक
शहनाज़ बेगम

हिन्दी अनुवाद
नलिनी रावल
सात्विका ओहरी

कॉपी एडिटर (हिन्दी)
कविता तिवारी, स्वाति भदौरिया
कंचन शर्मा, राजेश खर

हिन्दी अंक सम्पादन
राजेश उत्साही

आवरण चित्र सौजन्य
मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर बैतूल, मध्य प्रदेश
चित्र : राजकुमार विश्वकर्मा

डिजायन
Banyan Tree
98458 64765

हिन्दी अंक लेआउट एवं मुद्रक
आदर्श प्रा.लि. भोपाल
+91-755-2555442

'' अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का एक प्रकाशन है। इसका उद्देश्य शिक्षकों, शिक्षक-अध्यापकों, स्कूल प्रमुख, शिक्षा अधिकारियों, अभिभावकों और गैर-सरकारी संगठनों तक ऐसे प्रासंगिक और विषयगत मुद्दों में पहुँच बनाना है जो उनके रोजमर्रा के काम से सम्बन्धित हैं। लर्निंग कर्व शैक्षिक जगत के विभिन्न दृष्टिकोणों, अभिव्यक्तियों, परिप्रेक्ष्यों, नई जानकारियों और नवाचार की कहानियाँ प्रस्तुत करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इसका मूल विचार 'शैक्षणिक' और 'अभ्यासकर्ता' के मध्य सन्तुलन हेतु उन्मुख पत्रिका के रूप में स्थापित होना है।''

सम्पादक की ओर से



जैसा कि हम जानते हैं दुनिया पिछले दिनों बदल गई है। 2020 का साल मानव सभ्यता के पिछले सौ वर्षों में जन-स्वास्थ्य की सबसे बड़ी चुनौती लेकर आया है। तो ज़मीनी स्तर पर हो रहे बदलावों और आगे बढ़ने के रास्तों को लर्निंग कर्व में दर्ज किए बिना हम कैसे जाने देते। महामारी ने इस बात को पहले से अधिक स्पष्ट कर दिया कि स्कूल समाज से अलग-थलग नहीं है और न ही इसे कभी इस तरह देखा जा सकता है। यह दोनों इतने क़रीब से जुड़े हैं कि सरकारी स्कूलों (जहाँ सबसे ग़रीब तबक़े के बच्चे पढ़ते हैं) में हमारे शिक्षकों की सबसे बड़ी चिन्ता विद्यार्थियों का शैक्षणिक वर्ष ज़ाया हो जाने की नहीं थी। उनकी चिन्ता थी विद्यार्थियों और उनके परिवार की सुरक्षा की, उन वित्तीय कठिनाइयों की जिनका सामना उन्हें करना पड़ रहा होगा और यह कि उनके पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन है या नहीं। यह आख़िरी बात थोड़ी भावुक लग सकती है, पर वास्तव में उनकी परिस्थितियाँ ऐसी हैं।

हमने शिक्षकों के अभिभावकों और समुदाय तक पहुँचने और उन्हें बच्चों को स्कूल भेजने के लिए मजबूर करने की कहानियाँ सुनी हैं। इस अंक में आप पढ़ेंगे कि कैसे अभिभावकों ने शिक्षकों को अपना काम जारी रखने के लिए ज़बर्दस्त ढंग से सहयोग किया। जब दूरस्थ शिक्षा के अन्य सभी तरीक़े विफल हो गए तब अभिभावकों ने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया कि उनके बच्चों की शिक्षा जारी रहनी चाहिए। आप यह भी पढ़ेंगे कि कैसे समुदाय ने शिक्षकों को पेड़ के नीचे या मन्दिर जैसी जगहों में छोटे समूहों में कक्षा आयोजित करने में पूरी सहायता की, कैसे समुदाय के शिक्षित युवाओं ने कुछ शिक्षण-कार्यों की ज़िम्मेदारी ली; कैसे अभिभावकों ने होमवर्क का निरीक्षण किया और सुरक्षा नियमों के पालन को सुनिश्चित किया। स्कूल और समुदाय की दूरी, जिस पर हम हमेशा से दुख जताते आए हैं, कई मायनों में इस दौरान बहुत हद तक कम हो गई है।

हमने कई तरह के विचारों का संकलन किया है। जहाँ कुछ लेख बच्चों के जीवन और शिक्षा पर इस महामारी के दीर्घकालिक प्रभावों के बारे में बताते हैं— जैसे कि काम करने व अपने परिवार के वित्तीय बोझ को साझा करने के लिए बच्चों का स्कूल छोड़ना, वित्तीय कठिनाइयों के कारण निजी से सरकारी स्कूलों में जाना, लड़कियों पर घर के कामकाज का बोझ होना और उनका वापिस स्कूल में न लौटना, कम उम्र में विवाह। वहीं कुछ लेख यह भी बताते हैं कि किन तरीक़ों से हम बच्चों की शारीरिक, भावनात्मक और पोषण की ज़रूरतों को पूरा कर सकते हैं।

यह अंक बताता है कि पुराने 'नार्मल' के इस मंथन ने शायद अब तक हमें एक अकल्पनीय वास्तविकता के शिखर पर रखा था। अवसर है यह जाँचने का कि शिक्षा के क्षेत्र में किस तरह आगे बढ़ा जाए कि हमारी एक नज़र उभरती हुई चुनौतियों और उनका सामना करने की रणनीतियों पर हो और दूसरी यह सुनिश्चित करने पर कि सम्भवत: अब हम न्याय व समानता की सतत चुनौतियों को हमेशा के लिए समाप्त कर दें।

'आवाज़ें' नामक एक विशेष खण्ड शिक्षकों, विद्यार्थियों, स्वयंसेवकों और ग़ैर-सरकारी संगठनों के सदस्यों के अनुभवों को प्रस्तुत करता है। शिक्षक और ग़ैर-सरकारी संगठन बता रहे हैं कि शुरुआत में उन्होंने डिजिटल माध्यम का इस्तेमाल कैसे किया। उन्होंने आगे चलकर यह महसूस किया कि इस माध्यम में सीखने की सबसे महत्त्वपूर्ण संरचना मानवीय सम्पर्क का किस क़दर अभाव है। इस खण्ड में आप उन दिलचस्प प्रयोगों पर भी ध्यान दीजिएगा जो कई लोगों ने ऑनलाइन संसाधनों के साथ

अपने पाठों में इज़ाफा करने के लिए आज़माए। कुछ बच्चों ने भी इस दौरान उनके द्वारा की गई गतिविधियों और ऑनलाइन सीखने पर अपने विचार साझा किए हैं।

आँकड़े चिन्ताजनक हैं। लेकिन इन भविष्यवाणियों, अनिष्टसूचक हालाँकि ज़रूरी पूर्वानुमानों, तथ्य और डेटा से परे मानवीय जज़्बे की कहानियाँ भी हैं, जो बताती हैं कि कैसे यह जज़्बा इन सबसे ऊपर उठा और चमका। विभिन्न तरीक़ों से शिक्षकों, कार्यकर्ताओं और शिक्षाकर्मियों ने स्कूल और समाज के बीच सम्बन्धों को फिर से परिभाषित किया।

आशंकाओं को ख़ारिज किए बिना, आइए हम इन बातों को थोड़ी देर के लिए एक तरफ़ रख दें और इस बात से ख़ुश हों कि स्कूल और समाज शायद पहले से कहीं ज़्यादा क़रीब आ गए हैं। यह बात उन शहरी, मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए भी सच है, जहाँ माता-पिता और बुज़ुर्ग किसी-न-किसी तरह से बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा से जुड़े थे। अब हमारे लिए यह बहुत ज़रूरी है कि हम इस साझेदारी (जो न सिर्फ व्यावहारिक है, बल्कि अनिवार्य भी है) को ज़ाया नहीं होने दें।

पढ़ने का आनन्द लीजिए! आपके सुझावों का हमेशा की तरह स्वागत है।

शेफाली त्रिपाठी मेहता
सह-सम्पादक
shefali.mehta@azimpremjifoundation.org

अनुवाद : सात्विका ओहरी

इस अंक में

आवाज़ें

इस अंक में

स्कूलों को फिर से खोलने की तैयारी | इसके लिए क्या करना होगा

विमला रामचन्द्रन

भारत में कोविड-19 के कारण लॉकडाउन को शुरू हुए आठ महीने से अधिक हो चुके हैं। बच्चों के जीवन पर वैश्विक महामारी और लॉकडाउन के प्रभाव के बारे में रिपोर्टें सामने आई हैं। जून और जुलाई 2020 में ज़मीनी स्तर की स्थिति के साथ-साथ बच्चों पर इसके प्रभाव पर कई रिपोर्टें प्रकाशित की गईं। जैसे कि शिक्षा पर घरेलू सामाजिक उपभोग के प्रमुख संकेतकों पर राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ) का 75 वाँ दौर (एनएसएसओ, जीओआई, नवम्बर 2019, जुलाई 2020 में प्रकाशित) [i], निजी स्कूलों पर सेंट्रल स्क्वायर फ़ाउण्डेशन की रिपोर्ट (सीएसएफ, नई दिल्ली, जुलाई 2020) [ii]: सेव द चिल्ड्रन (इंडिया) की वैश्विक महामारी के बाद की स्थिति पर रिपोर्ट (एससी इंडिया, जून 2020), यंग वॉयसेस - विवाह की आयु की जाँच करने वाले टास्क फोर्स की राष्ट्रीय रिपोर्ट (सीडब्ल्यूसी, बेंगलूरु, जुलाई 2020) [iii] और ग़रीबों, विशेषकर शिक्षकों और बच्चों पर लॉकडाउन के प्रभाव पर अख़बार की कई रिपोर्टें और लेख। ये सभी एक ऐसी स्थिति की ओर ध्यान दिलाते हैं जो न केवल गम्भीर है, बल्कि जिस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है।

कुछ तथ्य

माध्यमिक डेटा के विश्लेषण से पता चलता है कि कुल विद्यार्थियों का 50 प्रतिशत निजी रूप से प्रबन्धित स्कूलों (यूडीआईएसई या यूडाइस 2019, सीएसएफ 2020 में उल्लिखित) में नामांकित हैं। आर्थिक संकट, बेरोज़गारी, रिवर्स माइग्रेशन के बढ़ते प्रमाणों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि निजी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के माता-पिता को स्कूल की फीस देने में मुश्किल हो सकती है। इससे हो सकता है कि उनके बच्चों के सामने ड्रॉप-आउट होने का ख़तरा पैदा हो या फिर वे उन्हें सरकारी स्कूलों में स्थानान्तरित करने की कोशिश कर सकते हैं। पता नहीं कि राज्य सरकारें नामांकन में इस प्रकार की वृद्धि के लिए तैयार हैं या नहीं। *सेव द चिल्ड्रन (इंडिया)* द्वारा 7,235 परिवारों के हालिया रैपिड सर्वेक्षण में पाया गया कि 62 प्रतिशत परिवारों ने अपने बच्चों को स्कूल से निकाला, विशेषकर निजी स्कूलों से। 'मूल्यांकन में पाया गया कि सर्वेक्षण किए गए परिवारों में से तीन बटा पाँच (62%) परिवारों के बच्चों की शिक्षा में रुकावट आई, जिनमें उत्तर भारत में सबसे अधिक संख्या यानी 64 प्रतिशत और दक्षिण भारत में सबसे कम यानी 48 प्रतिशत दर्ज की गई।' [iv]

इस जानकारी के प्रभाव काफ़ी गम्भीर हैं जैसे कि जिन बच्चों को निजी स्कूलों से निकाल लिया गया है, वे या तो सरकारी स्कूलों में दाखिला लेने की कोशिश करेंगे या फिर शायद स्कूल जाना बन्द कर दें। विवाह की आयु पर महिला एवं बाल विकास विभाग (डीडब्ल्यूसीडी), भारत सरकार द्वारा कमीशन की गई टास्क फोर्स की रिपोर्ट में बताया गया है कि माध्यमिक विद्यालयों की किशोरियों को इस बात का डर है कि उनका स्कूल जाना छुड़वा दिया जाएगा। या तो उनकी शादी कर दी जाएगी या परिवार के भरण-पोषण के लिए उनसे मज़दूरी करवाई जाएगी। कई लड़कों पर भी यह बात लागू होगी, जिनसे यह अपेक्षा की जाएगी कि वे पारिवारिक आय में वृद्धि के लिए काम करें। दुर्भाग्य से, स्कूल में उन्हें मिलने वाली शिक्षा की गुणवत्ता और सार्थक प्रशिक्षण के अवसरों की कमी की स्थिति को देखते हुए, ये युवा अकुशल श्रमिकों का कार्य करने पर बाध्य हैं।

एक सम्भावित रणनीति के रूप में ऑनलाइन शिक्षा पर इतना अधिक ज़ोर दिया जा रहा है कि प्रशासक व राजनीतिक नेता इस तथ्य से मुँह मोड़ रहे हैं कि ऑनलाइन शिक्षा केवल एक असम्भव सपना है। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि *यह शिक्षण का निष्क्रिय तरीक़ा है,* ख़ासकर तब जब इसका प्रयोग एकतरफा रूप में किया जाता है जिसमें अन्तःक्रिया की बहुत कम गुंजाइश होती है। *व्हाट्सएप* के माध्यम से पाठ भेजने वाली बात तो क्रूरतम मज़ाक है! सीएसएफ की रिपोर्ट इस बात की पुष्टि करती है कि 'सर्वेक्षण में शामिल 66 प्रतिशत से अधिक निजी स्कूलों ने को शिक्षा देने के तरीक़े के रूप में अपनाया है...'(पृ.19, सीएसएफ 2020)। '2017-18 के राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण में बताया गया है कि केवल 23.8 प्रतिशत भारतीय परिवारों को इंटरनेट उपलब्ध था। ग्रामीण परिवारों में (जनसंख्या का 66%), केवल 14.9 प्रतिशत और शहरी परिवारों में केवल 42 प्रतिशत परिवारों को इंटरनेट उपलब्ध था। और पुरुष इसके प्राथमिक उपयोगकर्ता हैं : 36 प्रतिशत पुरुषों की तुलना में 16 प्रतिशत महिलाओं की पहुँच मोबाइल इंटरनेट तक थी। छोटे बच्चों की पहुँच तो और भी कम है : हाल ही में आई एक समाचार रिपोर्ट में कहा गया कि केवल 12.5 प्रतिशत विद्यार्थियों के पास ही स्मार्टफ़ोन का उपयोग करने की सुविधा थी। इसके अलावा, अधिकांश

शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षण सम्बन्धित आवश्यक बातों की जानकारी नहीं है...'(उर्वशी साहनी, 2020)।

साथ ही यह तथ्य भी महत्त्वपूर्ण है कि अधिकांश अभिभावकों को डिजिटल शिक्षा और वन-टु-वन इंटरैक्टिव शैक्षिक प्रक्रियाओं (निजी ट्यूशन सहित) में अपने बच्चों की मदद करने में मुश्किल पेश आ सकती है। सीएसएफ (2020)

सर्वेक्षण में पाया गया कि केवल 33 प्रतिशत माता-पिता ने कहा कि वे अपने बच्चों की डिजिटल शिक्षा में मदद कर सकते हैं।

विचारणीय बिन्दु

- ग़रीब परिवारों के बच्चों पर वैश्विक महामारी और उससे उपजे संकट के क्या प्रभाव हैं?
- क्या हम एक समाज के रूप में, सरकार के रूप में और शिक्षकों के रूप में सही सवाल पूछ रहे हैं?
- क्या हम ज़मीनी स्तर पर हक़ीक़त को देखकर उसके अनुसार निर्णय ले रहे हैं?
- या हम अपने बच्चों की ज़रूरतों के बारे में ईमानदारी या गम्भीरता से सोचने की बजाय सिर्फ समाधान गिना रहे हैं?

कोविड-19 के कारण हुए लॉकडाउन ने न केवल ग़रीबी और शैक्षिक असमानता से सम्बन्धित मुद्दों को और जटिल बनाया है, बल्कि इसने बड़ी संख्या में ग़रीबों और निम्न मध्य वर्ग को एक अनिश्चितता की स्थिति में धकेल दिया है। निजी (कम-लागत वाले) स्कूल जो फीस पर निर्भर हैं, उनके बन्द होने का ख़तरा है। अनुबन्धित शिक्षकों और कम लागत वाले निजी स्कूलों में काम करने वालों को वेतन नहीं दिया गया है। ऑनलाइन शिक्षा ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के अधिकांश बच्चों की पहुँच से बाहर है।

परेशानी वाली एक बात यह भी है कि इस पर बहुत कम चर्चा या गम्भीर राष्ट्रीय बहस हो रही है कि शिक्षा और सीखने-सिखाने के मुद्दे को सम्बोधित करने के लिए क्या किया जा सकता है। ऑनलाइन शिक्षा की सुविधा उन्हें मिल रही है जो पहले से ही बेहतर हालत में हैं और ग़रीबों को उनके हाल पर छोड़ दिया गया है। आज जिस ऑनलाइन सम्प्रेषण को शिक्षा की संज्ञा दी जा रही है, उसकी निष्क्रियता (और यहाँ तक कि हानिकारक प्रभावों) के बारे में इतने सारे शिक्षकों और शिक्षाविदों की चेतावनी के बावजूद, सरकारें और कई कॉर्पोरेट समर्थक कोविड-19 लॉकडाउन के समय में एकमात्र समाधान के रूप में ऑनलाइन कक्षाओं के बारे में ही बात कर रहे हैं।

वैकल्पिक दृष्टिकोण

एक और ऐसा विचार या दृष्टिकोण है जिस पर सोचना आवश्यक है। 2019 की शुरुआत में मुझे कुछ ऐसे ग़ैर-सरकारी संगठनों के साथ बातचीत करने का अवसर मिला, जो मध्य प्रदेश, झारखण्ड और राजस्थान में *ट्रांसफॉर्मिंग रूरल इंडिया इनिशिएटिव* का हिस्सा हैं। मुझे कर्नाटक और ओडिशा के सरकारी स्कूलों के साथ काम करने वाले ग़ैर-सरकारी संगठनों के साथ बातचीत करने का अवसर भी मिला है। सरकारी स्कूलों में युवतियों, लड़कियों और शिक्षकों के साथ काम करने वाले ग़ैर-सरकारी संगठनों ने, चाहे वे ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत हों या शहरी क्षेत्रों में, कई गम्भीर मुद्दों पर प्रकाश डाला है। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

1. शिक्षक रिक्तियाँ, विशेष रूप से गणित, विज्ञान और अँग्रेज़ी विषयों में।
2. स्कूल के शिक्षकों की स्थिति, विशेष रूप से अनुबन्धित शिक्षकों की। उदाहरण के लिए, झारखण्ड में 50 प्रतिशत से अधिक शिक्षक अनुबन्धित हैं। [v]
3. अधिगम के असन्तोषजनक परिणाम और शिक्षकों ने इसे सुधारने में अपनी विवशता व्यक्त की।
4. अप्रभावी शैक्षिक प्रशासन जो स्कूलों को अपने हाल पर छोड़ देता है कि उनके पास जो कुछ है उसी से काम चलाएँ (शिक्षक की कमी सहित)।
5. पाठ्यक्रम पूरा करने का दबाव, चाहे यथार्थ स्थिति कुछ भी हो।

जहाँ भी सरकारी स्कूलों के साथ काम करने वाले ग़ैर-सरकारी संगठन और अन्य समूह समुदाय को सक्रिय करने में सक्षम हुए, वहाँ स्कूल के माहौल में बहुत सुधार हुआ है।

यह वैश्विक महामारी और लॉकडाउन से पहले का फीडबैक था। तब की तुलना में अब यथार्थ स्थिति बदल गई है और विद्यार्थियों, शिक्षकों और परिवारों को आजीविका, प्रवास और अलगाव से सम्बन्धित गम्भीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

हम कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान क्या कर सकते हैं? क्या ऐसी रणनीतियाँ हैं जिन्हें हम अपना सकें और जो हमें समानुभूति और दृढ़ संकल्प के साथ जवाब देने में मदद कर सकें? मैंने ग़ैर-सरकारी संगठनों में और सरकारी स्कूलों के साथ ज़िला-आधारित पहल में ज़मीनी स्तर पर काम करने वाले कई लोगों से बात की। ये कुछ ऐसे ठोस सुझाव हैं जो बातचीत के दौरान सामने आए।

कुछ सुझाव

स्थिति का आकलन

शाला प्रमुखों, शिक्षकों, प्रशासकों, समुदाय के प्रमुखों और स्थानीय ग़ैर-सरकारी संगठनों के सुगमकर्ताओं को साथ मिलकर अपने क्षेत्रों/समुदायों पर होने वाले वैश्विक महामारी के विशिष्ट प्रभावों पर चर्चा करनी चाहिए। प्रत्येक पंचायत और वार्ड में निम्नलिखित प्रश्न पूछे जाने चाहिए : जब सरकारी स्कूलों में फिर से पढ़ाई शुरू हो जाएगी तो क्या वहाँ पर बच्चों की संख्या बहुत बढ़ जाएगी? क्या इसमें रिवर्स माइग्रेंट्स (वापिस लौटे प्रवासियों के बच्चे) शामिल होंगे? या इसमें वे बच्चे होंगे जो निजी स्कूलों में अपनी पढ़ाई जारी रखने में सक्षम नहीं हैं? उन बच्चों की संख्या का मोटा-मोटा अनुमान क्या है जिन्हें या तो पूरी तरह से ड्रॉप-आउट हो जाने ख़तरा है या फिर वे सरकारी स्कूलों में दाखिला लेने के बारे में विचार कर रहे हैं?

बच्चों के सम्बन्ध में और नामांकन में बढ़ोतरी की स्थिति का आकलन करने के लिए सीआरसी, शाला प्रमुखों, शिक्षकों, सक्रिय एसएमसी सदस्यों और पंचायत/शहरी निकायों की बैठकें की जा सकती हैं। हालाँकि कोविड-19 के दौरान घर-घर सर्वेक्षण के लिए जाना मुश्किल हो सकता है, पर इस समूह में यथार्थ स्थिति का मूल्यांकन करने की क्षमता होगी। द इंडिया एजुकेशन कलेक्टिव और प्रजायत्न दो ऐसे ग़ैर-सरकारी संगठन हैं जो कई राज्यों के सरकारी स्कूलों के साथ काम करते हैं। वे इस रणनीति का इस्तेमाल न केवल ज़मीनी स्तर की हक़ीक़तों के बारे में बेहतर जानकारी प्राप्त करने के लिए कर रहे हैं, बल्कि मुख्य हितधारकों को जागरूक करने और उन्हें शामिल करने के साधन के रूप में भी कर रहे हैं।

हजारों गाँवों और वार्डों में संक्रमण की घटनाएँ कम हैं और ऐसे क्षेत्रों में, अनुशंसित शारीरिक दूरी/मास्क पहनने/हाथ धोने के मानदण्डों का प्रयोग करके, सर्वेक्षण भी किए जा सकते हैं। यह, अपने आप में, सरकार को समस्या के परिमाण/विस्तार के बारे में एक यथार्थवादी अनुमान देगा। यह प्रक्रिया इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षक, शाला प्रमुख और प्रशासक शायद ही कभी रणनीतियों पर चर्चा करने के लिए एक साथ आ पाते हों। उन सभी को एक साथ लाना अत्यन्त महत्त्व की बात होगी।

प्राथमिकता देना

जो बच्चे ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में रहते हैं और जिन्हें 2021 में दसवीं और बारहवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षाएँ देनी है, वे कोविड-19 लॉकडाउन से बहुत ज़्यादा प्रभावित हुए हैं और उन्हें अपने सामने उपस्थित तात्कालिक संकट का सामना करना है। ये बच्चे इस बात से बेहद चिन्तित हैं कि वे परीक्षाएँ कैसे देंगे (अग्रगामी संस्था की विद्या दास, ईमेल पत्राचार, 25 जुलाई 2020)। जहाँ आवश्यक हो वहाँ ये बोर्ड परीक्षाएँ, प्रमाणन के लिए आवश्यक प्रमुख अधिगम-प्रतिफलों पर ध्यान केन्द्रित कर सकती हैं। इसे ओपन-बुक परीक्षाओं के माध्यम से भी किया जा सकता है जिसमें स्मरण करने की बजाय बोध तथा बुनियादी अवधारणाओं की समझ पर ध्यान दिया जाता है।

इसके साथ ही, माता-पिता और विद्यार्थियों को सामाजिक-मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक सहायता और परामर्श देने की आवश्यकता है क्योंकि कुछ माता-पिता अपने बच्चों की मानसिक और/या भावनात्मक दशा और शैक्षिक तैयारी को पर्याप्त रूप से समझे बिना उन पर दबाव डाल सकते हैं।

स्कूल के भीतर

स्कूल एवं समुदाय के मध्य नज़दीकी सम्पर्क व भागीदारी के द्वारा सीखने के नए आयाम खोजे जा सकते हैं तथा स्कूलों को बच्चों और उनके परिवारों के करीब लाया जा सकता है। वैश्विक महामारी ने कई कार्यकर्ताओं, शिक्षाकर्मियों और शिक्षकों को स्कूल के स्वामित्व को फिर से परिभाषित करने का अवसर प्रदान किया है। माता-पिता ज़िम्मेदारी लेने के लिए आगे आए हैं, बड़े बच्चे छोटे बच्चों की शिक्षा में सहायता कर रहे हैं, कुछ शिक्षक और शाला प्रमुख वर्कशीटों और अध्ययन की अन्य सामग्रियों को वितरित करने के लिए माता-पिता की सहायता ले रहे हैं।

स्कूल को अब केवल सरकार के संरक्षण और सम्पत्ति के रूप में नहीं देखा जा रहा है - माता-पिता, स्थानीय समुदाय और युवा वर्ग शिक्षण-अधिगम की कुछ प्रक्रियाओं को बनाए रखने के लिए आगे आए हैं। सामुदायिक पुस्तकालय एवं शिक्षण केन्द्र शिक्षकों और शाला प्रमुखों के साथ काम कर रहे हैं। यह आन्ध्र प्रदेश और तेलंगाना के एमवी फ़ाउण्डेशन की एक महत्त्वपूर्ण रणनीति रही है। स्पष्ट है कि वैश्विक महामारी के बाद का वातावरण स्कूलों के दरवाज़ों को अधिक खुला और आकर्षक बना सकता है।

मनो-सामाजिक तैयारी

वैश्विक महामारी, जबरन पलायन और आजीविका को खोने के कारण बच्चों तथा बड़ों को बहुत आघात पहुँचा है। शिक्षकों और शाला प्रमुखों को चाहिए कि वे इस आघात, चिन्ता और हताशा के मुद्दों को एक समानुभूतिपूर्ण तरीक़े से सम्बोधित करने के लिए तैयार रहें। इसका मतलब यह हुआ कि राज्य सरकारों को ऐसी कार्यशालाओं (15-20 स्कूलों के समूहों में या जहाँ सम्भव हो वहाँ ऑनलाइन चर्चा के द्वारा) का आयोजन करना चाहिए जिनमें शिक्षकों और शाला प्रमुखों को मानसिक रूप तथा भौतिक रूप से अधिक बच्चों के स्वागत के लिए स्कूलों

को तैयार किया जा सके। ऑनलाइन परामर्श और वेबिनार उन क्षेत्रों में भी मदद कर सकते हैं जहाँ अच्छी कनेक्टिविटी है और जहाँ शाला प्रमुख तथा शिक्षक टेक्नॉलॉजी को लेकर सहज हैं। जहाँ ग़ैर-सरकारी संगठनों या सीएसआर कार्यक्रमों का ऐसा नेटवर्क मौजूद है, जो सरकारी स्कूलों के साथ मिलकर काम करता है, वहाँ पर सदस्यगण बच्चों और माता-पिता, अपने क्षेत्र (गाँव या वार्ड) के नए प्रवासियों, शिक्षकों और शाला प्रमुख एवं शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले अन्य लोगों तक पहुँचने का कार्य शुरू कर सकते हैं।

वर्तमान समय की माँग यह भी है कि निजी स्कूलों तक पहुँचा जाए क्योंकि वे भी भारी संकट का सामना कर रहे हैं। कई स्कूल बन्द करने के बारे में भी सोच रहे होंगे। ऐसे स्कूलों से बच्चों की सूची प्राप्त करना और उनके नामांकन की व्यवस्था करना आवश्यक है। शाला प्रमुखों, शिक्षकों स्थानीय प्रशासकों, ग़ैर-सरकारी संगठनों तथा शैक्षिक समूहों में नए विचारों और क्षेत्र-विशिष्ट नवाचारों के लिए लचीलेपन एवं खुलेपन को प्रोत्साहित करने और उनका स्वागत करने की आवश्यकता है।

ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम से कुशलता के साथ निपटना

यह बात भली-भाँति विदित है और स्वीकार भी की जाती है कि टेक्नॉलॉजी फेस-टू-फेस-शिक्षण का कमज़ोर विकल्प है। इसका उपयोग सहायक शिक्षण के रूप में ही किया जाना चाहिए। नियमित शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं के विकल्प के रूप में टेक्नॉलॉजी का उपयोग करने का अर्थ साम्यता के लक्ष्यों के साथ-साथ निष्पादन की गुणवत्ता के साथ भी समझौता करना है।

इस पृष्ठभूमि को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि ऑनलाइन अधिगम ने अब तक जो कुछ भी हासिल किया है, उसका जायज़ा गम्भीर रूप से लिया जाए। महँगे प्राइवेट स्कूल इंटरएक्टिव टूल्स का उपयोग करने में सक्षम हैं, लेकिन अधिकांश कम सम्पन्न स्कूलों ने बच्चों के साथ एकतरफा, निष्क्रिय सम्प्रेषण का सहारा लिया है। यहाँ तक कि कुछ तथाकथित महँगे स्कूलों ने चाक-एंड-टॉक विधि को ही जारी रखा है – अर्थात बच्चों को बस व्याख्यान देना। यहाँ तक कि किंडरगार्टन और कक्षा पहली से तीसरी तक के छोटे बच्चों के साथ भी यही तरीक़ा अपनाया जा रहा है।

छोटे सर्वेक्षणों और अन्तःक्रियाओं के माध्यम से प्राप्त प्रारम्भिक प्रतिक्रिया से पता चलता है कि ऑनलाइन अधिगम अधिकांश ग़रीब और निम्न-मध्यम वर्ग के ग्रामीण या शहरी बच्चों तक नहीं पहुँचा है। यदि वास्तव में यही स्थिति है तो स्कूल और स्थानीय शैक्षिक ग़ैर-सरकारी संगठन और सीएसआर इकाइयाँ ‘वर्कबुक’ तैयार करके बच्चों के घरों में उन्हें वितरित कर सकती हैं। *इंडिया एजुकेशन कलेक्टिव* ने यह कोशिश की है, जिसके लिए उन्हें कुछ सकारात्मक अनुक्रिया मिली है। इसके पीछे यह विचार नहीं है कि पाठ्यक्रम को कवर किया जाए, बल्कि इसका उद्देश्य बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में संलग्न रखना है। वर्कबुक और कहानी की किताब का मिला-जुला रूप शायद एक आदर्श हो।

छोटे शैक्षिक सत्र और छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटा हुआ पाठ्यक्रम

यह एक वास्तविकता है कि इस शैक्षिक सत्र (2020-21) में भारी कटौती की गई है, इसलिए हमें उपलब्ध समय का उपयोग करने के लिए एक रचनात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। पाठ्यपुस्तकों में पाठों को बिना सोचे-समझे काटने की बजाय उन मूलभूत कौशलों पर ध्यान देना अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है जो प्रत्येक कक्षा/स्तर के लिए आवश्यक हैं। साथ ही यह भी ज़रूरी है कि बच्चों के साथ छोटे समूहों में काम किया जाए।

ज़मीनी स्तर पर काम करने वाले लोगों का सुझाव है कि निचली कक्षाओं में भाषा और गणित की बुनियादी क्षमताओं पर ध्यान केन्द्रित किया जा सकता है। उच्च कक्षाओं में विषय के मुख्य विचारों को प्रमुखता दी जा सकती है। जैसे कि भाषा में बोधात्मक पठन को विकसित करना और गणित में समालोचनात्मक व विश्लेषणात्मक सोच, समस्या को सुलझाने की क्षमता और अवधारणात्मक स्पष्टता का विकास करना। अन्य विषयों में इसी तरह के फोकस क्षेत्रों पर काम किया जा सकता है। (रुद्रेश, ईमेल पत्राचार, 26 जुलाई 2020)।

साथ ही वर्कशीट और सतत स्व-आकलन/शिक्षक के आकलन के माध्यम से स्कूल के समय के दौरान विद्यार्थी-अधिगम को बढ़ाना महत्त्वपूर्ण होगा। (राकेश तिवारी, ईमेल पत्राचार, 27 जुलाई 2020)।

भारत के पास त्वरित अधिगम (रामचन्द्रन, 2004, निरन्तर, 1997; बालिका शिक्षण शिविर/महिला शिक्षण केन्द्र के प्रलेखन) और बच्चों को औपचारिक स्कूली शिक्षा में वापस लाने के लिए अभिनव ब्रिजिंग या सेतु कार्यक्रम बनाने, दूसरा मौक़ा देने जैसे अनेक कार्यक्रमों सम्बन्धी अनुभव का खज़ाना है जिनका प्रयोग ग़ैर-सरकारी और सरकारी स्कूलों एवं केन्द्रों में किया जाता है। शायद अब समय आ गया है कि हम इस तरह की पहलों पर दोबारा ग़ौर करें और बच्चों को औपचारिक स्कूलों और अधिगम की ओर वापस लाने के लिए अच्छे सेतु कार्यक्रमों का निर्माण करें।

भूख, ग़रीबी और बेरोज़गारी में वृद्धि

बढ़ती हुई ग़रीबी और बेरोज़गारी के चलते, भूख और कुपोषण जैसे गम्भीर मुद्दे उभरकर सामने आए हैं, ख़ासकर कुछ क्षेत्रों में। इसके लिए भी एक सूक्ष्म-सन्दर्भ-विशिष्ट आकलन किया

जा सकता है। औपचारिक रूप से स्कूलों के खुलने के पहले मध्याह्न भोजन और स्कूल स्वास्थ्य पहलों की शुरुआत करने में उनकी मदद की जा सकती है। खुराक में पोषक तत्वों की वृद्धि, सुबह के नाश्ते की शुरुआत और पूरी तरह से स्वास्थ्य की जाँच करना ज़रूरी है, ख़ासकर जब बच्चे पहली बार वापस स्कूल आएँ। यह कार्य पैरा-मेडिकल कार्यकर्ताओं और जहाँ सम्भव हो वहाँ डॉक्टरों और पोषण विशेषज्ञों की मदद से दिलचस्प गतिविधियों के माध्यम से किया जा सकता है।

शिक्षकों के लिए समर्थन

अन्तिम किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षकों को समर्थन की आवश्यकता है। उन्हें अपनी क्षमताओं में हमारे विश्वास की आवश्यकता है। उन्हें वैश्विक महामारी और लॉकडाउन के बाद स्कूल जाने के लिए सम्मान की आवश्यकता है। उन्हें खुद को नए रूप में ढालना होगा और परामर्शदाता, शिक्षक, मार्गदर्शक, अभिभावक जैसी कई भूमिकाएँ निभानी होंगी।

हमें सरकारी स्कूलों में कई और शिक्षकों की आवश्यकता होगी, न केवल बढ़े हुए नामांकन से निपटने के लिए बल्कि उन विभिन्न भूमिकाओं को निभाने के लिए भी जिनकी अपेक्षा शिक्षकों से की जाएगी। त्वरित अधिगम को पचास या साठ के बड़े समूहों में नहीं किया जा सकता है। इस बात के प्रमाण हैं कि जब बच्चों के समूह छोटे होते हैं और वे सीखने के लगभग समान स्तर पर होते हैं, तब त्वरित अधिगम सफल होता है। इसलिए कई और शिक्षकों को भर्ती करने की आवश्यकता होगी। कई राज्य सरकारों ने लॉकडाउन के दौरान अनुबन्धित शिक्षकों को वेतन नहीं दिया है और निजी स्कूलों ने बड़ी संख्या में अपने शिक्षकों को नौकरी से बरख़ास्त कर दिया है (और वे इस इन्तज़ार में हैं कि यदि/जब कभी स्कूल खुलें, तब शायद उन्हें फिर से नौकरी पर रख लिया जाए)। पता चला है कि परिवार का भरण-पोषण करने के लिए कई शिक्षकों ने 'मनरेगा' कार्य या खुदरा माल बेचने का सहारा लिया है। यह एक ऐसा समय है जब शिक्षकों को आशापूर्ण दृष्टि और ऊर्जा के साथ स्कूल वापस आने के लिए समर्थन, प्रोत्साहन और प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

भविष्य के लिए सबक

कोविड-19 वैश्विक महामारी और उससे उपजे संकट ने भारत को एक नई शुरुआत करने व नए सिरे से सोचने का अवसर प्रदान किया है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) एक खुला और प्रगतिशील दस्तावेज़ है, जो नए दृष्टिकोणों को आज़माने के अवसर प्रदान कर सकता है। साथ ही यह प्रशासकों को इस बात के अवसर भी प्रदान करता है कि वे एक समग्र दृष्टिकोण अपनाएँ और विभिन्न तत्वों पर अलग-अलग रूप से काम न करें। स्कूल की शिक्षा प्रणाली को पुनर्व्यवस्थित और सक्रिय करने के लिए एक भली प्रकार से समन्वित रणनीति की ज़रूरत है।

शायद इन सभी अपेक्षाओं की पूर्ति न हो पाए, लेकिन यह पहचानना महत्त्वपूर्ण है कि शासन-प्रणाली में प्रतिबद्धता की कमी है। लगता है कि हम प्रवाह के साथ जा रहे हैं और कुछ महत्त्वपूर्ण नहीं सोच रहे हैं या नहीं कर रहे हैं। कई राज्यों में अत्यधिक प्रतिबद्ध और संवेदनशील प्रशासक हैं। यदि राष्ट्रीय रूप से आमूल परिवर्तन करना एक कठिन कार्य है, तो हम निश्चित रूप से राज्य सरकारों, ज़िला प्रशासन और स्कूल-संकुलों के साथ मिलकर काम कर सकते हैं ताकि आवश्यक बदलाव लाए जा सकें और हमारी स्कूल प्रणाली को जीवन्त बनाया जा सके।

संस्थाओं आदि के नामों के संक्षिप्त रूप का विवरण

सीआरसी : क्लस्टर रिसोर्स सेंटर (संकुल संसाधन केन्द्र)

सीएसएफ : सेंट्रल स्क्वायर फ़ाउण्डेशन

सीडब्ल्यूसी : कन्सर्न्ड फॉर वर्किंग चिल्ड्रन (एक ग़ैर-लाभकारी संगठन)

डीडब्ल्यूसीडी : डायरेक्ट्रेट ऑफ विमेन एंड चाइल्ड डेवलपमेंट (महिला एवं बाल विकास निदेशालय)

एनएसएसओ : नेशनल सैंपल सर्वे ऑफिस (राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय)

एसएमसी : स्कूल मैनेजमेंट कमेटी (विद्यालय प्रबन्धन समिति)

यूडीआईएसई या यूडाइस: यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इन्फर्मेशन सिस्टम फ़ॉर एजुकेशन
(एकीकृत ज़िला शिक्षा सूचना प्रणाली)

i Government of India, MOSPI. November 2019. Key indicators of household consumption on education in India – Report no. 75/25.2 – based on NSSO 75th Round done between June 2017-June 2018. New Delhi

ii Central Square Foundation. July 2020. State of the sector report – Private Schools in India. New Delhi.

iii Concerned for Working Children. July 2020. Young Voices – National Report of the taskforce (DWCD, GOI) Examining Age of Marriage. Bangalore.

iv Hindustan Times, 11 July 2020 - https://www.hindustantimes.com/education/children-in-62-surveyed-homes-discontinued-education-amid-pandemic-save-the-children-report/story-rAVQCjfpr7ff7ClP6zpaRP.html

v The situation was summed up succinctly during interactions with facilitators from NGOs: "The low status of contract teachers, the uncertainty that envelopes their lives, irregular pay and almost no professional/academic support – all together have rendered the school system dysfunctional in many parts of the country…" (Ramachandran, Vimala, February 2020)

vi Vidya Das from Agragamee Odisha, Javed from Transforming Rural India, Sreeja from India Education Collective, Rudresh, Rakesh Sihori, Rajiv Sharma and Hardy Dewan from APF/APU, Kameshwari Jandhyala from ERU, Ankur Sarin from IIM-A. I am indeed grateful for their concrete suggestions.



विमला रामचन्द्रन नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन, (एनआईईपीए), नई दिल्ली में टीचर मैनेजमेंट की प्रोफ़ेसर और नेशनल फेलो रही हैं। वर्तमान में वे ईआरयू कंसल्टेंट्स प्राइवेट लिमिटेड की निदेशिका हैं। उनसे **www.eruindia.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल

शिक्षा | हम इसे किस दिशा में ले जाना चाहते हैं?

हृदय कान्त दीवान

शिक्षा क्या है?

जब से 'सभी के लिए शिक्षा' और इसके उद्देश्य के बारे में चर्चा शुरू हुई, तभी से यह एक विवादास्पद मुद्दा रहा है, हालाँकि इसकी शुरुआत कुछ ही समय पहले हुई है। कोशिश यह थी कि शिक्षा को अर्थव्यवस्था और नौकरियों के लिए बच्चों को तैयार करने का एक ज़रिया बनाया जाए, लेकिन अब संवेदनशील और दूसरों की परवाह करने वाले मनुष्य (जो दूसरों का सम्मान करें और समानुभूति दिखा सकें) के विकास के साधन के रूप में भी शिक्षा पर ध्यान देने का प्रयास किया जा रहा है। इस ताने-बाने में हाथ से काम करने को सम्मान देने के अलावा सुरुचिपूर्ण क्षमताओं एवं सहयोग की भावना को बढ़ावा देने का रेशा भी जोड़ा जा रहा है। और यह केवल अनुभव या रचनात्मकता के लिए नहीं है, बल्कि इसलिए भी है कि बच्चे सामाजिक रूप से उपयोगी और उत्पादक गतिविधियों में भाग लेने में किसी तरह से सक्षम हों।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2005 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 ने इन सभी पहलुओं के साथ-साथ तर्कसंगत नैतिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भाईचारे की भावना और बहुविधता के सम्मान के विकास पर ज़ोर दिया है। सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए एक स्वीकृत प्रतिबद्धता भी रही है, जिसे एनईपी 2020 में दृढ़ता से दोहराया गया है।

इस सन्दर्भ में हमें यह देखना चाहिए कि शिक्षा किस तरह से दी जा रही है और कोविड-19 की स्थिति ने इसे कैसे बाधित किया है। इसके साथ ही हमें इस बारे में सुझाए गए विभिन्न तरीक़ों का विश्लेषण भी करना चाहिए कि भविष्य में यह कैसे विकसित होगी।

वैश्विक महामारी के दौरान लोगों ने एक-दूसरे के साथ जैसा व्यवहार किया और उससे हमने जो सबक़ सीखा, उस पर भी विचार करना होगा और यह देखना होगा कि शैक्षिक प्रक्रियाओं और संरचना के लिए इसका क्या अर्थ है।

वर्तमान स्थिति

यदि हम वर्तमान शिक्षा की प्रकृति की जाँच करें तो पाते हैं कि यह मुख्य रूप से शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत प्रगति और पदानुक्रम में उनके ऊपर उठने पर ध्यान देती है। विज्ञापनों में भी यही दिखाया जाता है कि बच्चे को सबसे अच्छा बनना है, दूसरों से आगे जाना है भले ही इसके लिए उसे दूसरों के कन्धों पर चढ़कर आगे क्यों न बढ़ना पड़े। यह प्रक्रिया ऐसी नहीं है कि जो अधिकांश सीखने वालों को दूसरों के कष्टों के प्रति संवेदनशील बनाए या सामूहिक विकास और सहयोग का साधन बने। इसका उद्देश्य यह नहीं है कि शिक्षार्थियों को अनुचित और अन्यायपूर्ण परिस्थितियों में अग्रसक्रिय हस्तक्षेप करने के योग्य बनाया जाए। इसे केवल व्यक्तिगत पलायन के साधन के रूप में देखा जाता है और इसलिए इसमें आकांक्षा यही रहती है कि बस, अर्थव्यवस्था में एक भूमिका मिल जाए।

> व्यक्तिगत रूप से पहले से अच्छा और बेहतर करने की इच्छा को अपने आप में दोषपूर्ण नहीं कहा जा सकता, लेकिन नैतिक तर्कसंगतता, भाईचारे की भावना और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव में यह बात सामाजिक ताने-बाने और सभी के लिए साम्यता और न्याय के आन्दोलन के लिए अहितकारी है।

पहले शिक्षा न केवल अस्तित्व में थी बल्कि यह उन विभिन्न बच्चों को दी जाती थी, जिनकी परिस्थितियाँ असमान हो सकती थीं। इस प्रकार यह 'अन्यायपूर्ण और बहिष्कारात्मक' रही है, और अभी भी है इसने यथास्थिति को अनिवार्य रूप से बनाए रखा है केवल कुछ घटकों को छोड़कर जो एक स्तर से दूसरे स्तर पर चले गए। आरक्षण नीति के बावजूद शिक्षा में भागीदारी की संख्या कम है।

कुछ लोगों का तर्क है कि शिक्षा कई अन्य चीज़ों के बीच असमानता को बढ़ावा और उस पर ज़ोर देती रही है।

नई तालीम

नई तालीम आन्दोलन ने तत्कालीन स्कूली शिक्षा की यह कहते हुए आलोचना की, कि यह बहुत ज़्यादा अकादमिक है और इसमें हृदय को छोड़ दिया गया है। इसका मतलब है कि इसमें दूसरों के लिए समानुभूति की बात नहीं है। इसके साथ-साथ इसमें हाथों को भी छोड़ दिया गया है यानी कि इसमें हाथों से काम करने को महत्त्व नहीं दिया गया है। नई तालीम के अनुसार स्कूली शिक्षा ने ऐसे साक्षर लोगों का निर्माण किया जो वास्तव में शिक्षित नहीं थे। इसके समर्थकों का तर्क था कि शिक्षा ने बच्चों को अपने समुदाय से अलग कर दिया और उन्हें प्रतिस्पर्धी, आत्मोन्मुख और दूसरों का शोषण करने

वाला बनाया। साथ ही इस शिक्षा ने न केवल उन लोगों के प्रति अनादर को बढ़ावा दिया जो अपने हाथों से काम करते हैं, बल्कि जो काम वे करते हैं उसे भी अनादर की दृष्टि से देखा।

सभी नीतियों और पाठ्यचर्या रूपरेखा के अधिकांश दस्तावेज़ों ने नई तालीम की प्रासंगिकता और शिक्षा में दिमाग़, दिल और हाथों के विकास को शामिल करने की आवश्यकता को स्वीकार किया। जो उन्होंने स्वीकार नहीं किया वह यह दावा था कि सीखने का माध्यम उपयोगी, उत्पादक कार्य होना चाहिए। यह महसूस किया गया कि स्कूल के कार्यक्रम में, किसी न किसी रूप में, हाथों के साथ काम करना शामिल किया जाना चाहिए। इन दस्तावेज़ों ने स्कूल के कार्यक्रम में कई अन्य क्षेत्रों के एकीकरण की आवश्यकता पर भी ज़ोर दिया ताकि यह एक ऐसी प्रक्रिया न बन जाए जो बहुत ही दिमाग़ी और अकादमिक हो।

इस सबके बावजूद, आज हमारे पास एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देती है और अकादमिक परीक्षा के प्रदर्शन पर अधिकतम ज़ोर देती है, फिर चाहे वह व्यापक कोचिंग के माध्यम से हो या किसी अन्य सुविधा के माध्यम से।

पक्षपातपूर्ण प्रणाली

यह प्रणाली अनेक प्रकार से साधन-सम्पन्न और अभिजात्य वर्ग की पक्षधर है, हालाँकि ऐसा नहीं है कि वंचितों के लिए शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की कोई बात नहीं की गई है। पिछले तीन से चार दशकों में, इस सवाल के इर्द-गिर्द नीतिगत दस्तावेज़ों में काफ़ी चर्चा हुई है और कई कार्यक्रम और मिशन लागू किए गए हैं। इन प्रयासों पर कुछ संसाधनों (हालाँकि वे अपर्याप्त हैं) को आवंटित और ख़र्च भी किया गया है। इन प्रयासों ने कुछ उत्साही और प्रतिबद्ध व्यक्तियों को अपनी ओर खींचा है, जिन्होंने इन प्रयासों का समर्थन करने की कोशिश की है। यह प्रयास कई प्रकार के रहे हैं और कई अलग-अलग दृष्टिकोणों व तरह-तरह के निवेशों के साथ हुए हैं, लेकिन इन सभी में एक बात समान है कि यह काफ़ी हद तक इनपुट-संचालित हैं।

पिछली सदी के अस्सी और नब्बे के दशक के अन्त में और इस सदी के प्रारम्भिक कुछ वर्षों में, कुछ ग़ैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) द्वारा किए गए प्रयासों से प्रेरित होकर सामग्रियों, विधियों और प्रशिक्षण पर बहुत काम हुआ है। बाद में कुछ और संस्थाओं को साथ में लेकर सरकारी शिक्षा विभागों ने इस कार्य को आगे बढ़ाया। इन सभी प्रयासों ने ग़ैर-सरकारी संगठनों के साथ कार्य करने वालों और कुछ शिक्षकों को उत्साहित और प्रेरित किया, लेकिन यह सब केवल तभी तक कारगर रहा जब तक व्यवस्था के बाहर के लोग इन परियोजनाओं के साथ जुड़े रहे। बड़े स्तर पर सरकारी व्यवस्था ने इसे स्वीकार नहीं किया और चूँकि समुदाय को स्पष्ट भूमिकाओं में शामिल करने के लिए कोई ख़ास प्रयास नहीं हुए थे, इसलिए इन कार्यक्रमों की ऊर्जा धीरे-धीरे कम होने लगी। इन प्रयासों के साथ गहन रूप से जुड़े शिक्षकों और व्यवस्था के अन्य कार्यकर्ताओं ने अपने कार्यों में इन विचारों के लिए जगह तलाशने और इन्हें आगे बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन अक्षम और असमर्थकारी वातावरण के चलते यह सम्भव नहीं हो पाया।

टेक्नोलॉजी का नकारात्मक प्रभाव

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका के मानवीय तत्व के महत्त्व को पहचानने की अक्षमता खेदजनक रही है। नीति और प्रणाली सुधार दस्तावेज़ों के समर्थन का दावा करने के बावजूद, शिक्षकों के पूरे समुदाय को उदासीन, अकादमिक रूप से कमज़ोर और ग़ैर-ज़िम्मेदार कहकर उनके महत्त्व को कम किया गया। शिक्षकों को परिणामों के लिए जवाबदेह तो माना गया लेकिन उन्हें पाठों और अधिगम (जो तेज़ी-से अधिकाधिक टेक्नोलॉजी-उन्मुख होते गए) के निर्माण और संचालन की स्वतंत्रता नहीं दी गई। स्कूल की पृष्ठभूमि, स्कूल में उपलब्ध शिक्षकों की संख्या और बच्चे नियमित रूप से स्कूल आ सकते हैं या नहीं, इन सब बातों पर ध्यान नहीं दिया गया। दस्तावेज़ीकरण प्रमुख हो गया और शिक्षण गौण; शिक्षक कक्षा में जो कुछ करना चाहते थे, उसके बारे में वे न तो सोच सकते थे और न ही योजना बना सकते थे।

परीक्षण एक अतिरिक्त बोझ बन गया क्योंकि शिक्षकों को अपनी शिक्षण-योजना बनाने की अनुमति नहीं थी, बल्कि उन्हें तैयार सामग्री दी गई थी। डेटा के आसान संकलन के लिए बहु-विकल्पीय प्रश्न और ऐसी ही अन्य प्रक्रियाओं के ज़रिए परीक्षण करने की प्रक्रिया से दिए गए कार्यों की प्रकृति परिसीमित हो जाती है और इससे रटकर सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। यशपाल समिति (1993), 2005 में एनसीएफ और हाल ही में, एनईपी 2020 ने सुस्पष्ट रूप से इस बात को दोहराया है कि रटकर सीखने की प्रवृत्ति को पूरी तरह से दूर कर देना चाहिए। परीक्षण की ऐसी प्रणाली, जिसमें शिक्षक केवल परिणामों के बारे में सोचता हो और जिसमें बच्चा अप्रासंगिक हो, एक ऐसी प्रक्रिया की तलाश में लग जाती है जो रटकर सीखने को बढ़ावा दे ताकि परीक्षाओं को 'क्रैक' करने में विद्यार्थियों की मदद हो सके।

कोविड का प्रभाव

हो सकता है कि यह सारी बातें इस लेख के मुख्य विषय से असम्बद्ध लगें, लेकिन इनके बीच एक बहुत महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध है : हम जिस स्थिति में हैं, उसे समझने के लिए पिछले अनुभवों की प्रासंगिकता। शिक्षकों की उपस्थिति के बावजूद

समाधान खोजने की मुहिम ने स्मार्ट क्लासेस, वॉयस या ऑडियो-वीडियो संकलित व्याख्यान, स्व-अधिगम सामग्री आदि के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया है। और अब यह नई परिस्थिति हमें एक ऐसी स्थिति में ले आई है जहाँ यह स्पष्ट नहीं है कि शिक्षक पारम्परिक अर्थों में शिक्षण कब शुरू कर पाएँगे।

कोविड-19 वैश्विक महामारी ने सभी को दुखी किया है और सबके लिए अनेक कठिनाइयाँ पैदा की हैं। कई लोगों के लिए तो इसने अकल्पनीय विपत्ति पैदा की है। लोगों को उनकी नौकरियों व घरों से निकाल दिया गया। कई बार उन्हें एक वक़्त का भोजन भी नहीं मिला। कई लोगों को लम्बी-लम्बी यात्रा करके उन्हीं स्थानों को लौटने को मजबूर किया गया जहाँ से वे नौकरी की तलाश में निकले थे। उनकी दुर्दशा और उसके प्रति शिक्षित व साधन-सम्पन्न लोगों की प्रतिक्रिया ने समानुभूति की कमी की ओर संकेत किया और ऐसे लोगों के ख़ुदग़र्जी और लोभी चरित्र को उजागर कर दिया।

यह नज़रिया इन लोगों के रवैये में न केवल उन ग़रीबों के प्रति दिखाई दिया, जो अपनी नौकरी और आश्रय के लिए इन पर निर्भर थे, बल्कि उन पड़ोसियों की ओर भी इनकी प्रवृत्ति ऐसी ही थी जो दुर्भाग्यवश इस बीमारी की चपेट में आ गए थे। फिर भले ही ऐसा इसलिए हुआ हो क्योंकि वे या तो बीमारों की मदद कर रहे थे या ऐसे लोगों की मदद कर रहे थे जिन्हें किसी न किसी रूप में मदद की ज़रूरत थी। जो समाज और व्यवस्था ऐसे लोगों की रक्षा कर रही थी, उन्हें सँभाल रही थी; उसी समाज का हिस्सा होने की भावना का पूर्ण और स्पष्ट अभाव देखने में आया।

दूरी

कुछ महीनों की इस छोटी-सी अवधि में, हमने देखा कि कैसे बार-बार दोहराया जाने वाला शब्द, 'सामाजिक दूरी' उन लोगों के लिए पहले से ही मौजूद तिरस्कार की भावना के साथ घुल-मिल गया; जो अभिजात्य वर्ग के आराम के लिए कार्य करते हैं, फिर चाहे वह घर के नौकर-नौकरानी हों या ऐसी ही पृष्ठभूमि से कोई और। समानुभूति और सामूहिक पहचान की भावना पूरी तरह से ग़ायब लग रही थी। सहयोग और सहकारिता की भावना भी नज़र नहीं आ रही थी, क्योंकि लोग अपनी सलामती के बारे में सोच रहे थे। वे अपने लिए ऐसा सुरक्षा कवच बनाने का प्रयास कर रहे थे जो उन्हें उनकी ज़रूरत की सारी चीज़ें प्रदान करे। लेकिन इन लोगों को उनकी कोई फ़िक्र नहीं थी जिन्होंने इसे सम्भव बनाने के लिए काम किया। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वे अपने बच्चों की पढ़ाई को लेकर चिन्तित थे और दूसरों पर अपनी बढ़त को तेज़ करने के प्रयास में थे। शिक्षा का विचार तो पहले से ही सिर्फ़ प्रवेश परीक्षाओं को 'क्रैक' करने तक सीमित हो गया है। इसलिए अन्य बच्चों के साथ बातचीत करने या मिलने-जुलने का कोई मतलब नहीं रह गया। धारणा यह थी कि बच्चे अपना समय बर्बाद कर रहे हैं और सीखने का अन्तर बढ़ता जा रहा है, इसलिए हमें नियमानुसार उनकी पढ़ाई शुरू कर देनी चाहिए।

यांत्रिक प्रतिक्रियाएँ

इस दबाव के चलते सभी निजी स्कूलों ने ऑनलाइन कक्षाएँ शुरू कर दीं। जहाँ एक ओर ऐसे अभिभावक थे जो अपने बच्चों को स्मार्टफ़ोन और असीमित इंटरनेट मुहैया करवा सकते थे, वहीं दूसरी ओर ऐसे लोग भी थे जो ऐसा करने में असमर्थ थे। जिनके पास नौकरी का कोई तात्कालिक ज़रिया नहीं था, उनके लिए फ़ोन के समय को लेकर प्रतिस्पर्धा करते सभी बच्चों के लिए एक स्मार्टफ़ोन और उसके साथ-साथ इंटरनेट भी उपलब्ध करवाना एक चुनौती थी।

ऑनलाइन कक्षाएँ लेने के लिए शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण सत्रों की तत्काल घोषणाएँ की गईं। फिर यह सारी बातें इस रूप में आगे बढ़ीं कि यह दीर्घकालिक समाधान है और स्वयं सीखने को बढ़ावा देने और मज़बूत करने की प्रणाली है। शिक्षा उद्योग ने ऐसे पाठों के बारे में सोचना शुरू कर दिया जिन्हें रिकॉर्ड करके विद्यार्थियों के साथ साझा किया जा सके; और शिक्षक पर पाठ तैयार करने और पढ़ाने का बोझ न डाला जाए क्योंकि वे ऐसा करने में सक्षम नहीं हैं। लॉकडाउन के बाद अब मानदण्ड यह है कि टेक्नोलॉजी का अधिक उपयोग किया जाए, मानव अन्त:क्रिया कम हो, पाठ्यक्रम में कटौती की जाए और जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, वैयक्तिक सीखना अधिक हो। समय और सामग्री में कटौती का तात्पर्य यह है कि हम अभी भी शिक्षार्थियों को अपने पाठ ख़ुद पढ़कर समझने में असमर्थ मानते हैं। शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वे विषय-सामग्री की व्याख्या करें और बच्चों को उत्तर बताएँ : और यह सब स्वयं सीखने के नाम पर !

नाज़ुक समय

तो, यह एक ऐसा समय है जब हमें इन प्रश्नों पर दोबारा विचार करना होगा : शिक्षा क्या है? शिक्षा किसलिए है? स्कूल क्यों होने चाहिए? ऑनलाइन कक्षाएँ क्या कर सकती हैं और उनसे कौन-सी चीज़ें छूट जाती हैं?

जिन थोड़े बहुत बच्चों से मैंने बात की है और जो कुछ अन्य लोगों ने बताया है, उससे पता चलता है कि जो बच्चे ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से पढ़ रहे हैं, वे सभी इससे नाख़ुश हैं। सबसे ज़्यादा उन्हें अपने साथियों की कमी खलती है, फिर चाहे वह कक्षा में हो या खेल के मैदान में। वे चाहते हैं कि स्कूल जल्दी से खुल जाएँ। उनकी बातों पर विचार करना तथा स्कूल की कमी महसूस करने के सम्भावित कारणों के बारे में सोचना बेहद ज़रूरी है। ज़्यादा-से-ज़्यादा टेक्नोलॉजी-

संचालित स्कूलों और अधिगम की ओर बढ़ने के लिए अचानक से जो ज़ोर दिया जा रहा है उस पर इसका महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि स्कूलों के अधिक टेक्नोलॉजी-संचालित बनने से शिक्षा के क्षेत्र में पहुँच की असमानता बढ़ती है। साथ ही यह दृढ़तापूर्वक इस बात का समर्थन करता है कि शिक्षा का यह रूप हर हाल में उस शिक्षा से निम्न है जिसमें स्कूलों एवं कक्षाओं में शिक्षकों और साथियों के साथ अन्त:क्रिया होती है।

शिक्षा की परिभाषा पर फिर से ग़ौर करना

शिक्षा की परिभाषा पर फिर से ग़ौर करने के अलावा, सबसे पहले यह सोचना आवश्यक है कि विकास किस तरह से संरचित है और दूसरी बात यह कि बच्चों और समुदाय के लिए शिक्षा को सार्थक बनाने में रही आई कमियों को हम कैसे व्यवस्थित करना चाहते हैं। इसके लिए हमें शैक्षिक प्रक्रिया में अधिक लोगों और बच्चों को शामिल करने के तरीक़ों पर विचार करना होगा और शिक्षा की भूमिका को, व्यक्तिगत प्रगति करने और लाभ को अधिकतम करने के साधन की बजाय, *सामूहिक विकास* और *जीविका* के एक भाग के रूप में बढ़ावा देना होगा।

अब समय आ गया है कि हम यह तय करें कि हमें क्या करना चाहिए। क्या हमें ऑनलाइन, दिमाग़ी और अन्यायपूर्ण शिक्षा प्रक्रियाओं की तरफ़ और अधिक बढ़ना चाहिए? या फिर हमें विपरीत दिशा की ओर बढ़ना चाहिए यानी एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की ओर, जिसमें अधिक निकटता और सम्पर्क है? यदि हम दूसरा रास्ता चुनते हैं, तो हमें छोटे-से-छोटे गाँवों में भी बच्चों को एक साथ लाने के तरीक़ों में निवेश करना होगा (मास्क, हाथ धोने और शारीरिक दूरी की सभी सावधानियों के साथ)। इन तरीक़ों के ज़रिए बच्चे एक-दूसरे के साथ हो सकते हैं और शिक्षक के साथ भी हो सकते हैं। यहाँ शिक्षक से तात्पर्य एक ऐसे वयस्क से है जो वार्तालाप और सीखने का सुगमीकरण कर सके और किताबों, पेंसिल और काग़ज़ के साथ काम कर सके।

सवाल यह है कि क्या हम अस्थायी 'मोहल्ला केन्द्रों' पर काम कर सकते हैं जो स्थानीय समुदायों के बच्चों को एक साथ लाते हैं ताकि वे एक-दूसरे के साथ मानवीयता के साथ पेश आना सीखें और तर्कसंगत नैतिकता तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ मानवीय विविधता और संवैधानिक मूल्यों को साझा करें? यह वे मूल्य हैं जिनका एनईपी 2020 ने भी बहुत दृढ़ता से समर्थन किया है। इसी कठिन प्रश्न का उत्तर भविष्य में शिक्षा की दिशा निर्धारित करेगा।



हृदय कान्त दीवान वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के 'अनुवाद पहल' कार्यक्रम के साथ जुड़े हैं। वे 'एकलव्य' के संस्थापक समूह के सदस्य एवं विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर के शैक्षिक सलाहकार रहे हैं। वे पिछले 40 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न पहलुओं पर अलग-अलग रूपों में कार्यरत हैं। विशेष तौर से वे शैक्षिक नवाचार और राज्य की शैक्षिक संरचनाओं के संशोधन के लिए किए जा रहे प्रयासों से सम्बद्ध रहे हैं। उनसे **hardy.dewan@gmail.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

सबसे बड़ी चिन्ता यह थी कि कहीं हम अपने बच्चों के मन में आर्थिक असमानता जैसा भाव तो नहीं ला रहे हैं? अपने स्कूल में हम हमेशा इस चीज़ से बचने की कोशिश करते आए हैं। हमने स्कूल में ऐसा माहौल बनाया है जिसमें सभी को सीखने, इस्तेमाल करने, खेलने आदि के लिए एक समान संसाधन दिए जाते हैं। कम आय के इस दौर में जिन अभिभावकों की पहली प्राथमिकता अपने बच्चों को भोजन और आश्रय प्रदान करना है, जिनके पास टीवी भी नहीं है, उनसे हम अपने बच्चों को स्मार्टफ़ोन दिलाने की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं? क्या हम ऑनलाइन साधनों के माध्यम से शैक्षणिक सहायता के एक अस्थायी खालीपन को भरने के नाम पर सामाजिक न्याय और मानवतावादी मूल्यों के आदर्शों की अनदेखी कर रहे थे?

- अनिल एस अंगडिकी, 'कोविड-19 : सीखने के एक साधन के रूप में', पेज 47

बाल स्वास्थ्य और कल्याण का परिप्रेक्ष्य

आदित्य प्रद्युम्न और कयूर मेहता

बच्चों में कोविड-19

कोरोनोवायरस रोग 2019 (कोविड-19) वैश्विक महामारी ने वैश्विक स्तर पर बच्चों और किशोरों की देखभाल से सम्बन्धित अभूतपूर्व चुनौतियाँ पेश की हैं। वर्तमान में भारत, कोविड-19 के सन्दर्भ में सबसे अधिक मामले वाले देशों की सूची में दूसरे स्थान पर है और मृत्यु के मामले में तीसरे स्थान पर। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के आँकड़ों के अनुसार, 1 सितम्बर, 2020 तक भारत में 17 साल से कम उम्र के बच्चों में कोविड-19 के आठ प्रतिशत मामले देखने में आए और एक प्रतिशत मौतें हुई हैं। कोविड-19 वयस्कों की तुलना में बच्चों पर *हल्का* प्रभाव डालता है। श्वसन सम्बन्धी वायरल संक्रमण के लिए यह काफ़ी असामान्य है, जो आमतौर पर एक स्व-सीमित ज्वर सम्बन्धी ऊपरी श्वसन तंत्र की बीमारी के रूप में प्रस्तुत होता है। बच्चों को अभी भी कोविड-19 से गम्भीर बीमारी और समस्याओं के होने का ख़तरा है। इनमें साँस का रुकना, हृदय व गुर्दे को क्षति पहुँचना और बहु-अंगीय विफलता आदि शामिल हैं। ठीक वैसे ही जैसा वयस्कों में होता है। कुछ बच्चों को संक्रमण के पश्चात एक गम्भीर सूजन की बीमारी भुगतनी पड़ सकती है जो ख़ासकर बच्चों में ही पाई जाती है। इसका इलाज मुश्किल है और इसके दीर्घकालिक दुष्प्रभाव हो सकते हैं। हालाँकि वयस्कों की तुलना में बच्चों में कोविड-19 के कारण होने वाली कुल मृत्यु दर बहुत कम है।

अप्रत्यक्ष प्रभाव को सन्दर्भीकृत करना

बच्चे प्रत्यक्ष प्रभाव की तुलना में, विशेष रूप से विकासशील देशों में, विभिन्न कारणों से वैश्विक महामारी के अप्रत्यक्ष प्रभाव से बहुत अधिक प्रभावित हुए हैं। 90 प्रतिशत से अधिक देशों ने विश्व स्वास्थ्य संगठन को सूचित किया है कि उनकी नियमित स्वास्थ्य सेवाओं में व्यवधान आया है। महामारी से सम्बन्धित सेवाओं के बन्द होने, चेतावनियों और सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों के कारण नियमित रूप से होने वाली बाल स्वास्थ्य सेवाओं के उपयोग में भारी कमी आई है।

> जिन बच्चों में स्वास्थ्य सम्बन्धी पुरानी समस्याएँ हैं जैसे कि मधुमेह, मिर्गी और एचआईवी – ऐसे बच्चे दवा और अनुवर्ती सेवाओं के न मिल पाने के कारण विशेष रूप से प्रभावित हुए हैं। कई दशकों से बाल-मृत्यु की रोकथाम में जितनी भी प्रगति हुई थी, वह शायद अब टीकाकरण सम्बन्धी सेवाओं में बाधा आ जाने के कारण विफल हो जाए। रोगों के लिए झुण्ड प्रतिरक्षा (हर्ड इम्यूनिटी) के स्तर में परिणामी गिरावट के कारण ऐसी कई बीमारियों के फिर से उभरने का ख़तरा है जिनकी रोकथाम वैक्सीन से की जा सकती है, उदाहरण के लिए खसरा।

स्कूलों के बन्द होने के परिणाम

पहले हम बच्चों के स्वास्थ्य और विकास के लिए आँगनवाड़ियों और प्राथमिक स्कूली शिक्षा के महत्त्व को देखेंगे। ये ऐसे स्थान हैं जहाँ करोड़ों बच्चे नियमित रूप से दिन के कई घण्टे बिताते हैं, अपने ज्ञान में सुधार करते हैं, कौशल प्राप्त करते हैं और अन्य बच्चों के साथ सामाजिक रूप से जुड़ते हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि यहाँ उन्हें स्वास्थ्यवर्धक गर्म भोजन मिलता है जो उन्हें उनके घर में मिलने वाले भोजन के अलावा पूरक पोषण सुनिश्चित करता है। इन विशाल कार्यक्रमों का निर्माण और सुधार कई दशकों में हुआ है ताकि बच्चों को बेहतर शिक्षा मिले और बाल विकास में योगदान दिया जा सके। लेकिन ये कार्यक्रम भी वैश्विक महामारी के कारण गम्भीर रूप से प्रभावित हुए हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार सामान्य समय में भी, आँगनवाड़ियों का उपयोग शहरी क्षेत्रों (40%) की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों (59%) में अधिक किया गया (2016 एनएफएचएस-4)।

हाल के दशकों में भारत के बच्चों के पोषण की स्थिति में महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई है, लेकिन इसके बावजूद कुपोषण जारी है। 2016 में 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में वृद्धिरोध की व्यापकता 38 प्रतिशत और बच्चों में कम वज़न होने की समस्या 36 प्रतिशत थी (एनएफएचएस-4)। वैसे वैश्विक महामारी के आने से पहले भी, भारत 2025 के लिए निर्धारित पोषण के सभी लक्ष्यों से काफ़ी दूर था, जिसमें बच्चों के कुपोषण सम्बन्धी लक्ष्य भी शामिल हैं। इसलिए कोविड-19 के आने से बुनियादी स्वास्थ्य निर्धारकों में सुधार लाने के महत्त्वपूर्ण कार्य को एक बड़ा झटका लगा। इसके अतिरिक्त, कृमिहरण और आयरन-फोलिक एसिड पूरकता कार्यक्रमों में आई रुकावट से एनीमिया की पहले से ही चिन्तित करने वाली दर और बिगड़ सकती है, जो 2016 में 58 प्रतिशत (एनएफएचएस-4) थी। खाद्य पूरकता में कमी का असर

गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं पर भी पड़ता है जो आगे चलकर उनके शिशुओं और अजन्मे बच्चों को प्रभावित करता है।

कमज़ोर बच्चों को स्कूल की दिनचर्या एक सुरक्षित वातावरण प्रदान करती है। भोजन और सुरक्षा के कारण बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहन मिलता है, विशेष रूप से बेहद ग़रीब परिवारों को। इसके कारण बच्चों के माता-पिता अपने बच्चों और उनके दोपहर के भोजन के बारे में चिन्ता किए बिना मज़दूरी या कोई और नौकरी करने जा सकते हैं। गर्म भोजन कुछ ऐसे बच्चों के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है जिनके पास अच्छे भोजन का कोई अन्य साधन उपलब्ध नहीं होता, जैसे कि शहरी प्रवासी श्रमिक। साथ ही स्कूल आने से ये बच्चे बाल श्रम से भी बचे रहते हैं। कई किशोरियाँ, जो स्कूल के स्वास्थ्य कार्यक्रमों के माध्यम से सैनिटरी नैपकिन प्राप्त किया करती थीं, लॉकडाउन के दौरान उन्हें भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है।

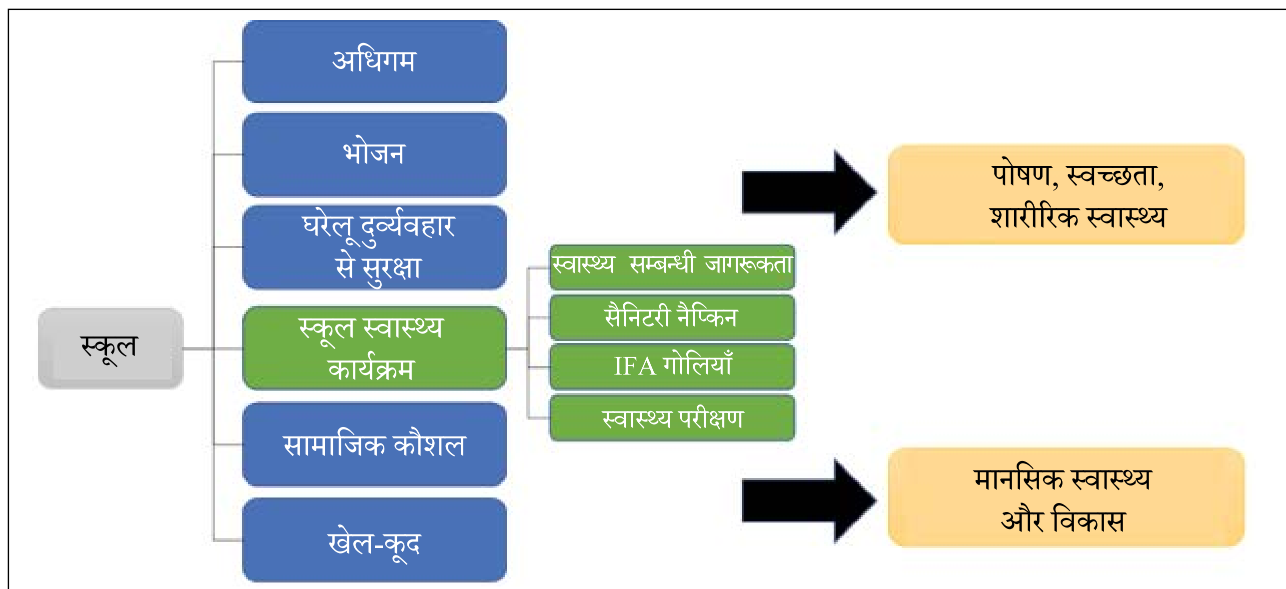
2016 तक, केवल 60 प्रतिशत परिवारों के पास हाथ धोने के लिए साबुन और पानी उपलब्ध था। वैश्विक महामारी के दौरान हाथ की स्वच्छता को बेहतर बनाने के प्रयासों और अभियानों का कुछ सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। लेकिन जनसंख्या का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा ऐसा भी है जिसके पास पानी, साबुन या दोनों का अभाव है, जिससे वायरस से संक्रमित होने की उनकी सम्भावना अधिक बढ़ जाती है।

नौकरी गँवा देने के परिणाम

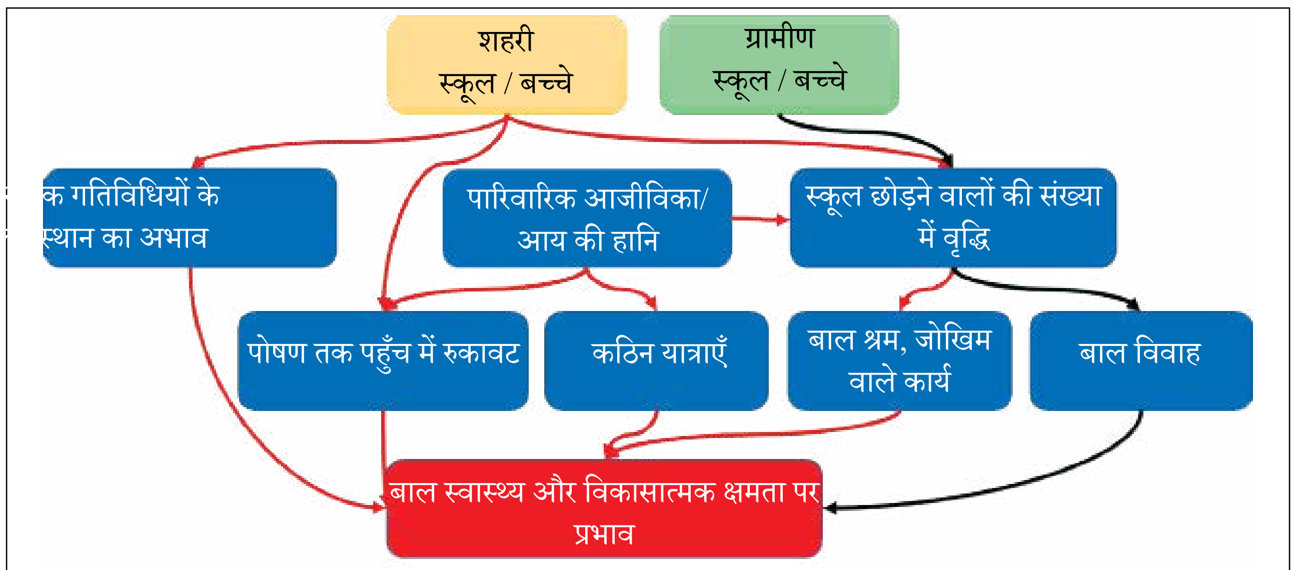
बहुत महत्त्वपूर्ण बात यह है कि लॉकडाउन ने दैनिक मज़दूरी पर निर्भर लाखों परिवारों की आजीविका को प्रभावित किया है। कमज़ोर बच्चों पर तीन तरह से इसका प्रभाव पड़ा है - उनके माता-पिता के पास नौकरी नहीं है, स्कूल बन्द हैं और परिवार भोजन के लिए संघर्ष कर रहा है। अब कबाड़ीवालों के रूप में काम कर रहे बच्चों से एक पत्रकार ने बातचीत की तो उनके मर्मभेदी विचार सामने आए जिसमें उन्होंने सन्देह प्रकट करते हुए कहा कि क्या वे कभी स्कूल वापस जा पाएँगे? इस प्रकार की बातें स्पष्ट रूप से मानसिक स्वास्थ्य पर होने वाले सम्भावित व्यापक प्रभावों का संकेत देती हैं। बच्चों को अन्य जोखिम वाली नौकरियों जैसे निर्माण कार्य और बीड़ी बनाने में धकेल दिया गया है।

अधिक सम्पन्न परिवारों के बच्चों की तुलना में ग़रीब परिवारों के पास कंप्यूटर, इंटरनेट और बिजली की पर्याप्त सुविधा नहीं है और इसलिए उन्हें अपनी शिक्षा जारी रखने में कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। लड़कियों पर तो इसका और भी खराब प्रभाव पड़ सकता है क्योंकि जो दुर्लभ शैक्षिक संसाधन उपलब्ध हैं, वे लड़कों को दिए जा सकते हैं। बच्चे स्कूल से बाहर हैं, अतः बाल दुर्व्यवहार, उपेक्षा, शोषण और घरेलू हिंसा की खबरें बढ़ रही हैं, जिससे बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के साथ समझौता करने की सम्भावना बढ़ती जा रही है। हो सकता है कि कोविड-19 के कारण कई बच्चों के माता-पिता की मृत्यु हो गई हो, जिससे वे बेहद असुरक्षित हो गए हैं। कुल मिलाकर देखा जाए तो बच्चे, परिवार और राष्ट्र – ये सभी वैश्विक महामारी का बहुत भारी मोल चुका रहे हैं। और इसलिए, हालाँकि इस वैश्विक महामारी से ग्रस्त लोगों की श्रेणी में बच्चों का नाम बहुत आगे नहीं आता, लेकिन उनके इसका सबसे बड़ा शिकार होने का ख़तरा रहता है।

प्रभावों को कम करना और बाल स्वास्थ्य की रक्षा करना सामान्य जीवन में आई अड़चनों के कारण कई बच्चों पर



चित्र 1. स्कूल बच्चों के स्वास्थ्य में कैसे योगदान देते हैं (स्रोत : लेखकगण); आईएफए : लोहा और फोलिक एसिड



चित्र 2. वैश्विक महामारी के कारण बाल-स्वास्थ्य पर असर डालने वाले सम्भावित प्रभावी मार्ग; काले रंग के मार्ग शहरी और ग्रामीण बच्चों दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण हैं, लाल रंग के मार्ग शहरी बच्चों के लिए अधिक प्रासंगिक हैं (स्रोत : लेखकगण)।

पहले ही गम्भीर प्रभाव पड़ा है। अतः सरकारों, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं और स्वैच्छिक क्षेत्रों द्वारा इस बात के प्रयास किए जा रहे हैं कि भविष्य के प्रभावों को समझकर उन्हें कम किया जाए। पात्र परिवारों को अधिक भोजन उपलब्ध करवाने और मध्याह्न भोजन योजना को जारी रखने के लिए नीतियाँ बनाई गई हैं। लेकिन उनमें लॉकडाउन के कड़े उपायों और विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में स्टाफ के सदस्यों में हुए संक्रमण के कारण मिश्रित सफलता ही मिल पाई है। कोविड-19 के प्रभाव और जोखिम को कम करने के लिए पोषण की उपलब्धता में सुधार लाने के लिए इस तरह के हस्तक्षेप महत्त्वपूर्ण हैं।

बच्चों के सम्पूर्ण शारीरिक, प्रतिरक्षात्मक और संज्ञानात्मक विकास के लिए अच्छा पोषण एक ज़रूरी शर्त है। हालाँकि अभी तक इस बात का कोई सबूत नहीं है कि विशेष खाद्य पदार्थ या खाद्य पूरक कोविड-19 से लोगों की रक्षा कर सकते हैं, लेकिन यह एक स्थापित तथ्य है कि कुछ सूक्ष्म पोषक तत्व, जैसे विटामिन ए, डी, सी, ई, बी6, और बी12, फोलेट, जस्ता, लोहा, ताम्बा और सेलेनियम प्रतिरक्षा प्रणाली को मज़बूत बनाने में योगदान करते हैं। पोषण सम्बन्धी कमियों के कुछ सामान्य संकेत इस प्रकार हैं - कमज़ोरी, वज़न कम होना, चिड़चिड़ापन, एकाग्रता में कमी, दस्त, त्वचा में परिवर्तन, रात को ठीक से न दिखाई देना, साँस की तकलीफ, बार-बार संक्रमण होना आदि। निजी स्तर पर यह बात महत्त्वपूर्ण है कि माता-पिता यह सुनिश्चित करें कि उनके बच्चे अच्छा एवं सन्तुलित भोजन ग्रहण करें। एक स्वस्थ आहार में अनाज, फलियाँ, फल, सब्जियाँ और पशुओं से मिलने वाले खाद्य पदार्थ आदि आते हैं।

जैसा कि पहले कहा गया है भारत में अधिकांश बच्चे स्कूलों द्वारा दिए जाने वाले मध्याह्न भोजन पर निर्भर हैं। लेकिन प्राथमिक स्कूल और आँगनवाड़ियाँ अभी खुली नहीं हैं और यह स्पष्ट भी नहीं है कि वे कब खुलेंगी। ऐसी परिस्थितियों में, पोषण व्यवस्था की निरन्तरता सुनिश्चित करने के लिए, संक्रमण नियन्त्रण सम्बन्धी मानक सुरक्षा उपायों के साथ, वैकल्पिक रणनीतियों के बारे में सोचा जा सकता है जैसे कि खानपान सेवा, टेक-होम राशन, वाउचर ट्रांसफर या नकद आधारित वितरण आदि। मातृ और बाल स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए प्राथमिक देखभाल को मज़बूत करना और समुदाय-आधारित हस्तक्षेप को बनाए रखना, जैसे कि गर्भावस्था के दौरान और बाद में घर का दौरा, सूक्ष्म पोषक अनुपूरण और टीकाकरण कार्यक्रम आदि बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य पर इस महामारी के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए महत्त्वपूर्ण होंगे। इसके अलावा, बदलते मौसम के मद्देनज़र रोग संचरण नियन्त्रण प्रयासों को मज़बूत करने की आवश्यकता है, क्योंकि तब वायरस संचरण अधिकतम होगा। अतः सामाजिक दूरी बनाए रखने के अधिक कड़े तरीकों और मास्क के उपयोग की ज़ोरदार शब्दों में सिफ़ारिश की जाती है।

कुछ संवेदनशील क्षेत्रों में, बच्चों की शिक्षा और पूरक भोजन मुहैया कराने के लिए अस्थायी व्यवस्था की गई थी। केरल जैसे राज्य, जिन्होंने इसका अच्छा प्रबन्धन किया है, वहाँ पहले से ही मज़बूत सरकारी शैक्षिक सेवाएँ और बेहतर बाल

स्वास्थ्य संकेतक थे। अत्यन्त ख़राब संकेतक वाले क्षेत्र और शहरी झुग्गी-झोपड़ी वाली बस्तियाँ बहुत चिन्ता का विषय हैं। शहरी क्षेत्रों में कई स्वयंसेवकों ने बच्चों को उनकी शिक्षा जारी रखने में मदद करने के लिए अस्थायी स्कूल स्थापित किए हैं। हालाँकि इस तरह के उपाय टिकाऊ नहीं हो सकते, फिर भी शायद कुछ बच्चों को स्कूल छोड़ने से रोका जा सकता है। नागरिक समाज संगठनों ने भी इस कठिन समय में अपने संसाधनों को जुटाया है ताकि भोजन और आवश्यक चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध करवाई जा सकें। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि प्राथमिक स्कूलों में जाने वाले छोटे बच्चों में वायरस फैलने की सम्भावना कम होती है इसलिए, बड़े बच्चों की बजाय उनके स्कूल पहले खोले जा सकते हैं। फिर से स्कूल खोलने के विषय पर समय पर और सुरक्षित तरीक़े से गहन चर्चा की आवश्यकता है।

शायद इस वैश्विक महामारी ने बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को भी बुरी तरह प्रभावित किया है। हीन भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य के सूक्ष्म संकेतों में मूड का बार-बार बदलना, व्यवहार में परिवर्तन, पहले अच्छी लगने वाली गतिविधियों में रुचि की कमी, सोने में कठिनाई, स्मृति और एकाग्रता सम्बन्धी समस्याओं जैसी बातें आ जाती हैं। यह एक ऐसा समय है जब माता-पिता और बच्चे दोनों तनाव में हैं, विशेष रूप से वे लोग जो नौकरी गँवा बैठे हैं और मजबूरन प्रवास कर रहे हैं। वैसे तो माता-पिता को अपनी चुनौतियों का सामना करना ही पड़ता है। तो भी बच्चों की मानसिक भलाई के लिए प्रयास करना ज़रूरी है, जैसे उनकी बातें सुनना, उनकी कठिनाइयों को स्वीकारना, उनके सन्देह दूर करना, उन्हें आश्वस्त करना, उनमें आशा का भाव जगाना और मुद्दों को हल करने में भावनात्मक समर्थन प्रदान करना। मीडिया से उनका सम्पर्क सीमित होना चाहिए ताकि बच्चों को वैश्विक महामारी से सम्बन्धित जानकारी आवश्यकता से अधिक न मिले।

यदि बच्चों के लिए एक दैनिक दिनचर्या निर्धारित की जाए जिसमें शैक्षिक कार्य, अन्य प्रकार के कार्य, खेल, फोन/टेक्नॉलॉजी के अन्य माध्यमों पर दोस्तों के साथ बातचीत, व्यायाम/योग आदि शामिल हों। साथ ही इस तनावपूर्ण समय के दौरान परिवार के साथ समय बिताने से बच्चों की भलाई होगी। आगे यह सुझाव भी दिया गया है कि एक संरचित अधिगम कार्यक्रम में भाग लेने से मानसिक स्वास्थ्य बेहतर हो सकता है। बच्चों की शिक्षा की निरन्तरता के लिए सरकार वेब पोर्टल, मोबाइल ऐप, टीवी चैनल, रेडियो और पॉडकास्ट आदि के माध्यम से काम कर रही है। इनमें दीक्षा और स्वयं प्रभा जैसे टीवी चैनल, ई-पाठशाला और मुक्त शैक्षिक संसाधन का राष्ट्रीय भण्डार (एनआरओईआर) जैसे मंच शामिल हैं। हालाँकि ग़रीब परिवारों के लिए इनमें से कई माध्यमों का उपयोग करना मुश्किल हो सकता है और उन्हें इसके लिए बाहरी सहायता की आवश्यकता हो सकती है। स्कूल जाने वाले सभी बच्चों, यहाँ तक कि भारत के दूरस्थ भागों में रहने वाले बच्चों को भी उनके घरों में ही पाठ्यपुस्तकें प्रदान करने के प्रयास जारी हैं। जो प्रयास सबसे अधिक हाशिए पर रहने वाले लोगों की ज़रूरतों के बारे में सोचते हों, उन पर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए।

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि वैश्विक महामारी कम हो रही है, लोगों में बेहतर जागरूकता आई है और स्थिति के

राष्ट्रीय

भोजन, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा की उपलब्धता को प्राथमिकता देना, तदनुसार धन आवंटित करना, लचीली योजना बनाना, साम्यता पर फोकस करना

समुदाय

कल्याण सम्बन्धी जानकारी प्रदान करना, कमज़ोर बच्चों की पहचान करना, स्वास्थ्य और शिक्षाकर्मियों की सहायता करना, जवाबदेही प्रक्रिया तैयार करना

व्यक्तिगत / घर-गृहस्थी

जानकारी माँगना, आवश्यक स्वास्थ्य देखभाल और कल्याण की माँग करना, परिवार और दोस्तों का समर्थन करना, स्थानीय कार्रवाई में भाग लेना

चित्र 3. वैश्विक महामारी के दौरान बाल स्वास्थ्य की रक्षा के लिए विभिन्न स्तरों पर कार्रवाई (स्रोत: लेखकगण)।

लिए स्वास्थ्य प्रणालियों का अनुकूलन हुआ है, सम्भव है कि भविष्य में राष्ट्रीय स्तर के गम्भीर लॉकडाउन न हों। तो भी व्यक्तिगत सुरक्षा के सम्बन्ध में जागरूकता और अभ्यास जारी रखना और स्वास्थ्य प्रणालियों की बेहतर तैयारी (उन लाभों के अलावा जो भविष्य में वैक्सीन से मिल सकते हैं) सर्वोपरि है ताकि ये विनाशकारी व्यवधान, कम से कम इतने बड़े पैमाने फिर से न हों। यह भी बहुत महत्त्वपूर्ण है कि शैक्षिक, खाद्य कल्याण और स्वास्थ्य प्रणालियों के लचीलेपन का मूल्यांकन नियमित रूप से हो और उन्हें मज़बूत किया जाए। इन प्रणालियों को व्यवधानों के अनुसार जल्दी से अनुकूलित करना होगा क्योंकि वे स्वास्थ्य और कल्याण के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। स्थानीय लोगों और सरकार के बीच भागीदारी के माध्यम से जवाबदेही की प्रक्रियाओं को भी मज़बूत किया जाना चाहिए। यह बात ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के लिए आवश्यक है, पर शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा पर विशेष ज़ोर देना चाहिए।

प्रसिद्ध जापानी लेखक हारुकी मुराकामी ने लिखा था,‘ *आपको इस बात का पूरा यकीन नहीं होगा कि तूफ़ान थमा है या नहीं। लेकिन एक बात निश्चित है। जब आप तूफ़ान से बाहर निकलकर आएँगे तो आप वह व्यक्ति नहीं होंगे जो तूफ़ान में फँसा था। यही इस तूफ़ान की ख़ासियत है।’* वर्तमान वैश्विक महामारी जल्द ख़त्म होने वाली नहीं है और यह पहले ही महत्त्वपूर्ण प्रणालियों और सेवाओं की कई कमज़ोरियों को उजागर कर चुकी है। इन प्रतिकूल परिस्थितियों से लड़ते समय, यह बात भी महत्त्वपूर्ण है कि इससे सीखे हुए सबक को आगे ले जाया जाए ताकि बच्चों के समग्र स्वास्थ्य और कल्याण पर इसके प्रभाव को कम किया जा सके।

Sources

Gettleman, J., Raj, S., 2020. As Covid-19 Closes Schools, the World’s Children Go to Work. The New York Times. URL https://www.nytimes.com/2020/09/27/world/asia/covid-19-india-children-school-education-labor.html (accessed 10.23.20).

Government of India, 2018. Operational Guidelines on School Health Programme under Ayushman Bharat. New Delhi: Government of India.

Harris, B., Griffiths, F., Fayehun, F., Rizvi, N., Bakibinga, P., Ahmed, S.A.K.S., 2020. COVID-19: how lockdowns affected health access in African and Asian slums [WWW Document]. The Conversation. URL http://theconversation.com/covid-19-how-lockdowns-affected-health-access-in-african-and-asian-slums-147600 (accessed 10.23.20).

Hoang A, Chorath K, Moreira A, Evans M, Burmeister-Morton F, Burmeister F, Naqvi R, Petershack M, Moreira A. COVID-19 in 7780 pediatric patients: A systematic review. EClinicalMedicine. 2020 Jun 26;24:100433.

IIPS, ICF, 2017. National Family Health Survey (NFHS-4), 2015-16: India. International Institute for Population Sciences, Mumbai.

Lakshman, A., 2020. Children are getting Covid sitting at home, reopening schools can help them & the community. The Print. URL https://theprint.in/opinion/children-are-getting-covid-sitting-at-home-reopening-schools-can-help-them-the-community/493706/ (accessed 10.22.20).

Liu CH, Doan SN. Psychosocial Stress Contagion in Children and Families During the COVID-19 Pandemic. Clin Pediatr (Phila). 2020 Sep;59(9-10):853-855.

Ministry of Health and Family Welfare, Government of India. Available at https://www.mohfw.gov.in/. (Accessed 10.26.20).

Modi, S., Postaria, R., 2020. How COVID-19 deepens the digital education divide in India [WWW Document]. World Economic Forum. URL https://www.weforum.org/agenda/2020/10/how-covid-19-deepens-the-digital-education-divide-in-india/ (accessed 10.22.20).

Puranam, E., 2020. Coronavirus forces millions of Indian children to miss school [WWW Document]. Al Jazeera. URL https://www.aljazeera.com/news/2020/8/13/coronavirus-forces-millions-of-indian-children-to-miss-school (accessed 10.22.20).

Upadhyay, A., 2020. How Are The Children In India Receiving Their Mid-Day Meals Amid The COVID-19 Pandemic? NDTV. URL https://swachhindia.ndtv.com/how-are-the-children-in-india-receiving-their-mid-day-meals-amid-the-covid-19-pandemic-47940/ (accessed 10.23.20).



आदित्य प्रद्युम्न अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में संकाय सदस्य हैं। वे चिकित्सा शास्त्र में स्नातक (एमबीबीएस), सार्वजनिक स्वास्थ्य में एमएससी और वैश्विक महामारी विज्ञान में पीएचडी हैं। पिछले 12 वर्षों से वे नागरिक समाज, स्वास्थ्य सेवा और शैक्षिक संस्थानों के साथ जुड़े रहे हैं और भारत में सामुदायिक पर्यावरणीय स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य कर चुके हैं। उनसे **adithya.pradyumna@apu.edu.in** पर सम्पर्क किया जा सकता है।



कयूर मेहता बाल चिकित्सा संक्रामक रोग के विशेषज्ञ और सार्वजनिक स्वास्थ्य शोधकर्ता हैं। एमबीबीएस की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने नेपाल में बाल चिकित्सा और कनाडा में संक्रामक रोगों पर कार्य किया और प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने मैकगिल विश्वविद्यालय, कनाडा में वैश्विक महामारी विज्ञान में प्रशिक्षण प्राप्त किया। सम्प्रति वे अन्तर्राष्ट्रीय वैक्सीन एक्सेस सेंटर, जॉन हॉपकिंस ब्लूमबर्ग स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ, संयुक्त राज्य अमरीका में सहायक वैज्ञानिक हैं और मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य केन्द्र, भारत के साथ जुड़े हुए हैं। वे भारत में वैक्सीन रोलआउट मूल्यांकन के अध्ययन में भी शामिल हैं। उनसे **kmehta6@jhu.edu** पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : नलिनी रावल

अधिगम के प्रतिफल और आकलन

आँचल चोमल

कोविड-19 वैश्विक महामारी ने विद्यार्थी-अधिगम को काफ़ी बाधित किया है। शैक्षिक संस्थानों ने निर्बाध शिक्षण सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न ऑनलाइन विकल्पों की खोज की है। पर ऐसे अनेक सबूत उपलब्ध हैं जो यह बताते हैं कि दूरस्थ शिक्षा विकल्प कारगर नहीं हैं। शिक्षा एक गहन एवं घनिष्ठ प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक, विद्यार्थी और सहपाठियों के बीच पूछताछ, खोज व अर्थ-निर्माण जैसे कार्यकलाप होते हैं। अधिगम को सम्भव बनाने के लिए वैयक्तिकरण और सहयोग आवश्यक है। इसके साथ इंटरनेट और स्मार्टफोन की अपर्याप्त उपलब्धता के कारण ऑनलाइन समाधान अव्यावहारिक विकल्प बन जाते हैं।

पिछले कुछ महीनों में विभिन्न राज्य सरकारों, जैसे कर्नाटक, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश ने सीखने की निरन्तरता सुनिश्चित करने के लिए *विद्यागमा, पढ़ाई तुहार द्वार और हमारा घर-हमारा विद्यालय* जैसे समुदाय-आधारित अधिगम कार्यक्रम शुरू किए हैं। देश भर के कई अन्य राज्यों में, कई प्रतिबद्ध शिक्षक मोहल्ला कक्षाओं जैसे अनोखे समाधानों के साथ नवाचार आज़मा रहे हैं। इसमें पूर्व विद्यार्थियों के नेटवर्क और समुदाय के बड़े बच्चों आदि की मदद से विद्यार्थियों को आमने-सामने बैठकर सीखने के अवसर दिए जा रहे हैं। लेकिन कुछ बच्चों के लिए केवल ऑनलाइन कक्षाएँ ही एकमात्र व्यावहारिक विकल्प हैं।

तो स्कूल भले ही सीखने की किसी भी विधा का प्रयोग क्यों न कर रहे हों, वे सभी इस साल जिन सामान्य प्रश्नों के साथ जूझ रहे हैं, वे इस प्रकार हैं :

- स्कूल यह कैसे तय करें कि क्या पढ़ाया जाए? बच्चों के जुड़ाव के लिए किस तरह की गतिविधियों का उपयोग किया जाना चाहिए?
- यह कैसे पता चलेगा कि विद्यार्थी कैसे सीख रहे हैं और क्या उनके सीखने में कोई कमी है?

महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रत्येक शिक्षक के दिमाग़ में चल रहे इन प्रश्नों के उत्तर सरल नहीं हैं। फिर भी कुछ व्यावहारिक समाधान तलाशे जा सकते हैं। इन समाधानों को मोटे तौर पर चार भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. अधिगम प्रतिफलों का प्राथमिकताकरण

पहली कक्षा की भाषा या गणित की पाठ्यपुस्तक में 10 से 15 अध्याय होते हैं। उच्चतर कक्षाओं में अध्यायों की संख्या बढ़ जाती है। इस शैक्षिक वर्ष में सभी अध्यायों को पढ़ाना व्यावहारिक रूप से असम्भव है। ऐसे में किन अध्यायों का चयन किया जाए, यह तय करने के लिए शिक्षक कक्षा विशेष के लिए निर्धारित कुछ मुख्य या मूलभूत अधिगम प्रतिफलों की पहचान कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, प्राथमिक स्तर पर कक्षा I-V के लिए भाषा में निम्नलिखित अधिगम प्रतिफल को प्राथमिकता दी जा सकती है (अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, 2020)।

भाषा I-II	भाषा III-V
क. सुनकर समझने और ध्वनियों तथा शब्दों के बीच सम्बन्ध का कौशल विकसित करना। ख. पढ़ने और लिखने का बुनियादी कौशल विकसित करना। ग. परिवेश में घटने वाली घटनाओं को समझना और उन्हें मौखिक रूप से व्यक्त करना।	क. स्वतंत्र रूप से पढ़ने और लिखने की क्षमता विकसित करना। ख. कविता, कहानी, नोटिस बोर्ड, पोस्टर आदि में प्रस्तुत पाठ्य सामग्री को समझने की क्षमता विकसित करना। ग. मौखिक और लिखित दोनों रूपों में आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों को व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना। घ. भाषा की मूल संरचना को समझना और इसे लेखन में लागू करना।

भाषा में जितने भी उन्नत अधिगम हैं, ये अधिगम प्रतिफल उनकी नींव का निर्माण करते हैं और इसलिए, इनको प्राथमिकता देने से शिक्षक को मूलभूत साक्षरता को सम्बोधित करने में मदद मिलेगी। प्राथमिक स्तर पर अन्य सभी विषयों के लिए इसी प्रकार का प्रयत्न करना चाहिए। उच्च प्राथमिक चरण के लिए, उन अधिगम प्रतिफल को प्राथमिकता दी जानी चाहिए जो विषय की अवधारणात्मक समझ विकसित करने में मुख्य हैं।

अधिगम प्रतिफल का चयन हो जाने के बाद, शिक्षक उन्हें सम्बोधित करने के लिए पाठ्यपुस्तक से एक या दो इकाइयों का चयन कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, कक्षा I और II के विद्यार्थियों में पढ़ने के बुनियादी कौशल को विकसित करने के लिए शिक्षक पाठ्यपुस्तक की विभिन्न इकाइयों से विभिन्न प्रकार के छोटे हिस्से चुन सकते हैं। ध्यान इस बात पर देना चाहिए कि विद्यार्थी शब्द की ध्वनियों के साथ परिचित हों, कहानी/कविता के पात्रों के साथ जुड़ें, सस्वर पठन का अभ्यास करें, अपने स्वयं के शब्दों में पाठ की व्याख्या करें आदि। अधिगम प्रतिफल और सामग्री के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध हो तो कक्षा के दौरान सामंजस्यता के विकास में मदद मिलेगी।

चयनित अधिगम प्रतिफल केवल संज्ञानात्मक क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं होने चाहिए। इस समय में संवेदनशीलता, दूसरों की परवाह करना, लचीलापन और समानुभूति का विकास करने वाले प्रतिफलों का पोषण बहुत महत्त्वपूर्ण है। स्वास्थ्य और स्वच्छता बनाए रखना, सार्वजनिक स्थानों पर सावधानियाँ बरतना, स्वच्छता सम्बन्धी व्यक्तिगत शिष्टाचार जैसे प्रतिफलों को भी पर्याप्त महत्त्व दिया जाना चाहिए।

यदि एक शिक्षक कई विषय पढ़ाते हों तो वे परिवार, पर्यावरण जैसी तीन या चार ऐसी थीमें चुन सकते हैं जिन्हें आपस में जोड़ा जा सके और फिर वे प्रत्येक विषय में से कुछ अधिगम प्रतिफल की पहचान कर सकते हैं। इसके बाद वे अपने पाठों की योजना इस तरह से बना सकते हैं कि वे विभिन्न विषयों की सामग्री को एकीकृत कर सकें। उदाहरण के लिए, कक्षा III के शिक्षक भाषा और पर्यावरण अध्ययन पाठ्यपुस्तकों के पाठों को एकीकृत कर सकते हैं। इससे न केवल सामग्री का बोझ कम होगा, बल्कि अधिगम प्रतिफल को एकीकृत और व्यापक रूप से सम्बोधित करने में भी मदद मिलेगी।

2. उपयुक्त शैक्षणिक रणनीति का चयन

शिक्षार्थी और शिक्षक की आपसी प्रत्यक्ष अन्तःक्रिया सीमित हो गई है, इसलिए जो थोड़ा-बहुत समय मिलता है उसे अधिक सार्थक बनाना महत्त्वपूर्ण है। विद्यार्थियों के सीखने की कमियों को पहचानकर उन्हें ऐसी पाठ योजनाओं के माध्यम से सम्बोधित करने पर ध्यान देना चाहिए जिन्हें व्यवस्थित रूप से विकसित किया गया हो। ऐसी योजनाएँ जो स्पष्ट रूप से यह बताएँ कि कौन-से पाठ पढ़ाने हैं, उनमें किन संसाधनों का उपयोग किया जाएगा, कौन-सी गतिविधियाँ संचालित की जाएँगी और कौन-से अनुवर्ती कार्य दिए जाएँगे। ध्यानपूर्वक उन हिस्सों पर ज़ोर देना चाहिए जिनके साथ विद्यार्थी जूझ रहे हैं या पिछली कक्षाओं की उन (पूर्व-अपेक्षित) अवधारणाओं पर जिन्हें विद्यार्थी ठीक से समझ नहीं पाए हैं।

अधिकतर मामलों में अनुदेशात्मक रणनीति ऑनलाइन, ऑफ़लाइन और स्व-अधिगम का एक संयोजन होगी। इनमें से प्रत्येक तरीक़े का उपयोग विशिष्ट उद्देश्यों के लिए किया जाना चाहिए, फिर चाहे वह ऑनलाइन हो या आमने-सामनेवाला शिक्षण। उसमें नई अवधारणा को पर्याप्त उदाहरणों के साथ समझाने पर ध्यान देना चाहिए। उदाहरण के लिए, पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में शिक्षक विद्यार्थी-अन्तःक्रिया का उपयोग यह सिखाने के लिए कर सकते हैं कि पौधे प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया के माध्यम से भोजन कैसे बनाते हैं। प्रदत्त कार्य के सम्बन्ध में विद्यार्थियों की शंकाओं को सुनकर उनका निवारण कर सकते हैं, या फिर विद्यार्थी जो कार्य कर रहे हैं, उससे जुड़ी हुई मूलभूत अवधारणा के साथ सक्रिय रूप से जुड़ सकते हैं। तरीक़ा कोई भी हो, इन कक्षाओं को विद्यार्थियों को दिए गए स्व-अधिगम कार्यों के साथ जोड़ा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, अध्याय या अध्याय के उन चयनित पृष्ठों को पढ़ना जो अवधारणा के बारे में बताते हैं या उस अवधारणा की वर्कशीट पर कार्य करना। वर्कशीट को हल करने/कार्यों को करने के निर्देश स्पष्ट रूप बताए जाने चाहिए। बाद की कक्षाओं में सीखने की प्रक्रिया में निरन्तरता सुनिश्चित करने के लिए दिए गए गृहकार्यों पर चर्चा की जानी चाहिए।

बड़ी कक्षाओं के लिए नए विषयों का परिचय खोजपूर्ण परियोजनाओं और सर्वेक्षणों के माध्यम से भी हो सकता है। उदाहरण के लिए, लोकतंत्र पर अध्याय पढ़ाने से पहले, शिक्षक अपनी कक्षा के विद्यार्थियों से उनके निर्वाचन क्षेत्र के सभी निर्वाचित सांसदों के नाम, उनकी भूमिकाओं और उनके क्षेत्र के अनसुलझे मुद्दों आदि के बारे में पूछ सकते हैं। जब विद्यार्थी इस जानकारी को एकत्र करके एक सर्वेक्षण रिपोर्ट तैयार कर लें तब शिक्षक इसका उपयोग लोकतंत्र में शक्ति के सहभाजन की अवधारणा को पेश करने के लिए कर सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ अन्तःक्रिया के दौरान शिक्षक को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करें कि वे वैश्विक महामारी के दौरान हुए अपने व्यक्तिगत अनुभवों और चुनौतियों को साझा करें। फिर समूह में इन पर चर्चा भी करनी चाहिए। विद्यार्थियों को सुनना, उन्हें यह बताने के अवसर देना कि वे क्या सोचते हैं और कैसा महसूस करते हैं, पहले से कहीं आज ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है।

शिक्षक एक-दूसरे के सहयोग से गीतों, कहानियों, लघु वीडियो, पज़ल्स/गेम, वर्कशीट जैसी संसाधन सामग्रियों का सामान्य भण्डार बना सकते हैं। इसका उपयोग वे विद्यार्थियों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने के लिए कर सकते हैं। सामूहिक रूप से किए जाने वाले कार्यों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्हें इस तरह से डिज़ाइन किया जाना चाहिए कि विद्यार्थी एक-दूसरे के साथ काम कर सकें और उन्हें पूरा करने में अपने व्यक्तिगत अनुभवों का लाभ उठा सकें।

3. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आकलन को एकीकृत करना

इस अवधि में आकलनों का नियोजन, डिज़ाइनिंग और उपयोग काफ़ी पेचीदा हो सकता है। कक्षा आकलनों का उद्देश्य विद्यार्थियों के अधिगम में सुधार लाना होना चाहिए। इनके द्वारा शिक्षकों को विद्यार्थियों के अधिगम के स्तर और उनकी अपनी शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता के बारे में जानकारी मिलनी चाहिए। ऐसा कोई भी आकलन जो केवल विद्यार्थी का *मूल्यांकन या उसके बारे में निर्णय* करता है, तनाव और चिन्ता का कारण बन सकता है, इसलिए इससे पूरी तरह से बचना चाहिए। वर्तमान समय में जब विद्यार्थियों के अधिगम में इतनी सारी रुकावटें आ रही हैं, तब विद्यार्थियों को डराने वाली परीक्षाओं से दूर रखना ही श्रेयस्कर है!

इसलिए निर्माणात्मक आकलन अधिक करने चाहिए। इन्हें अनुदेशात्मक प्रक्रिया के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए। छोटे क्विज़, गेम्स, ओपन-एंडेड प्रश्नों के साथ अन्तःक्रियात्मक चर्चाएँ आदि कुछ ऐसी रणनीतियाँ हैं जिन्हें अपनाकर शिक्षक अपनी शिक्षण विधि की प्रभावशीलता के बारे में शीघ्र अन्दाज़ा लगा सकते हैं। हो सकता है कि बच्चे समय की कमी के कारण शिक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों के सटीक उत्तर न दे पाएँ। ऐसी स्थिति में शिक्षक को विद्यार्थियों के उत्तरों को ध्यान से सुनना चाहिए। इससे उन्हें पता चलेगा कि विद्यार्थियों को क्या समझ में नहीं आया है तथा उसके बाद वे अपने शिक्षण की योजना अधिक प्रभावी ढंग से बना सकते हैं।

ऐसे प्रामाणिक आकलनों को अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए जो विद्यार्थियों को सार्थक तरीके से अपने अधिगम का प्रदर्शन करने दें। इसके लिए परियोजनाओं, प्रदत्त कार्यों तथा सर्वेक्षण का उपयोग किया जा सकता है। पहले से तय की गई परियोजनाओं की बजाय शिक्षक विद्यार्थियों के साथ चर्चा करके उनके विषयों के बारे में निर्णय ले सकते हैं। ऐसी परियोजनाओं का भी उपयोग किया जा सकता है जो सभी विषयों से सम्बन्ध रखती हों। उदाहरण के लिए, परिवार के विषय पर काम करते समय कक्षा III के विद्यार्थी एक ऐसी परियोजना पर काम कर सकते हैं, जो भाषा, गणित और पर्यावरण अध्ययन के अधिगम प्रतिफल को एकीकृत करता हो।

थीम	भाषा	पर्यावरण अध्ययन	गणित
परिवार- कक्षा III, IV, V इन विचारों का उपयोग III, IV या V किसी भी कक्षा के लिए किया जा सकता है। गतिविधियों का एक ऐसा सेट डिज़ाइन किया जा सकता है जिसमें सभी विषय शामिल किए जा सकें। विद्यार्थी इस पर काम करने के लिए 3-4 सप्ताह का समय ले सकते हैं। परियोजना पर विद्यार्थियों के काम के साथ-साथ थीम से जुड़ी सभी अवधारणाओं को पढ़ाया जा सकता है।	अपने परिवार पर लेख लिखना, सदस्यों का विवरण देना जैसे उनके नाम/वे क्या करते हैं। बड़े विद्यार्थियों के लिए मेरा परिवार विषय पर - निबन्ध लेखन या निर्देशित अनुच्छेद लेखन।	परिवार के सदस्यों के नाम के साथ उनके चित्र। वंश-वृक्ष भी बनाया जा सकता है। विद्यार्थियों को अपने घरों और आसपास के स्थानों का चित्र बनाने के लिए कहा जा सकता है। उन्हें अपने घरों के आसपास के पौधों, जानवरों, जल निकायों और बस स्टॉप, गौशाला, डाकघर जैसी संरचनाओं के नाम बताने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।	बच्चों से अपने परिवार के सभी सदस्यों की उम्र, वज़न और ऊँचाई को नोट करके उसे तालिकाबद्ध करने के लिए कहा जा सकता है। वे अपने परिवार के सदस्यों द्वारा की जाने वाली कुछ प्रमुख गतिविधियों और उन्हें करने के समय का कैलेंडर बना सकते हैं। उदाहरण के लिए वे सभी सदस्य कब जागते हैं? कब सोते हैं? कुछ बड़े बच्चे यह जानकारी बार ग्राफ में भी दिखा सकते हैं।

इस परियोजना के आकलन के लिए एक रूब्रिक बनाया जा सकता है, जिसके मापदण्ड विद्यार्थियों के साथ मिलकर तय किए जा सकते हैं।

एकीकृत परियोजनाओं के अलावा, शिक्षक विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के साथ वर्कशीट्स का उपयोग भी कर सकते हैं। इन वर्कशीट्स को स्व-अधिगम सामग्री के रूप में ऑफ़लाइन

भरा जा सकता है। शिक्षक को वर्कशीट्स में दिए गए प्रश्नों पर विद्यार्थियों के जवाबों की चर्चा आमने-सामने या ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान करनी चाहिए।

विद्यार्थियों को भी आत्म-आकलन करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। छोटे बच्चों के साथ स्माइली और इमोटिकॉन्स वाले सरल आकलन चेकलिस्ट का उपयोग किया जा सकता है। बड़े बच्चों के साथ अधिक विस्तृत चेकलिस्ट का उपयोग किया जा सकता है जो अधिगम के प्रतिफलों और उन पर विद्यार्थियों की निपुणता को निर्दिष्ट करें ताकि उन्हें अपनी प्रगति की निगरानी करने में मदद मिल सके। *अधिगम के रूप में आकलन* वाले दृष्टिकोण का उपयोग करने से शिक्षक इस बात में भी सक्षम होंगे कि वे विद्यार्थियों को अपने अधिगम का उत्तरदायित्व लेने में सशक्त बना सकें।

मेरी आत्म-आकलन चेकलिस्ट			
मुझे कविताएँ सुनाना पसन्द है।			
मुझे चित्र बनाना और उनमें रंग भरना पसन्द है।			
मुझे कंकड़ और पत्तियों की मदद से गिनती करना पसन्द है।			
मुझे पता है कि एक वृत्त कैसा दिखता है।			

ऑनलाइन कक्षाओं में, ई-पोर्टफोलियो बनाए रखने को प्रोत्साहित करना चाहिए। शिक्षक और विद्यार्थी ई-पोर्टफोलियो में व्यवस्थित रूप से अपने कार्यों का संकलन कर सकते हैं। इस अवधि के दौरान अपने अधिगम को दर्शा सकते हैं। ऐसा दस्तावेज़ शिक्षक के लिए विद्यार्थियों की प्रगति, उनकी खूबियों और सुधार के सम्भावित क्षेत्रों का विश्लेषण करने के लिए सबूत के रूप में भी काम करेगा।

पोर्टफोलियो में ये बातें शामिल की जा सकती हैं :

- ✓ विद्यार्थियों की वर्कशीट्स
- ✓ परियोजनाएँ
- ✓ शिक्षक द्वारा तैयार किए गए उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड
- ✓ कोई भी स्व-आकलन चैकलिस्ट/विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ

उपर्युक्त कार्यों को करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों में परीक्षाओं को लेकर कोई अनावश्यक तनाव न पैदा हो। इसलिए अंक या ग्रेड देने की बजाय, विद्यार्थियों को समय-समय पर उनके प्रदर्शन पर गुणात्मक टिप्पणियाँ दी जानी चाहिए। साल के अन्त में बच्चों का उत्तीर्ण होना इन गुणात्मक रिकॉर्ड्स पर आधारित होना चाहिए। सामग्री-विशिष्ट क्षेत्रों, कौशलों और प्रवृत्तियों के बारे में विद्यार्थियों की प्रगति का एक व्यापक मूल्यांकन माता-पिता और अभिभावकों के साथ साझा किया जाना चाहिए।

4. माता-पिता और अभिभावकों को शामिल करना

चूँकि आजकल बच्चे घर पर बहुत समय बिता रहे हैं, इसलिए उनके अधिगम में माता-पिता और अभिभावकों को रचनात्मक तरीकों से शामिल करना उपयोगी होगा। एक तरीक़ा यह हो सकता है कि माता-पिता और विद्यार्थियों के साथ कक्षा-उपयुक्त की सूची साझा की जाए। कई राज्यों ने माता-पिता और विद्यार्थियों के लिए अधिगम प्रतिफल पर आधारित आकर्षक पोस्टर तैयार किए हैं (डीएसईआरटी, कर्नाटक, 2018)। यह समय सामग्रियों को सक्रिय रूप से प्रसारित करने के लिए सही रहेगा। विद्यार्थियों को दी गई परियोजनाओं और अन्य दिए गए कार्यों में माता-पिता को सजग रूप से शामिल किया जा सकता है। लेकिन उन्हें बता देना चाहिए कि ये कार्य विद्यार्थियों को पूरे करने हैं, माता-पिता को केवल मदद करनी है। इस बात को बिल्कुल बढ़ावा नहीं देना चाहिए कि वे विद्यार्थी को दिए गए कार्य पूरा करने का प्रयास करें।

अन्त में

शिक्षा में शामिल सभी लोगों के लिए यह वर्ष बहुत कठिन रहा है। इसलिए जब तक स्कूल सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यक प्रोटोकॉल के साथ फिर से खुल नहीं जाते, तब तक जो भी सम्भावनाएँ उपलब्ध हैं, उन्हीं के माध्यम से शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ जारी रहेंगी। शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया प्रकृति में घनिष्ठ होती है। इसे देखते हुए यह बात महत्त्वपूर्ण है कि सप्ताह में कम से कम एक या दो बार सामुदायिक कक्षाएँ हों, विशेष रूप से प्रारम्भिक वर्षों के बच्चों के लिए। ऐसी सभी अन्तःक्रियाओं में, पाठ्यक्रम को कवर करने या पाठ्यपुस्तकों से पाठों को पूरा करने की बजाय, अधिगम प्रतिफल को सम्बोधित करने पर ध्यान देना चाहिए। शिक्षाशास्त्र और आकलन के दृष्टिकोण मज़बूत शैक्षिक सिद्धान्तों पर आधारित होने चाहिए न कि अपर्याप्त रूप से परिकल्पित अधिगम के समाधानों पर। हमें दृष्टिकोण की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करना होगा। साथ ही व्यवस्थित रूप से ऐसी सभी प्रक्रियाओं का निराकरण करना होगा जो शिक्षा को रोज़मर्रा की प्रक्रियाओं का एक निरर्थक समूह बनाकर रखने ज़िम्मेदार हो सकती हैं।

* Chomal, A. Summary of a panel presentation made at the MTA, 2nd Annual (online) Conference, *Theme- Mathematics Education during the pandemic- Issues, Challenges and Possible Solutions*, 5-6 September 2020.

References

Azim Premji University, 2020, *'Schools in the Times of COVID-19, What Matters and What We Should Do'*, May, 30th, 2020, downloadable at https://azimpremjiuniversity.edu.in/SitePages/pdf/Schools_in_the_times_of_COVID-19_May_30_Web_test_page.pdf

Azim Premji Foundation (2020), Field Research Group, Anecdotes from qualitative interviews conducted as part of an unpublished study on Remote Learning.

Chomal, A. 2020, *'Assessment Issues, Challenges and Solutions- in COVID 19 Pandemic'*, panel presentation, 2nd Annual (online) Conference, *Theme- Mathematics Education during the pandemic- Issues, Challenges and Possible Solutions*, 5-6 September.

Department of State Education Research and Training, Karnataka, Learning Outcomes for Parents, Students and Teachers, 2018-19, downloadable at http://www.dsert.kar.nic.in/easp/learning_material.asp

---



आँचल चोमल पिछले 14 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ हैं। वे रिसर्च एंड असेसमेंट विभाग की प्रमुख हैं। वे शिक्षा में अनुभवजन्य अध्ययन और विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रशिक्षकों और शिक्षण संस्थानों के लिए आकलन सम्बन्धी समाधान (रूपरेखा, उपकरण, पाठ्यक्रम, परामर्श) प्रदान करती हैं। उन्होंने सेंटर फॉर स्टडीज़ इन रीजनल डेवलपमेंट, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली से भूगोल में स्नातकोत्तर और कोलकाता के प्रेसीडेंसी कॉलेज से भूगोल में स्नातक डिग्री प्राप्त की है। उनसे **aanchal@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

भविष्य के लिए तैयार विद्यार्थी

अमिता वट्टल

वैश्विक महामारी के कारण जीवन जीने के तरीक़े में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया है- इसने आजीविका, स्वास्थ्य और रिश्तों को तो प्रभावित किया ही है लेकिन शिक्षा पर इसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है। परिणामस्वरूप बच्चे बहुत जल्दी बड़े हो गए हैं और रोज़मर्रा के जीवन की गतिविधियों में सामाजिक अन्त:क्रिया, रचनात्मक खेल और प्रकृति के बुनियादी अनुभवों को खो बैठे हैं। इनकी जगह स्क्रीन-टाइम ने ले ली है, जिसके चलते इन बच्चों के विकास से समझौता किया जा रहा है।

जब यह वास्तविकता समझ में आ गई कि निकट भविष्य में स्कूल नहीं खुलेंगे तो वर्ष की पहली तिमाही में अधिगम के लिए ऑनलाइन विधा का प्रयोग किया गया। यह तरीक़ा प्रत्येक शिक्षक की क्षमताओं पर निर्भर था क्योंकि प्रमाणन का कोई मॉडल हमारे सामने नहीं था।

एक समग्र दृष्टिकोण

ज्ञान निर्मित करने और विभिन्न अभ्यासों के निर्माण में विभिन्न सहयोगी दृष्टिकोणों के साथ प्रयोग किए गए। विद्यार्थियों ने पुष्टीकरण, चर्चा, विचारों को साझा करने, संसाधनों के एकाधिक विश्लेषण और शिक्षक के फ़ीडबैक के माध्यम से अपने स्वयं के ज्ञान का निर्माण किया।

एक ऐसे मंच का निर्माण हुआ जहाँ विद्यार्थियों ने अनुभव साझा किए, सिद्धान्तों व चुनौतियों पर चर्चा की और एक-दूसरे से सीखा। अब शिक्षकों पर ज्ञान प्रदान करने या सीखने के लिए संसाधन जुटाने की ज़िम्मेदारी नहीं थी, वरन अब वे सीखने के लिए एक मार्गदर्शक, सुगमकर्ता और आकलनकर्ता की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे। इस सहयोगात्मक वातावरण में ऑनलाइन कक्षाएँ अधिक सक्रिय हो गईं। विद्यार्थियों ने चर्चाओं, अनुस्तरण और शोध की सहायता से परियोजनाएँ बनाईं। शिक्षण वस्तुनिष्ठ था, व्यक्तिनिष्ठ नहीं। ऑनलाइन कक्षाएँ प्रतिस्पर्धी नहीं हैं क्योंकि प्रत्येक बच्चा स्वयं के लिए विषयवस्तु और अध्ययन की विधि को चुनता है।

समकालिक और असमकालिक अधिगम (Synchronous & Asynchronous Learning)

अधिगम दो स्तरों पर शुरू हुआ : *समकालिक* और *असमकालिक*। *असमकालिक* विधा में विद्यार्थियों ने पढ़कर और शिक्षकों के साथ साझा करके स्वयं अपनी परियोजनाएँ बनाईं। इसने ऑनलाइन क्विज़ और डेटा के ऑनलाइन स्टिमुलेशन का रूप लिया।

समकालिक विधा में वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग और साझा किए गए ऑनलाइन व्हाइटबोर्ड के माध्यम से चर्चा और प्रश्नों के स्पष्टीकरण किए गए। पॉडकास्ट और वेब चैट के माध्यम से विभिन्न विषयों (जैसे कि स्थायित्व [sustainability], सामाजिक भावनात्मक अधिगम, साइबर सुरक्षा, प्रतिरक्षा, स्वास्थ्य, सचेतनता, कला और पर्यावरण आदि) पर अपने अनुभवों को साझा करने के लिए विभिन्न विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया।

इस पद्धति ने एक अन्त: विषयक दृष्टिकोण बनाने में मदद की। शोध,100-पृष्ठ परियोजनाओं, प्रक्रिया-पुस्तकों, परियोजनाओं की पृष्ठभूमि के दस्तावेज़ीकरण, पोर्टफोलियो, स्व-निर्मित फ़िल्मों और वीडियो आदि के माध्यम से अधिगम अभिनव, अनुभवजन्य और आत्म-उन्मुख हो गया। इस माध्यम से, बच्चों ने ख़ुद अपना ज्ञान प्राप्त किया।

ऑनलाइन डिलीवरी के तरीक़े

समुदाय के प्रति प्रतिबद्धता

स्प्रिंगडेल्स स्कूल में अधिगम विभिन्न स्तरों पर किया जाता है क्योंकि हमारी कक्षाओं में एक विविधतापूर्ण समुदाय है। पिछले 40 वर्षों से स्कूल की संस्कृति यही रही है कि आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्गों के बच्चों को स्कूल में लाया जाए। निम्न आय-वर्ग के लगभग 800 विद्यार्थी हैं जो स्कूल की अलग-अलग कक्षाओं में पढ़ते हैं। इन्हें वही सुविधाएँ दी जाती हैं जो सुविधा-सम्पन्न पृष्ठभूमि से आए विद्यार्थियों को प्रदान की जाती हैं।

हमारे सामाजिक कार्यकर्ताओं और परामर्शदाताओं ने यह जानने के लिए टेलीफ़ोनिक सर्वेक्षण किया कि बच्चों के पास ऑनलाइन कक्षाओं के लिए फ़ोन या टैबलेट थे या नहीं। स्टाफ़ और पूर्व विद्यार्थियों ने धन-संग्रह कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों को फ़ोन और टैबलेट दिलवाए। साथ ही उनके ब्रॉडबैंड कनेक्शन का भुगतान भी किया – इस शर्त के साथ कि उनके माता-पिता इन उपकरणों का उपयोग नहीं करेंगे।

उपस्थिति

कक्षाओं में प्रतिदिन उपस्थिति की जाँच की गई। बच्चों की अनुपस्थिति पर तुरन्त कार्रवाई हुई, सूचना दी गई और परामर्शदाताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, सुपरवाइज़रों और यहाँ तक कि प्रधानाचार्य ने भी बच्चों के घरों में फ़ोन किए।

अधिगम के साधन के रूप में नए उपकरण

छोटे समूहों में सहयोग और चर्चाओं के लिए ब्रेकआउट रूम बनाए गए थे, ताकि दोपहर को, आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग के बच्चों के अधिगम में उनकी मदद की जा सके। परियोजना, फ़िल्म, वीडियो और रिसर्च मॉड्यूल बनाने में उनकी मदद की गई। ब्रेकआउट कमरों में बच्चों की सहायता करने के लिए शिक्षकों के साथ-साथ उनके साथी भी मेंटर (Mentor) के रूप में मौजूद रहते थे। इन सत्रों के अलावा हर शाम को मार्गदर्शन और शंका-निवारण के लिए वैयक्तिक रूप से बातचीत करने के लिए टेलिफ़ोनिक हेल्पलाइन बनाई गई थी।

आकलन

विषयों के लिए अंक निर्धारित नहीं किए गए थे, केवल ग्रेड दिए गए थे। अधिगम की चरणवार उत्तरोत्तर प्रगति को मापने के लिए विकास सोपान रूब्रिक्स (Growth Ladder Rubrics) आकलन का उपकरण बन गया। विद्यार्थियों ने अपनी कल्पना और मौलिकता से सार्थक एवं नए विचारों का निर्माण किया, सूचनाओं को सम्प्रेषित करने, बनाने और उन तक पहुँचने के लिए कई तकनीकों का उपयोग करके डिजिटल साक्षरता को समझा। विद्यार्थी समस्याओं को हल कर पा रहे थे और सहपाठियों के साथ मिल-जुल कर कार्य कर पा रहे थे। सार्थक ज्ञान को लागू कर रहे थे और अपने सीखने की रणनीति पर चिन्तन कर पा रहे थे। इससे उन्हें अपनी गति से अगले स्तर पर जाने और अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों का सह-निर्माण करने में मदद मिली।

'ओपन बुक' परीक्षा, साथियों, शिक्षकों और माता-पिता के अवलोकनों, पोर्टफ़ोलियो, फ़िल्म-सराहना और कहानी कहने के सत्रों के माध्यम से आकलन किया गया। शोध परियोजनाओं का उपयोग भी आकलन के उपकरण के रूप में किया गया था। सीखने की अपार सम्भावनाएँ खुल गईं, जो ईंट-पत्थर के बने स्कूल में इतने गहन स्तर पर शायद नहीं हो पातीं।

प्रत्येक बच्चे तक पहुँचना

वैश्विक महामारी ने विकलांग बच्चों को बहुत प्रभावित किया है। स्प्रिंगडेल्स स्कूल में विकलांग विद्यार्थियों की संख्या 400 से अधिक है। इनमें अपपठन (Dyslexia -डिस्लेक्सिया), डिस्केल्कुलिया(Dyscalculia),डिस्ग्राफ़िया (Dysgraphia), स्वलीनता (Autism-ऑटिज़्म) डाउन सिंड्रोम (Down Syndrome), प्रमस्तिष्क पक्षाघात (Cerebral Palsy- सेरेब्रल पाल्सी) और एस्परगर संलक्षण(Asparger's syndrome) जैसी कई प्रकार की समस्याएँ और अधिगम अक्षमताएँ हैं। स्कूल-परिवार की साझेदारी से उन्हें सहायता मिली। विशेष कक्षाओं, सुनियोजित हेल्पलाइन और मुख्यधारा की ऑनलाइन कक्षाओं में एकीकरण के द्वारा विकलांग बच्चों का समर्थन किया गया था। शिक्षक और माता-पिता दोनों के सामने तकनीकी जानकारी को लेकर एक समान चुनौतियाँ थीं, इसके बावजूद उन्होंने कड़ी मेहनत की।

वैश्विक महामारी के कारण, व्यावसायिक शिक्षा,स्पीच तथा व्यवहार सम्बन्धित विशेषज्ञ शिक्षक, व्यक्तिगत रूप से बच्चों से मिल नहीं पा रहे थे और इसलिए माता-पिता और शिक्षकों को कई अलग-अलग भूमिकाएँ निभानी पड़ीं। इस खाई को पाटने के लिए स्कूल के शिक्षकों ने माता-पिता को हेल्पलाइन के माध्यम से चिकित्सकों के साथ जुड़ने में सहायता की ताकि वे अपने बच्चों की मदद कर सकें।

जिन बच्चों को स्क्रीन के सामने बैठने में परेशानी या स्क्रीन इन्टॉलरेन्स होती थी, उन बच्चों की मदद के लिए माता-पिता भी उनके साथ ऑनलाइन कक्षाओं में बैठे। यह एक बड़ी चुनौती साबित हुई क्योंकि इनमें से बहुत कम बच्चे स्क्रीन के सामने बैठने के लिए तैयार या स्क्रीन रेडी थे।

बाधाएँ और समाधान

वैश्विक महामारी के तनाव के परिणामस्वरूप कई बच्चे मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी गम्भीर समस्याओं, अकेलेपन, अवसाद और दुष्चिन्ताओं से गुज़र रहे थे। यह बात प्रमस्तिष्क पक्षाघात वाले बच्चों पर विशेष रूप से लागू होती थी। भाषा सम्बन्धी विकलांगता वाले बच्चे स्थिति को समझने में होने वाली कठिनाइयों के कारण नकारात्मक रूप से प्रभावित हुए थे। कुछ परिस्थितियाँ ऐसी भी थीं जिनमें विकलांग बच्चों के साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा था और उनकी उपेक्षा की जा रही थी। इन बच्चों का समर्थन करने के लिए विशिष्ट मनोवैज्ञानिकों और स्कूल परामर्शदाताओं द्वारा परामर्श सत्र आयोजित किए गए।

हमें इस बात का अहसास हुआ कि विकलांग विद्यार्थियों की एक नियत दिनचर्या होती है। उन्हें अपने संवेदी एकीकरण कार्यक्रम (sensory integration program) के लिए नियमित व्यावसायिक उपचारात्मक इनपुट की आवश्यकता होती है, इसलिए हमने सहायक तकनीकों की शुरुआत की, जिससे अध्ययन सामग्री तक पहुँच बढ़ गई। श्रवण दोष वाले बच्चों की मदद करने के लिए संकेत शिक्षण (sign teaching)

और स्पीच सॉफ़्टवेयर का उपयोग किया गया।

परामर्शदाताओं ने माता-पिता को इस मुद्दे के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए उनके साथ कार्यशालाएँ आयोजित कीं। ताकि वे अपने बच्चों को घरेलू कामों में शामिल कर सकें क्योंकि इससे जीवन-कौशल के निर्माण में मदद मिलती है। विकलांग बच्चों ने बर्तन धोने, खाने की टेबल लगाने, पौधों को पानी देने, कपड़ों की तह लगाने जैसे कार्य शुरू किए जिससे उनमें ज़िम्मेदारी और भागीदारी की भावना विकसित हुई। माता-पिता के लिए व्यक्तिगत गृह-कार्यक्रम बनाए गए थे। वर्कशीट्स और व्यवहार-संशोधन से सम्बन्धित योजनाओं को उनके घर पर भेजा गया। जो माता-पिता भावनात्मक कशमकश से गुज़र रहे थे उनकी सहायता के लिए हेल्पलाइन की व्यवस्था की गई।

यह कार्य लगातार किए जाते रहे - बच्चों और माता-पिता के लिए परामर्श सत्र बनाना, बच्चों को उनकी नियमित शिक्षण कक्षाओं में ट्रैक करना और कक्षाओं के बाद कौशल-निर्माण सत्रों की सहायता से कार्य को आगे बढ़ाना तथा उपचारात्मक कार्यों में मदद करना।

प्रौद्योगिकी को मानवीय बनाना

एक स्कूल के रूप में हमने यह सुनिश्चित किया कि ऑनलाइन बिताया गया समय निष्क्रिय न होकर सक्रिय और उत्पादक हो। हमने ऑनलाइन सामग्री को मानवीय बनाने की अपनी रणनीतियों की समीक्षा की। व्यक्ति आधारित अधिगम, कक्षागत प्रक्रियाओं का अभिन्न अंग बन गया।

हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि पाठ्यक्रम की विषय-सामग्री को छोटे घटकों में कैसे विभाजित किया जाए। यह कार्य विषयों की अवधारणा-आधारित समझ के माध्यम से किया गया। बच्चों को पाठ की बजाए क्षमता-आधारित अधिगम के माध्यम से पढ़ाया गया, जिससे उन्होंने जो कुछ भी सीखा, उसकी गहरी समझ उन्हें मिली।

हमने देखा की शुरुआती कक्षाओं में पढ़ने वाले छोटे बच्चे अपने पाठों के लिए स्क्रीन समय नहीं दे पा रहे थे, इसलिए हमने एल्यूमीनियम के छोटे डिब्बों को रंगा और उनमें कई वर्कशीट्स, देशी खिलौने, ड्राइंग की सामग्री, प्ले-डो (Play Doh) और अन्य संसाधनों को रखा, जिनसे बच्चा महीने भर के लिए व्यस्त रह सके। इन डिब्बों को उनके घर भेजा गया। इसे हमने मैजिक बॉक्स नाम दिया। इससे नर्सरी और किंडरगार्टन के विद्यार्थियों को ऑफलाइन सीखने में मदद मिली। इसने विद्यार्थियों में अपनी सामग्री के प्रति स्वामित्व की भावना भी पैदा की। शिक्षक रोज़ाना बीस मिनट के लिए माता-पिता के साथ ऑनलाइन जुड़ते थे और बच्चों के लिए मैजिक बॉक्स के उपयोग के बारे में बताते थे। इस पूरी भागीदारी ने स्क्रीन-टाइम से दूर रहने और अनुभवात्मक अभ्यासों के माध्यम से माता-पिता और बच्चे के बीच सम्बन्ध बनाने में मदद की।

हमने *डिजिटल करने (doing digital)* और *डिजिटल होने (being digital)* के बीच के अन्तर को पहचाना। *डिजिटल करना* यानी विद्यार्थियों को घर से ऑनलाइन सीखने में सक्षम बनाना जबकि *डिजिटल होने* का मतलब है एक ऐसी प्रणाली का उपयोग करना जो प्रौद्योगिकी के लाभों को हमारे सामने खोले। हम तकनीकी समर्थित शिक्षण के बारे में *सोचने* से आगे बढ़े और इसकी वास्तविक क्षमता के विस्तार को समझा। इसलिए, हम बच्चे की गति, योग्यता, अनुभव, पूर्व-ज्ञान, दक्षताओं और खूबियों के आधार पर सांस्कृतिक और डिजिटल दोनों ही तरीक़ों से ख़ुद को एक विद्यार्थी-केन्द्रित अधिगम चैनल के रूप में बदल पाने में सक्षम हुए। कक्षा में पढ़ाने और साथ ही विद्यार्थियों की प्रगति के विश्लेषण के नए तरीक़ों की कल्पना की गई। शिक्षार्थियों ने एक समुदाय की तरह काम किया और अन्तःक्रियाओं का आनन्द लिया, साथ-ही-साथ उन अनुभवों का भी लाभ उठाया जो विशेष तौर पर उनके लिए निर्मित किए गए थे। शिक्षण में असमानता को डिजिटल अधिगम-तकनीकों के माध्यम से सम्बोधित किया गया था।

एक स्कूल के रूप में, हमने अपने शिक्षण और अधिगम की प्रक्रियाओं में उद्देश्य और मानवता को लागू करने की कोशिश की है क्योंकि अधिगम को बैच-प्रोसेस्ड टेस्टिंग और रैंकिंग से आगे बढ़ना चाहिए। हमारा मानना है कि हम उस परिवर्तन के इस अवसर को अनदेखा नहीं कर सकते हैं जो अगले 50 वर्षों तक हमारी शिक्षा प्रणालियों को आकार देगा। हमने सीखा कि विद्यार्थी उच्चतर चिन्तन-कौशल में महारत हासिल करते हैं क्योंकि, आज, *जो बात मायने रखती है वह यह नहीं है कि विद्यार्थी क्या जानते हैं, बल्कि यह है कि वे उस ज्ञान को कैसे लागू करते हैं।*

नवाचार

हमने शिक्षा के वर्ज़न 4.0 में जाने का प्रयास किया, जिसमें 21वीं सदी के कौशल, अधिगम का केन्द्रबिन्दु बने। हमने टेक्स्ट चैट की शुरुआत की, जो खुली चर्चाओं के साथ-साथ चली, अतः कक्षा की रुचि बनी रही। आकर्षक और सटीक पॉवर पॉइंट प्रस्तुतियाँ/स्लाइड, वीडियो बनाए गए, जो गतिविधियों पर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हैं। शिक्षकों ने सुनिश्चित किया कि सामग्री मात्रात्मक के बजाय गुणात्मक हो जो विद्यार्थियों को सार्थक जानकारी देने में मदद करे। स्क्रीन टाइम का उपयोग, विशेष रूप से एक-एक विद्यार्थी के साथ अन्तःक्रिया के लिए किया गया ताकि आक्रामक खेल, इंटरनेट ब्राउज़िंग और वीडियो देखने को रोका जा सके।

इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों की ईमानदारी को बनाए रखने के लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच होने वाले सम्पर्क के घण्टों पर पुनर्विचार करके शिक्षक तथा विद्यार्थी के बीच मजबूत सम्बन्ध बनाए गए। जिन असाइनमेंट में विद्यार्थियों द्वारा नकल या बेईमानी करने की सम्भावना होती है, उन्हें फिर से जाँचा गया ताकि इस तरह के गलत अभ्यासों को कम किया जा सके। जिन प्रश्नों के आधार पर बच्चों का आकलन किया गया था, वे अनुप्रयोगों और चिन्तन पर आधारित थे न कि रटकर सीखने पर।

वैश्विक महामारी के दौरान, हमने विद्यार्थियों और शिक्षकों की आवाज़ और एजेंसी यानी उनके कर्तृत्व को सुनिश्चित करके एक मज़बूत संगठनात्मक संरचना विकसित की है। हमने माता-पिता और समुदाय के साथ रिश्तों को मज़बूत किया है, व्यावसायिक विकास एवं परिवर्तनकारी अधिगम के लिए अवसरों का सृजन किया और समावेशन व विविधता की भावना को विकसित किया है। हमारे शैक्षणिक अभ्यास स्थायित्व और भलाई का समर्थन करने वाले थे और वे सहयोगात्मक रणनीतियों से प्रभावित थे। हमने समग्र दृष्टिकोण अपनाया था और उसमें अन्वेषण आधारित रणनीतियों (enquiry based strategies) तथा विद्यार्थी केन्द्रित विभेदित अधिगम को लेकर प्रतिबद्धता थी।

स्कूल और समुदाय ने ऐसे अभ्यासों का प्रदर्शन किया जिन्होंने विद्यार्थियों और शिक्षकों की भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक भलाई का विकास किया। हमने वर्चुअल (आभासी) रूप से स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रमों, प्रार्थना सभाओं, अवलोकनों, स्मृति सभाओं का आयोजन किया एवं नृत्य, संगीत, कला, रंगमंच, खेल के माध्यम से सभी त्योहारों को मनाया। कक्षाओं में प्रभावी सम्प्रेषण निर्मित कर मानव स्वास्थ्य व प्रकृति, ख़ुशी व भलाई के आपसी सम्बन्ध को ख़ोजा। कविता पाठ, स्टैंड-अप कॉमिक शो, भाषण, वाद-विवाद, पर्यावरण दिवस, व्यक्तित्व और वक्तृता-विकास के सत्र भी आयोजित किए गए।

हर बच्चा महत्त्वपूर्ण है

वैश्विक महामारी जारी रही और हम बिना रुके और अपरिवर्तनीय रूप से एक अलग प्रकार के स्कूल बन गए। शिक्षण और अधिगम को पूरी तरह से बदल दिया गया है। ऑनलाइन कक्षाओं ने विद्यार्थियों को व्यक्ति आधारित अधिगम का अनुभव दिया है।

अपने समुदाय में सुविधाप्राप्त और कम सुविधाप्राप्त पृष्ठभूमि वाले लोगों के बीच कोई भी भेदभाव न आने पाए, इसके लिए हमने गुणवत्ता की अपनी परिभाषा को लगातार संशोधित किया और समता एवं अवसर का एक आदर्श निर्मित किया।

यदि स्कूल, प्रौद्योगिकी को व्यक्ति आधारित बनाए और समयोचित फ़ीडबैक दे तो यह प्रत्येक विद्यार्थी के सामर्थ्य को बढ़ाती है। यह उन विद्यार्थियों की पहचान करने में मदद करती है जिन्हें सीखने में परेशानी हो रही है और जिन पर अतिरिक्त ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारे आकलन का मॉडल विद्यार्थी-केन्द्रित है जिसमें सामाजिक और भावनात्मक भलाई अनिवार्य रूप से शामिल है और जो शिक्षकों को, विद्यार्थियों की रुचि व सीखने की इच्छा को समझने में मदद करता है। भविष्य पर पुनर्विचार करके, साहस और प्रतिबद्धता के माध्यम से हमने अपने स्कूल को एक बड़े पारिस्थितिकी तंत्र में बदल दिया है जो मानवीय भी है और शिक्षाप्रद भी।



अमिता वट्टल स्प्रिंगडेल्स स्कूल, पूसा रोड और कीर्ति नगर, नई दिल्ली की प्राचार्या; स्प्रिंगडेल्स स्कूल, जयपुर की प्रबन्धक और स्प्रिंगडेल्स स्कूल, दुबई की संस्थापक प्राचार्या व कार्यकारी सदस्य और ग्लोबल इंक्लूसिव एजुकेशन नेटवर्क (GIEN) की अध्यक्ष हैं। उन्होंने शिक्षा, रचनात्मक कला, विशेष शिक्षा, कम्यूनिकेटिव इंग्लिश, स्ट्रीट थियेटर, महिलाओं की शिक्षा, शान्ति अध्ययन और पाठ्यचर्या विकास के क्षेत्र में चार दशकों से भी अधिक समय तक काम किया है। कई अन्य पुरस्कारों के साथ वे राष्ट्रपति के हाथों दिया जाने वाला प्रतिष्ठित राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार भी प्राप्त कर चुकी हैं। उनसे **ameetam@gmail.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

न्यू नॉर्मल पर उठते प्रश्न | ऑनलाइन अधिगम

बी.एस. ऋषिकेश

जब से कोविड-19 वैश्विक महामारी आई है, तब से हमारे शब्द संग्रह में एक नया वाक्यांश जुड़ गया है और वह है – *न्यू नॉर्मल* और इसका प्रयोग कई चीज़ों के लिए किया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में तो यह बड़ी तेज़ी से सुनाई देने लगा है, ख़ासकर स्कूलों के सन्दर्भ में। इस लेख में यह पता लगाने का प्रयास किया गया है कि क्या वर्तमान समय के शैक्षिक प्रयास को 'सामान्य' माना जा सकता है और क्या उसे '*न्यू नॉर्मल*' कहा जा सकता है।

न्यू नॉर्मल

आइए बहुत संक्षेप में, स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में इस *न्यू नॉर्मल* का पता लगाएँ। सरल शब्दों में कहें, तो यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थी नियमित पाठ्यक्रम-आधारित सामग्री का उपयोग करते हैं। जिसे या तो उनके शिक्षकों द्वारा लाइव प्रसारित किया जाता है *(समकालिक विधा)* या स्कूल ध्यानपूर्वक बनाई गई सामग्री को रिकॉर्ड करके अपने डिजिटल साधन के माध्यम से भेजते हैं *(असमकालिक विधा)*। इन दोनों विधियों में विद्यार्थी विषय-सामग्री के सम्पर्क में तो आते हैं, लेकिन उससे सम्बन्धित सार्थक चर्चा या रचनात्मक जुड़ाव नहीं हो पाता।

हाँ, समकालिक विधा में कुछ शिक्षक विद्यार्थियों को चर्चा में शामिल करने का प्रयास करते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से वह सतही स्तर पर रहता है। पिछले कुछ महीनों के अपने व्यक्तिगत अनुभव को देखते हुए मेरा मानना है कि शिक्षक अपनी चर्चाओं में गहराई से जाने में इसलिए असमर्थ हैं क्योंकि इस विधा की कई सीमाएँ हैं। जिसने भी *न्यू नॉर्मल* के पिछले कुछ महीनों में पढ़ाया है, वे इस बात से सहमत होंगे कि अधिगम के लिए प्रौद्योगिकी आधारित तरीक़ों की अपनी सीमाएँ हैं। सामान्य तरीक़े यानी आमने-सामने बैठकर पढ़ाने वाले तरीक़े का अनुकरण सम्भव नहीं है, विशेष रूप से नियमित आकार वाली कक्षा के साथ। इसलिए यह पता लगाने के लिए कि क्या यह वाकई न्यू नॉर्मल है, हमें निम्नलिखित प्रश्न पूछने होंगे :

- इस तरह के अभ्यास के अधिगम प्रतिफल क्या हैं? इससे विद्यार्थियों को कितना फ़ायदा होता है?
- क्या इसे उपयोग करने के अवसर सबके लिए समान हैं? क्या सीखने के इच्छुक सभी विद्यार्थियों को यह उपलब्ध है?
- क्या *न्यू नॉर्मल* अधिगम के लिए अच्छा अनुभव है? क्या यह शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करता है? क्या इसे वास्तव में एक सामान्य शैक्षिक प्रयास माना जा सकता है?

आइए, हम संक्षेप में पिछले कुछ महीनों के अनुभव एवं स्कूली शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग पर हुए शोध के आधार पर *न्यू नॉर्मल* के बारे में पड़ताल करें।

प्रौद्योगिकी और अधिगम के प्रतिफल

शिक्षा देने के लिए *न्यू नॉर्मल* पूरी तरह से प्रौद्योगिकी-आधारित मंचों पर निर्भर है और स्कूलों ने इसे भविष्य के साधन के रूप में देखना शुरू कर दिया है। कुछ सुने-सुनाए प्रसंगों से पता चला है कि स्कूल के प्रमुख यहाँ तक कह रहे हैं कि,'इस महामारी को धन्यवाद कि हम इन तरीकों को अपना रहे हैं, अन्यथा यह स्थिति एक दशक बाद आई होती!'

सच किसी से छिपा नहीं है। कोई समाज कितना भी समृद्ध और विकसित क्यों न हो, इस महामारी से पहले उसने अपनी स्कूली शिक्षा को पूरी तरह से प्रौद्योगिकी पर आधारित नहीं किया था, जो इस बात का एक स्पष्ट संकेत है कि शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग के बारे में एक परिपक्व शिक्षा प्रणाली क्या सोचती है।

यह विचार गम्भीर शोध द्वारा भी समर्थित है। अध्ययनों से पता चला है कि विद्यार्थियों द्वारा कंप्यूटर का उपयोग उनके अधिगम को सकारात्मक रूप से प्रभावित नहीं करता है। सच पूछा जाए तो उनके प्राप्तांकों में हुई गिरावट इस बात का सबूत है। इस मुद्दे की गहराई में गए बिना ही हमें इस विश्लेषण से यह तो पता चलता है कि प्रौद्योगिकी पर आधारित अधिगम के तरीक़े ऐसे समाधान नहीं हैं जिनके समर्थन के लिए धन और प्रयास ज़ाया किए जाएँ।

एक और अन्तर्दृष्टि यह है कि प्रौद्योगिकी अपने आप में कोई रामबाण नहीं है - प्रौद्योगिकी का उपयोग केवल सहायता के रूप में किया जा सकता है। उसकी प्रभाविता के लिए भी कई अन्य कारकों की आवश्यकता होती है। वर्तमान में इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि पूरी तरह से प्रौद्योगिकी पर आधारित मंच अधिगम के वांछनीय परिणाम नहीं देते हैं।

प्रौद्योगिकी तक पहुँच

न्यू नार्मल न केवल मशीनों और अन्य सुविधाओं पर आधारित है जैसे कि स्थाई बिजली और इंटरनेट, बल्कि विद्यार्थियों को कई अन्य शर्तें भी पूरी करनी होती हैं। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों को अपने लिए व्यक्तिगत स्थान की आवश्यकता होती है, तभी वे इस तरीक़े का पूरा लाभ उठा सकते हैं। छोटे बच्चों को अपने अभिभावक की मदद की भी ज़रूरत पड़ती है। ये बातें आसान लग सकती हैं, लेकिन समाज के केवल कुछ ही बच्चे इनके खर्चे उठा सकते हैं, विशेष रूप से हमारे जैसे समाजों में। इसलिए क्या यह शिक्षा उतनी ही *समतामूलक* है, जितनी कि विद्यालय स्तर पर दी जाने वाली कोई भी शिक्षा होनी चाहिए? यह तय करने के लिए, उपलब्ध आँकड़ों को देखना महत्त्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (नेशनल सैंपल सर्वे ऑफिस) के सर्वेक्षण के आँकड़ों से पता चलता है कि भारत में प्रौद्योगिकी की पैठ इतनी कम है कि ऑनलाइन विधा के ज़रिए स्कूली शिक्षा को चलाने की सोच बिल्कुल असमान तरीक़े से काम करेगी। केवल 25 प्रतिशत भारतीय घरों में इंटरनेट कनेक्शन हैं और इनमें से 5 से 24 वर्ष के आयु वर्ग के केवल आठ प्रतिशत विद्यार्थियों के पास निजी डिजिटल उपकरण और इंटरनेट कनेक्शन हैं। दूसरी बात, हालाँकि लगभग सभी गाँवों का विद्युतीकरण हो गया है, लेकिन देश के आधे से भी कम घरों में दिन भर में 12 घण्टे से अधिक बिजली की आपूर्ति नहीं होती है। इस असमान स्थिति को देखते हुए, प्रौद्योगिकी पर आधारित *न्यू नार्मल* सामान्य नहीं हो सकता, हाँ अगर स्कूली शिक्षा के लिए *समतामूलक* पहुँच की अवधारणा को आसानी से नज़र अन्दाज़ कर दिया जाए तो बात और है।

शैक्षिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना

न्यू नार्मल में एक नियमित कक्षा का व्यवस्थापन हो रहा है, लेकिन उसमें बहुत से शैक्षिक पहलू गायब हैं। तर्क यह दिया जा सकता है कि हमारे देश में सामान्य समय में भी कई कक्षाएँ इसी तरह संचालित की जाती रही हैं। मैं इस तर्क से सहमत हूँ, लेकिन क्या यह *न्यू नार्मल* शिक्षा का आदर्श रूप होना चाहिए? यह सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है और इसे एक सामान्य शैक्षिक प्रयास मानने के लिए इस पर गम्भीरता के साथ सोच-विचार करना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मसौदे (जिसमें से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 निकलकर सामने आई है) में कहा गया है कि शिक्षा का परिणाम 'मानव व्यक्तित्व का पूर्ण विकास' होना चाहिए तथा वह उसमें एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना है जो 'हमारे राष्ट्र को एक न्यायसंगत और जीवन्त ज्ञान समाज में लगातार बदलने में सीधे योगदान दे।' यह 1996 में यूनेस्को के इंटरनेशनल कमीशन ऑन एजुकेशन फॉर द ट्वेंटीफर्स्ट सेंचुरी (जैक्स डेलर्स की अध्यक्षता में) द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट को भी सन्दर्भित करता है, जिसमें यह तर्क दिया गया है कि पूरे जीवन की शिक्षा चार स्तम्भों पर आधारित है :

- *जानने के लिए सीखना*, यानी ज्ञान प्राप्त करना और यह सीखना कि सीखते कैसे हैं।
- *करना सीखना*, यानी कई प्रकार के कौशल प्राप्त करना जो व्यक्ति को कामकाजी जीवन की विभिन्न चुनौतियों से निपटने में सक्षम बनाते हैं।
- *एक साथ रहना सीखना*, यानी अनेकतावाद, आपसी समझ और शान्ति के लिए सम्मान की भावना विकसित करना।
- *होने के लिए सीखना*, यानी व्यक्तित्व को विकसित करना और स्वायत्तता, निर्णय और व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी के साथ कार्य करने में सक्षम होना।

इन सबके साथ यह भी सुनिश्चित करना कि शिक्षा किसी व्यक्ति की क्षमता के किसी भी पहलू, स्मृति, तर्क, सौन्दर्य बोध, शारीरिक क्षमता और सम्प्रेषण कौशल की उपेक्षा न करे।

न्यू नार्मल का बेहतरीन कार्यान्वयन भी उस तरह की शिक्षा प्रदान करने में असमर्थ होगा जो डेलर्स समिति द्वारा सुझाए गए सीखने के चार स्तम्भों को समाहित कर पाए, जिसे 21वीं सदी के सीखने की आधारशिला के रूप में व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है। स्कूल स्तर पर अच्छी शिक्षा से यह अपेक्षित है कि वह ऊपर बताए गए उद्देश्यों को पूरा करे, जो मनुष्य के बौद्धिक, नैतिक और सौन्दर्य विकास को सम्बोधित करे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा शिक्षा के व्यापक और स्पष्ट नज़रिए को बताता है जिसमें विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास शामिल है, विशेष तौर पर प्रत्येक व्यक्ति की रचनात्मक क्षमता का विकास - उसकी सम्पूर्ण समृद्धि और जटिलता के साथ, हाल के वर्षों में तेज़ी से लोकप्रिय हुआ है। इसमें आगे कहा गया है कि विद्यार्थियों को न केवल संज्ञानात्मक कौशल विकसित करना होगा, बल्कि सामाजिक और भावनात्मक कौशल का विकास भी करना होगा। जिसमें सांस्कृतिक जागरूकता और समानुभूति, दृढ़ता और धैर्य, टीम वर्क और नेतृत्व शामिल हैं। इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए मुख्य बात यह है कि मनुष्य की शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया होनी चाहिए, जिसमें अन्य लोग भी शामिल हों, वह भी एक ऐसे वातावरण में जहाँ सभी इन्द्रियबोध सक्रिय और इष्टतम हों।

सरलीकृत समाधान

महामारी के दौरान, हमारे देश के अधिकांश स्कूलों और

सार्वजनिक-स्कूल प्रणाली ने शिक्षा प्रदान करने के लिए इंटरनेट-आधारित मंच का उपयोग करते हुए, स्कूल के नियमित कार्यकलापों को ऑनलाइन करने के अति सरल समाधान को अपनाया है। यह किसी भी अच्छी स्कूली शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उपयुक्त नहीं है क्योंकि यह एक ऐसी विधा है, जो सामग्री को रोचक तरीक़े से प्रस्तुत तो कर सकती है, लेकिन इन मंचों पर जुड़ाव के जो उपकरण मौजूद हैं, वे शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से संलग्न करने के लिए अपर्याप्त हैं। जब ऐसा होता है, तो फिर यह शिक्षा नहीं है। और जब यह शिक्षा नहीं है, तो इसे सामान्य नहीं माना जा सकता है - बल्कि, यह एक असामान्य स्थिति है और सामान्य स्थिति में वापसी तक ऐसा ही रहेगा। इसलिए सवाल यह है कि विद्यार्थियों के सीखने के बारे में क्या किया जाए?

दीर्घकालिक प्रभाव

ब्राउन, वर्जीनिया और हार्वर्ड [i] के विद्वानों के हालिया शोध से संकेत मिलता है कि संयुक्त राज्य अमरीका में विद्यार्थी महामारी से सम्बन्धित व्यवधानों के कारण अपने सीखने के अपेक्षित स्तर से पीछे हो गए हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इन अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि ऑनलाइन शिक्षा के बावजूद अधिगम का स्तर गिर रहा है। ब्राउन और वर्जीनिया विश्वविद्यालय के विद्वानों [ii] द्वारा दिए गए पेपर का सुझाव है कि पठन सीखने में यह गिरावट, अपेक्षित अंकों की एक तिहाई और गणित में यह गिरावट अपेक्षित अंकों की लगभग आधी हो सकती है। इसके अलावा एक और महत्त्वपूर्ण बात मैकिन्से [iii] अध्ययन में कही गई है कि सीखने की कमी के कारण जो नुकसान हुआ वह जीवन भर साथ रह सकता है। यह स्पष्ट है और साथ ही सिद्ध भी हो चुका है कि संयुक्त राज्य अमरीका में वंचित और हाशिए के समुदायों पर सबसे अधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ा है जैसे ब्लैक और हिस्पैनिक विद्यार्थी। भारत में भी वंचित विद्यार्थियों पर ऐसा ही नकारात्मक प्रभाव पड़ने वाला है।

हमारे देश के लिए यह सब गम्भीर नुक़सान हैं, क्योंकि हमारे यहाँ अधिगम का निम्न स्तर यूँ भी एक समस्या है। हम केवल कल्पना कर सकते हैं कि हमारे स्कूलों के लगभग 30 करोड़ विद्यार्थियों के लिए इसका क्या मतलब है। इनमें से कई विद्यार्थी दिन में एक बार मिलने वाले मध्याह्न भोजन से भी हाथ धो बैठे हैं जो उन्हें स्कूल में मिलता था।

इसलिए, यह स्पष्ट है कि संरचित अधिगम आवश्यक है। बच्चों को केवल जीवित रहते हुए सीखने देना, या अपने अब तक के जीवन के अनुभवों से सीखने देना किसी भी तरह से पर्याप्त नहीं है। वर्तमान समय में जिन बच्चों को सीखने के संरचित माहौल में शिक्षा नहीं दी जा रही है, उनके अधिगम में जो कमियाँ रह जाएँगी, उसका प्रभाव बड़े होने पर उनकी आजीविका के अवसरों पर पड़ेगा। यह ज़रूरी है कि अधिगम के पर्याप्त अवसर सुनिश्चित किए जाएँ। इस सन्दर्भ में यह महत्त्वपूर्ण है कि गैर-प्रौद्योगिकी-आधारित समाधान विकसित किए जाएँ ताकि जिन विद्यार्थियों की पहुँच तकनीकी संसाधनों तक नहीं है, उन्हें भी सीखने के अवसर प्रदान किए जा सकें।

यदि एक ओर वंचित विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करना महत्त्वपूर्ण है तो दूसरी ओर यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि जो विद्यार्थी ऑनलाइन मंच पर हैं, उन्हें सन्तुलित शिक्षा प्रदान की जाए। बच्चे के सर्वोत्तम हित को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेने होंगे, जिसमें न केवल उसके सीखने की ज़रूरतें, बल्कि उसके स्वास्थ्य के साथ-साथ सामाजिक-भावनात्मक भलाई भी शामिल हो। भले ही प्रौद्योगिकी-आधारित विधा का उपयोग किया जाए, लेकिन यह भी ज़रूरी है कि इन बातों पर विचार किया जाए : प्रतिदिन स्क्रीन पर बिताए जाने वाले समय की अधिकतम अवधि, विद्यार्थी द्वारा तकनीकी उपकरण के उपयोग की बारम्बारता, अन्तःक्रियात्मक सत्र के लिए विभिन्न मंचों की उपयुक्तता, अभिभावकों द्वारा निगरानी की आवश्यकता, विभिन्न आयु समूहों के लिए अलग-अलग मापदण्ड, समकालिक विधा में क्या और असमकालिक विधा में क्या हो सकता है, क्या वह सक्रिय अधिगम हो या निष्क्रिय आदि।

व्यावहारिक समाधान

दुनिया भर के सर्वोत्तम अभ्यासों का सुझाव है कि जब तक नियमित स्कूल शुरू न हों, तब तक विभिन्न तरीकों का उपयोग करना चाहिए और उस मिश्रित तरीक़े को काम में लाना चाहिए। अधिगम की मिश्रित रणनीतियों में समकालिक (या लाइव) और असमकालिक (या रिकॉर्ड की गई) प्रौद्योगिकी-आधारित अधिगम का मिश्रण और साथ में विद्यार्थियों का अपने समुदाय के सहपाठियों के साथ छोटे-छोटे समूहों में आमने-सामने की चर्चाएँ करना भी शामिल है। ये रणनीतियाँ आवश्यक हैं क्योंकि प्रौद्योगिकी के प्रश्न से परे शैक्षिक प्रक्रियाओं का प्रश्न है। यह सुनिश्चित करना महत्त्वपूर्ण है कि शिक्षा, जहाँ तक सम्भव हो, वांछित स्तर के काफ़ी क़रीब हो। नियमित पाठ्यक्रम या इसका केवल एक छोटा हिस्सा इस समय की माँग नहीं है। विद्यार्थियों की ज़रूरतें अलग-अलग होती हैं, और स्कूलों को उनका जवाब शैक्षिक रूप से सार्थक तरीक़े से देना चाहिए न कि किसी सरल तरीक़े से जैसा कि आजकल अधिकतर स्कूलों में दिखाई दे रहा है।

चूँकि प्रत्येक बच्चे के पास डिजिटल संसाधन नहीं होते हैं, अतः कई विकल्प उपलब्ध कराने होंगे। ताकि शिक्षा के नाम पर विद्यार्थियों को वंचित न किया जाए और हमारे पहले से

ही नाज़ुक और असमान समाज में और दूरियाँ न पैदा हों। कई दिशानिर्देश विकसित हुए हैं। हमारे देश की केन्द्रीय अकादमिक संस्था, एनसीईआरटी ने प्रज्ञता (PRAGYATA) नामक दिशानिर्देश तैयार किए हैं जिसमें आठ विशिष्ट चरणों के बारे में विस्तार से बताया गया है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को सीखना जारी रखने में सक्षम बनाने के लिए भारी प्रयास की आवश्यकता है।

इन दिशानिर्देशों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि इस समय विद्यार्थियों पर विषय-सामग्री का बोझ डालने की बजाय कौशल निर्माण पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। उदाहरण के लिए सीखने को सीखना - यह कौशल इस समय काफ़ी महत्त्व का है क्योंकि विद्यार्थियों के लिए सीखना जारी रखने के लिए आत्म-अधिगम एक महत्त्वपूर्ण घटक है। इसी सन्दर्भ में हमें आकलन के बारे में भी फिर से कल्पना करनी होगी।

विद्यागमा

कर्नाटक शिक्षा विभाग ने वैज्ञानिक रूप से विकसित अधिगम के एक मिश्रित कार्यक्रम का निर्माण किया है। ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सार्वजनिक स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के पास महामारी के दौरान भी अधिगम का औपचारिक माहौल हो। यह एक उत्कृष्ट अभ्यास है और इस प्रयोग से मिली सीख के आधार पर इसे देश भर में लागू किया जा सकता है।

इस कार्यक्रम का निर्माण समग्र शिक्षण कर्नाटक (एसएसके) तथा राज्य शिक्षा अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण विभाग (डीएसईआरटी) कर्नाटक द्वारा किया गया था और इसमें सीखने के लिए कई चैनल शामिल हैं, जैसे यू-ट्यूब चैनल - जिनका उपयोग स्मार्टफ़ोन की मदद से किया जा सकता है। जहाँ इंटरनेट की सुविधा न हो वहाँ टेलीविजन और रेडियो कार्यक्रमों का उपयोग किया जा सकता है। इसके अलावा आमने-सामने शिक्षण के लिए सामुदायिक स्कूल या वटारा शाले का आयोजन भी किया गया।

कुछ प्रमुख कार्यक्रम इस तरह हैं :

- *मक्कलवाणी* यू-ट्यूब चैनल प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए जनसामान्य से प्राप्त सामग्री (पाठ-से-गतिविधियाँ) के आधार पर शिक्षकों ने बनाया। यह 50 दिनों तक चला। वीडियो देखने वालों की संख्या 7000 से 1,36,000 तक थी। जिनके पास इंटरनेट की सुविधा नहीं है, उन लोगों के लिए डीडी चन्दना और आकाशवाणी के माध्यम से मक्कलवाणी के चुनिन्दा कार्यक्रम भी प्रसारित किए गए।
- *सम्वेदा* यू-ट्यूब चैनल विशेष रूप से हाई स्कूल स्तर के विषयों के शिक्षण के लिए एक ब्रिज कोर्स के रूप में था।
- *वटारा शाले* में शिक्षक अपने-अपने गाँव के सार्वजनिक स्थानों पर विद्यार्थियों के साथ जुड़ते हैं। उनकी भूमिका एक वयस्क सुगमकर्ता की होती है। विद्यार्थी उनसे बातचीत कर सकते हैं और उनसे सीख सकते हैं। इस बारे में दिशानिर्देश और मानक संचालन प्रक्रियाएँ बनाई गईं कि सम्पर्क कैसे होना चाहिए और सुरक्षा सम्बन्धी सावधानियाँ कैसे रखी जानी चाहिए। एक मुहल्ले के बीस से पच्चीस विद्यार्थियों को एक साथ रखा गया और उनके साथ एक शिक्षक होते थे। कार्यक्रम की प्रमुख बात यह थी कि सीखने की कमियों को कम किया जाए। शिक्षकों से यह अपेक्षा थी कि वे विद्यार्थियों की प्रगति की निगरानी के लिए इस अवधि के दौरान चार निर्माणात्मक आकलन करें।

दुर्भाग्य से इस कार्यक्रम को बन्द कर दिया गया क्योंकि कुछ गाँवों में कोविड-पॉज़िटिव मामले रिपोर्ट किए गए थे। यह सीख उसी बात को दोहराती है जो हमने पिछले कुछ महीनों में सीखा यानी जिस स्थिति का सामना हम कर रहे हैं, उसका कोई एक जैसा समाधान नहीं हो सकता। पूर्ण लॉकडाउन जैसे चरम उपाय न तो अर्थव्यवस्था के पक्ष में काम करते हैं और न ही शिक्षा के।

आगे की राह

आगे का रास्ता यह है कि एक सन्तुलित दृष्टिकोण रखा जाए। जहाँ तक स्कूलों का सम्बन्ध है, इस बात का निर्णय समुदाय पर छोड़ना बेहतर होगा कि विद्यार्थियों का अधिगम कैसे सुनिश्चित किया जाए। स्कूल प्रबन्धन समितियाँ समुदाय के लिए निर्णय लेने के लिए सबसे उचित हैं। चूँकि अभिभावक और शिक्षण स्टाफ इन समितियों के सदस्य होते हैं, अतः वे निर्णय ले सकते हैं कि स्कूल खोले जाएँ या नहीं। अगर खोले जाएँ तो प्रत्येक कक्षा के लिए किस अन्तराल पर खोले जाएँ। यदि किसी कोविड-19 पॉज़िटिव केस की पहचान हो जाए तो स्कूल बन्द करने का निर्णय लेना भी आसान है। अन्य दिशा-निर्देश, जैसे कि दी जाने वाली विषय-सामग्री और सबसे उपयुक्त शिक्षण विधि आदि को राज्य स्तर पर विकसित करके साझा किया जा सकता है।

यह एक असामान्य स्थिति है जिसका सामना हम सभी कर रहे हैं और हमें इसका उपयोग प्रभावी तथा अच्छे तरीक़े से करना होगा। वैसे कठिन परिस्थिति से कुछ अच्छा प्राप्त करना निश्चित रूप से न्यू नार्मल नहीं है। स्कूली शिक्षा के बारे में हम जिस सामान्य स्थिति की प्रतीक्षा कर रहे हैं, वह यह है कि विद्यार्थी और शिक्षक एक-दूसरे के साथ जीवन्त कक्षाओं, कक्षा के बाहर की गतिविधियों और चर्चाओं में शामिल हों। यह सभी तरीक़े ही वास्तव में शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के सबसे उपयुक्त तरीक़े हैं।

References

Department of School Education & Literacy, Ministry of Human Resource Development. 2020. *PRAGYATA – Guidelines for Digital Education*

https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/pragyata-guidelines_0.pdf

National Council of Educational Research and Training. (2020). *Alternative Academic Calendar for Students—Secondary*. https://seshagun.gov.in/sites/default/files/update/Academic%20Calender%20-%20Secondary%20-%20Eng.pdf

What Is So Wrong with Online Teaching? (2015). *Economic and Political Weekly*, 55(23), 7–8.

World Bank. (2020). *Guidance Note: Remote Learning & COVID-19*. http://documents1.worldbank.org/curated/en/531681585957264427/pdf/Guidance-Note-on-Remote-Learning-and-COVID-19.pdf

Ministry of Human Resource Development (MHRD). 2019. *The Draft National Education Policy, 2019*

Department of Primary and Secondary Education, Government of Karnataka. 2020. *Circular on implementing Vidyagama program* http://www.schooleducation.kar.nic.in/pdffiles/VidyagamaCircular04082020.pdf

Delors, Jacques et al. 1996. *Learning: The Treasure Within. Report to UNESCO of the International Commission on Education for the Twenty-first Century*.

"The Economic Tracker", accessed July 2, 2020, https://tracktherecovery.org/.

Megan Kuhfeld et al., "Projecting the Potential Impacts of COVID-19 School Closures on Academic Achievement," *EdWorkingPapers.Com* (Annenberg Institute at Brown University, 2020), https://www.edworkingpapers.com/ai20-226.

"Achievement Gap and Coronavirus | McKinsey," accessed July 2, 2020, https://www.mckinsey.com/industries/public-sector/our-insights/covid-19-and-student-learning-in-the-united-states-the-hurt-could-last-a-lifetime

[i] https://tracktherecovery.org/ Central Square Foundation. July 2020. State of the Sector Report – Private Schools in India. New Delhi.

[ii] https://www.edworkingpapers.com/ai20-226

[iii] https://www.mckinsey.com/industries/public-and-social-sector/our-insights/covid-19-and-student-learning-in-the-united-states-the-hurt-could-last-a-lifetime

---



बी. एस. ऋषिकेश अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफ़ेसर और हब फ़ॉर एजुकेशन, लॉ और पॉलिसी के लीडर हैं। शोध और शिक्षण के क्षेत्र में उन्हें 20 वर्ष का अनुभव है। वे पिछले 15 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। वे कर्नाटक सरकार के साथ नीतिगत मामलों पर कार्य करते हैं और शिक्षा विभाग द्वारा गठित कई समितियों के सदस्य हैं। उन्हें कर्नाटक सरकार द्वारा ऑनलाइन शिक्षा मॉडल का अध्ययन करने वाली समिति के लिए नामित किया गया था। वे समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में शैक्षिक नीति से सम्बन्धित मुद्दों पर नियमित रूप से लिखते हैं। उनसे **rishikesh@apu.edu.in** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

अब समय आ गया है कि हम यह तय करें कि हमें क्या करना चाहिए। क्या हमें ऑनलाइन, दिमाग़ी और अन्यायपूर्ण शिक्षा प्रक्रियाओं की तरफ़ और अधिक बढ़ना चाहिए? या फिर हमें विपरीत दिशा की ओर बढ़ना चाहिए यानी एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की ओर, जिसमें अधिक निकटता और सम्पर्क है? यदि हम दूसरा रास्ता चुनते हैं, तो हमें छोटे-से-छोटे गाँवों में भी बच्चों को एक साथ लाने के तरीक़ों में निवेश करना होगा (मास्क, हाथ धोने और शारीरिक दूरी की सभी सावधानियों के साथ)। इन तरीक़ों के ज़रिए बच्चे एक-दूसरे के साथ हो सकते हैं और शिक्षक के साथ भी हो सकते हैं। यहाँ शिक्षक से तात्पर्य एक ऐसे वयस्क से है जो वार्तालाप और सीखने का सुगमीकरण कर सके और किताबों, पेंसिल और काग़ज़ के साथ काम कर सके

- हृदय कान्त दीवान, 'शिक्षा : हम इसे किस दिशा में ले जाना चाहते हैं?', पेज 7

स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम | एक नवीन मॉडल

भार्गव श्री प्रकाश

स्कूल का एक वैज्ञानिक स्वास्थ्य कार्यक्रम

भविष्य की पीढ़ियों को गढ़ने में शिक्षा की भूमिका सदैव शक्तिशाली रहेगी। वर्तमान कोविड-19 महामारी एक ऐसा समय है जिससे बहुत कुछ सीखकर समाज को पुनः निरूपित किया जा सकता है।

भारत भारी चुनौतियों से जूझ रहा है क्योंकि कोविड -19 ने हमारी जीवनशैली को बदल दिया है, अतः हमें सामान्य स्थिति को बहाल करने का प्रयास करना चाहिए। चूँकि शारीरिक दूरी बनाने से सम्बन्धित दिशा-निर्देशों का पालन करने की अपेक्षा बच्चों से नहीं की जा सकती, इसलिए उनके संक्रमित संचारक और अ-लक्षणी वाहक बनने का अधिक ख़तरा होता है। अध्ययनों से पता चला है कि संयुक्त राज्य अमरीका और दक्षिण कोरिया में स्कूलों को फिर से खोलने पर बच्चे वायरस से संक्रमित हुए और उन्होंने उसे फैलाया। इसके अतिरिक्त, शोधकर्ताओं ने पुष्टि की है कि कोविड-19 होने के कुछ महीनों बाद उसके दुबारा होने की सम्भावना रहती है क्योंकि प्रतिरक्षा प्रणाली वायरस से लड़ने की क्षमता खो देती है।

एक महत्त्वपूर्ण मोड़

इसलिए यह बात महत्त्वपूर्ण है कि इन वर्तमान परिस्थितियों में और कोविड-19 के बाद वाले भारत में भी बच्चों की सुरक्षा भली-भाँति की जाए। एक तरीक़ा यह है कि स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों और उनके परिवार को स्वच्छता और जीवन शैली के उन परिवर्तनों के बारे में शिक्षित किया जाए जो संक्रमण को रोकने के साथ स्वास्थ्य संवर्धन भी कर सकते हैं। यह अप्रत्याशित संकट, इतिहास के पन्नों में एक ऐसे मोड़ के रूप में दर्ज़ हो सकता है जब हमारी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से, स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक बहुत बड़े परिवर्तन की शुरुआत हुई। यदि स्कूल आधारित स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम में माता-पिता और देखभाल करने वालों को शामिल कर लिया जाए तो इससे यह कार्यक्रम कई गुना अधिक प्रभावी हो सकता है। इसके लिए हमारा क़दम हो सकता है - एक साक्ष्य-आधारित मॉडल, जिसे बड़े पैमाने पर लागू किया जा सके और जो स्वास्थ्य-असमता को कम करने में भी मदद कर सके।

स्वास्थ्य सम्बन्धी आदतों के विकास में स्कूल एक प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं। वे बच्चों को वैज्ञानिक सह-पाठ्यक्रम के माध्यम से पढ़ा सकते हैं और अभिभावकों को उसके साथ जोड़ सकते हैं। कक्षा और स्कूल के वातावरण की स्वच्छता पर तत्काल ध्यान देना उनके स्वास्थ्य से सम्बन्धित आदतों को सुदृढ़ कर सकता है। आगे यह आदतें उनके घरों तक भी पहुँचेंगी। व्यक्तिगत स्वच्छता की बेहतर आदतें डालना जैसे कि नाख़ून काटना, हाथ धोना और शारीरिक सम्पर्क के बारे में ध्यान रखना आदि वायरस के संचारण को रोकेंगे।

समग्र शैक्षिक दृष्टिकोण के माध्यम से, शिक्षक बच्चों को पोषक तत्वों से भरपूर आहार लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं, जिसमें मौसमी अनाज, फल और सब्ज़ियाँ शामिल हैं। इसके साथ ही बच्चों को यह भी सिखाना चाहिए कि प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों और प्रतिरक्षा कमज़ोर करने वाले चीनी की अत्यधिक मात्रा वाले पेय पदार्थों का सेवन करने से उन्हें बचना चाहिए। श्वसन से सम्बन्धित व्यायाम और शारीरिक गतिविधियाँ एक अन्य आयाम है जिससे व्यक्तिगत और समूह-प्रतिरक्षा (Herd Immunity) को बढ़ाने में मदद मिलेगी।

कार्यवाही के लिए एक मॉडल

देश भर में कोविड-19 से मुक़ाबला करने के लिए रणनीतियों और युक्तियों का पाँच चरणों वाला मॉडल है – I N D I A

I - इन्स्पायर (प्रेरित करना)

पहला क़दम होगा कि कक्षा के हर स्तर पर शिक्षकों को प्रेरित किया जाए ताकि वे अपनी कक्षा में बच्चों के स्वास्थ्य से सम्बन्धित अतिरिक्त ज़िम्मेदारी को स्वेच्छा से स्वीकार करें। अमूमन शिक्षकों पर काम का अत्यधिक बोझ होता है। यह चुनौती देश भर में शिक्षकों की भारी कमी के कारण और भी बढ़ जाती है, इसलिए ज़रूरी है कि इस अप्रत्याशित महामारी के जवाब में, स्वास्थ्य मिशन के लिए नए शिक्षकों को भर्ती किया जाए।

ऐतिहासिक रूप से देखें तो भारत में विद्यार्थियों के जीवन में शिक्षक की भूमिका को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है। वे समाज को आकार देने में भी ख़ास भूमिका निभाते हैं। इस

I N D I A - हमारी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कोविड-19 महामारी के जवाब में वैश्विक विचार-नेतृत्व का एक मॉडल

	I	N	D	I	A
	इन्स्पायर	**नर्चर**	**डॉक्यूमेंट**	**इंस्ट्रक्ट**	**एक्शन**
क्या?	कक्षा के हर स्तर पर शिक्षकों को प्रेरित करना ताकि वे प्रासंगिक स्थानीय संस्कृति और सर्वोत्तम प्रथाओं पर निर्मित स्वास्थ्य के दूत बनें। समाज के स्वास्थ्य को आकार देने में कर्तव्य के रूप में अपनी भूमिका देख पाने में उनकी मदद करना।	स्थानीय प्रोटोकॉल और सामग्री से लैस करना। विद्यार्थियों और समुदायों की आवश्यकताओं पर ध्यान देते हुए वृद्धिशील नवीन तरीक़ों का पता लगाना।	रिकॉर्ड रखना (स्वास्थ्य, भोजन का सेवन, लक्षण, आस-पड़ोस में कोविड-19 के मामले) और एक महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में साक्ष्य जुटाना।	रोग के जोखिम को कम करने के लिए व्यक्तिगत और सामुदायिक स्वच्छता अभ्यास। मिथकों और नकारात्मक जुड़ाव को कम करना।	परिणामों को मापने की प्रतिबद्धता के साथ-साथ कार्यवाही करना सतत नवाचार और परिष्कृत मॉडल बनाना।
कैसे?	शिक्षकों से कोविड-19 के खिलाफ़ लड़ाई में शामिल होने की अपील करने के लिए लघु वीडियो, डिजिटल और मुद्रित सहायक सामग्री।	विद्यार्थियों के साथ नियमित रूप से खुली चर्चा (उदाहरण रोज़ाना 15 मिनट), जिसमें वे अपने विचारों, सरोकारों, भय और प्रश्नों को निसंकोच रख सकें।	डेटा विश्लेषण और मशीन अधिगम को सक्षम करने के लिए डिजिटल सर्वेक्षण और व्यक्तिगत स्वास्थ्य रिकॉर्ड के डिजिटल लॉग्स का संकलन।	व्यक्तिगत स्वच्छता और सामुदायिक समर्थन की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए गीत, वर्कशीट्स, शिक्षक समर्थनकारी सामग्री आदि बनाकर देना।	समुदाय में समर्थन कार्यवाही राष्ट्रीय लीडरबोर्ड, पुरस्कार और आर्थिक पुरस्कारों के गठन द्वारा योगदान को मान्यता देना।



हमारे देश की महत्त्वपूर्ण पूंजियों में से एक यानी हमारे शिक्षकों की भागीदारी को लागू करने की एक पुनरावृत्तीय रूपरेखा

सन्देश को शिक्षकों के प्रति समाज की ज़िम्मेदारी के रूप में रूपान्तरित होना चाहिए; इस महामारी के प्रति हमारे समाज की प्रतिक्रिया के रूप में, शिक्षकों को एक उत्कृष्ट स्थान पर बहाल किया जाना चाहिए। इसलिए यह ज़रूरी है कि शिक्षक स्वेच्छा से अपने कार्यों की सूची में बच्चों के स्वास्थ्य की ज़िम्मेदारी को भी जोड़ लें, क्योंकि जब वे स्व-प्रेरणा से इस कार्य में भागीदारी करेंगे तो परिणाम भी अच्छे होंगे।

वर्तमान में, जब महामारी से लड़ाई के हमारे प्रयासों में शिक्षकों को अग्रिम पंक्ति के रक्षकों के रूप में उभरने का अवसर मिला है तो यह भी ज़रूरी है कि क्रियात्मक समाधान के सह-निर्माण में शिक्षकों को अपने सुझाव देने की स्वतंत्रता दी जाए ताकि उनके मन में स्वामित्व की भावना विकसित हो।

सुझाव

शिक्षक अपने सहकर्मियों की भर्ती में मदद करने के लिए छोटे ऑडियो/वीडियो सन्देश रिकॉर्ड कर सकते हैं या फिर कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में शामिल होने के लिए शिक्षकों से अपील करने के लिए उनके साथ शिक्षक संगोष्ठी या कार्यशालाएँ भी आयोजित कर सकते हैं। एक छोटा वीडियो या विज्ञापन डिजिटल सहायक सामग्री के रूप में विकसित किया जा सकता है।

N - नर्चर (पोषण/विकसन)

दूसरा क़दम शिक्षकों को प्रोटोकॉल और सामग्री से लैस करना है जो स्थानीय अभ्यासों और रीति-रिवाजों को ध्यान में रखते हुए साक्ष्य-आधारित और वैज्ञानिक हों।

वैश्विक कोविड-19 के लिए यह बात तो तय है कि पूरी मानव आबादी के लिए एक से समाधान नहीं हो सकते। हमारे देश के कुछ हिस्सों में और हमारी आबादी के बड़े क्षेत्रों में शारीरिक दूरी, हाथों को साफ़ करना और हाथ धोना व्यावहारिक नहीं हो सकता है। लेकिन हम स्वच्छता में सुधार के लिए स्थानीय और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक तरीक़ों का पता लगा सकते हैं और शिक्षक उन्हें चुनने में अपने विद्यार्थियों की सहायता कर सकते हैं। इसलिए यह ज़रूरी है कि सर्वोत्तम अभ्यासों के डिजिटल भण्डार के माध्यम से व्यापक समाधान दिए जाएँ। इस महामारी के दौरान बच्चों को अतिरिक्त ध्यान और पोषण की आवश्यकता है।

सुझाव

(क) शिक्षक रोज़ अपनी कक्षा में विद्यार्थियों के साथ एक खुली चर्चा को प्रोत्साहित करने के लिए 10-15 मिनट का सर्कल समय आयोजित कर सकते हैं। इसमें बच्चे कोविड-19 के बारे में अपने विचारों, सरोकारों, भय

और प्रश्नों को व्यक्त कर सकते हैं। यह प्रक्रिया बच्चों को अच्छी स्वच्छता और आदतों का वाहक बना सकती है और वे अपने घरों में परिवर्तन लाने का कार्य सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

(ख) इन मुद्दों पर चर्चाओं के दौरान लगता है कि किसी बच्चे को कोई दिक़्क़त है तो शिक्षक उसके साथ अतिरिक्त समय लगा सकते हैं। आवश्यक हो तो बच्चे के परिवार के साथ मिलकर उसे हल कर सकते हैं।

D – डॉक्यूमेंट (दस्तावेज़ीकरण)

रिकॉर्ड रखना और सबूत इकट्ठा करना, वैज्ञानिक जाँच और अभ्यास का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। कक्षा के लॉग या स्वास्थ्य रिकॉर्ड जैसे सरल तरीक़े कोरोनावायरस के मामले और संचरण का पता लगाने में मदद करेंगे। शिक्षकों की उपस्थिति और अनुपस्थिति के कारण का रिकॉर्ड रखने की आवश्यकता होगी। बच्चों को एक दैनिक डायरी बनाने के लिए कहा जा सकता है। इसका उपयोग उनके स्वास्थ्य सम्बन्धी ख़तरों के कारकों का आकलन करने, रिकॉर्ड करने और उनके घरों में निम्नलिखित गतिविधियों का दस्तावेज़ीकरण करने के लिए किया जा सकता है :

- भोजन के सेवन की मात्रा और एक बार में कितना भोजन परोसा गया।
- बीमारी के व्यक्तिगत लक्षण।
- परिवार के निकट सदस्यों और देखभाल करने वालों के स्वास्थ्य सम्बन्धी लक्षण।
- आस-पड़ोस में कोविड-19 के मामले।

सुझाव

(क) शिक्षकों के लिए आसानी से उपलब्ध एवं कम-तकनीकी वाले डिजिटल और गैर-डिजिटल तरीक़ों की सहायता से रिकॉर्ड रखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करना चाहिए।

(ख) विधिमान्य भौतिक या डिजिटल सर्वेक्षण : शिक्षक, लॉग को विकसित कर सकते हैं ताकि वे सरल, आयु-उपयुक्त रिकॉर्ड रखने वाले उपकरण प्रदान कर सकें जो स्थानीय भाषा में हों और जिसे बच्चे समझ सकते हों। बहुत सारे भौतिक रिकॉर्डों से निपटने में व्यावहारिक चुनौतियाँ होती हैं, इसलिए पेपर-आधारित प्रलेखन प्रक्रिया से बचने की सिफ़ारिश की जाती है। इसके अलावा डिजिटल प्रारूप होने से डेटा-विश्लेषण में भी आसानी होती है।

(ग) प्रौद्योगिकी उपकरणों और विश्लेषणों से बड़े स्तर पर लागू करने योग्य (scalable) और डेटा-संचालित सर्वोत्तम अभ्यासों को सुनिश्चित किया जा सकता है ताकि शिक्षकों पर बोझ को कम करने के लिए कुशल तरीक़े सुनिश्चित किए जा सकें।

I – इंस्ट्रक्ट (निर्देश)

वायरस के जोखिम को कम करने के लिए शिक्षक व्यक्तिगत और सामुदायिक स्वच्छता के तरीक़ों के बारे में बात कर सकते हैं। जैसे कि सार्वजनिक स्थानों में न थूकना, नाखून काटना, जहाँ सम्भव हो वहाँ सतहों से शारीरिक सम्पर्क को सीमित करना, जहाँ सम्भव हो दूरी बनाना, जब सम्भव हो हाथ धोना, प्राकृतिक क्लींज़र, कीटाणुनाशकों का उपयोग और ऐसे रसायनों के ख़तरे, छींकते समय नाक और मुँह को ढँकना और स्वच्छता के स्तर को ऊपर उठाना आदि। बच्चों को भारत की उन पारम्परिक स्वच्छता-प्रथाओं से अवगत कराया जा सकता है जो धीरे-धीरे लुप्त हो रही हैं जैसे कि घर में प्रवेश करने से पहले हाथ, चेहरा और पैर धोना आदि। यह प्रासंगिक सांस्कृतिक परम्पराएँ हमें अपनी प्राचीन विरासत और प्रथाओं से जोड़कर पहले से मौजूद मानदण्डों में से व्यवहार्य अभ्यासों को फिर से अपनाने में मदद कर सकती हैं।

हो सकता है कि कोविड-19 से संक्रमित होने पर बच्चों और उनके परिवारों को पूर्वाग्रह और सामाजिक कलंक का सामना करना पड़े। इसलिए यह ज़रूरी है कि शिक्षक और शिक्षण-सामग्री उनका मुकाबला करने के लिए सामुदायिक समर्थन की आवश्यकता पर ज़ोर दें। इस बात पर ज़ोर देना ज़रूरी है कि जिन्हें यह बीमारी हो जाती है उनमें संक्रमण का ख़तरा बढ़ सकता है, इसलिए उन्हें सहानुभूति और समानुभूति की आवश्यकता होती है।

बच्चों और उनके परिवारों को सिखाना चाहिए कि भविष्य में भी कोविड-19 के बने रहने की सम्भावना है। भारत में यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि शारीरिक दूरी और स्वच्छता के कई एहतियाती, रोकथाम के उपायों से अस्पृश्यता के घृणित अवशेष जागृत होने की सम्भावना है। अतः यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह सामाजिक बुराई फिर से अपना सिर न उठाए; जिस सामाजिक एकीकरण को पाने में दशकों लगे उसे कोविड-19 अनजाने में ही ख़त्म न कर दे।

सुझाव

(क) जहाँ भी सम्भव हो, कार्टून शैली के पात्रों को दर्शाने वाले शिक्षण-उपकरण और भाषा-तटस्थ (language-agnostic) डिजिटल सामग्री को विकसित किया जा सकता है, जिसका उपयोग शिक्षक अपने शिक्षण के दौरान कर सकते हैं।

(ख) शिक्षकगण सामग्री के एक केन्द्रीय भण्डार का उपयोग कर सकते हैं जो उन्हें स्थान के आधार पर प्रभावी ढंग से आदतों को सम्प्रेषित करने में मदद कर सके, ताकि किसी क्षेत्र (गाँव, पड़ोस, नगर पालिका, जिला, राज्य, क्षेत्र, आदि) के अनुसार आसानी से खोजी जा सकने वाली सामग्री सुनिश्चित की जा सके।

(ग) शिक्षक और बच्चे गीतों की रचना कर सकते हैं। इन्हें अभिनय के साथ गाने से वे गीतों से तो परिचित होगे ही, साथ ही इनसे स्वास्थ्य सम्बन्धी आदतों को सुदृढ़ करने में भी मदद मिलेगी।

(घ) शिक्षकगण कलाकारी में भी बच्चों की मदद कर सकते हैं। जैसे कि अपने सहपाठियों के लिए चित्र, पेंटिंग, पोस्टकार्ड या वीडियो सन्देश बनाना और 'गेट वेल या स्वस्थ हो जाओ' जैसे कार्ड उन्हें देकर उनके प्रति अपनी एकजुटता और एकीकृत समर्थन व्यक्त कर सकते हैं। इस अभ्यास से बच्चों की एक ऐसी पीढ़ी विकसित होगी जो अपने आस-पास के लोगों की कठिनाइयों/ख़तरों के प्रति संवेदनशील है।

(ङ) रोल-प्ले और थिएटर-कार्यशालाओं से, बच्चों को महामारी की जटिलताओं और बारीकियों का अनुभव करवाया जा सकता है।

A – एक्शन (कार्यवाही)

इस कार्य की असली सफलता तभी मापी जा सकती है जब इन विचारों को कार्य रूप में परिवर्तित किया जाए। वर्तमान महामारी और इससे पैदा हुए ख़तरे का व्यापक प्रसार और पैमाना देखते हुए ज़रुरत है कि व्यावहारिक परिणामों पर कहीं अधिक गहराई से विचार-विमर्श किया जाए। कार्यवाही पर ध्यान केन्द्रित करना, परिणामों को मापना और साक्ष्यों के आधार पर उसे दुरुस्त करना – इन बातों से एक ऐसा मॉडल बनेगा जो निरन्तर नवाचार और परिष्करण पर आधारित होगा। यह अवलोकन के विज्ञान-आधारित फ्रेमवर्क का मार्ग भी प्रशस्त करता है, जिसके माध्यम से डेटा वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न पहलुओं पर शोध किया जा सकता है।

महामारी के दौरान मॉडल के इस महत्त्वपूर्ण घटक की उपेक्षा होने का काफ़ी ख़तरा है। इसके महत्त्व को रेखांकित करना ज़रूरी है क्योंकि यह साक्ष्य-आधारित अभ्यास के माध्यम से, हमारी शिक्षा प्रणाली के सबसे बड़े सामाजिक स्तम्भ को लागू करने की एक मज़बूत प्रणाली स्थापित करता है।

सुझाव

(क) शिक्षकों को अपने कार्यों के लिए समाज में परिवर्तन एजेंटों के रूप में पहचाना जा सकता है।

(ख) मापने योग्य मैट्रिक्स इस प्रकार से हो सकते हैं :

(i) बच्चों से प्राप्त पूर्ण रिकॉर्डों की संख्या।

(ii) शिक्षक द्वारा प्रभावित बच्चों की संख्या और कक्षा में बच्चों की कुल संख्या का अनुपात।

(ग) एक अन्य महत्त्वपूर्ण कारक यह है कि क्या शिक्षक ने एक ऐसी आबादी में संचालन और सेवा की जहाँ कोविड-19 के उच्च मामले और जोखिम ज़्यादा था।

(घ) प्रत्येक ज़िले और क्षेत्र में, हर महीने एक रोल-मॉडल शिक्षक चुनने और हर महीने उन्हें सम्मानित करने की एक प्रणाली बनाई जा सकती है।

अन्ततः

अन्त में यह कहा जा सकता है कि I N D I A हमारी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से हमारी प्रतिक्रिया के बारे में सोच-विचार के मॉडल का एक ख़ाका है। इसका उद्देश्य हमारे देश की महत्त्वपूर्ण पूंजियों में से एक यानी हमारे शिक्षकों की भागीदारी को लागू करने के एक पुनरावृत्तीय ढाँचे के रूप में काम करना है।

I N D I A मॉडल, प्रतिक्रिया के समग्र मॉडल के माध्यम से कम लागत और कार्यवाही योग्य उपकरणों की पेशकश करने का प्रयास करता है।

लम्बी अवधि में नवाचार प्रौद्योगिकी-सक्षम यह फ्रेमवर्क दुनिया के लिए अनुकूलनीय स्थानीय समाधानों का एक नया वैज्ञानिक ख़ाका प्रस्तुत कर सकता है। एक राष्ट्र के रूप में हमारे तेज़ी से बढ़ते डिजिटल रूपान्तरण का लाभ लेते हुए जहाँ सम्भव हो, इस नवाचार को बड़े पैमाने पर लागू करने योग्य प्रौद्योगिकियों के मंच में व्यवस्थित किया जा सकता है।



भार्गव श्री प्रकाश फ्रेंड्सलर्न के संस्थापक और सीईओ हैं – जो पालो ऑल्टो, कैलिफोर्निया और चेन्नई, भारत में स्थित जीवविज्ञान और स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी का स्टार्ट-अप है। वे एक इंजीनियर, डिज़ाइनर, आविष्कारक और सीरियल उद्यमी हैं। उन्हें डिजिटल-वैक्सीन का अग्रणी माना जाता है, जो प्रौद्योगिकी-सक्षम रोग निवारण की श्रेणी है। सिमुलेशन टेक्नॉलॉजी और वर्चुअल रिएलिटी में उनके पाँच पेटेंट हैं। वे डिजिटल वैक्सीन प्रोजेक्ट, कार्नेगी मेलन विश्वविद्यालय में फाउंडिंग रिसर्च ट्रान्सलेशन और इनोवेटिव पार्टनर के रूप में कार्य करते हैं। भार्गव श्री प्रकाश ने यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन, एन आर्बर से ऑटोमोटिव इंजीनियरिंग में परास्नातक किया है। उनसे **bhargav@friendslearn.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

यह प्रयास किया गया है कि प्रतिभागियों की संख्या फेस-टू-फेस कार्यक्रम के समान हो। लेकिन वेबिनार की बात अलग है, जिसमें वक्ता एक मुख्य विषय पर अपने विचार रखते हैं और समय-समय पर दर्शकों से सवाल या टिप्पणियाँ आमंत्रित की जाती हैं। हालाँकि वेबिनार इस अर्थ में उपयोगी हैं कि उनसे लोगों के एक बड़े समूह तक पहुँचा जा सकता है, लेकिन उनका उद्देश्य प्रतिभागियों को जानकारी देना या उन्मुख करना है न कि केन्द्रित रूप से उन्हें किसी विचार के साथ जुड़ने में मदद करना।

- निमरत खण्डपुर, 'ऑनलाइन व्यावसायिक विकास कार्यक्रम : कुछ विचार' , पेज 79

किशोरियों की आवाज़

दीपिका सिंह और नेहा पर्ती

यह लेख भारत के सात राज्यों की 12-16 वर्ष आयु-वर्ग की किशोरियों के साक्षात्कार पर आधारित है। ये किशोरियाँ स्कूल, आवासीय स्कूल और अनौपचारिक शिक्षण स्थानों जैसे सामुदायिक क्लबों में पढ़ती हैं। हमारा उद्देश्य यह समझना था कि कोविड-19 ने उनके जीवन को कैसे प्रभावित किया है, ख़ासकर स्कूली शिक्षा, शिक्षा और अधिगम से सम्बन्धित पहलुओं को।

कोविड-19 और उसका प्रभाव

लड़कों की तुलना में, लड़कियों के लिए महामारी एक अलग रूप में सामने आई है। यूँ तो सबका जीवन निश्चित रूप से बदला ही है, लेकिन यह बदलाव सभी के लिए एक-सा नहीं है। इस समय में कुछ लोगों को परिवार के साथ अधिक समय बिताने और यू-ट्यूब से नई चीज़ें सीखने का अवसर मिला है, तो कुछ लोगों का पहले से ही कठिन जीवन और भी कठिन हो गया है। असम में एक लड़की अपने भाई और शराबी पिता के साथ रहती थी। पिता उसके साथ शारीरिक रूप से दुर्व्यवहार करता था, जबकि वह घर का सारा काम करती थी। वहाँ आई बाढ़ के कारण ज़रूरी वस्तुओं तक उनकी पहुँच और कम हो गई थी। वह दमे की मरीज़ थी, इसलिए उसे इस बात की चिन्ता सताने लगी कि उसे दवाई कैसे मिलेगी। इसके विपरीत, कर्नाटक में संयुक्त परिवार में रहने वाली एक लड़की 24 घण्टे फ़ोन का उपयोग करती थी और उसे अपनी पढ़ाई को आगे बढ़ाने के लिए परिवार का समर्थन प्राप्त था।

भविष्य के बारे में चिन्ता

इन सभी अनुभवों में कुछ बातें समान हैं जिन्हें साझा करना आवश्यक है। *'अगर स्कूल फिर से नहीं खुले तो हमारे सपने अधूरे रह जाएँगे,'* एक लड़की की कही यह बात, स्कूल जाने वाली सत्रह (85%) लड़कियों की बातों में भी प्रतिध्वनित हो रही थी। हमने यही बात फिर से तब सुनी जब हमने कुछ ऐसी लड़कियों (15%) के साथ बातचीत की, जिन्होंने कक्षा V और VII के बाद स्कूली शिक्षा बन्द कर दी थी, लेकिन एक युवा क्लब में आयोजित गतिविधियाँ उन्हें सार्थक लग रही थीं।

अलग-अलग लड़कियों के लिए भविष्य के सपनों का मतलब अलग-अलग था। कुछ लोगों के लिए इसका मतलब था कंप्यूटर इंजीनियर, स्नायु विज्ञानी (न्यूरोलॉजिस्ट) या पुलिस अधिकारी बनने की अपनी आकांक्षाओं को आगे बढ़ा सकना। दूसरों के लिए इसका मतलब था फिर से खेल पाना; स्कूल में अपनी पढ़ाई जारी रखना; स्वतंत्र रूप से घूमना और अपने रिश्तेदारों जैसे दादी-नानी से मिल पाना।

दसवीं कक्षा की लड़कियाँ आगामी बोर्ड परीक्षाओं के बारे में और स्कूल शुरू होने के बाद पाठ्यक्रम पूरा करने के बारे में चिन्तित थीं। उन सभी को प्रमोट कर दिया गया था और वे मानसिक रूप अगली कक्षा में जा चुकी थीं। वैसे उनमें से आठ (40%) के पास नई पाठ्यपुस्तकें नहीं थीं। वे पुरानी और माँगी हुई किताबों से काम चला रही थीं।

लगभग सभी लड़कियाँ अपने परिवार की बिगड़ती हुई आर्थिक स्थिति और खाद्य आपूर्ति की अनिश्चितता को लेकर चिन्तित थीं। एक अभिभावक के पास तो भोजन के लिए भी पैसे नहीं थे। राशन के लिए वे अपने पड़ोसियों पर निर्भर थे, लेकिन उन्होंने फ़ोन खरीदने के लिए पैसे उधार लिए ताकि बच्चे अपनी पढ़ाई जारी रख सकें। कुछ टिप्पणियाँ इस तरह थीं :

अभी तो खाने को है, कुछ दिनों बाद शायद न हो।

अभी तो पड़ोसी खाना दे रहे हैं - दाल, चावल, तेल...पर कितने दिन?

अपने शिक्षार्थियों को समझना

अपने शिक्षार्थियों को समझने से तात्पर्य है उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, सीखने की शैली व प्राथमिकताओं, सीखने की तत्परता और पिछले शैक्षिक प्रदर्शनों के बारे में अन्तर्दृष्टि प्राप्त करना। ओडिशा में एक लड़की ने शिक्षार्थियों की विविधता के बारे में बात करते हुए कहा : *सब सभी बच्चे एक जैसे तो नहीं सीखते, कुछ को ज़्यादा समय लगता है, उनकी पढ़ाई कैसे होगी इस समय?*

प्रौद्योगिकी के साथ सम्बन्ध

इस महामारी ने जो नए आयाम जोड़े हैं वे अधिगम के प्रासंगिक अनुभवों को डिज़ाइन करने में महत्त्वपूर्ण हैं। डिजिटल अधिगम के लिए ज़रूरी व्यवहार भी उतना ही महत्त्वपूर्ण हो गया है जितना कि प्रौद्योगिकी तक पहुँच और इसका प्रयोग आसानी

से कर पाना। जब प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए अधिगम-अनुभवों को डिज़ाइन करना हो तो जिन बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है, वे इस प्रकार हैं - प्रौद्योगिकी के साथ पूर्व-सम्पर्क, सहपाठियों के नेटवर्क के साथ जुड़ना तथा शिक्षार्थी और उसके परिवार का दृष्टिकोण।

लड़कियों के लिए प्रौद्योगिकी तक पहुँच हमेशा ही एक समझौते वाली बात होती है, फिर चाहे वह अभिभावकों के साथ हो या भाई-बहन के साथ। अभिभावकों से मिलने वाले समर्थन में अन्तर होता है। यहाँ पहले उदाहरण में, लड़की अपने पिता की आभारी है कि उन्होंने फ़ोन लाकर दिया, *'पापा ने लोन लेकर फ़ोन ला कर दिया, ताकि मैं पढ़ाई कर सकूँ।'* दूसरी ओर, एक अन्य लड़की फ़ोन पर अपनी सीमित पहुँच की बात करती है, *'अगर मैं ज़्यादा टाइम फ़ोन पर होती हूँ तो पापा गुस्सा करते हैं ।'*

फ़ोन की उपलब्धता पहली चुनौती है। अपने अध्ययन में हमने देखा कि ज़्यादातर लड़कियों के घर में एक ही फ़ोन था जिसे साझा करना होता था। अब किसे पहले फ़ोन मिले और कितनी देर के लिए मिले – यह निर्णय बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है। चौदह लड़कियों ने कहा कि उनके घर में स्मार्टफ़ोन है। इनमें से चार लड़कियाँ दिन में केवल एक घण्टे या उससे कम समय के लिए फ़ोन का इस्तेमाल कर पाती थीं। कुछ केवल दो या तीन घण्टे के लिए और एक लड़की ने तो कहा कि, *'फ़ोन भाई के पास रहता है पूरा दिन।'*

कुछ अन्य मुद्दे भी थे। बिहार में जब हमारे सुगमकर्ताओं ने लड़कियों को सीखने की प्रक्रिया में शामिल करने के लिए *व्हाट्सएप* समूह बनाने शुरू किए तो एक अभिभावक ने उनसे कहा कि उनकी बेटी केवल लड़कियों के समूह में ही भाग ले सकती है। अभिभावकों द्वारा *व्हाट्सएप* समूहों को जेंडर सम्बन्धी मानदण्डों से प्रभावित करना, लड़कों के साथ बातचीत को नियन्त्रित करने के बारे में अनकहे सरोकारों को दर्शाते हैं। प्रचलित जेंडर मानदण्ड प्रौद्योगिकी-संचालित प्रक्रिया में एक नया रूप लेते हैं। लड़कियों को न केवल अपने बड़े भाई-बहनों और पिता के साथ फ़ोन का उपयोग करने के लिए समय निकालने के लिए समझौते करने पड़े, बल्कि घर के कामों को भी फ़ोन की उपलब्धता के अनुसार व्यवस्थित करना पड़ा। और फिर, फ़ोन मिलने मात्र से यह सुनिश्चित नहीं हो जाता कि उनमें उसका उपयोग करने का विश्वास भी है। एक लड़की ने यह बात मानी कि उसने फोन के उन बटनों को नहीं दबाया जिनके बारे में उसे पता नहीं था।

अभी तक इन उपकरणों को मुख्य रूप से मनोरंजन के स्रोतों के रूप में देखा जाता था। उनका उपयोग संगीत सुनने, कहानियों को पढ़ने, कला व क्राफ्ट सम्बन्धी वीडियो देखने या गेम खेलने के लिए किया जाता था। लेकिन लॉकडाउन के दौरान क़रीब 50 प्रतिशत लड़कियों ने *यू-ट्यूब* का उपयोग करके कुछ नया सीखा था। दिलचस्प बात यह थी कि इन गतिविधियों में विद्यार्थियों ने स्व-अधिगम प्रदर्शित किया, लेकिन अकादमिक विषयों में ऐसा नहीं था, उसके लिए वे किसी-न-किसी वयस्क पर निर्भर रहते थे।

विश्वास

गुजरात में एक लड़की ने इस मुद्दे को उठाया जो आजकल चल रहे ऑनलाइन अधिगम के लिए महत्त्वपूर्ण है :

'किस पर विश्वास करना है और किस पर विश्वास नहीं करना है, यह कैसे पता चलेगा ऑनलाइन?' इससे पता चलता है कि लोगों को, विशेष रूप से युवा लड़कियों को, डिजिटल मंच और उसमें अपनी सुरक्षा करने के बारे में तैयार नहीं किया गया है। पाठ्यचर्या के निष्पादन Curriculum transaction) के साथ-साथ लड़कियों और उनके माता-पिता को इस मंच पर लाने के लिए सुरक्षित और सक्षम वातावरण बनाने की ज़रूरत है।

प्रौद्योगिकी और अधिगम

लड़कियाँ अपने सीखने के सम्बन्ध में मिलने वाले फ़ीडबैक को याद करती हैं क्योंकि अब उनके लिए यह जानना कठिन है कि वे सही रास्ते पर हैं या नहीं। यह बात *प्रमाणीकरण की आवश्यकता* को पुष्ट करती है जो हमारी शिक्षा प्रणाली में अन्तर्निहित है। स्व-अधिगम के लिए आत्मविश्वास की भावना का विकास नहीं किया गया है। जैसे-जैसे हम प्रौद्योगिकी-सक्षम अधिगम की ओर बढ़ते हैं, आकलन और सीखने की प्रकृति को बदलने के लिए अपनी मानसिकता में बदलाव लाना भी ज़रूरी है।

शिक्षकों को यह समझना होगा कि शिक्षार्थियों की चिन्ता का कारण क्या है और प्रौद्योगिकी कैसे इसमें योगदान करती है। विशेष रूप से ऐसी स्थिति में जहाँ न तो शिक्षार्थी और न ही शिक्षक इसके लिए तैयार थे। उदाहरण के लिए एक लड़की ने कहा कि उसके शिक्षक व्हाट्सएप पर कोई आलेख भेजते हैं और यदि वह उसे समझने में असमर्थ हो तो वे अवधारणा को समझाने के लिए एक वीडियो भेजते हैं। इस प्रकार सीखने की जाँच करने के लिए कोई तात्कालिक फ़ीडबैक नहीं है।

यहाँ महत्त्वपूर्ण कारक यह हैं कि अवधारणाओं की प्रकृति अमूर्त है, अवधारणा के व्यावहारिक रूप को देखने के लिए उसका अनुप्रयोग तत्काल नहीं होता और सिद्धान्त पर अधिक ध्यान देने को ही अधिगम का तरीक़ा माना जाता है। कुछ लड़कियों ने कहा कि अपने आप या व्हाट्सएप-आधारित अन्त:क्रियाओं के माध्यम से विज्ञान और गणित सीखने में

उन्हें कठिनाई होती है। यह व्यवहार और अपेक्षाएँ, स्वयं अपनी रुचि से कुछ सीखने और स्व-अधिगम का प्रदर्शन करने के विपरीत हैं, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया था।

अभिभावकों की भूमिका

इस अध्ययन में शामिल लड़कियों के परिवारों में स्मार्टफ़ोन, फीचर फ़ोन और टेलीविज़न सेट जैसे उपकरण साझा किए जाते थे। केवल एक लड़की के पास अपना फ़ोन था। फ़ोन का उपयोग ज़्यादातर पिता द्वारा किया जाता था और लड़कियों को यह केवल कुछ ही समय के लिए मिल पाता था, वह भी तब जब पिता घर पर हों। अगर घर पर टीवी था भी, तो उसका उपयोग ज़्यादातर मनोरंजन के लिए किया जाता था, शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए नहीं।

यद्यपि ऑनलाइन कक्षाओं में अभिभावकों की भागीदारी बहुत कम होती है, तो भी माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों, यहाँ तक कि पड़ोसियों ने भी बच्चों की पढ़ाई जारी रखने में बहुत सहयोग दिया, उन्हें सीखने के लिए प्रोत्साहित किया और उनका समर्थन किया। इसके बावजूद सभी लड़कियों ने महसूस किया कि अपनी शंकाओं के निवारण के लिए या गणित की समस्याओं को समझने के लिए शिक्षकों के साथ बातचीत करना बहुत ज़रूरी है, जो दर्शाता है कि अधिगम के लिए पुनरावृत्ति कितनी महत्त्वपूर्ण है।

कई अभिभावकों ने पहली बार *व्हाट्सएप* समूह का उपयोग देखा। उन्हें यह देखने का अवसर मिला कि उनके बच्चे के साथ क्या साझा किया जा रहा है और किस तरह की चर्चा की जा रही है। यह सम्भावित नियंत्रण है : अभिभावक चाहते हैं कि बेटियाँ स्कूल के 'नियमित' विषय सीखें। पितृसत्तात्मक भारतीय पुरुष नहीं चाहते कि उनकी बेटी सवाल करे, आलोचना करे या अपने अधिकारों, शारीरिक अखण्डता (Bodily Integrity) और इस तरह के अन्य विषयों के बारे में जानें। यदि किशोरों के साथ काम करने वाले संगठन ऐसी सामग्री को साझा करने का प्रयास करते हैं तो बहुत सम्भव है कि अभिभावक प्रतिरोध करें और तीखी प्रतिक्रिया दिखाएँ और राज्य इस बात से अवगत है।

शिक्षकों की भूमिका

युवा शिक्षार्थियों के जीवन में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। वे उनके भविष्य की परवाह करते हैं, उनका उत्साह बढ़ाते हैं और उनकी सहायता करते हैं। जिन बीस किशोरियों से हमने बातचीत की, वे सभी सरकारी स्कूलों में नामांकित थीं या शिक्षण के अनौपचारिक स्थानों की सदस्य थीं, जैसे गाँव के युवा क्लब। शिक्षक और समकक्ष शिक्षक बहुत प्रभावकारी होते हैं, जिनसे वे अपनी शंकाओं के बारे में पूछते हैं या उनसे बात करते हैं। लगभग सभी साक्षात्कारों में लड़कियों ने कहा कि वे अपने शिक्षकों के प्रोत्साहन को बहुत याद करती हैं, किसी विशेष विषय को समझने के लिए कक्षा में उन तक पहुँचना कितना आसान था। लेकिन केवल 25 प्रतिशत लड़कियों ने कहा कि लॉकडाउन के दौरान शिक्षकों ने उनसे सम्पर्क किया, जो कि मुख्यतः फ़ोन कॉल और *व्हाट्सएप* के माध्यम से किया गया।

शिक्षकों को तैयार करना

ऐसे समय में, जब हर कोई दूरस्थ शिक्षा के साथ प्रयोग कर रहा है, तो शिक्षकों को पाठ-योजना बनाने से पहले अपने शिक्षार्थियों को अच्छी तरह से समझने के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। प्रशिक्षण में कई आयामों को शामिल करना चाहिए - विद्यार्थियों की भलाई, विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन सीखने के आधार तैयार करना, माता-पिता को तैयार करना, डिजिटल सुरक्षा का ध्यान रखना और शिक्षार्थियों को अधिगम-अनुभव प्रदान करने के इस नए तरीक़े के साथ शिक्षकों का स्वयं सहज होना। प्रशिक्षण में विद्यार्थियों के साथ व्यक्तिगत वार्तालाप को शामिल करना चाहिए ताकि उनकी चिन्ताओं को समझकर उन्हें वह समर्थन दिया जा सके जिसकी ज़रूरत उन्हें इस प्रकार के आभासी (वर्चुअल) अधिगम के लिए पड़ती है। इसका अर्थ है कि शिक्षकों को विद्यार्थियों तक पहुँचने के लिए विभेदित रणनीतियों से लैस करना होगा, उदाहरण के लिए, एकीकृत *वॉयस रिस्पांस सिस्टम, व्हाट्सएप* और *टेलीकांफ्रेंसिंग* का उपयोग करना।

शिक्षकों को भी पाठ्यक्रम को फिर से तैयार करने और उसे विद्यार्थियों तक पहुँचाने के लिए संवाद स्थापित करने के बारे में चिन्ता हो सकती है। राज्य द्वारा उन्हें पर्याप्त सहायता दी जानी चाहिए।

कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दे

आगामी शैक्षिक वर्ष की परीक्षा के बारे में विद्यार्थियों के मन में काफ़ी चिन्ताएँ हैं, अतः उनके मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी महत्त्वपूर्ण है। उनमें से कई, ट्यूशन कक्षाओं में फिर से जाने लगे थे और पाठ्यपुस्तकों की अनुपलब्धता एक मुद्दा था। उदाहरण के लिए महाराष्ट्र में सामग्री को रेडियो या टीवी के माध्यम से बड़े पैमाने पर प्रसारित किया गया है। हमारे अध्ययन में शामिल अधिकांश लड़कियाँ संगीत और मनोरंजन के लिए मोबाइल फ़ोन का उपयोग कर रही थीं। शैक्षिक साधन के रूप में रेडियो ने अपनी प्रासंगिकता खो दी है, इसलिए सरकार को यह देखना चाहिए कि रेडियो सत्र में शिक्षार्थी उन्हें सुन भी रहे हैं या नहीं।

टेलीविज़न की अलग समस्याएँ हैं। एक तो, हर घर में टीवी

सेट नहीं है, दूसरे लड़कियों को घर के कई काम करने पड़ते हैं। तो हो सकता है कि जब पाठ स्ट्रीम किए जाते हैं, उस समय उन्हें टीवी देखने की फ़ुर्सत न हो। ओडिशा की एक लड़की के शब्दों में, *"अभी तो 20 प्रतिशत बच्चे ही इससे जुड़ पा रहे हैं, बाक़ी का क्या?"*

यह सोचना अव्यावहारिक होगा कि ऑडियो या वीडियो पाठ प्रसारित करने और *व्हाट्सएप* पर पाठ साझा करने से शिक्षार्थियों को अवधारणाओं की समझ मिल ही जाएगी। जब वे वर्चुअल या आभासी साधनों के ज़रिए पढ़ाई करते हैं तो वह अधिगम का समग्र वातावरण नहीं होता। हो सकता है कि उनके आस-पास कोई वयस्क हो या न हो या उनके पास बच्चों के सन्देह दूर करने का समय न हो या वैसा करने के लिए उनके पास अपना निजी स्थान न हो। लड़कियों के लिए यह और भी मुश्किल हो जाता है क्योंकि उन्हें हमेशा घर के कामों के लिए बुला लिया जाता है और उनकी ज़रूरतें अधूरी ही रह जाती हैं ।

राज्य को चाहिए वह केवल तात्कालिक सरोकारों का जवाब देने की बजाय एक व्यापक योजना के साथ सामने आए। कुछ प्रमुख विचारणीय पहलू यह हैं :

- शैक्षिक वर्ष की अवधि और अधिगम की प्राथमिकताएँ क्या होंगी?
- महामारी के बारे में इतनी अनिश्चितता को देखते हुए, अगले कुछ वर्षों के लिए क्या योजनाएँ हैं?
- क्या परीक्षाएँ हमेशा की तरह आयोजित की जाएँगी, या उनमें परिवर्तन आएगा या वे रद्द कर दी जाएँगी?

चूँकि आकलन का अर्थ परीक्षा नहीं है, इसलिए नए तरीक़ों के बारे में सोचा जा सकता है। हमारी बातचीत से यह बात उभरी है कि हमारे कई उत्तरदाताओं को महामारी के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं थी। तो क्या शिक्षा के इन कार्यक्रमों में पाठ्यक्रम के बाहर के विषयों को शामिल किया जा सकता है? राज्य द्वारा इस तरह के प्रमुख निर्णय और शिक्षार्थियों तक इसका सम्प्रेषण बहुत सारी चिन्ताओं को कम कर सकता है। जिन युवा शिक्षार्थियों की पहुँच, वेब और तकनीकी-उपकरणों तक है, उन्हें संचालन और सुरक्षा-कौशलों से लैस करना महत्त्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

भारत के सरकारी स्कूलों में मानव संसाधन, बुनियादी संरचना और अधिगम के संसाधन अपर्याप्त हैं। सरकारी स्कूलों में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया एक उपेक्षित क्षेत्र रही है। वर्तमान में भारत के पास राज्यों को बताने के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश या नीति नहीं हैं जो इस प्रकार की आपात स्थिति में शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने डिजिटल लर्निंग (डिजिटल पुस्तकालयों) की आवश्यकता पर ज़ोर दिया है पर डिजिटल विभाजन को कम करने की दिशा में आगे कैसे बढ़ना है यह स्पष्ट नहीं है।

हमारे अध्ययन में शामिल लड़कियों के लिए इन मुद्दों का बहुत महत्त्व है। वे अपने स्कूल, शिक्षकों और दोस्तों, सौहार्दपूर्ण गपशप, खेल, कन्धे पर वह हल्की-सी थपकी, इन सभी की कमी महसूस करती हैं; ज़रूरत पड़ने पर अपने शिक्षकों तक पहुँच पाने की सम्भावना – यह सारी बातें लड़कियों की शिक्षा के बारे में सरोकार रखने वाले लोगों के लिए बहुत ही सकारात्मक संकेत हैं। लगभग सभी, लॉकडाउन के दौरान कुछ-न-कुछ सीख रही थीं, भले ही उनके घर पर कोई टीवी या स्मार्टफ़ोन हो या न हो। जैसे वे साइकिल चलाना सीख रही थीं, नए हेयर स्टाइल बनाना सीख रही थीं, लिखावट में सुधार कर रही थीं, पिछली कक्षा के गणित, व्याकरण या चित्रकारी में सुधार लाने के प्रयास कर रही थीं। सीखने की उनकी इच्छा बहुत स्पष्ट है और वे चाहती हैं कि स्कूल (शौचालय की बेहतर सुविधाओं के साथ), खेल के मैदान और मूलभूत व्यवस्थाएँ फिर से खुलें। इबोला जैसी पिछली महामारी के अनुभव बताते हैं कि शायद लड़कियाँ स्कूल में वापस न लौटें; शायद और अधिक लड़कियों की शादी कम उम्र में कर दी जाएगी। वास्तव में यह बात राज्य और नागरिक समाज के संगठनों पर निर्भर है कि वे किशोरियों की आकांक्षाओं को पंख दें और उनका समर्थन करें ताकि वे स्कूल और युवा क्लब जैसे शिक्षण स्थानों में फिर से शामिल हो सकें।

माता-पिता, परिवारों और समुदाय के सदस्यों की भूमिका को समझने की ज़रूरत है। ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका और खाद्य-असुरक्षा के कारण अभिभावकों के दृष्टिकोण में भी बदलाव आ रहा है। इस बात पर सोच-विचार करना होगा कि किशोरवय की लड़कियों की शिक्षा को जारी रखने में उन्हें कैसे सहयोगी बनाया जाए। इन लड़कियों के जीवन में शिक्षकों की भूमिका भी बहुत महत्त्वपूर्ण है और उन पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। सामान्यतः, ग़ैर-सरकारी संगठनों और सरकार के बीच में स्कूलों की भूमिका, इसके बदलते हुए रूप और इसमें हो रहे परिवर्तनों के बारे में चर्चा होती है। अब परिवारों की भूमिका पर चर्चा करने की आवश्यकता है : परिवार सीखने की सुरक्षित जगह कैसे प्रदान कर सकते हैं, उन्हें ऐसा करने में कैसे समर्थन दिया जा सकता है और उनके दृष्टिकोण में किस प्रकार के परिवर्तन हो रहे हैं। इन सभी बातों को उस नैरेटिव का हिस्सा बनना चाहिए जिसका निर्माण एक ऐसे समय में हो रहा है जब हम कोविड-19 महामारी के बीच शैक्षिक संकट से निपटने के लिए तैयार हो रहे हैं।

यह तो स्पष्ट है कि सीखना जारी है। शिक्षार्थी सीमित संसाधनों

के साथ ही सही, लेकिन अपने विकल्प चुन रहे हैं और निर्णय ले रहे हैं कि वे क्या सीखना चाहते हैं और कैसे सीखना चाहते हैं। राज्य और ग़ैर-सरकारी संगठनों को चाहिए कि वे इन सभी को सीखने के रूप में मान्यता दें। इसके अलावा, हम सभी लोग जो अधिगम और शिक्षा के क्षेत्र में हैं, उन्हें इस बात में सक्षम होना चाहिए कि मानवीय सरोकारों को बरक़रार रखते हुए, प्रौद्योगिकी की उपलब्धता सहित विविध शिक्षण-संसाधनों की मदद से, विविध प्रकार के शिक्षार्थियों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न समाधानों को डिज़ाइन कर सकें।



दीपिका सिंह क्वेस्ट एलायंस के प्राथमिक विद्यालय कार्यक्रम आनन्दशाला में शिक्षा विशेषज्ञ हैं। उन्हें सरकारी स्कूलों को बेहतर बनाने पर केन्द्रित बड़े स्तर के शिक्षा कार्यक्रमों में एक दशक से अधिक का अनुभव है। दीपिका, शिक्षा को अधिक प्रासंगिक बनाने और शिक्षा में समता और समावेशन के मुद्दों को सम्बोधित करने के लिए प्रोग्राम डिज़ाइन, सामग्री विकास, क्षमता निर्माण और एड-टेक के उपयोग के क्षेत्र में विशेषज्ञता रखती हैं। उनसे **Singh-deepika@questalliance.net** पर सम्पर्क किया जा सकता है।



नेहा पर्ती, क्वेस्ट एलायंस में सेकेण्डरी स्कूल प्रोग्राम की एसोसिएट डायरेक्टर हैं। नेहा शिक्षार्थियों के लिए 21 वीं सदी के कौशल और वैज्ञानिक मानसिकता के निर्माण पर केन्द्रित शैक्षिक कार्यक्रमों को डिज़ाइन करने के क्षेत्र में विशेषज्ञ हैं। वे वर्तमान में एक ऐसे कार्यक्रम का नेतृत्व कर रही हैं जो किशोरवय की लड़कियों को समकालीन कौशल में सशक्त बनाता है और स्व-अधिगम के लिए प्रमुख व्यवहारों का निर्माण करता है। उनसे **neha@questalliance.net** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

अनुकूलन सीखना

अक्षता एस. बेल्लूदि

इस महामारी ने शिक्षकों के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (जिससे अधिकांश शिक्षक पूरी तरह अनजान थे) के विभिन्न क्षेत्रों में अपने कौशलों को विकसित करने की ज़रूरत पैदा करके यह दर्शाया है कि 'आवश्यकता सभी अनुकूलनों का आधार है'। इस समय यह कौशल इसलिए आवश्यक हैं ताकि शिक्षक अपने विद्यार्थियों तक पहुँच सकें। अभी अधिकांश शिक्षकों का उद्देश्य है—एक वयस्क सहयोगी के रूप में विद्यार्थियों के साथ जुड़ना, उनकी बात सुनना कि उनको कैसा महसूस हो रहा है, उन्हें भावनात्मक सहयोग प्रदान करना और हो सके तो उन्हें पढ़ाने की कोशिश करना ताकि वे शिक्षा से पूरी तरह कट न जाएँ।

व्हाट्सऐप ग्रुप, MS टीम्स, गूगल मीट, ज़ूम कुछ ऐसे एप्लीकेशन हैं जिनका उपयोग शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ जुड़ने के लिए कर रहे हैं। ब्लॉग्स लिखने के साथ-साथ यू-ट्यूब वीडियो बनाना व रिकॉर्डिंग करना आदि कुछ अन्य रणनीतियाँ हैं जिनके ज़रिए वे अपने विद्यार्थियों तक पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं। कई शिक्षक विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने के लिए एनीमेशन वीडियो भी बना रहे हैं। एक-दूसरे से सीखने के लिए भी शिक्षकों द्वारा इन साधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा रहा है।

इस महामारी ने शिक्षकों को प्रौद्योगिकी की विविध सम्भावनाओं को खोजने में मदद की है। साथ ही ऑनलाइन माध्यमों को इस्तेमाल करने का एक ज्ञानाधार (Knowledge base) बनाया है। इससे उन्हें स्थिति के सामान्य हो जाने पर अपने विद्यार्थियों को मिश्रित शिक्षण (Blended learning)—जिसकी कल्पना हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP) में की गई है —के अनुभव प्रदान करने में मदद मिलेगी।

मैं इस लेख में सरकारी स्कूलों के कुछ शिक्षकों के प्रयासों और विद्यार्थियों से जुड़े रहने के लिए नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने में उनकी सीखने की अवस्था (learning curve) को साझा करूँगी। सफलता की कहानियाँ ज़्यादातर उन शिक्षकों की हैं जिन्होंने अपने काम के चलते विद्यार्थियों के अभिभावकों के साथ-साथ समुदायों से भी अच्छा रिश्ता क़ायम किया था। इससे उन्हें अपने विद्यार्थियों तक पहुँचने और दूर रहकर भी उनके साथ जुड़ने में मदद मिल रही है।

शिक्षकों के प्रयास

केस स्टडी 1

सोमू सर हमारे ज़िले के सक्रिय शिक्षकों में से एक हैं। लॉकडाउन के दौरान सीखने में अपने विद्यार्थियों की सहायता करने के लिए सोमू सर ने उसी गाँव में रहने वाले स्कूल के पूर्व विद्यार्थियों की मदद ली। उनके 18 विद्यार्थियों में से सिर्फ़ 6 के पास ही स्मार्टफ़ोन थे। *व्हाट्सऐप ग्रुप* के ज़रिए शिक्षक द्वारा भेजे गए दैनिक कार्यों को पूरा करने में बाक़ी बच्चों की मदद पूर्व विद्यार्थियों ने की। पूर्व विद्यार्थियों (जो अब कॉलेज में थे) ने यह भी सुनिश्चित किया कि बच्चे अपना कार्य समय से पूरा करें। पूर्व विद्यार्थियों की मदद से ही सोमू सर ने वीडियो कॉल्स के ज़रिए अपने विद्यार्थियों से जुड़ने का प्रयास किया ताकि उन्हें अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए प्रोत्सहित किया जा सके।

अपने पसन्दीदा शिक्षक को वीडियो कॉल पर बात करते देखकर विद्यार्थी और उनके अभिभावक बहुत उत्साहित थे। सोमू सर, जो दो महीनों के लम्बे अन्तराल के बाद अपने विद्यार्थियों को देख पा रहे थे, वे भी उतने ही उत्साहित थे। हालाँकि शुरुआत में उनके कुछ विद्यार्थी खुलकर अपनी बात कहने से थोड़ा कतराते थे। पर उनके अभिभावक नियमित रूप से सर से बात करते थे और गाँव के आस-पास की दैनिक घटनाओं को साझा करते थे। सोमू सर ने इस अवसर का उपयोग समुदायों में कोरोनावायरस से निपटने के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए भी किया था। शिक्षा में डिप्लोमा पूरा कर चुके उनके एक वरिष्ठ विद्यार्थी ने उन बच्चों के लिए अँग्रेज़ी की कक्षाएँ शुरू की हैं, यह बात हमें बताते हुए सोमू सर काफ़ी ख़ुश हो रहे थे।

प्रौद्योगिकी के माध्यम से कार्य

शिक्षकों के लिए स्कूल खुलने के बाद जैसे ही सोमू सर गाँव पहुँचे, उनके सभी विद्यार्थी उन्हें देखने के लिए दौड़ते हुए आए। उनका हाथ पकड़ा और उनसे बात की। लेकिन अफ़सोस कि सर को उन्हें वापिस घर भेजना पड़ा। मुँह लटकाए वे सभी वापिस चले गए। यह बात सोमू सर को बहुत मार्मिक लगी। बहुत-से विद्यार्थियों ने स्कूल आने की अनुमति माँगी। लेकिन सर असहाय थे क्योंकि आदेशानुसार स्कूल में कक्षाएँ नहीं लगा सकते थे।



बच्चे अक्सर गाँव के मन्दिर के पास खेलते थे। फिर जून माह में किसी एक दिन सोमू सर ने स्कूल विकास और निगरानी समिति (SDMC) के सदस्यों और कुछ अभिभावकों की मदद से मन्दिर परिसर में ही कक्षाएँ शुरू कीं। सोमू सर जानते थे कि यह जोखिम भरा था। पर चूँकि यह एक साझा निर्णय था, इसलिए उन्होंने आगे बढ़ने का फ़ैसला लिया।

बच्चों को पढ़ाने के लिए सर अब *नली-कली* कार्ड्स और *ओदु कर्नाटका* प्रोग्राम के तहत सरकार द्वारा प्रदान की गई किताबों का उपयोग कर रहे हैं। *ओदु कर्नाटका* प्रोग्राम बच्चों को धाराप्रवाह पढ़ने की बुनियादी क्षमता और संख्याओं को पहचानने व उपयुक्त शिक्षण-अधिगम सामग्रियों की मदद से मूलभूत अंकगणितीय संक्रियाओं को करने की क्षमता हासिल करने में समर्थ बनाने के लिए शुरू किया गया था।

केस स्टडी 2

श्रीगौरी मैडम हमारे ज़िले के सबसे प्रेरक शिक्षकों में से एक हैं। पिछले वर्ष शुरू किए गए एक *व्हाट्सऐप ग्रुप* के ज़रिए उन्होंने अपने विद्यार्थियों के अभिभावकों के साथ जुड़ना शुरू किया। शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित एवं अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन द्वारा संचालित ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने और उनकी बेटी के स्कूल द्वारा संचालित ऑनलाइन कक्षाओं से उन्हें अपनी ऑनलाइन कक्षाएँ शुरू करने का विचार आया।

श्रीगौरी मैडम ने इसके बारे में अभिभावकों से भी बात की। यह ध्यान देना दिलचस्प है कि वह हमेशा से ही अपने सभी कार्यों में अभिभावकों को शामिल करने में सक्षम रही हैं और इस बार भी उन्होंने अभिभावकों को ऑनलाइन कक्षाओं के लिए मना लिया। जल्दी ही उन्होंने उस क्षेत्र में कार्यरत फ़ाउण्डेशन के स्रोत व्यक्तियों से मदद माँगी। फिर एक समय तय करके अभिभावकों के साथ कई अभ्यास सत्र किए और फिर कक्षाएँ शुरू कीं। प्रारम्भ में कई अभिभावकों को दिक़्क़त आई, लेकिन श्रीगौरी मैडम ने *ज़ूम* का उपयोग करने के लिए विस्तृत निर्देश के साथ वीडियो और ऑडियो रिकॉर्डिंग बनाईं जिससे अभिभावकों को जुड़ने की प्रक्रिया समझने में मदद मिली। कुछ शिक्षित अभिभावकों ने *ज़ूम* का उपयोग करने से परिचित होने में दूसरे लोगों की मदद भी की।



श्रीगौरी मैडम की ऑनलाइन क्लास

अपने सभी विद्यार्थियों को इतने लम्बे समय बाद पहली बार फ़ोन के ज़रिए देख पाना उनके लिए किसी बड़ी उपलब्धि जैसा था। उनके विद्यार्थी भी उन्हें देखकर रोमांचित थे। जब बच्चों ने उन्हें 'मिस, मिस!' कहा और बताया कि वे उन्हें देख सकते हैं, तो उन्हें ऐसा लगा जैसे वे वापिस अपनी कक्षा में ही आ गई हों।

ऑनलाइन कक्षाएँ शुरू होने के एक हफ़्ते बाद गाँव के पंचायत अध्यक्ष ने मैडम को फ़ोन किया और उनकी पहल के लिए उनका आभार व्यक्त किया, जिससे उन्हें प्रेरणा मिली। वह बताती हैं कि यदि अभिभावक काम की वजह से शहर से बाहर हों, तो भी वे सुनिश्चित करते हैं कि वे समय पर लौटें और अपने बच्चों को अपना फ़ोन दें ताकि बच्चे कक्षा में शामिल हो सकें। अब उन्होंने अपनी ऑनलाइन कक्षाएँ *गूगल मीट* पर सफलतापूर्वक स्थानान्तरित कर ली हैं। बच्चे ख़ुद इसे संचालित कर रहे हैं और आसानी से कक्षाओं में भाग ले रहे हैं।

श्रीगौरी मैडम हर दिन एक स्क्रीन रिकॉर्डर ऐप से अपना सत्र रिकॉर्ड करती हैं और उसे अभिभावकों के साथ साझा करती हैं। वह सुनिश्चित करती हैं कि बातचीत के दौरान अभिभावक बच्चों के साथ बैठें। वह अँग्रेज़ी माध्यम की कक्षा 2 के विद्यार्थियों को पढ़ाती हैं। मैडम शाम को छह से नौ बजे के बीच तीन बैचों में कक्षाएँ चलाती हैं। प्रत्येक बैच में दस बच्चे होते हैं। ऑनलाइन कक्षाओं के लिए उन्होंने विशेष रूप से एक व्हाइटबोर्ड की व्यवस्था की है। वह वर्कशीट भी तैयार करती हैं जो एक फ़ोटोकॉपी की दुकान पर दी जाती हैं। वहाँ से अभिभावक उन्हें लेते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि उनके बच्चे वर्कशीट पर काम करके उसे *व्हाट्सऐप ग्रुप* पर शेयर करें। श्रीगौरी मैडम एक *यू-ट्यूब* चैनल भी चलाती हैं जहाँ वह बच्चों के साथ किए अपने सभी कार्यों को पोस्ट करती हैं ताकि अभिभावकों को अपने बच्चों की प्रगति का अन्दाज़ा हो ।

मैडम अपनी ऑनलाइन कक्षाओं को लेकर बहुत उत्साहित और ख़ुश हैं कि वह अपने विद्यार्थियों तक पहुँच पा रही हैं तथा उनका सहयोग कर पा रही हैं। उन्होंने एक उदाहरण भी साझा किया। एक लड़का जो उनकी कक्षा में कभी नहीं बोलता था, अब ऑनलाइन कक्षाओं में आत्मविश्वास से अपनी बात रखता है। मैडम कहती हैं, "बच्चे हर दिन नई चीज़ों की तलाश करते हैं। बतौर शिक्षक यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम सीखने-सिखाने को सुगम बनाने के नए तरीक़े खोजते रहें।"

केस स्टडी 3

सिरसी की शम्शिया मैडम पाँचवीं से आठवीं कक्षा के अपने विद्यार्थियों के साथ एक दिलचस्प रणनीति से काम करती हैं। उनके ऑनलाइन जुड़ाव की शुरुआत 'स्पोकन इंग्लिश' की कक्षाओं से हुई, जो वह बच्चों के अभिभावकों के लिए फ़ोन पर संचालित करती थीं। इससे उनके कुछ विद्यार्थी भी प्रेरित हुए। वे चाहते थे कि मैडम उन्हें दैनिक आधार पर कुछ कार्य दें ताकि वे भी अपनी अँग्रेज़ी पर काम कर सकें।

मैडम के *इंग्लिश क्लब* के प्रतिभागी और उनके स्कूल के पूर्व विद्यार्थी उन बच्चों की मदद कर रहे हैं जिनके पास स्मार्टफ़ोन नहीं हैं। हालाँकि गाँव में नेटवर्क की दिक़्क़त थीं, पर ऑडियो क्लिपिंग, छोटे वीडियो आदि साझा किए गए। इन समूहों को अलग-अलग कार्य और फीडबैक भी दिए गए। अपने विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए *व्हाट्सऐप ग्रुप* के माध्यम से ड्राइंग, निबन्ध लेखन, वाद-विवाद, पहेलियाँ पूछना और अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

अब जब शिक्षकों के लिए स्कूल खुल गए हैं तो शम्शिया मैडम सीखने के विविध परिणामों को प्राप्त करने में अपने विद्यार्थियों की मदद करने के लिए ख़ुद के ख़र्चे से वर्कशीट प्रिंट करती हैं। अभिभावकों के ज़रिए बच्चों तक कार्य पहुँचाए जाते हैं। दिए गए कार्यों को समझाने और बच्चों के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए मैडम अपने प्रत्येक विद्यार्थी को व्यक्तिगत रूप से कॉल करने की पूरी कोशिश करती हैं। शम्शिया मैडम बच्चों तक पहुँचने और उन्हें जोड़े रखने में स्कूल समुदाय के सदस्यों और पूर्व विद्यार्थियों की भूमिका को अहम मानती हैं।

कुछ बाधाएँ

यह तीन उदाहरण हैं जिनमें शिक्षकों ने अपने-अपने तरीक़े आज़माए और महामारी के दौरान अपने विद्यार्थियों से जुड़े रहने के नए-नए विचार सामने रखे। हालाँकि विद्यार्थियों तक पहुँचने में शुरुआती समस्याएँ ज़रूर रहीं, पर शिक्षक ख़ुद को प्रौद्योगिकी सम्बन्धी व्यावहारिक कौशलों से प्रशिक्षित करने और अपने विद्यार्थियों को सफलतापूर्वक जोड़ने में सक्षम हुए।

इन सब उदाहरणों के बावजूद शिक्षक अपने कई विद्यार्थियों तक पहुँचने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, इनमें से अधिकांश ऐसे हैं जिनके पास स्मार्टफ़ोन नहीं हैं। स्मार्टफ़ोन अगर जुटा भी लिया जाए तो कुछ अभिभावक इंटरनेट का ख़र्चा नहीं उठा सकते हैं। कई तो ऐसे भी हैं जिनके पास एक साधारण फ़ोन भी नहीं है। ऐसे घरों में जहाँ अभिभावक दो जून की रोज़ी-रोटी के लिए भी जूझते हों, शिक्षा को सबसे कम तरज़ीह दी जाती है। परिवार की आमदनी बढ़ाने के लिए बच्चे खेतों और अन्य जगहों में मज़दूरी का काम करते हैं। इन समस्याओं को देखते हुए सामाजिक असमानता के बढ़ने की आशंका मन को जकड़ लेती है। स्कूल और शिक्षा ही इसका एकमात्र उपाय हैं।



अक्षता एस. बेल्लूदि कोप्पल ज़िला संस्थान, कर्नाटक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के स्रोत व्यक्ति के रूप में कार्यरत हैं। सार्थक शिक्षा के तरीक़ों को समझने के लिए उन्होंने वैकल्पिक स्कूलों में काम किया है। उन्हें अनुभवात्मक शिक्षण, घूमना और आदिवासियों की स्थानीय ज्ञान प्रणाली की पड़ताल करने में दिलचस्पी है। उनसे **akshata.belludi@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी

महामारी से प्रभावित बच्चों में से सबसे अधिक प्रभावित वंचित समुदायों के बच्चे, विशेषकर लड़कियाँ, हुए हैं। यह दुर्भाग्य की बात है कि बच्चे अपने सीखने की जगहों से दूर रहने पर मजबूर हो गए हैं। वंचित परिवार के बच्चों के लिए स्कूल एक सुरक्षित स्थान होता है जो उन्हें न केवल ज्ञान और आवश्यक जीवन-कौशल प्रदान करता है, बल्कि विभिन्न शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से अपने सहपाठियों के साथ जुड़कर उनकी मनो-भावनात्मक ख़ुशहाली को भी सुनिश्चित करता है। बच्चों के जीवन के इतने महत्त्वपूर्ण विकासात्मक चरण में इन सब जगहों का अभाव उनके सीखने और समग्र विकास के लिए एक ख़तरा है।

- शुभम गर्ग और विष्णु गोपाल मीणा, 'शिक्षा की पुनर्कल्पना', पेज 102

कान्फ्रेंस कॉल से पर्यावरण अध्ययन

अनिल कुमार पटेल

हमारे स्कूल के शिक्षकों ने योजना बनाई कि प्रत्येक शिक्षक अपनी रुचि का कोई एक विषय लेगा और किसी एक कक्षा के पन्द्रह बच्चों को कान्फ्रेंस कॉल के माध्यम से पढ़ाएगा। हालाँकि मैं शारीरिक शिक्षा और खेल विषय का शिक्षक हूँ, लेकिन पर्यावरण अध्ययन में रुचि होने के कारण मैंने एक माह तक इसे पढ़ाने की ज़िम्मेदारी ली। मुझे कक्षा चौथी के पन्द्रह बच्चे मिले। एक सप्ताह बाद मुझे कक्षा के पूरे तीस बच्चों के साथ जुड़ने का मौक़ा मिला।

एक-दो दिन तो यह सोचने में निकल गए कि कान्फ्रेंस कॉल में पढ़ाई करना कैसे सम्भव होगा। कुछ इस तरह के सवाल दिमाग़ में आते रहे :

- क्या सभी बच्चों के घर में मोबाइल फ़ोन होगा?
- नेटवर्क की समस्या तो नहीं आएगी?
- क्या बच्चे समय पर कॉल रिसीव कर पाएँगे?
- मौसम ख़राब रहा तो?
- दोनों तरफ़ से आवाज़ स्पष्ट सुनाई देगी?
- कॉल लग जाए तो क्या बच्चे और उनके अभिभावक घर में मिलेंगे?
- क्या अभिभावक और बच्चे कान्फ्रेंस कॉल में पढ़ने-लिखने, सीखने-समझने की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए तैयार होंगे?
- क्या बच्चे विषय को समझ पाएँगे?
- उन्हें पाठ की विषयवस्तु समझ आ पाएगी?
- क्या बच्चों की रुचि होगी? क्या वे कॉल में सहज महसूस करेंगे?
- क्या हम यह प्रक्रिया नियमित रूप से जारी रख पाएँगे?

मुझे लगा कि इन सभी सवालों के जवाब पाने के लिए पहले शुरुआत करना ज़रूरी है। मैंने शुरुआत की। पहले दिन कुछ इस तरह की बातचीत हुई — घर में समय कैसे बीत रहा है, मनोरंजन के लिए क्या करते हैं, घर की परिस्थिति कैसी है। इसके अलावा जीविकोपार्जन के साधन और घर के सभी लोगों के स्वास्थ्य के बारे में भी बातचीत की गई। हालाँकि बाद में भी प्रत्येक कॉल में इन सबके बारे में कुछ न कुछ बातें अवश्य होती रहीं, लेकिन इस तरह शुरुआत करने से अभिभावकों-बच्चों और शिक्षकों के बीच सहज वातावरण का निर्माण हुआ।

पहले तीन दिन कक्षा चौथी, पर्यावरण अध्ययन के पाठ-1 'रिश्ते-नाते' को पढ़ने, समझने और लिखने का काम किया। जब इस कविता को पढ़ाया जा रहा था, तब कान्फ्रेंस कॉल में उपस्थित सभी बच्चे और अभिभावक मिलकर इसे दोहरा रहे थे। साथ ही आस-पास के बच्चों की आवाज़ें भी आ रही थीं। यह सब पढ़ाई को और मज़ेदार बना रहा था। चर्चा के दौरान बच्चों और अभिभावकों का प्रसन्नता से बात करना अभिभावक-विद्यार्थी और शिक्षक के बीच अच्छे सम्बन्ध को दर्शाता है। बच्चों ने और मैंने कविता के अर्थ पर चर्चा की और इस बातचीत को आगे भी जारी रखा।

बच्चों को पर्यावरण अध्ययन की पुस्तक की पीडीएफ फाइल पहले ही भेज दी गई थी। उन्होंने पाठ के अन्त में दिए गए अभ्यास प्रश्नों को हल करने के लिए इसका उपयोग किया। बच्चों ने अपने जवाब कॉपी में लिखे और इस बात की पुष्टि उनके अभिभावकों ने की। बच्चों ने कान्फ्रेंस कॉल में ही बारी-बारी से दादी-नानी की कहानियाँ भी सुनाईं। उन्होंने 'अकती तिहार' के बारे में भी बताया, जो एक छत्तीसगढ़ी त्यौहार है। इसे मनाने के बाद किसान मानसून के मौसम के लिए अपने खेत जोतना शुरू करते हैं। इस प्रकार बच्चों और अभिभावकों ने इस पाठ के ज़रिए अपने रिश्तेदारों की यादें ताज़ा कीं।

बच्चों को पाठ्यपुस्तक की कविता 'दाँत' पढ़ने का होमवर्क दिया गया था। उनसे कहा गया था कि वे कविता पढ़कर प्रत्येक पंक्ति के अर्थ को अपने दैनिक जीवन के अलग-अलग उदाहरणों के माध्यम से समझने की कोशिश करें। कॉल में पाठ के प्रश्नों को प्रत्येक बच्चे से बारी-बारी से पूछा गया और उनके उत्तर लिखकर मुझे भेजने के लिए कहा गया। बहुत सारे बच्चों ने उत्तर भेजे। अधिकांश अभिभावकों ने अपने बच्चों द्वारा उत्तर लिखने की पुष्टि की। कुछ बच्चों ने बाद में उत्तर भेजने का वादा किया और भेजे भी।

आरम्भ में कक्षा चौथी के सभी बच्चों को पढ़ाना मेरी पाठ-योजनाओं में शामिल नहीं था। बाद में मैंने उन बच्चों को भी पाठ-1 के बारे में समझाते हुए पढ़ाया और अभ्यास-कार्य करने को कहा जिनसे मैं पहले नहीं जुड़ पाया था। मैंने उन्हें अपने अभिभावकों की मदद से स्वयं अभ्यास-कार्य पूर्ण करने का प्रयास करने को कहा। यह भी कहा कि यदि कोई दिक़्क़त हो तो मुझे कॉल कर लें। तो अब मैं कक्षा चौथी के सभी

बच्चों के साथ संवाद कर रहा था। पन्द्रह बच्चे शुरुआत से ही नियमित रूप से मेरी कॉल रिसीव कर रहे थे। इससे साबित होता है कि वे अपनी पढ़ाई में रुचि ले रहे थे। हालाँकि जिन बच्चों और अभिभावकों से नियमित सम्पर्क नहीं होता था, उन्हें कान्फ्रेंस कॉल का महत्त्व समझाना भी एक चुनौती था।

कभी-कभी कॉल पर जुड़ना इतना मुश्किल होता कि केवल पाँच बच्चों से जुड़ने में ही पूरा दिन निकल जाता था। कभी-कभी मैं केवल चार बच्चों से जुड़ पाता था, तो कभी-कभी केवल एक बच्चे से। लेकिन मैंने निरन्तरता बनाए रखने की कोशिश की और आगे बढ़ता रहा। यह निर्धारित किया कि प्रतिदिन पाँच बच्चों के साथ एक विषय पर बात की जाएगी। निर्धारित समय और दिन में सम्पर्क नहीं होने पर किसी अन्य दिन और समय पर वह कार्य किया गया। इस प्रकार मैं एक सप्ताह के भीतर कक्षा के सभी तीस बच्चों से सम्पर्क कर पाया।

वैसे तो सभी बच्चे आस-पास बसे नौ गाँवों में ही रहते हैं। पर कुछ बच्चे इस दौरान दूसरे गाँवों में अपने नानी-नाना के घर चले गए थे। मौसम ख़राब हो जाने और लगातार नेटवर्क व्यस्त रहने के कारण सम्पर्क करने में समस्या बनी रही। पर शिक्षक होने के नाते हम महामारी और सम्पूर्ण लॉकडाउन के बावजूद भी अपने बच्चों को शिक्षा प्रदान करने की निरन्तर कोशिश करते रहे। और हम रुकते भी क्यों? हमें तो अपने विद्यार्थियों से बहुत लगाव है। उदाहरण के लिए एक दिन जब हम ग्राम डोंड़की के पाँच बच्चों से सम्पर्क नहीं कर पाए तो हमें उसी गाँव में रहने वाले एक परिचित की मदद लेनी पड़ी। सभी बच्चों तक पहुँचने के लिए पूरे सप्ताह प्रतिदिन औसतन पाँच से छह घण्टे कठिन परिश्रम चलता रहा। इसके अलावा हमें कक्षा की पाठ-योजना भी तैयार करनी होती थी।

हमारे लिए तो लॉकडाउन की स्थिति में बच्चों से जुड़े रहना ही बहुत बड़ी बात थी। अधिकांश अभिभावकों से हमें बहुत ज़्यादा सहयोग मिला। उदाहरण के लिए जब हम दो बच्चों से कुछ दिनों तक मोबाइल से सम्पर्क नहीं कर पाए तो दसवीं कक्षा के दो बड़े बच्चों ने हमारी मदद की। लेकिन एक अन्य उदाहरण में पूरे तीन सप्ताह तक एक बच्ची से सम्पर्क करने के सभी प्रयास असफल होते रहे। उसके अभिभावक से भी कोई सहयोग नहीं मिल पा रहा था। फिर भी हमारा प्रयास जारी रहा और अन्तत: इस बच्ची से कान्फ्रेंस कॉल के माध्यम से सम्पर्क हो पाया।

हमने पाठ-3 'पानी रे पानी' की कविता पढ़ी। प्रत्येक पंक्ति को मित्रता, खेल के नियमों के महत्त्व, स्थानों के महत्त्व, सच और झूठ जैसे मूल्यों और विशेषताओं के सन्दर्भ में समझा गया। इस पाठ के अर्थ को बच्चों के खेल से जोड़कर बताया गया। पाठ पर हुई चर्चा को अख़बार में छपी एक ख़बर और वर्षा जल संग्रहण (rainwater harvesting) के बारे में बातचीत के ज़रिए आगे बढ़ाया गया। जब मैं पाठ को ज़ोर-ज़ोर से पढ़ रहा था तो बच्चे भी मेरे साथ पढ़ रहे थे। पढ़ने के बाद पाठ को कहानी बनाकर सुनाया गया था। कहानी में स्थानीय स्तर पर पानी की समस्याओं और पानी बचाने के तरीक़ों को भी शामिल किया गया था। पाठ में छत वाले घर का एक चित्र है। इसमें बारिश के दिनों में छत में एकत्र किया गया पानी पाइप द्वारा नीचे एक गड्ढे में एकत्र हो रहा होता है। बच्चों से इस चित्र को एक मिनट तक देखने के लिए कहा गया। फिर प्रत्येक बच्चे से उस चित्र पर आधारित कहानी बनाने को कहा गया। इस बीच बच्चों के साथ कुछ इस तरह के सवाल-जवाब हुए :

- आपके गाँव में पानी बचाने के क्या-क्या उपाय किए जाते हैं?
- आप अपने घर में पानी बचाने के क्या-क्या उपाय कर सकते हैं?
- हमारे स्कूल में पानी बचाने के क्या-क्या उपाय किए गए हैं?
- बारिश के पानी को एकत्र करके क्या-क्या किया जा सकता है?
- ज़मीन में चले गए पानी को हम कैसे उपयोग कर सकते हैं?

लॉकडाउन के दौरान अधिकांश बच्चों से मैं नियमित रूप से जुड़ पाया। परन्तु अभिभावकों के काम में ज़्यादा व्यस्त रहने के कारण बहुत दिक़्क़तें हुईं। मैं कक्षा चौथी के बच्चे लोकेन्द्र को पढ़ाने के लिए कॉल करता था। परन्तु लॉकडाउन के ख़त्म होने पर लोकेन्द्र अपने माता-पिता के साथ काम पर जाने लगा। उसके माता-पिता खेतिहर मज़दूर हैं। उसने बताया कि घर की आर्थिक स्थिति में सहयोग करने के लिए वह मज़दूरी पर जा रहा है और शाम को आता है। इस कारण उसके लिए अपनी पढ़ाई को जारी रखना मुश्किल था। इसके अलावा उसके इधर नेटवर्क की भी बहुत समस्या रहती है। फिर भी कान्फ्रेंस कॉल के दौरान एक दिन शाम सात बजे से आठ बजे तक उसने अपने माता-पिता के साथ दूसरे घर की छत पर जाकर, टॉर्च की रोशनी में पूरे उत्साह से मन लगाकर पढ़ाई की। इस स्थिति की जानकारी मुझे उस सत्र की पढ़ाई पूरी होने के बाद मिली। यह सुनकर मैं स्तब्ध रह गया था।

ऐसे अनेक अनुभव हुए हैं। सभी बच्चे मेरी कक्षा में उत्साह से भाग लेते रहे हैं। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में चुनौतियों के साथ आगे बढ़ने में बहुत मज़ा आया।



अनिल कुमार पटेल, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़ में स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा और खेल के शिक्षक हैं। उन्होंने शिक्षा में डिप्लोमा और शारीरिक शिक्षा में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। इसके पहले वे नेहरू युवा केन्द्र संगठन (युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय, भारत सरकार), राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय युवा कोर के ब्लॉक कोऑर्डिनेटर थे। उनसे **anil.patel@azimpremjifounation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है।

कोविड-19 : सीखने के एक साधन के रूप में

अनिल एस अंगडिकी

जब हमें समाचार चैनलों से भारत के विकसित महानगरों के कुछ लोगों में, और वह भी सिर्फ़ उनमें जो दूसरे देशों से आए थे, एक संक्रमण के बारे में पता चला तो उत्तर-पूर्वी कर्नाटक के सुदूर इलाक़े में हमें यह बात इतनी गम्भीर नहीं लगी थी। जब पूरे देश में पहले लॉकडाउन की घोषणा हुई, जिससे हमें अपने विद्यालयों को तय समय से एक महीने पहले ही बन्द करना पड़ा, तब हमें थोड़ी चिन्ता हुई। चूँकि हालात एकदम नए थे और विद्यालयों के खुलने की हमारी उम्मीदें धुँधली होनी शुरू हो गई थीं तो बच्चों के घर के हालात और उनके अभिभावकों की चुनौतियों के बारे में हमारी चिन्ता बढ़ने लगी।

एक शुरुआत

चुनौतियाँ

हर बार की तरह हालात समझने के लिए हमने चर्चाएँ शुरू कीं। हमने प्रत्येक अभिभावक के साथ अलग-अलग बातचीत की। बातचीत से हमें महामारी के उस स्याह पक्ष के बारे में पता चला जो निम्न मध्यवर्गीय परिवारों, ग़रीब और हाशियाकृत समुदायों पर असर डाल रहा है। हमें कुछ बच्चों के अभिभावकों के बारे में जानकारी मिलने लगी : कुछ अभिभावक शहरों से अपने घर लौटने के लिए संघर्ष कर रहे थे, तो कुछ अन्य निर्माण स्थलों पर काम करने या ऑटो चलाने या सड़क किनारे अपनी दुकान खोलने भी नहीं जा पा रहे थे, यहाँ तक कि पर्याप्त मात्रा में भोजन मिलना भी उनके लिए एक चुनौती थी।

उनमें से कुछ लोगों तक तो हम फ़ोन के ज़रिए भी नहीं पहुँच पा रहे थे क्यूँकि रीचार्ज का ख़र्चा उठाने में असमर्थ होने के कारण उनके फ़ोन कनेक्शन बन्द हो गए थे। बाहरी आवाजाही पर पूर्णत: पाबन्दी होने के कारण बच्चों के घर जाकर बातचीत करने और चुनौतियों से निपटने का हमारा सामान्य तरीक़ा असम्भव हो गया था।

जुड़ाव के नए तरीक़े

जब हमारी संस्था ने मानवीय एवं स्वास्थ्य सहायता में ज़िला प्रशासन की मदद करने के प्रयास शुरू किए, तो हमारी उम्मीदें बढ़ने लगीं। हमें नोडल अधिकारियों से बच्चों के घर जाकर उनसे बातचीत करने की अनुमति मिल गई। इस प्रक्रिया ने हमें विभिन्न तरीक़ों से मदद की। इसने :

- अभिभावकों और बच्चों के साथ हमारे रिश्ते को मज़बूत किया। महामारी के बीच उन तक पहुँचने के हमारे प्रयास की उन्होंने सराहना की।
- महामारी और उससे बचाव के नियमों के प्रति जागरूकता पैदा करने में हमारी भूमिका की समझ बनाई।
- बच्चों को उनकी शैक्षणिक क्षमताओं को विकसित करते हुए प्रभावी गतिविधियों से जोड़ने के हमारे प्रयासों को शुरू करने में मदद की।

भ्रान्तियों को दूर करना

यह कोविड-19 के मामलों में बढ़ोतरी का शुरुआती दौर था। अधिकांश लोगों में इस संक्रमण के फैलने को लेकर भ्रान्तियाँ थीं। इसे रोकने के लिए चार गाँवों के अभिभावकों के साथ समूहों में योजनाबद्ध बैठकें की गईं। वायरस कैसे फैलता है, संक्रमित होने या वाहक बनने से बचने के लिए किए जाने वाले एहतियाती उपायों को कुछ प्रदर्शनों और पोस्टरों के ज़रिए प्रभावी रूप से बताया गया।

जागरूकता पैदा करने और शैक्षणिक जुड़ाव बनाने के लिए बच्चों के साथ बातचीत शुरू करने का हमारा अगला क़दम मुश्किल लग रहा था, क्योंकि शिक्षा-विभाग ने तब तक ऑनलाइन कक्षाओं की पहल कर दी थी और हमें इसका पालन करना था।





कोविड-19 के बारे में जागरूक करने के लिए अभिभावकों के साथ बैठक

बदलते तौर-तरीक़े

हमने बच्चों और अभिभावकों के पास मोबाइल फ़ोन जैसे संसाधनों की उपलब्धता के बारे में पता लगाना शुरू किया। यह संसाधन ऑनलाइन जुड़ावों में मददगार हो सकते हैं। हमारे स्कूल की डिजिटल स्थिति राज्य के अन्य गाँवों की औसत डिजिटल स्थिति से बहुत अलग नहीं थी : केवल 50 प्रतिशत अभिभावकों के पास स्मार्टफ़ोन थे। हमने प्रत्येक कक्षा के शिक्षकों और बच्चों के *व्हाट्सऐप ग्रुप* बनाने शुरू किए। पड़ोसियों को एक साथ जोड़ा ताकि इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों को साझा किया जा सके।

सीखने-सिखाने के साधन जैसे कहानियाँ, कविताएँ और कुछ वर्कशीट बच्चों को या तो *व्हाट्सऐप* के ज़रिए भेजी गईं या फिर फ़ोन करके बताई गईं। बच्चों से कहा गया कि वह अपनी पूरी की हुई वर्कशीट को डिजिटल माध्यम से साझा करें। उच्च-प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए ऑनलाइन लिंक साझा करने जैसे कुछ अन्य तरीक़े भी आज़माए गए। लगभग दो हफ़्तों में हमारे पास ऑनलाइन कक्षाओं में आने वाली दिक़्क़तों और चुनौतियों के साथ-साथ इसके फ़ायदों की भी एक सूची तैयार हो गई थी।

सन्देह

सबसे बड़ी चिन्ता यह थी कि कहीं हम अपने बच्चों के मन में आर्थिक असमानता जैसा भाव तो नहीं ला रहे हैं? अपने स्कूल में हम हमेशा इस चीज़ से बचने की कोशिश करते आए हैं। हमने स्कूल में ऐसा माहौल बनाया है जिसमें सभी को सीखने, इस्तेमाल करने, खेलने आदि के लिए एक समान संसाधन दिए जाते हैं। कम आय के इस दौर में जिन अभिभावकों की पहली प्राथमिकता अपने बच्चों को भोजन और आश्रय प्रदान करना है, जिनके पास टीवी भी नहीं है, उनसे हम अपने बच्चों को स्मार्टफ़ोन दिलाने की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं? क्या हम ऑनलाइन साधनों के माध्यम से शैक्षणिक सहायता के एक अस्थायी खालीपन को भरने के नाम पर सामाजिक न्याय और मानवतावादी मूल्यों के आदर्शों की अनदेखी कर रहे थे?

हमारे मन में इन सब बातों के आने का कारण इस प्रक्रिया के दौरान हुई कुछ घटनाएँ थीं। हमने देखा कि परिवार में एकमात्र स्मार्टफ़ोन केवल अभिभावक (मुख्यत: पिता) के पास होता था। पिता अपने बच्चों को केवल स्कूल की पढ़ाई के लिए इसका उपयोग करने की अनुमति देते थे। पर वह भी देर शाम को और कभी-कभी तो देते ही नहीं थे। कई बार, फ़ोन में इंटरनेट डेटा भी अपर्याप्त होता था। इन सब बातों के चलते कुछ बच्चे अपने ख़ुद के स्मार्टफ़ोन की माँग करने लगे। लड़कियों के लिए तो हालात और भी बुरे थे। क्या हम सीखने-सिखाने के तरीक़ों के नाम पर न्यायपूर्ण, मानवीय और समतामूलक समाज की अवधारणाओं का त्याग कर रहे थे, जबकि वास्तव में तो सीखने-सिखाने के तरीक़ों को इन मूल्यों को स्थापित करने प्रबल साधन होना चाहिए? यह कुछ ऐसे सवाल थे जो हमने ख़ुद से पूछे।

हमारे चिन्तन के परिणामस्वरूप चर्चाओं का दूसरा दौर शुरू हुआ। हम सभी इस बात पर सहमत थे कि इन परिस्थितियों में बच्चों के साथ बातचीत करने का सबसे प्रभावी तरीक़ा आमने-सामने की बैठकें होंगी। अन्त में हमने यह तय किया कि गाँवों में बच्चों के छोटे समूहों तक पहुँचा जाए। चुनौती यह थी कि पहली कक्षा से लेकर दसवीं कक्षा तक के हमारे बच्चे पाँच से दस किलोमीटर की दूरी में फैले हुए छह गाँवों में रहते थे!

काम करने की योजना

जो सबसे अच्छा विचार उभरकर आया, वह था जागरूकता के साथ-साथ अकादमिक शिक्षण के लिए एक थीम के रूप में कोविड-19 को इस्तेमाल करना। इसलिए भाषा (कन्नड़, अँग्रेज़ी और हिन्दी), विज्ञान, सामाजिक विज्ञान को समाहित करके शिक्षण के लिए एकीकृत दृष्टिकोण वाली योजना बनाई गई। ऐसे में महामारी से बेहतर प्रासंगिक सामग्री भला क्या हो सकती है, जब बच्चे समाचार पत्रों, टीवी चैनलों, समुदायों के बीच की चर्चा और घर पर हो रही बातचीत के माध्यम से लगातार इसके बारे में देख/सुन रहे थे? शिक्षकों के छोटे समूहों ने इस विषय पर काम किया। चूँकि शिक्षक समूह में शामिल बच्चों के सीखने के स्तर से परिचित थे, इसलिए उनका काम थोड़ा आसान हो गया था।

हमारे द्वारा चुने गए कुछ विषय थे : सूक्ष्मजीवों का परिचय जिनके साथ हम रह रहे हैं, कुछ सामान्य वायरल बुखार (जैसे फ्लू) के उदाहरण जो हमारे स्वास्थ्य पर असर डालते हैं, *कोरोना* नामक वायरस के एक नए स्ट्रेन का परिचय, टीके (वैक्सीन) जैसे शब्दों से परिचय और पूरी दुनिया में तरह-तरह के एहतियाती क़दम क्यों उठाए जा रहे थे। हमने इनमें से कुछ का वर्णन करने के लिए वीडियो का उपयोग किया। इस बारे में

भी चर्चा की कि वायरस कैसे फैलता है और मास्क पहनने व हाथ धोने जैसे स्वच्छता तरीक़ों को अपनाकर और शारीरिक दूरी बरतकर संक्रमण से कैसे सुरक्षित रह सकते हैं। हमने *क्वांरटाइन, आइसोलेशन, टैस्टिंग* जैसे नए शब्दों के बारे में भी बताया।

इससे बच्चों की ज़िन्दगी पर लॉकडाउन के प्रभाव के बारे में चर्चाएँ शुरू हुईं। यह चर्चाएँ बच्चों के ख़ुद के अनुभव और उनके द्वारा समाचारों से इकट्ठा की गईं देश के अन्य क्षेत्रों की केस स्टडी पर आधारित थीं। हम डेटा-हैंडलिंग और विश्लेषण जैसे मुद्दों पर भी चर्चा कर पाए।

इसी तरह, इतिहास और भूगोल पढ़ाने के लिए हमने पहले आई महामारियों पर नक़्शों की मदद से चर्चा की। कहानियाँ, कविताएँ, गीत, चार्ट, पोस्टर, केस स्टडी, अख़बार की कटिंग, नक्शे, हमारे द्वारा तैयार किए गए और *यू-ट्यूब* से चुने गए वीडियो आदि कुछ ऐसे संसाधन थे जिन्हें हम इस्तेमाल में लेते थे। टीम द्वारा किए गए इन सभी प्रयासों ने बच्चों को विषय के बारे में सुनने, अवलोकन करने और उस पर चर्चा करने में मदद के साथ-साथ महामारी के बारे में जागरूकता पैदा करने में भी मदद की। धीरे-धीरे समय के साथ हमारी समय-सारिणी और प्रत्येक समूह से हमारी मुलाक़ात दोनों और अधिक प्रभावी होने लगीं। इसके साथ ही अभिभावक भी हमारे कार्य से काफ़ी आश्वस्त नज़र आए।

इस कार्य ने विभिन्न विषयों के लिए आवश्यक कौशलों को प्राप्त करने के लिए कोविड-19 महामारी द्वारा उभरी कई सम्भावनाओं से अवगत कराया। परियोजनाएँ बनाना आसान हो गया था। उदाहरण के लिए, कार्यस्थल पर हम हाथों को साफ़ रखने के नियम का पालन करते थे और यदि कभी यह नियम टूटता तो संवाद किया जाता था। पोस्टर और बुकलेट बनाने से बड़े बच्चों के मन में ज़िम्मेदारी और भागीदारी की भावना आती थी।





बच्चों के छोटे समूहों के साथ कार्य करते शिक्षक

चुनौतियाँ

बेशक, टीम को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा। कार्य के दौरान कुछ बच्चों की उपस्थिति अनियमित थी क्योंकि उनके अभिभावक उन्हें काम करने के लिए खेत ले जाते थे। और चूँकि यह स्कूल के दिन नहीं थे, इसलिए कोई नियम लागू नहीं होते थे।

कार्यस्थलों को लेकर भी कुछ चुनौतियाँ रहीं। उदाहरण के लिए कुछ जगहों पर काफ़ी भीड़ थी, तो कुछ जगहों पर जल-जमाव की समस्या थी। कोविड-19 के संक्रमण के ख़तरे के बीच गाँवों में जाना और परिवहन की अनुपलब्धता भी एक बड़ी चुनौती थी।

अनुभवों से सीख

- इस अवधि के लिए एक विशिष्ट विषय को इस्तेमाल करके तैयार की गई प्रासंगिक सामग्री भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन आदि में बच्चों की बुनियादी दक्षताओं के विकास में प्रभावी है।
- डिजिटल सामग्री के उपयोग के साथ-साथ आमने-सामने मिलकर कार्य करना प्रभावी प्रतीत होता है, ख़ासकर उच्च-प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए।
- 'दूर सभा' टेलीकान्फ्रेंस जैसे कुछ साधन उपयोगी होते हैं क्योंकि इनका उपयोग साधारण फ़ोनों पर किया जा सकता है। और इसमें बच्चों को अँग्रेज़ी बोलने में कम संकोच होता है क्योंकि इसमें वीडियो नहीं दिखता है।
- आमने-सामने मिलकर कार्य करना बेहतर है क्यूँकि शिक्षार्थी, उनके साथियों और सुगमकर्ता के बीच की सीधी बातचीत से व्यक्तिगत रूप से ध्यान देने की सम्भावना बढ़ जाती है। साथ ही यह प्रत्यक्ष भागीदारी, जिसमें पाँचों इन्द्रियों का इस्तेमाल किया जाता है, को प्रोत्साहित करता है और बेहतर ढंग से सीखने में मदद करता है।

टीम के प्रयासों के परिणामस्वरूप नियमित विद्यालयों में डिजिटल सामग्री का निर्माण और इस्तेमाल होना शुरू हो गया है। इन प्रयासों ने शिक्षकों को कक्षा से बाहर निकलने और बाहर जाकर शिक्षण करने को लेकर अधिक आश्वस्त किया है। इस तरह महामारी ने हमें नई चीज़ों को सीखने का मौक़ा दिया है, जिन्हें हम अपनी सामान्य कार्य योजनाओं में भी इस्तेमाल में ले सकते हैं।



अनिल एस अंगडिकी 2012 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े हुए हैं और फ़िलहाल अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, जिला संस्थान यादगीर, कर्नाटक में अज़ीम प्रेमजी स्कूल में कार्यरत हैं। फ़ाउण्डेशन के साथ जुड़ने से पहले वह नौवीं और दसवीं कक्षा को रसायन विज्ञान पढ़ाते थे। उनसे **anil.angadiki@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी

साधन थोड़ा, दिल चौड़ा

अंकिता ठाकुर छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले के पुस्सोर तहसील में स्थित एक निजी अँग्रेज़ी माध्यम स्कूल की बारहवीं कक्षा की छात्रा है। वह अपने परिवार की दूसरी पीढ़ी है जो स्कूल जा रही है। अंकिता की माँ के माता-पिता दिहाड़ी मज़दूर थे। लेकिन अंकिता की माँ ने स्पेशल एजुकेशन में बीएड कर लिया है और अब वे स्पेशल एजुकेशन की ब्लॉक रिसोर्स पर्सन हैं। अंकिता के पिता भी स्नातक हैं और एक निजी कम्पनी में दिहाड़ी मज़दूर हैं।

अंकिता की रुचि जीव-विज्ञान में है। हालाँकि पहले उसके परिवार वाले सोचते थे कि वह शिक्षक बनने का विकल्प चुनेगी। लेकिन एक महिला डॉक्टर से मिलने के बाद अंकिता ने एमबीबीएस व बीडीएस के पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने हेतु चिकित्सीय प्रवेश परीक्षा (राष्ट्रीय योग्यता-सह-प्रवेश परीक्षा - NEET) देने का फ़ैसला लिया। अंकिता एक होशियार छात्रा है। उसने दसवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में अस्सी प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। स्कूल में यह उसका महत्त्वपूर्ण आख़िरी साल है, जिसमें उसके ऊपर मेडिकल की प्रवेश परीक्षा में सफल होने का दबाव भी है। हमने उसकी परीक्षा की तैयारी तथा महामारी के दौरान और उससे पहले की दिनचर्या में आए बदलावों के बारे में कुछ सवाल-जवाब किए।

अंकिता इस साल कड़ी मेहनत के साथ पढ़ाई की एक सख़्त समय-सारणी का पालन कर रही थी। वह सुबह 7:30 बजे से दोपहर के 1:30 बजे तक स्कूल में पढ़ती। इसके बाद घर पर तीन घण्टे खुद से पढ़ती। उसके बाद दो घण्टे भौतिकी और रसायन-विज्ञान की ट्यूशन ले रही थी।

अप्रैल के पहले हफ़्ते में, स्कूल ने सभी बच्चों को व्हाट्सएप के माध्यम से सूचित किया कि वे प्रतिदिन दो घण्टे सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक ऑनलाइन कक्षाएँ लेना शुरू करेंगे। परिवार में सिर्फ़ एक स्मार्टफ़ोन था जो उसकी माँ अपने साथ लेकर काम पर जाती थी। अब घर से काम करने के दौरान भी उन्हें इसकी ज़रूरत पड़ती थी। इसलिए, उन्होंने एक दूसरा स्मार्टफ़ोन ख़रीद लिया। अंकिता का एक छोटा भाई भी है जो आठवीं कक्षा में पढ़ता है और उसे भी ऑनलाइन कक्षाओं के लिए स्मार्टफ़ोन की ज़रूरत पड़ती है। जैसे-तैसे तीन लोग मिलकर दो स्मार्टफ़ोन से काम चला रहे थे।

अंकिता ने नीट परीक्षा की तैयारी के लिए रोज़ाना दो घण्टे की ऑनलाइन कोचिंग कक्षाएँ शुरू की हैं। उसके लिए भी उसे स्मार्टफ़ोन की ज़रूरत पड़ती है। वह कहती है, ऑनलाइन पढ़ाने में कोचिंग संस्था के शिक्षक ज़्यादा पेशेवर ढंग से कार्य करते हैं। उसके स्कूल के शिक्षकों की ऑनलाइन पढ़ाने की प्रक्रिया काफ़ी बोझिल रही थी और उन्हें खुद बहुत सीखने की ज़रूरत पड़ी। शुरूआत में ऑनलाइन कक्षाएँ बहुत ही अनियमित रहीं, लेकिन शिक्षकों ने खूब मेहनत की ताकि बच्चों को आ रही दिक़्क़त दूर कर सकें। अब शिक्षक ऑनलाइन माध्यम में कक्षा लेने में ज़्यादा सहज महसूस करते हैं और कक्षाएँ भी नियमित चल रही हैं।

वह कहती है कि उसे अपने दोस्तों और शिक्षकों की बहुत याद आती है। ख़ासकर भौतिकी के अध्यापक की, जो बहुत अच्छा पढ़ाते हैं और प्रयोगशाला में प्रयोगों के माध्यम से सारी अवधारणाएँ समझाते थे। अब कोई प्रयोग नहीं होते। अपनी शंकाओं का समाधान कर पाना भी कक्षा में ज़्यादा आसान था। हालाँकि अब कई शिक्षक रविवार को 'शंका सत्र' रखते हैं जिसमें बच्चे उस हफ़्ते में पढ़ाए किसी भी विषय पर अपनी शंकाओं पर स्पष्टीकरण पूछ सकते हैं।

अंकिता हमें बताती है कि स्कूल में वह अपनी प्रगति के बारे में ज़्यादा अच्छे से वाक़िफ़ थी क्योंकि बार-बार टेस्ट होते थे। अब उसके लिए यह जानना बेहद मुश्किल है, हालाँकि शिक्षक पूरी कोशिश करते हैं, उसे टेस्ट पेपर भेजते हैं और उसके जवाबों की ऑनलाइन समीक्षा भी करते हैं। पर इससे उसे इस बात की पूरी तस्वीर नहीं मिलती कि वह कैसा कर रही है।

क्या उसकी कक्षा के सारे बच्चे ऑनलाइन कक्षा से जुड़ने में सक्षम हैं? पूछने पर वह कहती है, 'नहीं, एक लड़की जिसके पास स्मार्टफ़ोन नहीं है और वह खरीद भी नहीं पाई, उसने विद्यालय छोड़ दिया। वह एक भी कक्षा अटेंड नहीं कर पाई। लेकिन शिक्षकों ने पहल की और लॉकडाउन हटने पर उन्होंने उस लड़की से कहा कि वह हर दिन स्कूल आए और प्रत्यक्ष रूप में उनसे पढ़े। अंकिता को इस बच्ची से हमदर्दी है। उसने तय किया है कि वह अपनी माँ से कहेगी कि अपने दो स्मार्टफ़ोन में से एक स्मार्टफ़ोन उसकी दोस्त को दे दे। हमने पूछा कि फिर तुम क्या करोगी? वह कहती है कि घर में एक पुराना टैब (टैबलेट) रखा है, उसे ठीक करवाकर खुद इस्तेमाल करेगी।

जैसा अंकिता ने लर्निंग कर्व को बताया।

अनुवाद : सात्विका ओहरी

डिजिटल होना | शिक्षक क्षमता विकास

बीबी रज़ा खानम

एल्बर्ट आइंस्टाइन ने कभी कहा था, “कठिनाइयों के बीच ही अवसर निहित होता है।” शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया उन चुनौतियों में से एक है जिन्हें कोविड-19 अपने साथ लेकर आया। इस स्थिति में सभी लोग महामारी के कारण होने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए नए विकल्प ढूँढ़ने का पुरज़ोर प्रयत्न कर रहे हैं। जैसे ही कोविड-19 के प्रभाव स्पष्ट हुए स्कूल तुरन्त बन्द हो गए और कुछ समय के लिए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पूरी तरह ठप्प पड़ गई। शिक्षकों की क्षमता विकास ने भी एक नया मोड़ ले लिया। अब इसका तरीक़ा वास्तविक अन्त:क्रिया से डिजिटल अन्त:क्रिया में बदल गया। सरकारी स्कूलों ने शिक्षण का विकेन्द्रीकरण करके और सीखने की काल्पनिक स्थितियाँ पैदा करके एवं ऑनलाइन माध्यम का इस्तेमाल करके इन चुनौतियों का जवाब दिया।

मैं इस दौरान शिक्षक क्षमता विकास के लिए हमारे द्वारा किए गए प्रयोग के अनुभव को साझा कर रही हूँ।

शुरुआत में, हम इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं थे कि शारीरिक रूप से अनुपस्थित अपने शिक्षकों को साथ लाकर कार्य कर पाएँगे। दूरस्थ विधि (Distance mode) से काम करना हमारे लिए एक अलग और नया तरीक़ा था। शुरुआत में हमें और शिक्षकों दोनों को यह मुश्किल लग रहा था, लेकिन धीरे-धीरे हमने जाना कि यह तरीक़ा काम करता है और प्रौद्योगिकी का उपयोग करना उतना मुश्किल नहीं है—वास्तव में यह काफ़ी आसान और प्रभावी है!

हममें से कई लोग शिक्षकों, प्रधान शिक्षकों और कार्यकर्ताओं से सम्पर्क बनाकर रखने और उन्हें सार्थक गतिविधियों में शामिल करने के लिए विभिन्न तरीक़े आज़मा रहे हैं। इसलिए हमारे पास कुछ अनुभव पहले से था। हमने महसूस किया कि अब हम बड़ी संख्या में शिक्षकों तक पहुँच सकते हैं। पहले की तुलना में ज़्यादा बड़े क्षेत्रों को अधिक बार सम्मिलित कर सकते हैं। शिक्षक भी ऑनलाइन माध्यम को ख़ुद को विकसित करने के साथ-साथ महामारी के कारण पैदा हुए तनाव को दूर करने का अच्छा ज़रिया मान रहे हैं।

हमने शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं और इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए उनके साथ कार्य करने के विभिन्न तरीक़ों पर विचार-मन्थन किया। फिर शिक्षकों के उस समूह के साथ कार्य शुरू किया, जिनके साथ हमने पहले प्रत्यक्ष रूप से कार्य किया था। शिक्षकों और उनकी ज़रूरतों को जानने के बाद, हमने उनकी रुचि, दृष्टिकोण, भागीदारी और उनके द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषयों के अनुसार खाक़ा बनाया।

बदलाव की तैयारी

अलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने कहा था, “किसी और चीज़ से पहले, तैयारी सफलता की कुंजी है।” पहले हमने समूहों और उनकी ज़रूरतों की पहचान कर ली। फिर हमें शिक्षकों के वर्तमान स्तर और विषय के ज्ञान, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की समझ,सीखने-सिखाने के तरीक़े (teaching practices) के सन्दर्भ में हम उन्हें जिस स्तर पर ले जाना चाहते हैं, इसका ध्यान रखते हुए उनके सीखने की प्रक्रिया के खाक़े को तैयार करना था। उन्हें इस प्रक्रिया में शामिल करना भी ज़रूरी था ताकि वे स्वयं सीखने की ज़िम्मेदारी लें। ऐसा हमने उनकी ज़रूरतों और उन्हें पूरा करने की हमारी योजनाओं पर चर्चा करके किया। हमने अपने उद्देश्यों, अन्त:क्रिया के तरीक़ों और बारम्बारता के बारे में भी बात की। हमने अवधारणा नोट तैयार किए और उन पर राय लेने के लिए उन्हें समूह के साथ साझा किया। इससे यह प्रक्रिया समृद्ध हुई, जिससे हमें उन हिस्सों को पहचानने में भी मदद मिली जिन पर शायद हमारा ध्यान नहीं गया होता।

चूँकि हमें अपने टूल किट में ठोस उदाहरणों और अनुभवों की आवश्यकता थी, इस कारण तैयारी महत्त्वपूर्ण थी। ऐसा करने के लिए हमने संसाधन जुटाए, पढ़ा, मार्गदर्शन माँगा और संगठन के उन लोगों तक पहुँचे जो स्रोत व्यक्तियों के रूप में कार्य कर सकते थे, ताकि हम उनके अनुभव से लाभ उठा सकें। इससे हमें सामग्री के साथ-साथ सत्रों की योजना के सन्दर्भ में भी अच्छी तैयारी करने में मदद मिली।

दूरस्थ विधि से सुगमीकरण करने के लिए अपने आप को तैयार करना भी बहुत ज़रूरी था। शिक्षकों के शारीरिक रूप से उपस्थित हुए बिना हम उनके साथ काम कर रहे थे। उन शिक्षकों के साथ भी अन्त:क्रिया कर रहे थे जिनसे हम वास्तविक रूप में कभी नहीं मिले थे। हम न तो उनके मन में चल रहे विचारों को पढ़ सकते थे और न ही उनके चेहरे के भाव भाँप सकते थे। आभासी रूप से जुड़ने के लिए यह ज़रूरी है कि लोग ज़्यादा दक्ष हों। हमें अपने संचार कौशल पर

काम करने की भी ज़रूरत थी। मसलन सत्रों के दौरान कितना बोलना है, कब हस्तक्षेप करना है, कैसे संयमित करना है, सभी शिक्षकों को कैसे शामिल करना है ताकि कोई भी छूटा हुआ महसूस न करे, कैसे प्रभावी ढंग से अपनी आवाज़ को नियंत्रित करना है आदि।

शिक्षकों को ऑनलाइन सत्रों के लिए समर्थ बनाना

डिजिटल माध्यम का इस्तेमाल

सबसे पहले, हमें अपने शिक्षकों को टेलीकान्फ्रेंसिंग करने और सत्रों में शामिल होने के लिए *एमएस टीम्स* जैसे डिजिटल माध्यम का उपयोग करने के लिए तैयार करना था। हमने उनसे व्यक्तिगत रूप से बात की और चरणों की व्याख्या की। जिसमें *म्यूट व अनम्यूट* करने के लिए ऑडियो बटन का उपयोग करना और टेलीकान्फ्रेंस सत्र के दौरान फ़ोन पर बात करने के लिए *होल्ड* पर न जाने जैसी बातें शामिल थीं। हमने अभ्यास किया कि कैसे सत्र से डिस्कनेक्ट करें, फ़ोन कॉल लें और फिर वापिस सत्र में जुड़े। हमने *एमएस टीम्स* में मीटिंग में जुड़ने के चरणों और इसकी अन्य उपयोगिताओं के स्क्रीनशॉट लिए और उन्हें शिक्षकों के साथ साझा किया।

पठन सामग्री साझा करना

हमने चर्चा के दो से तीन दिन पहले व्हाट्सऐप और ईमेल के माध्यम से पठन सामग्री साझा की, ताकि शिक्षक तैयार हो सकें। हमने पाया कि इन सामग्रियों को पीडीएफ प्रारूप में साझा करना बेहतर था, क्योंकि पीडीएफ को फ़ोन पर खोलना आसान है। हमें इस बात का ध्यान रखना था कि पठन सामग्री बहुत बड़ी न हो क्योंकि अधिकांश शिक्षक पढ़ने के लिए केवल अपने मोबाइल फ़ोन का उपयोग कर रहे होंगे।

विषयवस्तु

विषयवस्तु को चुनते समय, हमारे मन में दो सवाल थे : मैं कक्षा में बेहतर तरीक़े से सीखने-सिखाने में कैसे मदद कर सकती हूँ? इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मेरे लिए सही विषयवस्तु क्या है?

हमने बहुत ही सरल लेखों के साथ शुरुआत की ताकि शिक्षक उनसे आसानी से जुड़ सकें और फिर हम समूह की प्रतिक्रिया, ज़रूरतों और रुचियों के आधार पर आगे बढ़े।

शिक्षकों के साथ अपने काम में हमने जिन स्रोतों का इस्तेमाल किया उनमें से कुछ विभिन्न विषयों पर कन्नड़, अँग्रेज़ी और गणित की हैंडबुक थीं। हमने *लर्निंग कर्व*, अरविन्द गुप्ता, *बालगा*, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के पुलआउट, *बायालु* के लेखों का उल्लेख किया। अन्य स्रोतों में *चाइल्ड'स लैंग्वेज एंड टीचर, तोत्तोचान, दिवास्वप्न,* कमला मुकुन्दा की *व्हॉट डिड यू आस्क एट स्कूल टुडे*[1], ब्रायंट एंड नून्स की *चिल्ड्रन डूइंग मैथमेटिक्स* जैसी किताबें थीं। गणित के लिए इग्नू की सामग्री, गुरु चेतना के लेख, एनसीएफ पोजिशन पेपर्स, एनसीईआरटी लर्निंग आउटकम्स, डीएसईआरटी लर्निंग आउटकम्स कुछ अन्य प्रकाशन थे जिन्होंने हमारे शिक्षकों को जोड़े रखने और ख़ुद से सीखने को सरल बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान कीं। एनुअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशन रिपोर्ट (ASER) और नेशनल अचीवमेंट सर्वे (NAS) की रिपोर्टों का भी हमारी चर्चाओं में उपयोग किया गया ताकि शिक्षकों को वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य की एक व्यापक तस्वीर मिल सके।

सत्र की योजना बनाना

शिक्षकों की ताक़त को पहचानना

यह ज़रूरी था। उदाहरण के लिए, यदि एक समूह में कोई शिक्षक कक्षा-अभ्यास (Classroom practices) में और शिक्षण सहायक सामग्री बनाने में अच्छी है, तो वह अपने ख़ुद के अनुभवों के आधार पर दूसरों को इन सहायक सामग्रियों और अभ्यास के महत्त्व को समझाने के लिए एक बहुत अच्छी स्रोत व्यक्ति हो सकती थी। वह समूह के अन्य लोगों को भी इन तरीक़ों को अपनाने के लिए प्रभावित कर सकती थी।

सत्र की कल्पना करना

पाठ-योजनाओं से लेकर प्राप्त किए जाने वाले सीखने के परिणामों तक के लिए ऑनलाइन सत्रों की योजना बनाई जानी थी। इसके लिए, बड़े उद्देश्यों को ऐसे छोटे लक्ष्यों में तोड़ दिया गया था जिन्हें हमारे शिक्षकों द्वारा प्राप्त किया जा सकता था। हमने विभिन्न वर्कशीट, असाइनमेंट के माध्यम से सीखने को पुख़्ता किया। यह सुनिश्चित किया कि शिक्षकों का हर क़दम पर मूल्यांकन किया जाए और तदनुसार अपनी शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव किए। हमने इस बात की पहचान की कि समूह में प्रत्येक शिक्षक को किन स्तरों तक पहुँचना है और उस स्तर तक पहुँचने में उनकी मदद भी की।

हमारे अनुभव से कुछ सुझाव

हमारे सत्र पिछले सत्र के सारांश के साथ शुरू होते और चर्चा किए गए विषयों का संक्षिप्त विवरण देने के साथ समाप्त होते थे। इससे शिक्षकों से यदि कुछ छूट गया हो तो भी उन्हें सत्र से जुड़े रहने में मदद मिलती थी। कभी-कभी बदलाव के लिए सत्र में भाग लेने या सत्र को सरल बनाने के लिए अपने किसी सहयोगी को आमंत्रित करना भी काफ़ी मददगार रहा। इससे शिक्षकों को नए व्यक्ति से बातचीत करने और सीखने में मदद मिलती। यदि हम तयशुदा समय पर सत्र का संचालन करने में सक्षम नहीं होते, तो पहले से ही शिक्षकों को सूचित कर दिया जाता ताकि उन्हें प्रतीक्षा नहीं करनी पड़े। इन बातों ने समूह

[यह किताब आज तुमने स्कूल में क्या पूछा नाम से हिन्दी में भी उपलब्ध है।]

चर्चा की निरन्तरता को बनाए रखने और प्रतिभागियों के बीच एक मज़बूत रिश्ता विकसित करने में वास्तव में मदद की।

हम सत्र के बाद प्रतिभागियों के साथ बैठक के मिनट्स साझा करते। यदि कोई शिक्षक सत्र में नहीं जुड़ पाता, तो सत्र के बाद उनसे सम्पर्क किया जाता और सत्र के बारे में जानकारी दी जाती। शिक्षक से पूछा जाता कि उन्हें सत्र में जुड़ने में कोई कठिनाई तो नहीं आई और अगले सत्र में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता। हम शिक्षक से इस बारे में भी बात करते कि कैसे उनकी उपस्थिति चर्चा को और समृद्ध करने में मदद करती। जो शिक्षक चर्चा में शामिल होते उन्हें मैसेज करके बताते कि उनकी भागीदारी ने चर्चा को कैसे बेहतरीन बनाया। अपने सत्रों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए हम विभिन्न तरीक़ों से अपनी भी समीक्षा करते रहते।

अब तक हमने सीखा

- शिक्षक नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए तैयार हैं अगर उन्हें सीखने का तरीक़ा आसान व उपयोगी हो।
- स्पष्ट एवं व्यवस्थित योजना, अवधारणाओं की निरन्तरता, अवधारणाओं को कक्षा से जोड़ना, पहले से ज्ञात अवधारणाओं के नए आयामों को सामने लाना शिक्षकों को इस प्रक्रिया से जोड़े रखने की कुंजी हैं।
- रुचि बनाए रखने के लिए शिक्षकों के बीच अपनेपन की भावना पैदा करना ज़रूरी है।
- भयरहित और आकर्षक ऑनलाइन मंच तैयार करना सम्भव है, बशर्ते माध्यम की ताक़तों और कमियों की एक साझी समझ हो।

अपने अवलोकनों एवं शिक्षकों और टीम के सदस्यों के साथ चर्चाओं के आधार पर हम अपने द्वारा किए गए काम के प्रभाव का अनुमान लगा पाए। शिक्षक भी शुरुआती कक्षाओं के लिए सार्थक शिक्षण-अभ्यासों को अपना पाए और कक्षा के लिए सहायक शिक्षण सामग्री, खेल व गतिविधियाँ डिज़ाइन करने जैसी सहायक सामग्रियों को तैयार कर पाए। वे अपने द्वारा सीखी गई बातों को साझा करने और अवधारणाओं के बीच सम्बन्ध को समझने और विभिन्न स्तरों के बच्चों के साथ काम करने के लिए विभिन्न स्तरों की गतिविधियों को विकसित करने और बनाने पर लेख लिखने में भी सक्षम हुए।

आगे का रास्ता

स्कूल खुलने के बाद हम इन शिक्षकों की कक्षाओं में जाकर इनके पढ़ाने के तरीक़ों में बदलाव का निरीक्षण करेंगे, इनकी ज़रूरतों को समझेंगे, समूहों का निर्माण करेंगे और तदनुसार आगे के जुड़ाव के लिए रूपरेखाएँ तैयार करेंगे। हम ऑफ़लाइन माध्यम से बड़े समूहों तक पहुँचने में इन शिक्षकों की मदद लेंगे। स्कूलों में वापस आने के बाद इन शिक्षकों द्वारा लाए गए बदलाव निश्चित रूप से दूसरों को प्रभावित करेंगे। हम इस अनुभव से निकलने वाले बेहतरीन अभ्यासों को साझा करने के लिए ज़रूरी प्रक्रियाओं को डिज़ाइन करना चाहेंगे।

हम स्वैच्छिक शिक्षक मंचों जैसी जगहों पर ऑनलाइन कार्य को जारी रखेंगे, क्योंकि इस तरीक़े से हम बड़ी संख्या में विभिन्न ब्लॉकों के शिक्षकों तक पहुँचने में सक्षम हैं। ऑफलाइन माध्यम में ऐसा करना मुश्किल होगा। हमें ख़ुशी है कि एक टीम के रूप में, हम संकट की इस अवधि में भी शिक्षकों के साथ अपने काम को जारी रखने के अवसरों को खोज पाए और दोनों पक्षों के लिए कुछ स्थायी अनुभव बना पाए। यह एक ऐसी प्रक्रिया थी जिसने हमारा आत्मविश्वास बढ़ाया।

हमें बात का एहसास हुआ कि प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कर हम सहजता से दूर बैठे शिक्षकों के साथ काम कर पाए और यह जान पाए कि ऐसा करना काफ़ी आसान है और यह साधन ख़ुद से सीखने के लिए बनाए गए हैं। यहाँ तक कि जिन लोगों को पहले से इनकी जानकारी न हो, वे भी आसानी से इनका उपयोग करना सीख सकते हैं। हमारे कई शिक्षक *एमएस टीम्स, टेलीकान्फ्रेंसिंग, ज़ूम, गूगल हैंडआउट्स* आदि के साथ बहुत सहज हो गए हैं। लेख और अन्य पठन सामग्री साझा करना व्हाट्सएप और ईमेल के माध्यम से हो रहा है। हमारे अनुभव में दो या तीन सत्रों के बाद शिक्षक किसी भी डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म पर बड़ी आसानी और सुचारू रूप से काम करने लगते हैं।



बीबी रज़ा खानम अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन कोप्पल, कर्नाटक में पिछले दो साल से स्रोत व्यक्ति के रूप में काम कर रही हैं। वे भौतिकी में विशेषज्ञता के साथ विज्ञान में स्नातकोत्तर हैं। वर्तमान में वे विज्ञान और गणित समूह के साथ काम कर रही हैं। उनसे **raza.khanam@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : सात्विका ओहरी

बच्चों की शिक्षा और समुदाय | मेरे अनुभव

जनक राम

"हैलो जी!" मोबाइल उठाकर मैंने बोला। दूसरी तरफ़ से बच्चे की आवाज़ आई "हैलो टीचर।" मैंने तुरन्त कॉल काटकर वापिस कॉल किया। बच्चे ने कॉल उठाया और अपना नाम बताया। बच्चे ने ही बात आगे बढ़ाई कि आज क्या खाया? क्या बना था खाने में? (छत्तीसगढ़ में हालचाल जानने और बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए अपनाए जाने वाला यह एक सामान्य तरीक़ा है)।

20 दिन हो चुके थे लॉकडाउन लगे। मैंने कहा, "सम्पूर्ण लॉकडाउन चल रहा है। तो इस समय तो हम सिर्फ़ आलू और सोयाबड़ी ही खा रहे हैं। तुम्हारे यहाँ क्या बना था?" बच्चे ने थोड़ा-सा समय लिया। फिर बोला, "टीचर वह क्या है न कि पापा बाहर गए हुए हैं और लॉकडाउन में वहीं फँस गए हैं। तो आज हम केवल भात खाए।"

मैंने अपने आप को सँभाला। फिर बोला माँ से बात कराओ। उनसे बात कर मैंने उनके परिवार की पूरी स्थिति को समझा। घर में उस समय तीन लोग रह रहे थे। चावल को छोड़कर खाने की बाक़ी सभी सामग्री समाप्त हो चुकी थी। बच्चे की माँ ने स्वाभिमान के कारण किसी से माँगा भी नहीं।

मैंने तुरन्त ही इस स्थिति को अपनी स्कूल की टीम व संस्था के साथियों के सामने रखा। अपनी टीम के साथियों से चर्चा व बातचीत करके यह पता चला कि इस प्रकार की स्थिति कई बच्चों के साथ थी। संस्था* ने तत्काल अपने स्तर पर उनकी मदद की। इनके अलावा भी ऐसे बहुत-से परिवारों को राशन-सामग्री पहुँचाई गई जिन्हें ज़रूरत तो थी, पर जो अपने स्वाभिमान के चलते माँग नहीं रहे थे। शिक्षक साथियों ने अपने-अपने क्षेत्र में सर्वे कर ऐसे ज़रूरतमन्द परिवारों की लिस्ट तैयार कर संस्था तक पहुँचाई। संस्था ने तुरन्त ही उनके लिए राशन-सामग्री उपलब्ध कराई। लाभार्थियों के स्वाभिमान का पूरा सम्मान करते हुए हमारी टीम ने राशन-सामग्री उन तक पहुँचाई। शिक्षक साथियों का सम्बन्ध बच्चों के साथ इतना माधुर्य और अपनापन लिए हुए है कि बच्चे बेझिझक अपनी बात साझा करते हैं।

इस लॉकडाउन के दौरान कई तरह के ख़ुलासे हुए। संस्था के कुछ साथियों ने बताया कि एक ऐसा इलाक़ा भी है जहाँ पिछली तीन पीढ़ी से राशन कार्ड ही नहीं बने हैं। तो ऐसे में उन्हें मदद कैसे मिलेगी? हमारी संस्था ने इस मुश्किल दौर में तो उनकी मदद कर दी, पर क्या उम्मीद है कि आगे उन्हें कोई मदद मिल पाएगी? इससे मेरा यह मानना और सशक्त हुआ कि नैतिक मूल्यों के साथ-साथ संवैधानिक मूल्यों की शिक्षा बच्चों के लिए ज़रूरी है ताकि वे प्रश्न करने वाले और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नागरिक बन सकें।

एक अनुभव यह भी रहा कि एक गाँव में कई लोग ज़बरदस्ती राशन की माँग करने लगे। कहने लगे कि हमें भी ज़रूरत है। हमने उनसे पूछा कि क्या आपके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं है, तो उन्होंने कहा कि वे आगे के लिए इकट्ठा करना चाहते हैं। क्या पता लॉकडाउन कब खुलेगा। मैंने शान्त रहकर समझाया कि अभी हम उनकी मदद कर रहे हैं जिन्हें तत्काल ज़रूरत है। हमारे साथ वार्ड के पार्षद महोदय भी थे। उन्होंने भी कहा कि अगर स्थिति और बिगड़ती है तो सरकार मदद करेगी। वे समझने के लिए तैयार ही नहीं थे, पर हम अपनी बात पर डटे रहे। हमने उन सभी का नाम अपनी डायरी में दर्ज किया। इसके बाद वे वहाँ से चले गए। यह तनाव भरे पल थे। शिक्षा हमें स्थिति के अनुसार ढलना भी सिखाती है। हमारे लिए सुकून की बात यह थी कि हम इस कड़ी धूप में भी ज़रूरतमन्द लोगों तक पहुँच सके।

बच्चों की पढ़ाई

शुरुआत में फ़ोन के ज़रिए बच्चों से उनके हालचाल जानना, उनके साथ जुड़ना सुखद रहा। इसने हमको और बच्चों को तनाव के दौर से बाहर निकाला। बातों के साथ-साथ हम गीत गाते, कहानियाँ-कविताएँ भी सुनते-सुनाते। हालाँकि कभी-कभी ऐसा भी होता कि कान्फ्रेंस कॉल में बच्चों को जोड़ने में घण्टों बीत जाते पर एक भी बच्चा नहीं जुड़ पाता। कारण होता सिग्नल समस्या। फिर भी हम लगे रहते। कभी-कभी घण्टी बजती, कॉल उठता और फिर तुरन्त ही डिसकनेक्ट हो जाता। यह सभी शिक्षक साथियों का अनुभव रहा। लेकिन व्यक्तिगत चर्चाओं और फ़ोन कॉल के ज़रिए हम बच्चों की पढ़ाई-लिखाई से जुड़े रहे। इसमें हमें अभिभावकों का सहयोग भी मिला। जब अनलॉक का दौर शुरू हुआ तो अभिभावक मोबाइल अपने साथ ले जाने लगे और बच्चों के साथ हमारा सम्पर्क छूट गया। इस प्रकार हमारे सामने एक बड़ी चुनौती थी कि अब बच्चों की पढ़ाई कैसे आगे बढ़ेगी?

सभी शिक्षक साथियों ने बच्चों के लिए ऐसी वर्कबुक बनाना शुरू किया जिन्हें बच्चे ख़ुद पढ़कर सवालों के जवाब लिख सकें। यह इसलिए भी अच्छा उपाय था क्योंकि बच्चों के पास उनकी अगली कक्षा की पुस्तकें नहीं थीं। शिक्षक साथियों ने ख़ूब मेहनत की और सभी विषयों के लिए वर्कबुक बनाईं और बच्चों के घरों तक पहुँचाईं भी। इसमें सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा गया। शिक्षक साथी मास्क, फेस शील्ड, दस्ताने और सैनिटाइज़र का उपयोग करते हुए उचित शारीरिक दूरी बनाकर प्रत्येक सप्ताह वर्कबुक बच्चों के घरों पर पहुँचाते और पूरी की हुई वर्कबुक को वापिस एकत्र करते। बच्चों के जवाबों पर चर्चा फ़ोन के ज़रिए होती। हालाँकि यह अभ्यास भी उन बच्चों के लिए मुश्किल था जो अभी भी पढ़ने-लिखने की चुनौती का सामना कर रहे थे। भले ही अन्य शिक्षक साथियों की तरह मैं भी बच्चों के सीखने के स्तर अनुसार वर्कबुक बना रहा था, फिर भी सीमित समझ हम सभी के लिए एक चुनौती थी।

बच्चे, शिक्षक और समुदाय

बच्चों के सीखने-सिखाने को लेकर नियमित रूप से बात करने के लिए हमने समुदाय भ्रमण के दौरान सौहार्दपूर्ण चर्चा के ज़रिए समुदाय के सदस्यों व बच्चों के अभिभावकों से आत्मीय सम्बन्ध बनाए। हम जब भी और जहाँ भी मिलते हैं एक-दूसरे का हालचाल पूछते हैं और बच्चों के बारे में भी बेबाक राय रखते हैं। इससे हमें बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में मदद मिलती है। कोविड-19 महामारी के इस दौर में जब स्कूल बन्द हो गए तो बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखना हमारा पहला उद्देश्य रहा है। लॉकडाउन के नियमों में कुछ ढील दिए जाने के बाद हमने सुरक्षा उपायों को सुनिश्चित करते हुए बच्चों की पढ़ाई-लिखाई को जारी रखने का विचार समुदाय के सामने रखा।

समुदाय के सदस्य तैयार हो गए। उन्होंने कक्षाओं के लिए सामुदायिक भवन में जगह भी दे दी। साथ ही गाँव के कुछ पढ़े-लिखे युवक-युवतियाँ बच्चों की शिक्षा के लिए काम करने आगे आए और अभी भी कर रहे हैं। स्वयंसेवियों के इस समूह में हमारे वे पुराने विद्यार्थी भी शामिल हैं, जिन्होंने शैक्षिक सत्र 2019-20 में दसवीं कक्षा पास की है। वे भी छोटे-छोटे समूह में प्राथमिक कक्षा के बच्चों के साथ उनकी पढ़ाई-लिखाई में मदद कर रहे हैं।

इसमें अभिभावकों और समुदाय के अन्य सदस्यों का सहयोग भी सराहनीय रहा है। कई अभिभावकों ने अपने आँगन को बच्चों की शिक्षा के लिए उपलब्ध कराया है। कई अन्य समाजसेवी संस्थाएँ भी हमारी मदद कर रही हैं। नतीजतन हम छोटे-छोटे समूह बना पाए हैं जो अभी सात गाँवों (जहाँ से बच्चे आते हैं) में जाकर बच्चों के साथ काम कर पा रहे हैं।

महामारी के दौरान यह चिन्ता लगातार बनी रही कि कोई बच्चा या शिक्षक या स्वयंसेवक कोविड-19 से संक्रमित न हो जाए क्योंकि सभी लोग कहीं न कहीं तो आ-जा रहे ही हैं। अभिभावक, बच्चे और शिक्षक सभी अपने रोज़मर्रा के कामों के लिए घर से बाहर जा रहे हैं और लोगों के सम्पर्क में आ रहे हैं। हालाँकि अपनी तरफ़ से तो हर कोई सुरक्षा के उचित उपाय अपना रहा है, पर फिर भी एक डर-सा बना रहता है। ऐसे तनावपूर्ण समय में तनाव से मुक्त रहना शिक्षकों, बच्चों व उनके अभिभावकों के लिए एक चुनौती है।

एक नई उम्मीद

समय के साथ स्थिति बदल रही है। लोग हिम्मत के साथ कोविड-19 का सामना कर रहे हैं। वे अपना मनोबल कमज़ोर नहीं होने दे रहे हैं। वे मास्क और सैनिटाइज़र के साथ जीना सीख रहे हैं। स्वच्छता का ख़याल रख रहे हैं और शारीरिक दूरी बरत रहे हैं। सबसे ज़्यादा ख़ुशी इस बात की है कि बच्चे अब तनाव मुक्त हैं। शिक्षक साथियों ने गीत और कविताएँ रिकॉर्ड कर बच्चों को भेजीं। शुरू के दौर में हमने जो वीडियो, कहानियाँ रिकॉर्ड की थीं वह अब बच्चों के पढ़ने-पढ़ाने में काम आ रही हैं। हम इस अनुभव को सकारात्मक नज़रिए से देख रहे हैं यह सोचकर कि बहुत-से बच्चों, अभिभावकों व शिक्षकों ने अपने मोबाइल फ़ोन की वास्तविक क्षमता को अब समझा है।

पहले जो अभिभावक बात करना नहीं चाहते थे, हमें अपने घर आने नहीं देना चाहते थे वे अब हमसे, शिक्षकों से व अपने बच्चों से भी खुलकर बात कर रहे हैं। कुछ अभिभावकों व समुदाय के लोगों ने अपनी समझ का दायरा बढ़ाया है। उन्होंने अपने ख़ाली आँगन, ख़ाली भवन को बच्चों को पढ़ाने के लिए खुले दिल से सौंपा है। कुछ लोग तो बच्चों को पढ़ाने-सिखाने में भी मदद कर रहे हैं। कुछ अभिभावकों ने अपने बच्चों के साथ-साथ अपने आस-पास के बच्चों की भी पढ़ाई-लिखाई में मदद करना शुरू किया है। उन्होंने कोविड-19 के इस दौर में अत्यन्त संवेदनशीलता दिखाई है जिससे बच्चों को तनाव से दूर रखने में मदद मिली है। उम्मीद है यह जज़्बा आगे भी बना रहेगा।

किसी भी समाज में शिक्षा ही वह केन्द्रीय व्यवस्था है जिससे व्यापक बदलाव आ सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समाज के शिक्षित सदस्यों के बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में मदद करने के लिए आगे आने की बात को पूरी शिद्दत से तवज्ज़ोह दी गई है और इस भागीदारी की अपेक्षा की गई है। इस दौर में एक बच्ची ने मुझे एक गीत बनाकर सुनाया है जिसे मैं अक्सर गुनगुनाता रहता हूँ। बच्ची द्वारा लिखे इस गीत के

साथ समाप्त करता हूँ—

ये सुन ना, ये तू सुन ना
कोरोना से है बचना तो
तू घर से बिना वजह बाहर निकल ना। ये...
निकलना है बहुत ही ज़रूरी तो
मास्क, दूरी और सैनिटाइज़र या साबुन उपयोग करना। ये...
अपने बड़े–बुज़ुर्गों का ध्यान है रखना
उनकी तहे दिल से चिन्ता है करना
जो हैं संक्रमित उनसे शारीरिक दूरी बनाना
पर प्यार व सेहत बनी रहे ये ध्यान रखना। ये...
हैं वो भी अपने जो हैं (डॉक्टर, पुलिस, नर्स, स्वच्छताकर्मी...) लड़ रहे कोरोना से
उनका सम्मान पहले है करना
यह कोरोना तो एक दिन चला जाएगा
फिर आपस में इसके लिए दिल में भेद क्यों है करना। ये...
ये सुन ना, ये सुन सुन ना...

*अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन



जनक राम ने विज्ञान में स्नातक और शिक्षा एवं समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। अज़ीम प्रेमजी संस्थान में दो साल की फेलोशिप पूरी करने के बाद दिसम्बर, 2016 से वे अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी में गणित के शिक्षक हैं। बतौर शिक्षक वे अपने विद्यार्थियों के साथ दोस्ती करना पसन्द करते हैं और साथ मिलकर गणित की प्रक्रियाओं को सीखने-समझने में दिलचस्पी रखते हैं। उनसे **janak.ram@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है।

सीखना और सिखाना | डिस्लेक्सिक बच्चों के साथ अनुभव

माला आर नटराजन

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया कक्षा में शिक्षकों के साथ अनुभवों और होमवर्क व घर पर सीखने के अनुभवों की एक सतत प्रक्रिया है। शैक्षणिक वर्ष में होने वाले विराम आमतौर पर पहले से निर्धारित होने के साथ ही सामान्यत: कुछ ही अवधि के लिए होते हैं। यह अवधि — कई बार एक मज़ेदार तरीक़े से — कक्षा में सिखाई गई चीज़ों को पुख़्ता करने और यह सुनिश्चित करने के अनूठे अवसर प्रदान करती है कि स्कूल खुलने के बाद बच्चे आसानी-से और निर्बाध रूप से शैक्षिक सत्रों को जारी रख सकें। हालाँकि महामारी के कारण होने वाला यह विराम न सिर्फ़ अनियोजित था, बल्कि इसका कोई अन्त होता नहीं दिख रहा था। समूची शिक्षा पर इस महामारी का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है और डिस्लेक्सिया वाले बच्चों पर तो और भी ज़्यादा।

शुरुआत से, डिस्लेक्सिया वाले बच्चे के सीखने-सिखाने की प्रक्रियाएँ 'मैं जिस तरीक़े से सीखता हूँ, मुझे वैसे सिखाया जाए' के दर्शन पर आधारित हैं। मल्टी-मॉडल तरीक़े का उपयोग करके सीखने की प्रक्रियाओं को लाभकारी बनाने के साथ-साथ मज़ेदार बनाकर अच्छे-से किया जाता है। मल्टी-मॉडल पद्धति में बच्चा श्रवण (audio), दृश्य (visual), गतिपरक (kinaesthetic) और स्पर्श (tactile) चैनलों के ज़रिए इनपुट प्राप्त करता है। इसमें या तो सभी चैनलों या बच्चे के सीखने की शैली के अनुरूप उपयुक्त चैनलों के एक संयोजन का इस्तेमाल किया जाता है। इस दृष्टिकोण में यह बात निहित है कि शिक्षण-विधियाँ कभी भी सबके लिए एक समान नहीं होती हैं।

जब महामारी का प्रकोप हुआ तो मद्रास डिस्लेक्सिया एसोसिएशन (MDA) के विशेष शिक्षक एकदम शुरुआती दौर में ही उपचारात्मक सत्रों (remedial session) को नए तरीक़ों से करने के लिए सक्रिय हो गए। इन सत्रों में प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के अलावा डिस्लेक्सिया वाले बच्चों के लिए अपनाए जाने वाले सबसे उपयुक्त तरीक़ों पर बने रहने का यथासम्भव प्रयास किया गया। आफ़्टर-स्कूल रीमिडियल सेंटर की प्रमुख श्रीमती सावित्री कृष्णन के शब्दों में कहें तो, "सरलता, रचनात्मकता और अनुकूलन समय की माँग है।" विशेष शिक्षकों पर भरोसा जताते हुए उन्होंने कहा "वे हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देते हैं और इससे फ़र्क़ पड़ता है और वे हर ज़रूरतमन्द बच्चे के पास पहुँचते हैं।"

डिस्लेक्सिया वाले बच्चों के लिए हमारे पूर्णकालिक उपचारात्मक शिक्षण केन्द्र अनन्या लर्निंग एंड रिसर्च सेंटर की प्रधानाध्यापिका श्रीमती गौरी रामनाथन ने भी ऐसी ही बात सामने रखी। उन्होंने कई नए तरीक़ों के बारे में भी बताया जो विशेष शिक्षकों द्वारा कुछ विशिष्ट मुद्दों से निपटने के लिए काम में लिए गए हैं। उदाहरण के लिए, उन्हें डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चों को सिखाने के दौरान ध्यान में कमी और बैठने की सहनशीलता (sitting tolerance) का सामना करना पड़ा।

एक उदाहरण में, एक बार एक बच्चे को कैमरे के फ्रेम के भीतर ही कुछ खेलकूद, शारीरिक व्यायाम करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसने विशेष शिक्षक को बच्चे को प्रोत्साहित करने और यह सुनिश्चित करने में सक्षम बनाया कि बच्चा निर्धारित समय पर कक्षा में वापिस आ जाए। कभी-कभी शिक्षक और बच्चा दोनों मज़ेदार ऑनलाइन खेल खेलते ताकि बच्चे को थोड़ा आराम मिल सके और फिर बाद में शिक्षक दोबारा बच्चे का ध्यान पाठ की ओर आकर्षित कर सके।

हालाँकि सभी विशेष शिक्षकों ने महसूस किया कि मौखिक प्रोत्साहन बच्चे के अन्दर बढ़ती हुई हताशा को कम करने के लिए धीरे-से पीठ थपथपाने या एक उत्साहजनक स्पर्श की भरपाई नहीं कर सकता है।

महामारी की शुरुआत में विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों की ऑनलाइन सत्रों के बारे में कुछ नया करने की कोशिश के उत्साह से लेकर सन्देह तक अलग-अलग राय और अपेक्षाएँ थीं। प्रौद्योगिकी, कनेक्टिविटी के मुद्दों और बिना काग़ज़ और बिना पाठ (text) के साथ काम करने जैसे अचानक आए परिवर्तनों ने भी बाधाएँ उत्पन्न कीं। शिक्षकों और बच्चों दोनों ने जल्दी ही नए मानकों के अनुसार ख़ुद को ढाल लिया। इससे शिक्षकों व अभिभावकों को राहत मिली कि उपचारात्मक सत्र बिना किसी विराम के जारी रह सकते हैं। डिस्लेक्सिया वाले बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं के सुदृढ़ीकरण को सुनिश्चित करने के लिए निरन्तरता एक महत्त्वपूर्ण आधार रहा है। अभिभावकों के अनुभव, उनकी भागीदारी और प्रतिक्रियाएँ अलग-अलग प्रकार की रही हैं। अगर विशेष शिक्षक पर भरोसा नहीं रखा जाता तो महामारी के समय में इतनी जल्दी वापिस

जुड़ना सम्भव नहीं होता। हालाँकि कुछ ऐसी घटनाएँ भी हुईं जिनमें कुछ अति उत्साही अभिभावक बच्चों का गृहकार्य ख़ुद ही कर देते थे। कभी-कभी तो कैमरे के सामने ऑनलाइन कक्षा में भी वे बच्चों का कार्य कर देते थे! कुछ अभिभावक ऐसे थे जो इस छोटी अवधि में अपने बच्चे के कौशल स्तरों में महत्त्वपूर्ण सुधारों की उम्मीद रखते थे। विशेष और वरिष्ठ शिक्षक, दोनों ने इन पहलुओं पर अभिभावकों से बातचीत की। कुछ अवसर ऐसे भी आए जब विशेष शिक्षकों को कक्षा के दौरान अभिभावकों के घरों में होने वाली गतिविधियों के कारण ध्यान बँट जाने की बात को उनके ज़ेहन में लाना पड़ा। (बेशक इनमें से कुछ पल हँसी लेकर आते थे और कुंठित पलों को दूर भगाने में मदद करते थे)। कुछ मामलों में अभिभावकों के मन में बैठी कोविड सम्बन्धी चिन्ता बच्चों के मन में भी घर कर गई थी।

कई अभिभावकों के लिए यह ऑनलाइन सत्र आँख खोलने वाले थे : उन्होंने अपने बच्चों को कक्षा के दौरान निर्धारित छोटे-छोटे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयास और संघर्ष करते हुए देखा। इससे उन्हें इससे यह एहसास हुआ कि उनका बच्चा न तो आलसी है, और न ही मूर्ख है। डिस्लेक्सिक बच्चों के बारे में यह दो आम धारणाएँ हैं।

महामारी के फैलने से पहले शैक्षिक प्रौद्योगिकी (EdTech) एक गूढ़ शब्द था। लेकिन इन कुछ महीनों में विशेष शिक्षक प्रभावी शिक्षण के लिए विभिन्न सॉफ्टवेयर, कम्प्यूटर, वेब कैमरा और अन्य उपकरणों को अपने आप ही इस्तेमाल में लेने लगे। पाठ-योजना में इनका एकीकरण अब बड़े ही सहज ढंग से हो जाता है। श्रीमती सुरेखा कहती हैं, "मैं शिक्षण-प्रक्रियाओं को समृद्ध करने के लिए ई-क्लासरूम सॉफ्टवेयर की सुविधाओं को आज़माना चाहती हूँ।" गौरी रामनाथन ने वास्तविक कक्षाओं के फिर से शुरू होने पर उपचारात्मक शिक्षण में EdTech के एकीकरण को जारी रखने के लिए उत्सुकता व्यक्त की। उन दोनों ने माना कि विशेष शिक्षक समूह के सदस्य आपस में घनिष्ठता से जुड़े हैं और लगातार अपने अनुभवों और सीखों को एक-दूसरे से साझा करते हैं। हालाँकि कुछ ऐसे पहलू हैं, जिनका समाधान नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, लेखन के यांत्रिक पहलू, बच्चों के समग्र विकास के लिए पाठ्येतर गतिविधियाँ,योग, नृत्य और संगीत के सत्र और बच्चों के लिए परामर्श सत्र।

व्यावसायिक चिकित्सा (Occupational Therapy – OT) के लिए ऑनलाइन सत्र बच्चों की व्यक्तिगत ज़रूरतों के आधार पर योजनाबद्ध किए गए थे। यह सूक्ष्म क्रियात्मक और स्थूल क्रियात्मक कौशलों (Fine and Gross motor skills) ध्यान देने और प्रबन्ध कार्यों में आ रही कठिनाइयों से निपटने में बच्चे की मदद करने में सक्षम थे। फिर भी सभी बच्चे एकमत होकर स्कूल और कक्षाओं के माहौल को याद करते थे। बहु-बुद्धिमत्ता सिद्धान्त (Multiple Intelligences) के इर्द-गिर्द बुनी गई मौज-मस्ती से भरी गतिविधियों में हिस्सा लेना उन्हें बहुत याद आता है। गतिविधियों का ऑनलाइन संस्करण अच्छा था, लेकिन वास्तविक कक्षाओं में होने वाली गतिविधियाँ बेहतर थीं! हालाँकि अभिभावक और विशेष शिक्षक इस बारे में चिन्तित हैं कि स्कूल खुलने के बाद बच्चे कैसे तालमेल बिठाएँगे।

प्रबन्धन का परिप्रेक्ष्य परिचालन मुद्दों के आस-पास केन्द्रित था। महामारी की शुरुआत के बाद से आमने-सामने बैठकर आकलन करना सम्भव नहीं था। इस कारण कम प्रवेश हुए हैं और इसका मतलब है कि कम बच्चों को पूर्णकालिक उपचार का लाभ मिला है। आमदनी पर भी इसका असर पड़ा है। यह सुनिश्चित करने के लिए ऑनलाइन जागरूकता कार्यक्रम और प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए जा रहे हैं कि हम डिस्लेक्सिया के प्रति संवेदनशील समाज को सक्षम बनाने के अपने मिशन की दिशा में प्रयासरत रहें। मद्रास डिस्लेक्सिया एसोसिएशन को उम्मीद है कि इस महामारी से प्राप्त सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के सकारात्मक परिणामों को आगे बढ़ाया जाएगा और जो भी कमियाँ रह गई हैं उन्हें वास्तविक कक्षा सत्रों के फिर से शुरू होने पर दूर किया जाएगा।

आभार
लेखिका इस लेख में इनपुट देने के लिए सावित्री कृष्णन, गौरी रामनाथन और हरिनी रामानुजन का शुक्रिया अदा करती हैं।



माला आर नटराजन विशेष शिक्षक हैं और डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित हैं। वर्तमान में वे मद्रास डिस्लेक्सिया एसोसिएशन में काम कर रही हैं। उन्होंने कॉर्पोरेट क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी में काम किया है और एक उत्साही शिक्षक के रूप में इन परियोजनाओं को व्यावहारिक अन्तर्दृष्टि प्रदान करने में मदद की है। उनसे **mala.m@mdachennai.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी

आज तुमने दुनिया के बारे में क्या सीखा?

प्रार्थना मुद्गल भोपाल में अँग्रेज़ी माध्यम के एक निजी स्कूल में सातवीं कक्षा की छात्रा है। वह अपनी दादी के बहुत क़रीब थी। मार्च में जब स्कूल बन्द हुए तब वह अपनी दादी के निधन से बस उबर ही रही थी। उत्तर भारत की गर्मी की तपिश में घर के अन्दर रहना शुरुआत में एक बड़ी राहत की बात थी। फिर स्कूल की अचानक हुई छुट्टियाँ किसे अच्छी नहीं लगतीं। लेकिन, जहाँ ज़्यादातर बच्चे छुट्टियों के आदी हो गए, वहीं प्रार्थना जल्द ही कुछ न कुछ करने के मौक़े ढूँढ़ने लगी। और उसने जो कर दिखाया वह वास्तव में उल्लेखनीय है। ख़ासकर यह देखते हुए कि जिन बच्चों के पास टीवी, लैपटॉप और फ़ोन की असीमित पहुँच होती है उनके लिए न केवल घण्टे या दिन, बल्कि सप्ताह और महीनों का समय बिता देना भी कितना आसान होता है।

प्रार्थना ने जो कर दिखाया है उसे वह असाधारण नहीं लगता है। उसके बारे में बात करने में भी वह थोड़ा संकोच करती है। लेकिन फिर भी हम प्रार्थना से उसके द्वारा लॉकडाउन की अवधि में किए गए कार्यों के बारे में कहलवाने में सफल रहे।

अपने अन्य स्कूली साथियों की तरह प्रार्थना भी मार्च में अपने स्कूल द्वारा शुरू की गई ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने लगी। लेकिन वह लगातार जुड़ी नहीं रह सकी। धीरे-धीरे कम कक्षाएँ करने लगी और आगे चलकर उसने ऑनलाइन कक्षाओं से जुड़ना छोड़ दिया। उसके माता-पिता और शिक्षकों ने इस मामले पर चर्चा की। यह जानकर कि उसका कर्णावत प्रत्यारोपण (cochlear implant) उसके ऑनलाइन माध्यम से जुड़ने में बाधा बन रहा है, उन्होंने प्रार्थना के कक्षा छोड़ने के फ़ैसले का समर्थन किया। वे जानते थे कि सीखने के एक नए माध्यम का सामना करने की हताशा किसी अन्य भावनात्मक मुद्दे को जन्म दे सकती है।

कुछ करने की खोज में, प्रार्थना ने ऐसे मास्क बनाने का फ़ैसला किया जो उस समय तक आसानी से नहीं मिलते थे। एक ही दिन में उसने घर पर सिलाई मशीन चलाना और *यू-ट्यूब* की मदद से मास्क सिलना सीख लिया। आने वाले हफ़्तों में उसने घर में उपलब्ध कपड़े, धागे और इलास्टिक की मदद से दर्जनों मास्क बना डाले। इन मास्क की ज़रूरत एक पेट्रोल पम्प के कर्मचारियों को थी, जो राष्ट्रीय लॉकडाउन के दौरान भी आवश्यक सेवाओं के रूप में अपना कार्य कर रहे थे। जब उन्होंने मास्क के लिए पैसे देने चाहे तो प्रार्थना ने उन्हें और मास्क बनाने के लिए सामग्री लाने को कहा।

एक दिन प्रार्थना अपने पिता के साथ पड़ोस के मेडिकल स्टोर पर गई। उसने अपने पिता से कुछ सवाल पूछे। जैसे कि जब बाक़ी सभी लोग घर के अन्दर हैं तो मेडिकल स्टोर पर लोग काम क्यूँ कर रहे हैं, वे लोग खाना कहाँ खाते हैं और आराम कहाँ करते हैं। प्रार्थना को धीरे-धीरे इन बातों के प्रति जागरूक किया गया कि मेडिकल स्टोर के कर्मचारी हमारे जैसे सभी लोगों के लिए स्टोर खोलकर रखते हैं। वे सुबह 7 बजे से रात के 11 बजे तक बिना आराम किए कार्य करते हैं, यहाँ तक कि चाय की एक दुकान भी नहीं खुलती, जहाँ से उन्हें एक कप चाय मिल सके। प्रार्थना के पिता ने उससे कहा कि जैसे वे हमारी मदद कर रहे हैं, हमें भी उनकी मदद करनी चाहिए। उस दिन के बाद से प्रार्थना ने उनके लिए चाय बनाना शुरू कर दिया। हर दिन वह चाय बनाती और एक लीटर की बोतल में डालकर ले जाती। कभी-कभी तो वह अपने साथ बिस्कुट या नमकीन के कुछ पैकेट भी ले जाती थी।

रात में घर पर 40-50 अतिरिक्त रोटियाँ बनतीं जिन्हें वह आस-पड़ोस में रहने वाले कुत्तों को खिलाने जाती। सब मिलकर एक दिन में आस-पड़ोस की लगभग पाँच से सात कालोनियों में रोटियाँ बाँट आते। इन सब चीज़ों को करते हुए प्रार्थना संवेदनशील होने लगी। जब भी वह सड़क के किनारे किसी कुत्ते को देखती जो ख़ुद खा नहीं पा रहा हो या चल नहीं पा रहा हो तो वह तुरन्त अपने पिता को फ़ोन कर एम्बुलेंस बुलवाती। वह तब तक उस कुत्ते के साथ बैठी रहती जब तक एम्बुलेंस उस कुत्ते को अस्पताल नहीं ले जाती।

जैसे ही लॉकडाउन हटा और उसके पिता द्वारा संचालित एनजीओ ने काम करना शुरू किया, उन्हें हैंड सैनिटाइज़र की ज़रूरत पड़ी। यह उसकी अगली बड़ी परियोजना बन गई। उसने फिर से यू-ट्यूब का रुख किया और अपने घर में उग रहे ख़ूब सारे ऐलोवेरा और बाज़ार से ख़रीदी गई अन्य सामग्रियों जैसे कि स्पिरिट की मदद से लिक्विड हैंड सैनिटाइज़र बनाना सीखा। एनजीओ में आने वाले लोगों में हमेशा कुछ ऐसे लोग होते थे जो साबुन और सैनिटाइज़र पर ख़र्च नहीं कर सकते थे। उन्हें प्रार्थना के घर की रसोई में तैयार किया गया सैनिटाज़र दिया जाता था।

क्या यह मान लेना सही होगा कि प्रार्थना सीखने में पीछे रह गई? कभी-न-कभी वह स्कूल में वापस आ जाएगी, अपनी क्लास डेस्क पर वापस आएगी, गुणा या कुछ और सीखने लगेगी। लेकिन कौन-सी कक्षा उसे हमेशा दूसरों का ख़याल रखना सिखाएगी? अपने समय का उत्पादक ढंग से उपयोग करना सिखाएगी? उन लोगों के लिए संवेदना रखना सिखाएगी जिनके पास कम सुविधाएँ हैं? हमारी सेवा करने वालों की सेवा करना सिखाएगी? लॉकडाउन एक सुनहरा अवसर था कि अभिभावक घर पर बच्चों के साथ मिलकर सही उदाहरण स्थापित करें, उन मुद्दों पर बात और चर्चा करें जो हमारे जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण हैं।

जैसा कि लर्निंग कर्व को बताया गया।

बच्चों की शिक्षा में समुदाय की भागीदारी

राजश्री नायक

रोग के प्रसार के अतिरिक्त लोगों के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन पर भी कोविड-19 महामारी के दूरगामी असर हुए हैं। इस बीमारी की गम्भीरता के कारण शैक्षणिक संस्थाएँ बन्द हो गईं। यह शिक्षा के लिए एक अभूतपूर्व चुनौती रही। देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा से पहले ही मार्च के अन्त तक ज़्यादातर संस्थाओं व राज्यों ने काफ़ी तेज़ी दिखाते हुए शैक्षणिक गतिविधियों को रोक दिया था। लॉकडाउन हटने के बाद ज़्यादातर उच्च-शैक्षणिक संस्थाएँ ऑनलाइन शिक्षण करने लगीं। अधिकांश विद्यार्थियों ने इसके लिए आवश्यक सामग्री भी जुटा ली।

लेकिन यह बात प्राथमिक शिक्षा के बारे में सही नहीं है। ग्रामीण व शहरी भारत के कोने-कोने में स्थित प्राथमिक स्कूलों में विभिन्न आर्थिक व सामाजिक तबक़ों के विद्यार्थी आते हैं। अगर इन विद्यार्थियों को ऑनलाइन सुविधाओं से युक्त कर दिया जाए तो भी पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्कूलों के यह विद्यार्थी ऑनलाइन माध्यम को संचालित करने के लिए अभी बहुत छोटे हैं। सरकारी और छोटे निजी संस्थानों दोनों के लिए प्राथमिक विद्यार्थियों का शिक्षण जारी रखना व शिक्षा के ऑनलाइन मोड सम्बन्धित प्रणालियों को बनाए रखना चुनौतीपूर्ण रहा है।

विद्यार्थियों को स्कूलों से जोड़े रखने और दूरस्थ स्कूल या सामुदायिक कक्षा चलाने का विचार एक नई रणनीति थी। इसके बारे में हमने मई महीने में लॉकडाउन लगने के बाद सोचा। शिक्षण के अलावा स्कूल द्वारा विद्यार्थियों व उनके परिवारों को भावनात्मक सहयोग प्रदान करने की ज़रूरत थी। कुछ परिवारों को तो मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी मदद की ज़रूरत थी। जब शिक्षकों का समूह विद्यार्थियों से मिला और बातचीत की तो विद्यार्थियों ने ज़्यादा कुछ नहीं कहा। शिक्षकों के सवालों के जवाब भी नहीं दिए। यह स्पष्ट था कि विद्यार्थी व उनके अभिभावक, दोनों ही परेशान थे।

परिणामस्वरूप जब हमारी टीम में समुदाय स्तर पर कक्षाएँ चलाने के लिए चर्चा शुरू हुई तो लोगों में इस महामारी को लेकर काफ़ी ज़्यादा भय और भ्रम की स्थिति थी, किन्तु उत्साह भी था। प्रत्येक व्यक्ति के पास विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया से जोड़ने को लेकर किसी न किसी प्रकार की ज़िम्मेदारी थी। टीम ने ख़ुद को तीन अलग-अलग समूहों में बाँटा और गाँवों में जाकर स्थिति का जायज़ा लेने लगे। समुदाय (जिसने हमेशा से हमारी गतिविधियों में भाग लिया है) के साथ हमारे सम्बन्ध ने इस कार्य की सफलता के प्रति हमें आश्वस्त किया।

हमारे स्कूल की रूपरेखा

- हमारे स्कूल में, कक्षा एक से लेकर तीन में कुल 87 विद्यार्थी हैं जो 3-6 किलोमीटर के दायरे में बसे गाँवों से आते हैं।
- इनमें से आधे से अधिक विद्यार्थी रोज़ कमाने-खाने वाले परिवारों से हैं, एक तिहाई विद्यार्थियों के अभिभावकों के पास सीमान्त ज़मीनें हैं। बहुत कम विद्यार्थी हैं जो सम्पन्न घरों से आते हैं। दो-तिहाई से थोड़े ज़्यादा परिवारों के पास स्मार्टफ़ोन हैं लेकिन बच्चों को इस्तेमाल करने के लिए नहीं मिलते। इसके कई कारण हैं : जैसे कि अभिभावकों का कक्षा के समय घर पर मौजूद न होना, ख़राब नेटवर्क या बच्चों का इन स्मार्टफ़ोन को चलाना नहीं आना। स्मार्टफ़ोन के ज़रिए प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों को न्यूनतम एक घण्टे के लिए भी जोड़े रखना मुश्किल होता है और इसका उन पर मानसिक व शारीरिक दोनों तरह से बुरा असर पड़ सकता है। इन सभी कारणों से प्राथमिक स्कूलों के लिए ऑनलाइन शिक्षण अव्यावहारिक है।
- अभिभावक हमेशा से हमारे स्कूली क्रियाकलापों का एक हिस्सा रहे हैं। अतीत में उन्होंने जनपद गीत और अन्य स्थानीय गतिविधियों से जुड़ी कक्षाएँ आयोजित करने में भागीदारी की है ।
- स्कूल-समुदाय नेटवर्क (School-Community Network – SCN) समूह छह गाँवों का प्रतिनिधित्व करने वाले सामुदायिक सदस्यों का एक निकाय है। स्कूल टीम के सदस्य समस्याओं पर चर्चा करने और कार्यक्रमों, कक्षा उन्मुखीकरण और अभिभावक-शिक्षक बैठकों की व्यवस्था के बारे में निर्णय लेने के लिए लगातार बैठकें करते हैं।

स्थितिजन्य विश्लेषण

- शारीरिक दूरी बनाने, व्यक्तिगत स्वच्छता रखने और

मास्क पहनने को लेकर गाँव में बहुत कम जागरूकता पाई गई। बच्चे संक्रमण के ख़तरों से अनजान थे। गाँवों में ज़िन्दगी बिलकुल वैसी ही थी जैसी लॉकडाउन के पहले हुआ करती थी। खेलने के लिए बाहर न जा पाने के कारण बच्चे ख़ूब टीवी देखने लगे थे। हमने पाया कि बच्चों के साथ सार्थक जुड़ाव की आवश्यकता थी।

- कोविड-19 से जुड़ी कई सारी मनगढ़न्त बातों की वज़ह से बच्चे दूसरों से मिलने-जुलने से डर रहे थे। हैरानी की बात यह थी कि अभिभावक उन एहतियातों को बरतते नहीं देखे गए, जो वे चाहते थे कि उनके बच्चे बरतें ।
- अभिभावकों व समुदाय से बातचीत करके हमें यह पता चला कि लोग अपने बच्चों के भविष्य व शिक्षा के प्रति चिन्तित थे। हालाँकि अभिभावकों के साक्षरता स्तरों और पेशों में अन्तर के कारण वे स्कूलों के बन्द होने से बच्चों की वर्तमान शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभावों को लेकर अधिक चिन्तित थे। यदि सही एहतियात के साथ विद्यालय खुले होते तो लगभग नब्बे प्रतिशत अभिभावक अपने बच्चों को स्कूल भेजते।

समुदाय के साथ सहयोग

हमने गाँव में सार्वजनिक स्थानों पर छोटी-छोटी बैठकें आयोजित कीं। इसमें हमने बच्चों की कक्षाएँ संचालित करने के तरीक़ों को लेकर अभिभावकों के साथ विचार-विमर्श के छोटे-छोटे सत्र लिए। अभिभावकों ने बच्चों के लिए होमवर्क, विद्यालय परिसर में हर दूसरे दिन छोटे समूहों में कक्षा आदि जैसे कुछ सुझाव दिए। जब हमने उनके गाँवों में ही कक्षा संचालित करने का सुझाव दिया तो वह सब बिना किसी हिचकिचाहट के तुरन्त तैयार हो गए। अभिभावकों ने बिना किसी देरी के विद्यालय खोलने का आग्रह किया और कहने लगे कि "बच्चे हमारी बात नहीं मानते, लेकिन वे आपकी बात ज़रूर मानेंगे।" उनकी त्वरित प्रतिक्रिया व हमारी मदद करने की उनकी इच्छा को देखकर हम चकित-से रह गए। उनके द्वारा उठाए गए कुछ कदम यहाँ बताए गए हैं :

स्कूल परिसर

हमारे स्कूल के 85 बच्चे पाँच गाँवों में रहते हैं और केवल दो ही बच्चे छठे गाँव से आते हैं। अत: प्रत्येक गाँव में बच्चों को दो समूहों में बाँटा गया। प्रत्येक समूह में अधिकतम दस बच्चे थे। समूह में बच्चों की संख्या के अनुसार कक्षा के लिए कमरे तय किए गए। पहले चरण में, अभिभावकों द्वारा कक्षाओं के लिए 8 कमरों का इन्तज़ाम किया गया जिनमें समुदाय भवन, समाज कोने, आँगनवाड़ी केन्द्र, अम्बेडकर हॉल आदि शामिल थे। इसके साथ ही दो केन्द्र मन्दिर परिसरों में बनाए गए। हालाँकि दो कक्षाओं के बाद शिक्षकों व अभिभावकों को लगा कि ऐसे खुले स्थानों पर, जहाँ और भी कक्षाएँ चल रही हों, शोर बहुत ज़्यादा होता है। अत: किराए के कमरों का इन्तज़ाम किया गया। शिक्षक बाक़ी के दो विद्यार्थियों के होमवर्क व अन्य कार्यों के निरीक्षण के लिए हफ़्ते में एक दिन भीमल्ली (छठे गाँव) जाते थे।

स्वयंसेवी शिक्षक

हुंसीहादगिल गाँव में समुदाय के लोग बच्चों के पढ़ने व लिखने की आदत छूटने से इतने चिन्तित थे कि उन्होंने अन्य शिक्षकों द्वारा दिए गए कार्यों अनुवर्तन (follow up) के लिए समुदाय से एक शिक्षक को नियुक्त किया। उन्होंने बच्चों की शिक्षा को चालू रखने के लिए शिक्षकों को भुगतान करने की पेशकश भी की। हालाँकि अभिभावकों की माली हालत को देखते हुए स्कूल टीम ने उन्हें विश्वास दिलाया कि इसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

संवाद

बच्चों को कक्षा का समय बताने/याद दिलाने और उनकी पूरी उपस्थिति सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी अभिभावकों ने उठा ली। उन्होंने सुविधाओं की उपलब्धता का ध्यान रखा और यह भी सुनिश्चित किया कि सुरक्षा के लिए ज़रूरी एहतियातों का पालन किया जा रहा है। अभिभावकों और सहायक कर्मचारियों ने स्वेच्छा से 'कक्षाओं' को सैनिटाइज़ भी किया और हफ़्ते में दो बार पूरे परिसर की सफ़ाई की।

अनुवर्तन करना

अभिभावकों द्वारा विद्यार्थियों व शिक्षकों दोनों की अनुपस्थिति का ध्यान रखा जाता था। कोविड-19 जैसी परिस्थिति में यह एक महत्त्वपूर्ण कार्य था। क्योंकि गाँवों में पॉज़िटिव मरीज़ मिलने का मतलब था दो हफ़्तों के क्वारंटाइन पीरियड के लिए कक्षाओं को रोकना। जिन गाँवों में कोविड के पॉज़िटिव मरीज़ होते वहाँ हम किसी एक अभिभावक को वर्कशीट्स (जिन पर विद्यार्थियों का नाम लिखा होता था) दे देते जो उन्हें बच्चों में बाँटकर हमारी मदद करते।

कुछ परिणाम

अभी तक टीम द्वारा जून और जुलाई माह में हर केन्द्र पर बच्चों के लिए छह कक्षाएँ लगाई गईं। अगस्त माह से प्रत्येक केन्द्र पर लगातार चार दिन कक्षाएँ ली जा रही हैं। स्कूलों के वापिस खुलने तक यही कार्यक्रम जारी रहेगा।

हमारे प्रयासों से रोज़ाना होने वाली विभिन्न गतिविधियों में लगभग 96 प्रतिशत उपस्थिति देखने को मिली। इन प्रक्रियाओं को और व्यवस्थित करने का प्रयास किया जा रहा है जिसमें साप्ताहिक समीक्षा भी शामिल हैं। लॉकडाउन के दौरान बच्चे अक्षर, उनकी ध्वनियाँ, पढ़ने-लिखने के कौशल भूल-से गए

थे। शिक्षकों द्वारा उन्हें पुन: सिखाने का प्रयास किया जा रहा है।

अधिगम परिणाम

शिक्षकों के प्रयासों के फलस्वरूप प्राप्त कुछ सकारात्मक परिणाम इस प्रकार हैं :

- कोविड-19 के बारे में जागरूकता पैदा हुई और बच्चों की सुरक्षा में मदद मिली।
- सुनकर समझने और शब्दों व उनकी ध्वनियों के बीच के सम्बन्ध को समझने के कौशल में बढ़ोतरी हुई।
- अँग्रेज़ी और कन्नड़ दोनों ही भाषाओं में पढ़ने और लिखने के बुनियादी कौशलों में बढ़ोतरी हुई।
- स्थानिक कौशल (spatial skills) विकसित हुए।
- काग़ज़ को मोड़कर, बिन्दुओं वाली जाली पर काग़ज़ को काटकर, सीधी रेखाओं आदि को इस्तेमाल करके द्विविमीय आकृतियों को बनाने व पहचानने की क्षमता विकसित हुई।
- गणित की मूलभूत संक्रियाएँ सीखीं।

समुदाय के सहयोग पर अन्तर्दृष्टियाँ

एक सामाजिक संस्था होने के नाते, स्कूली प्रणाली में समुदाय के सदस्यों की पूर्णत: भागीदारी को प्राप्त करना स्कूल की एक प्रमुख ज़िम्मेदारी है। स्कूल-समुदाय नेटवर्क (SCN) या विद्यालय विकास एवं प्रबन्धन समिति (SDMC) को स्थापित करने को भी शिक्षण जितनी ही प्राथमिकता देना ज़रूरी है।

साझा समझ

स्कूल और समुदाय के सदस्यों के बीच साझेदारी से स्कूल का विकास होता है। अपने आस-पास के स्कूलों का एक छोटा-सा अवलोकन ही यह समझने में मदद कर सकता है कि स्कूल-समुदाय नेटवर्क कितना महत्त्वपूर्ण है और जब दोनों एंजेसी सहयोगियों के रूप में एक साथ कार्य करती हैं तो स्कूल में किस-किस तरह के बदलाव हो सकते हैं। लेकिन यह तभी सम्भव होगा जब स्कूल अभिभावकों को अपना हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित करें। अभिभावकों की भागीदारी बढ़ाने के लिए शिक्षक समय-समय पर अभिभावकों को स्कूल बुलाएँ, उन्हें स्कूल के कार्यकलापों से परिचित कराएँ, उन्हें अपने बच्चों की पढ़ाई के बारे में अवगत कराएँ और उन्हें दिखाएँ कि कैसे वे शिक्षकों की मदद कर सकते हैं। अभिभावक का सम्मान करना इस पद्धति का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है।

निष्कर्ष

टीम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में शामिल करने में उत्साहपूर्वक आगे बढ़ रही है और बच्चों को भी बदलावों के साथ तालमेल बिठाने में समय लग रहा है, पर वह कोशिश कर रहे हैं। शिक्षक भी कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं क्योंकि इस पद्धति की अपनी सीमाएँ हैं और यह वास्तविक कक्षा के अनुभव की तरह नहीं है। उदाहरण के लिए, बच्चों के काम को प्रदर्शित करना या सीमित स्थानों पर शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) का उपयोग करना मुश्किल होता है। शारीरिक दूरी के नियमों के साथ गतिविधियों का संचालन असम्भव है और कोविड-19 संक्रमण के बढ़ते मामलों के साथ-साथ लक्षणरहित संक्रमित लोगों की संख्या में वृद्धि डर का माहौल पैदा कर रही है। विद्यार्थियों को भी शिक्षकों से खुलने में पहले से ज़्यादा समय लग रहा है। यदि यह स्थितियाँ लम्बे समय तक बनी रहीं तो विद्यार्थियों के सीखने और शिक्षकों के साथ उनके सम्बन्धों पर काफ़ी प्रभाव पड़ेगा। हालाँकि यदि स्थितियाँ ऐसी ही रहती हैं, तो विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए यही एकमात्र विकल्प हो सकता है।



राजश्री नायक पिछले आठ वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ हैं और वर्तमान में कलबुर्गी के अज़ीम प्रेमजी स्कूल में समन्वयक हैं। उन्होंने स्कूल ऑफ़ सोशल वर्क, रोशनी निलय, मैंगलोर से सोशल वर्क में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की है। वह एक कैम्पस एसोसिएट के रूप में फ़ाउण्डेशन में शामिल हुईं और महिला साक्षरता कार्यक्रम, जो स्कूल छोड़ने वाले बच्चों और उनकी माताओं के साथ कार्य करता था, की समन्वयक थीं। उनसे **rajashri.nayak@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी

ऑनलाइन शिक्षक विकास | नई सम्भावनाओं की खोज

श्रीधर राजनाल

हमारी शिक्षक-विकास प्रक्रियाएँ ज़्यादातर आमने-सामने की अन्त:क्रियाओं पर आधारित रही हैं, लेकिन कोविड-19 ने हमें अन्य सम्भावनाएँ तलाशने और शिक्षकों तक पहुँचने के नए वैकल्पिक तरीक़े खोजने के लिए मजबूर कर दिया है। शुरुआती चरणों में हमने टेलीकान्फ्रेंसिंग के माध्यम से शिक्षण सम्बन्धित बातचीत की। लेकिन इस पद्धति की अपनी सीमाएँ थीं। एक ऐसा मंच खोजने की तत्काल आवश्यकता थी जिससे शिक्षकों के साथ प्रभावी संवाद हो सके। बहुत सोचने-विचारने के बाद अन्त में हमारे संकुल संसाधन समन्वयक (Cluster resource person – CRP) मल्लिकार्जुन सज्जन ने एक सुझाव दिया। उन्होंने कहा, "क्यों न हम एक साधारण-सा स्टूडियो विकसित करें जहाँ से हम प्रभावी रूप से अपने सभी शिक्षकों के साथ संवाद कर सकते हैं।" हालाँकि हममें से कोई भी इसके बारे में कुछ भी नहीं जानता था, पर हम सभी को लगा कि यह एक नया विचार है और इसे आज़माना चाहिए।

पृष्ठभूमि

कोविड-19 के नियंत्रण के लिए शारीरिक दूरी बरतना जितना आवश्यक हो गया था, उतना ही आवश्यक और महत्त्वपूर्ण शिक्षकों के साथ लगातार शैक्षणिक गतिविधियाँ करना भी था। पहले शिक्षकों ने अपने-अपने संकुलों में *व्हॉट्सऐप ग्रुप* बनाए। बाद में शिक्षकों के साथ चर्चा करने और संचार चैनलों के निर्माण करने के लिए हमने टोल-फ्री नम्बरों के साथ टेलीकान्फ्रेंसिंग का उपयोग करना शुरू किया। हालाँकि शिक्षकों ने बताया कि इस तरह से की गई चर्चाएँ बहुत प्रभावी नहीं थीं, क्योंकि यह केवल मौखिक बातचीत ही थी। लोग अन्त:क्रिया चाहते थे। वे चाहते थे कि कुछ ऐसा हो जिसमें दृश्य हों, जो अधिक गतिशील हो। उनको लगा सतत और प्रभावी अन्त:क्रिया के लिए ऑनलाइन ऑडियो-वीडियो प्रशिक्षण शुरू होना चाहिए। विचार यह था कि एक ऐसा मंच होना चाहिए जहाँ सुगमकर्ता शिक्षकों के साथ संवाद कर सकें।

हम ब्लैकबोर्ड (या व्हाइटबोर्ड), शिक्षण सहायक सामग्री और अधिगम सामग्रियों का उपयोग करना चाहते थे, ताकि सुगमकर्ता अवधारणाओं को अच्छी तरह से स्पष्ट कर सकें व उन्हें ठीक-से समझा सकें। इसी समय मल्लिकार्जुन सज्जन को शिक्षण-अधिगम केन्द्र (teaching learning centre) में एक स्टूडियो शुरू करने की योजना का ख़याल आया।

स्टूडियो की कल्पना

आमतौर पर स्टूडियो एक ऐसी जगह होती है जहाँ से हम बड़ी संख्या में लोगों के साथ संवाद कर सकते हैं। संवाद को प्रभावी और दिलचस्प बनाने के लिए यह दृश्य एवं श्रवण सहायक सामग्रियों (audio and visual aids), दृश्य एवं श्रवण के निरीक्षण के लिए तकनीकी सहयोग, अवधारणाओं को समझाने और संवाद को बढ़ाने के लिए विभिन्न सामग्रियों से लैस होते हैं। एक स्टूडियो में आमतौर पर एक मंच, रोशनी, कैमरा आदि की सुनियोजित व्यवस्था होती है ताकि लोग विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित कर सकें और महत्त्वपूर्ण लोगों को विशिष्ट रूप से दर्शाया जा सके।

हमारे पास इनमें से कुछ भी नहीं था। हमारे पास सिर्फ़ अमिनागढ़ के सरकारी उच्च प्राथमिक स्कूल के एक कमरे में कुछ जगह थी। हम सब एक स्टूडियो बनाना चाहते थे, पर जानकारी और संसाधन न होने की वजह से हम संघर्ष कर रहे थे।

स्टूडियो बनाना

हमारे पास एक पूर्ण विकसित स्टूडियो नहीं था, पर हमें शिक्षकों के साथ अपना काम तो शुरू करना था। जब हमने उनके साथ संवाद शुरू किया तो हमें पता चला कि हमें किन-किन चीज़ों की ज़रूरत थी और कहाँ-कहाँ कमियाँ थीं। हर सत्र के तुरन्त बाद, हम अपने स्टूडियो को उन चीज़ों से लैस करना चाहते जिनकी आवश्यकता हमें सत्र के दौरान महसूस हुई, पर जो उपलब्ध नहीं थीं। हर बार जब हम ऑनलाइन संवाद करते थे तो कमियों की पहचान कर पाते थे और उन्हें ठीक कर पाते थे। चार-पाँच ऑनलाइन सत्रों के बाद हमने कुछ बुनियादी व्यवस्थाएँ कीं, जैसे कि वक्ता के बैठने और बोलने के लिए एक आरामदायक जगह।

चूँकि हम अपने मोबाइल से फ़िल्म बना रहे थे तो रिज़ोल्यूशन बहुत ही कम था और इसलिए पिक्चर की क्वालिटी और आवाज़ भी ख़राब थी। हमारे एक सहकर्मी (जिनके फ़ोन कैमरा अच्छा था) ने अपना मोबाइल हमें दे दिया। पिक्चर की ब्राइटनेस बढ़ाने के लिए मल्लिकार्जुन सज्जन अपने घर से चमकदार रोशनी वाला एक लैम्प ले आए। इन परिवर्तनों के साथ बहुत अच्छी फ़िल्म बनी। एक अन्य सहयोगी, शिवानन्द सज्जन, कैमरा फ़ोन को टिकाने के लिए ट्राइपॉड स्टैंड जैसे कुछ साधन ले आए।

प्रारम्भिक समस्याएँ

शिक्षकों को लगने लगा था कि वक्ताओं को लगातार सुनते रहना नीरस और उबाऊ है। बतौर मुख्य समूह हमने चर्चा शुरू की कि सत्रों को रोचक कैसे बनाया जाए। कई सुझाव सामने आए। सबसे दिलचस्प सुझाव यह था कि वक्ता के पीछे एक स्क्रीन पर तस्वीरों को प्रोजेक्ट करने के लिए प्रोजेक्टर का उपयोग किया जाए। हमारे पास शिक्षक अध्ययन केन्द्र में एक प्रोजेक्टर था। यह सब हमारे लिए बहुत रोमांचक था क्योंकि हम कई चीज़ों के साथ प्रयोग कर सकते थे।

स्टूडियो को सुविधाओं से लैस करना

स्टूडियो बनाने के लिए हमें निम्नलिखित चीज़ों की आवश्यकता थी :

1. अच्छे कैमरे वाले दो मोबाइल फ़ोन
2. एक ट्राइपॉड स्टैंड
3. हाई वॉट बल्बों वाले टेबल लैम्प
4. लैपटॉप और प्रोजेक्टर स्क्रीन
5. ब्लूटूथ हेडसेट
6. एक बड़ा कमरा जहाँ कुछ घण्टों के लिए शान्त माहौल बनाए रखना सम्भव हो
7. पर्याप्त टीएलएम

सहयोगात्मक कार्य

जब हमने प्रोजेक्ट करने से सम्बद्ध हिस्सों और अपनी तकनीक में सुधार किया तो हमें शिक्षकों से काफ़ी सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। हमने दिलचस्प पावर पॉइंट प्रेज़न्टेशन और छोटे वीडियो बनाए। प्रभावी वीडियो क्लिपिंग के स्रोत बताए और सत्र में उनका उपयोग भी किया।

शुरुआत में काफ़ी अड़चनें आईं। उदाहरण के लिए, समन्वय की कमी के कारण रिकॉर्डिंग बाधित हुई। फिर हमने साथ मिलकर काम करना, आपस में काम बाँटना और बेहतर समन्वय के लिए व्यवस्थित ढंग से योजना बनाना सीखा। इस तरह हमने न सिर्फ बेहतर समझ विकसित की, बल्कि आपस में साझा करने के तरीक़े भी विकसित किए। हमने एक टीम, स्टूडियो की टीम, के रूप में काम करना शुरू किया।

सीख

यह पता लगाने के अलावा कि तैयारी सफलता की कुंजी है, हमारी अन्य सीखें थीं :

1. सत्र से कुछ दिन पहले, हम मिलते और सत्र के बारे में विस्तार से चर्चा करते। हम सुगमकर्ता को दी जाने वाली पाठ्यपुस्तक, पाठ्यक्रम, सामग्री और पूरक सामग्री पर चर्चा करते। पूरी टीम साथ बैठकर चर्चा करती जिससे सत्र को बेहतर बनाने में मदद करने के विचार उभरकर आते।
2. सुगमकर्ता ने स्रोत व्यक्तियों की मदद ली और मुख्य टीम के साथ मिलकर शिक्षण सहायक सामग्री और अन्य आवश्यक सामग्रियाँ तय कीं। अन्य लोगों ने इन्हें बनाया।
3. टीम ने वास्तविक सत्र से पहले एक परीक्षण सत्र आयोजित करने में सुगमकर्ता की मदद की। फिर उसका मूल्यांकन और समीक्षा की व सुधार के लिए सुझाव दिए। इससे सुगमकर्ता को समय का प्रबन्धन करने में भी मदद मिली।
4. टीएलएम और ऑडियो, वीडियो, पीपीटी आदि प्रौद्योगिकी का अभ्यस्त होने के लिए सुगमकर्ता को काफ़ी अभ्यास करवाया गया। टीम के सदस्यों ने इस प्रयास में सहयोग किया और ज़रूरत पड़ने पर आवश्यक सामग्री मुहैया कराई।
5. हम समूह को लिंक भेज देते थे ताकि सभी सदस्य और शिक्षक समय पर चर्चा में शामिल हो सकें। किसी भी समस्या के समाधान में मदद के लिए हमारे सदस्य वहाँ मौजूद होते।
6. हम मौखिक और लिखित निर्देशों व मार्गदर्शन के ज़रिए प्रभावी ढंग से तकनीक का उपयोग करने में शिक्षकों को प्रशिक्षित कर पाए। हर सत्र के उपरान्त हम बैठक करते जिसमें सत्रों को बेहतर बनाने में मदद के लिए विस्तृत मौखिक और लिखित समीक्षा की गई।

एक साथ काम करना

गीता मैडम और रंगपुरा गुरु, जो 'नली-कली' पद्धति में प्रशिक्षित हैं, ने सामूहिक गतिविधियों पर महत्त्वपूर्ण सत्र किए। शशिधर, श्रेयस, गीता और मंजुला मैडम, सीआरपी और हम सभी ने किट के साथ-साथ गणितीय अवधारणाओं और नली-कली पर चर्चा करने के लिए एक समय-सारिणी तैयार की।

अन्य स्रोत व्यक्तियों ने शिक्षण के वैकल्पिक तरीक़ों और शिक्षण सहायक सामग्रियों के उपयोग का प्रदर्शन किया। नली-कली समूह आन्दोलन और नली-कली की शिक्षण-विधियों ने शिक्षकों को चुनौतीपूर्ण प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित किया जो बहस व चर्चा का विषय बने। इसी तरह, ग्रेड चार और पाँच के लिए, गणित-किट ने ठोस वस्तुओं से अमूर्त अवधारणाओं की ओर बढ़ने में मदद की।

स्टूडियो का प्रभाव

जिस तरह से ऑनलाइन सत्र आयोजित किए गए थे उसे देखकर शिक्षा-विभाग के अधिकारी ख़ुश थे। विभिन्न समूहों के लिए कई विषयों पर ऑनलाइन प्रक्रियाएँ विकसित की गई हैं। अन्य समूहों को स्टूडियो बनाने के लिए हमारी मदद लेने

के लिए कहा गया है। इसके साथ ही विभाग ने नली-कली, कक्षा चार और पाँच तथा तालुक के उच्च प्राथमिक शिक्षकों के लिए *गूगल मीट* और हमारे स्टूडियो जैसी जगह के माध्यम से पाँच दिवसीय विशेष प्रशिक्षण-कार्यक्रम आयोजित किए। तालुक के प्रधान शिक्षकों ने अपने स्कूल के शिक्षकों के साथ पहले से ही मॉडल ऑनलाइन प्रशिक्षण सत्र आयोजित करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

आगे का रास्ता

भविष्य के लिए दिशा-निर्देशों पर विचार किया गया है जिनकी मुख्य विशेषताएँ हैं :

1. स्टूडियो का प्रभावी ढंग से उपयोग करके ऑनलाइन सत्रों के ज़रिए सिखाई जाने वाली विभिन्न अवधारणाओं को डिज़ाइन करना, विशेषकर कक्षा चार व पाँच के शिक्षकों और नली-कली के प्राथमिक शिक्षकों के लिए।
2. शिक्षकों के लिए ऐसी पाठ-योजनाएँ तैयार करने के अवसर पैदा करना जो उन विधियों और सहायक सामग्रियों का उपयोग करते हैं जिन्हें स्टूडियो से प्रसारित किया जा सकता है।
3. सत्र को बेहतर बनाने में मदद करने के लिए स्टूडियो को आवश्यक सामग्री से लैस करना।
4. कुछ संकुल शिक्षकों और प्रधान शिक्षकों ने साधारण स्टूडियो स्थापित करने में रुचि दिखाई है। हम प्रभावी ऑनलाइन सत्रों के लिए ऐसा करने में उनकी मदद करने की योजना बना रहे हैं।
5. एक टीम के रूप में, हमारी प्रमुख सीख यह थी कि यह पूरी प्रक्रिया मुख्य रूप से सामग्री और शिक्षण-कला में हमारी क्षमता विकसित कर रही थी। स्टूडियो ने हमें अधिक शिक्षकों तक पहुँचने में मदद की।











श्रीधर राजनाल पिछले सात वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े हुए हैं। वह बागलकोट ज़िला संस्थान, कर्नाटक में गणित टीम का नेतृत्व करते हैं। श्रीधर ने सामाजिक कार्य और समाजशास्त्र की पढ़ाई की, लेकिन गणित में उनकी रुचि शुरू से ही रही है। उनका अनुभव स्कूल लीडरशिप और डेवलपमेंट के क्षेत्र में रहा है। उनसे shridhar.rajanal@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी

अनजाने रास्ते पर चलना | ऑनलाइन पढ़ाई

स्मृति राठौर, रुचि कोटनाला और मोनू कुमार

वर्तमान समय में हम संकट के दौर से गुज़र रहे हैं। महामारी के चलते लगे लॉकडाउन और उसके प्रतिबन्धों, सामाजिक दूरी और स्कूलों के बन्द होने से लोगों का जीवन पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गया है। ऐसे में हम शिक्षकों के सामने भी यह सवाल खड़ा हो गया था कि इस रहस्यमय वायरस के कारण पैदा हुई अनिश्चितता, अविश्वास और भय की स्थिति में हम दूर रह रहे अपने विद्यार्थियों से कैसे जुड़ सकते हैं? पढ़ाई-लिखाई तो जारी रखनी ही थी। सबसे पहला ख़याल दूरस्थ विधि के माध्यम से जुड़ने की तत्काल सम्भावना के रूप में आया। ठीक उसी समय, हमें दूरस्थ विधि में कक्षा की सम्भावित संरचना का अनुमान भी लगाना था। यह एक ऐसा कार्य था जिससे स्कूल के हम सभी साथी अनजान थे ।

इस लेख में हमने अपने काम की तैयारी, ऑनलाइन माध्यम पर होने वाले कार्य, दूरस्थ कार्यक्रमों के लिए हमारे द्वारा इस्तेमाल किए गए तरीक़े साझा किए हैं। इनके अलावा हमने इसमें हमारे सामने आने वाली चुनौतियाँ, इस प्रक्रिया में हमारी सीख और अन्त में आगे किए जाने वाले कार्यों के बारे में भी बात की है।

हमारी तैयारी

चूँकि ऑनलाइन माध्यम हमारे लिए नया था, इसलिए पहले हमें कई चीज़ें सीखनी पड़ीं। इनमें से एक था *व्हॉट्सएप, गूगल मीट, गूगल क्लासरूम, ज़ूम, माइक्रोसॉफ्ट टीम्स* जैसे अलग-अलग माध्यमों के साथ-साथ *गूगल फॉर्म्स, फेसबुक और यू-ट्यूब* जैसे अन्य सहायक माध्यमों से परिचित होना और इनकी पड़ताल करना। अपने साथियों के साथ कुछ प्रारम्भिक तैयारियों को आज़माने के बाद हमने इसे विद्यार्थियों के साथ साझा किया। हमने ऑनलाइन साझा किए जा सकने वाले संसाधनों को बनाना और इकट्ठा करना शुरू किया, विषय से सम्बन्धित पुस्तकों को पढ़ा, विषय/कक्षा समूहों में और सामान्य समूहों में *माइक्रोसॉफ्ट टीम्स, गूगल मीट* में ऑनलाइन बैठकों और फ़ोन पर कान्फ्रेंस कॉल के माध्यम से विचार-विमर्श करके अधिक कड़ाई से अनुवर्तन (follow up) किया। हमने अपनी पठन सामग्री पर चर्चा की और विषयगत वर्कशीट और कार्यों को विकसित करने के लिए अपने प्रयासों को उपयुक्त प्रारूपों में साझा किया।

ख़ुद को तैयार करने के बाद विद्यार्थियों के परिवारों को फ़ोन करके या उनके घरों पर जाकर हमने उनके फ़ोन और व्हॉट्सऐप नम्बर जुटाए। फिर हमने दो *व्हॉट्सएप* ग्रुप बनाए : एक कक्षा-वार और एक सामान्य।

ऑनलाइन जाना

अभिभावकों की माँगों के अनुसार पहले कुछ दिन हमने विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक के अध्यायों की पीडीएफ और स्क्रीनशॉट्स भेजे। अभिभावकों को लगा था कि इस तरीक़े से उनके बच्चे अध्ययन कर लेंगे, लेकिन हम जानते थे कि यह तरीक़ा अप्रभावी होगा। स्मार्टफ़ोन की छोटी-सी स्क्रीन पर लम्बे समय तक लगातार ध्यान बनाए रख पाना विद्यार्थियों के लिए मुश्किल था। अभिभावकों ने भी महसूस किया कि केवल पाठ्यपुस्तक के अध्यायों को पीडीएफ के रूप में साझा करने से बात नहीं बन रही है।

इस समय तक हमने *गूगल फार्म* पर प्रश्न देना शुरू कर दिया था, जिसके लिए विद्यार्थियों को केवल सही विकल्पों पर बटन दबाना होता था। इसी पर हमने जाँच और सर्वेक्षण की आवश्यकता वाले छोटे प्रश्नों को भी शामिल किया। इसके लिए हमने *यू-ट्यूब* वीडियो और चित्रों का उपयोग किया। शुरुआत में हमें विद्यार्थियों से कई उत्साही प्रतिक्रियाएँ मिलीं। हमने विद्यार्थियों को एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकें और कॉपी भी प्रदान कीं। ऑनलाइन कार्य के साथ-साथ पाठ्यपुस्तकों का भी उल्लेख किया। हमारे सन्दर्भ में विद्यार्थियों के पास घर पर उपलब्ध एकमात्र शैक्षणिक संसाधन पाठ्यपुस्तकें ही हैं। लेकिन केवल वे ही विद्यार्थी पाठ्यपुस्तकों का उपयोग स्व-शिक्षण सामग्री के रूप में कर सकते थे जो कक्षा-उपयुक्त सीखने के स्तर पर थे।

अन्य संसाधन

बतौर संसाधन ऐसी कई सारी ऑनलाइन गतिविधियाँ थीं जिनके लिए पाठ्यपुस्तक की कोई आवश्यकता नहीं थी। जैसे कि प्राकृतिक घटनाओं का अवलोकन करना, साधारण जाँच और प्रयोग करना, दैनिक गतिविधियों को दर्ज करना, विद्यार्थी जिन अनुभवों से गुज़र रहे थे उन पर चिन्तन-मनन करना आदि। इसके साथ ही हमने कहानियों, कविताओं, गीतों और कई विषयों की मूलभूत अवधारणाओं का वर्णन करने वाले

यू-ट्यूब वीडियो के लिंक साझा किए। बहुत-सी सामग्री तो स्कूल के फेसबुक पेज पर भी साझा की गई। इसके अलावा हमने एनसीईआरटी और एकलव्य दोनों की पाठ्यपुस्तकों से स्थानीय मुद्दों से जुड़े अध्यायों के *यू-ट्यूब* वीडियो भी बनाए।

हमारे द्वारा किए गए ऑनलाइन कार्य का एक उदाहरण नीचे दिया गया एक *व्हॉट्सएप* सन्देश है। इसे कक्षा 1 के विद्यार्थियों को उनकी पाठ्यपुस्तक के एक अध्याय पर आधारित कार्य के लिए भेजा गया था :

प्यारे बच्चो! अपनी हिन्दी की किताब रिमझिम-1 के पेज 76 को खोलिए और उसमें आई कविता 'पतंग' को पढ़कर अपने घर के किसी सदस्य को सुनाइए फिर इसको रिकॉर्ड कर हमें भी भेजिए। इसके बाद पेज 77 पर आई गतिविधि 'पतंग का चित्र बनाइए' और 'अब कविता बनाएँ' को अपनी नोटबुक में कीजिए। फिर इसका भी फ़ोटो खींचकर हमें भेजिए।

एक और उदाहरण है : सन्थाली लोककथा *फ़र्स्ट हाउस* पर आधारित एक वीडियो, जिसे बुक-बॉक्स ने *यू-ट्यूब* पर डाला है। इस वीडियो में दो दोस्त विभिन्न जानवरों के सुझाव लेकर अपना पहला घर बना रहे हैं। प्रत्येक जानवर ने अपने शरीर के अंगों के अनुरूप घर के एक हिस्से को बनाने का सुझाव दिया। दोस्तों ने उन भागों के साथ पूरे घर के निर्माण के लिए सामग्री इकट्ठा की। यह वीडियो देखने के बाद निम्न सवालों को सामने रखा गया : वीडियो देखने के बाद क्या आपको लगता है कि यह कहानी सामूहिक कार्य का एक उदाहरण है? किस तरह से? वीडियो में कितने जानवर थे? घर किस चीज़ से बना था? (लकड़ी/ईंट) घर का कौन-सा हिस्सा बाँस से बनाया गया था?

माध्यमों की विशेषताएँ

समय के साथ हमें यह समझ में आया कि असमकालीन दूरस्थ विधियों में, एक-दूसरे को देखे बिना, शैक्षणिक कार्य करना अप्रभावी है। इसलिए हमने समकालीन दूरस्थ विधि *गूगल मीट* के ज़रिए उन विद्यार्थियों के साथ कार्य शुरू किया, जिनके पास इंटरनेट और स्मार्टफ़ोन की पहुँच थी और जो इसमें शामिल होने के लिए तैयार थे। जिनके पास इंटरनेट की सुविधा नहीं थी उनसे जुड़ने के लिए हमने टेलीफ़ोन का उपयोग किया।

सभी ऑनलाइन माध्यमों के कुछ फ़ायदे हैं। उदाहरण के लिए टेलीफ़ोन सभी विद्यार्थियों के लिए सबसे सुलभ साधन है और इसमें नेटवर्क की समस्याएँ न के बराबर हैं। वहीं, *व्हॉट्सएप* वीडियो, ऑडियो, *गूगल फ़ॉर्म*, वेबसाइट के लिंक, चित्र और यहाँ तक कि दस्तावेज़ों को भी साझा करने के लिए एक सस्ता साधन है। यह वास्तविक समय में सदस्यों के एक बड़े समूह के साथ विचारों/अपडेट को साझा करने में भी मदद करता है। *फेसबुक* डिजिटल संसाधनों के भण्डारघर के रूप में जगह प्रदान करने के साथ ही साझाकरण और चर्चा के लिए एक माध्यम के रूप में भी काम आता है। *यू-ट्यूब* वीडियो का भण्डारघर है और *फेसबुक* के विपरीत, गूगल खाता न होने पर भी इन संसाधनों तक पहुँच की अनुमति देता है। *फेसबुक* और *यू-ट्यूब* दोनों पर ही लाइव सत्र किए जा सकते हैं। *गूगल मीट* का लाभ यह है कि यह व्यक्तिगत और समूह दोनों में कार्य करने की जगह देता है। हालाँकि इसके लिए काफ़ी इंटरनेट बैंडविड्थ की आवश्यकता होती है और इसलिए यह कुछ विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

विभिन्न प्रकार के कार्यों को सौंपने के इष्टतम तरीक़े को ढूँढ़ने के लिए हमने घरों के दौरों के साथ-साथ इन सभी माध्यमों को इस्तेमाल करने की कोशिश की ।

हमने क्या सीखा

हम जानते थे कि पाठ्यपुस्तक के अध्यायों की पीडीएफ प्रतियाँ या स्क्रीनशॉट भेजना अप्रभावी होगा। लेकिन अभिभावकों की माँग के कारण हमें यह करना पड़ा (हालाँकि अभिभावकों को भी जल्द ही इन फाइलों को साझा करने की सीमाओं का एहसास हुआ)।

जब लॉकडाउन प्रतिबन्धों में ढील दी गई तो ऑनलाइन माध्यम से विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ आना काफ़ी कम हो गया। मोबाइल तक उनकी पहुँच कम हो गई और विभिन्न कारणों से विद्यार्थियों के समग्र शैक्षणिक कार्यों में काफ़ी कमी आई। कम और धीमी प्रतिक्रिया का एक बड़ा कारण कमज़ोर और बाधित इंटरनेट कनेक्टिविटी थी। कई मामलों में यह देखा गया कि विद्यार्थी अपना कार्य कर तो रहे थे, लेकिन उसे *व्हॉट्सऐप* पर साझा नहीं कर पा रहे थे।

लॉकडाउन हटने के बाद हमने हफ़्ते या पन्द्रह दिनों में एक बार विद्यार्थियों के घर जाकर उन्हें वर्कशीट्स और हैंडआउट्स की हार्ड कॉपी दीं। इंटरनेट और स्मार्टफ़ोन की सीमित पहुँच के कारण पैदा होने वाली चुनौतियों को कम करने के लिए हमने विद्यार्थियों के घरों में जाकर शैक्षिक सहायता भी दी।

एक दिलचस्प पहलू यह है कि हर पन्द्रह दिनों में घर के दौरों के माध्यम से हम केवल 80-85 प्रतिशत विद्यार्थियों से जुड़ पाए और हर तीस दिनों में दौरा करने पर केवल 5-10 प्रतिशत विद्यार्थियों से। पाँच प्रतिशत विद्यार्थी काफ़ी दूर रह रहे थे और पहुँच के बाहर थे। इसलिए उनके लिए हमें केवल *व्हॉट्सऐप* और *गूगल मीट* माध्यम पर ही निर्भर रहना पड़ा। बचे हुए पाँच प्रतिशत विद्यार्थियों के साथ हम रुक-रुककर ही काम कर पाए।

बतौर शिक्षक बच्चों को ऑनलाइन कार्यों के साथ जोड़ने के हमारे प्रयासों से हमने बहुत कुछ सीखा है। उदाहरण के लिए, विषयगत कार्यों के लिए हमें विषयों के बीच की सीमाओं को

तोड़ने की ज़रूरत पड़ी। विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत करने के लिए हमें विषय-सामग्री और अवधारणाओं का ज़्यादा गहन अध्ययन करना पड़ा। रुचि के अनुसार, "मुझे 'कला' में ख़ासी दिलचस्पी है और इसे पढ़ाने में मैं सहज महसूस करती हूँ। हालाँकि जब मैंने कक्षा एक और दो के विद्यार्थियों को हिन्दी, अँग्रेज़ी और गणित पढ़ाना शुरू किया, तो इन विषयों में मेरी दिलचस्पी जागी। मैंने वर्कशीट बनाना, *गूगल फार्म* का उपयोग करना, *यू-ट्यूब* सामग्री बनाना और कहानियों को आवाज़ देना भी सीखा।"

ऑनलाइन जाने की चुनौतियाँ

मोबाइल फ़ोन की छोटी स्क्रीन, कमज़ोर इंटरनेट कनेक्शन, घर में पढ़ाई के लिए मुनासिब माहौल न होना, विद्यार्थियों का ऑनलाइन कक्षाओं को गम्भीरता से न लेना और शैक्षिक उद्देश्यों के लिए डिजिटल तकनीक से अपरिचित होने जैसी चीज़ें हमारी प्रमुख चुनौतियाँ रहीं। इसके साथ ही कुछ परिवार ऐसे भी हैं जो इंटरनेट डेटा को रीचार्ज करने का ख़र्चा वहन नहीं कर सकते। एक और तरह की परेशानी तब आती थी जब दो या दो से अधिक बच्चे एक साथ एक ही मोबाइल का इस्तेमाल करना चाहते थे।

आगे का रास्ता

कोविड-19 ने एकदम नई और जटिल स्थिति पैदा कर दी है। बतौर शिक्षक हमें अध्ययन के फ़ासलों को ख़त्म करना है, लेकिन एक नियमित कक्षा के मुक़ाबले ऑनलाइन कक्षा में हम विद्यार्थियों के साथ व्यक्तिगत रूप से नहीं जुड़ सकते थे या सीखने-सिखाने के सभी संसाधनों का उपयोग नहीं कर सकते थे। हालाँकि हमने वर्कशीट्स और पाठ्यपुस्तक-आधारित कार्य दिए, पुस्तकें उधार दीं, घर जाकर ट्यूशन पढ़ाया, लेकिन फिर भी दूरस्थ और ऑनलाइन विधियों की अपनी सीमाएँ थीं। इस क्षेत्र में बेहतर कार्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम स्थिति को समझने के बाद कैसे कार्य करेंगे।

लॉकडाउन के दौरान और इसके बाद की सभी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए हम विद्यार्थियों के घरों के दौरे करने पर ज़्यादा ज़ोर दे रहे हैं। हम सीखने, ऑनलाइन सामग्रियों को तैयार करने और ऑनलाइन कार्य को बरक़रार रखने के लिए जुड़ाव की गतिशील विधियों को लगातार टटोल रहे हैं ताकि हम भविष्य में लॉकडाउन या अन्य आपात स्थितियों का सामना कर सकें।

आभार

इस पूरे सफ़र में अपनी टीम द्वारा कोरोनाकाल में किए गए कार्यों की हम तहे दिल से सराहना करते हैं। यह लेख सभी की मेहनत का नतीजा है।



स्मृति राठौड़ अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड में प्राथमिक कक्षाओं में अँग्रेज़ी पढ़ाती हैं। उनसे **smriti.rathore@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है।



रुचि कोटनाला अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड में प्राथमिक और उच्च-प्राथमिक कक्षाओं में कला और शिल्प सिखाती हैं। उनसे **ruchi.kotnala@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है।



मोनू कुमार अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड में पहली और दूसरी कक्षा में हिन्दी और उच्च-प्राथमिक कक्षाओं में संस्कृत पढ़ाते हैं। उनसे **monu.kumar@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी

पढ़ाई-लिखाई के मेरे नए अनुभव

वान्या गुप्ता

महामारी के कारण अब हम ऑनलाइन कक्षाओं की ओर स्थानांतरित हो गए हैं। सामान्य स्कूल की तुलना में ऑनलाइन कक्षाएँ पूरी तरह बेहतर या ख़राब नहीं हैं, पर वे कुछ अलग हैं। वे कुछ मायनों में फायदेमन्द हैं और कुछ में हानिकारक।

इसका पहला लाभ यह है कि हमें शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन साझा किए गए अध्यायों के नोट्स और अतिरिक्त अभ्यास नोट्स प्राप्त हो जाते हैं। इससे यह मदद मिलती है कि हमें अब अपनी कॉपी और रजिस्टरों में लम्बे–लम्बे नोट्स लिखने नहीं पड़ते। हम अपने अध्यापकों द्वारा दिए गए महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं और सरलीकृत स्पष्टीकरण को ध्यान में रखकर अपना कार्य कुशलता से कर लेते हैं। यह उन विद्यार्थियों के लिए अधिक लाभदायक है जो स्व-अध्ययन को ज्यादा महत्व देते हैं, क्योंकि उन्हें अब इसके लिए अधिक समय मिल जाता है। इसके अलावा, हम अभी भी अपने पाठ्यक्रम से पूरी तरह जुड़े हुए हैं, यह बहुत लाभदायक और सुविधाजनक है, क्योंकि अगर लॉकडाउन के दौरान ऑनलाइन कक्षाएँ नहीं होतीं तो हम अपने पाठ्यक्रम को पूरा करने या कुछ भी सीख पाने में सक्षम नहीं होते।

यात्रा पर लगने वाले समय (घर से स्कूल जाना और आना) की भी बचत हुई है, जिसका इस्तेमाल हम दूसरे कार्यों में कर सकते हैं। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अगर हम अपना कार्य समय पर पूरा नहीं भी करें, तो शिक्षक हमें सजा नहीं दे पाएँगे!

असुविधा के रूप में देखें, तो कई शिक्षकों को इस नई अध्ययन पद्धति के साथ सामंजस्य स्थापित करने में विभिन्न परेशानियों का सामना करना पड़ा। जैसे गैज़ेट के उपयोग में या फोन व लैपटॉप की सेटिंग सम्बन्धी समस्या का होना। जैसे, एक शिक्षक काग़ज़ पर कुछ लिखते समय अपना फ़ोन हाथ में पकड़े हुए थे जिसके कारण उनकी लिखावट बिल्कुल स्पष्ट नहीं दिख पा रही थी। कई विद्यार्थियों को भी नेटवर्क सम्बन्धी दिक़्क़त का सामना करना पड़ा। जैसे स्क्रीन का स्थिर हो जाना, नेटवर्क स्लो हो जाना, या फिर नेटवर्क टूटने से कक्षा से बाहर हो जाना इत्यादि।

एक और कारण से भी ऑनलाइन कक्षाएँ अहितकर हैं। इसके कारण विद्यार्थी बहुत अधिक समय तक इलेक्ट्रानिक गैज़ेट के सम्पर्क में रहते हैं। कक्षाओं में शामिल होने, विभिन्न परियोजनाओं और गृह-कार्य को वर्ड डॉक्यूमेंट में लिखने और जमा करने के लिए हमें दिन भर लैपटॉप के सामने बैठना पड़ता है। इसके बाद दूसरे ट्यूशन भी लेने होते हैं और वह भी ऑनलाइन ही होते हैं। इससे हमारे मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है – जैसे आँखों की रोशनी और बैठने की मुद्रा यानी पाश्चर को नुकसान पहुँचना।

कई शिक्षकों का मानना है कि क्योंकि हम पूरा दिन घर पर बैठे हैं तो हमारे पास बहुत सारा ख़ाली समय है,इसलिए वे हमें बहुत सारा गृह-कार्य दे देते हैं। कभी-कभी तो यह स्कूल से मिलने वाले गृह-कार्य से भी दोगुना होता है, जो पहले भी बहुत होता था। इसके अलावा, हमें ट्यूशन में भी ज़्यादा गृह-कार्य मिलता है। कुछ बच्चे आकाश व विद्या मंदिर क्लासेस जैसे संस्थानों से भी कक्षाएँ लेते हैं जो तीन से चार घण्टे तक की होती हैं। इस सबमें बहुत समय लगता है इसी के साथ स्कूल और ट्यूशन में होने वाले टेस्ट की तैयारी का तनाव भी जुड़ा रहता है। हम आशा करते हैं कि शिक्षक टेस्ट अनुसार हमें गृह-कार्य देंगे और कार्य की मात्रा को कम करेंगे।

यह बात सही है कि हमारे पाठ्यक्रम में काफ़ी कमी की गई है। टेस्टों में सिर्फ लघु प्रश्नों या बहु-विकल्पी प्रश्नों (MCQ) को ही पूछा जाता है, लेकिन इस वजह से ऐसे बहुत सारे महत्त्वपूर्ण अध्याय जो आगे की समझ के आधार के लिए अति आवश्यक हैं, वह टेस्ट का हिस्सा नहीं बन पाते। इसका अर्थ यह है कि हम अधिक ज्ञान अर्जन नहीं कर पा रहे हैं और सिर्फ़ साधारण अध्यायों को ही पढ़ रहे हैं जिनसे टेस्टों में लघु प्रश्न सरलता से पूछे जा सकते हैं। इसके अलावा, जैसा कि हम सभी को लघु-उत्तर लिखने और टेस्टों में बहु-विकल्पी प्रश्नों की आदत पड़ती जा रही है, तो सम्भव है कि उच्च शिक्षा में जहाँ निश्चित समय में दीर्घ उत्तर लिखने होते हैं, हम लिखने में सक्षम न हों क्योंकि हमें ऐसा करने का अभ्यास नहीं होगा।

इसका एक और नुकसान यह है कि बहुत से विद्यार्थी कक्षाओं में ध्यान नहीं देते और जब उन्हें शिक्षक कैमरा चालू करने का आदेश देते हैं तब उन्हें बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। क्योंकि वे ऑनलाइन कक्षाओं को खाली समय मानते हैं और इधर-उधर घूमना चाहते हैं। इस वजह से शिक्षक यह सुनिश्चित करने में असमर्थ रहते हैं कि सभी विद्यार्थी कक्षा में ध्यान दे रहे हैं। यह एक बड़ी दिक़्क़त है क्योंकि जब हम कक्षाओं में होते हैं तब

शिक्षक कम से कम यह जानते हैं कि कौन सुन रहा है और कौन नहीं। कक्षाएँ भी गैर-संवादात्मक बन गई हैं। शिक्षक शिकायत करते हैं कि उन्हें लगता है वे एक म्यूटेड स्क्रीन को पढ़ा रहे हैं, जहाँ बमुश्किल ही कोई जवाब देता है।

अन्तत: मेरे अवलोकन के अनुसार ऑनलाइन कक्षाओं के फ़ायदे से ज़्यादा नुक़सान हैं। मुझे स्कूल से प्यार है और चाहती हूँ सीखने में मज़ा आए। मैं चाहती हूँ कि काश इन समस्याओं का समाधान किया जा सके। मुझे अपने सामान्य स्कूल में वापस जाने की लालसा है।



वान्या गुप्ता दिल्ली पब्लिक स्कूल में नौवीं कक्षा की छात्रा हैं। वह अपने स्कूल के नाटक तथा पाश्चात्य संगीत क्लब की सदस्य हैं। उनसे **vanyagupta0707@gmail.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी

कोई समाज कितना भी समृद्ध और विकसित क्यों न हो, इस महामारी से पहले उसने अपनी स्कूली शिक्षा को पूरी तरह से प्रौद्योगिकी पर आधारित नहीं किया था, जो इस बात का एक स्पष्ट संकेत है कि शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग के बारे में एक परिपक्व शिक्षा प्रणाली क्या सोचती है।

- बी.एस. ऋषिकेश, 'न्यू नॉर्मल पर उठते प्रश्न : ऑनलाइन अधिगम', पेज 25

नए तरीक़ों से सीखना–सिखाना | सम्बन्धों को मज़बूत करना

वर्धना पुरी, ज्योत्स्ना लाल और हैदर मेहदी रिज़वी

पृष्ठभूमि

भारत में मार्च, 2020 के तीसरे सप्ताह में शुरू हुआ लॉकडाउन शायद दुनिया का सबसे सख़्त लॉकडाउन था। शिक्षा के क्षेत्र की बात करें तो आठ महीने से अधिक समय हो गया है और स्कूल व आँगनवाड़ी अभी भी बन्द हैं। दिल्ली की निज़ामुद्दीन बस्ती के बच्चे लॉकडाउन से गम्भीर रूप से प्रभावित हुए हैं। इन बच्चों की लगभग सारी औपचारिक शिक्षा और इनके पोषण का कुछ हिस्सा स्कूल और आँगनवाड़ी केन्द्रों की सेवाओं पर निर्भर करता है। देश के अन्य भागों से मिल रही जानकारी से भी इस बात की पुष्टि होती है, हालाँकि इसके दीर्घकालिक प्रभाव धीरे-धीरे सामने आएँगे।

दूसरा झटका तब लगा जब निज़ामुद्दीन बस्ती में स्थित तब्लीगी जमात मुख्यालय को कोविड-19 के फैलने का स्रोत माना गया और पूरी बस्ती को सील कर दिया गया। अब बच्चों के पास स्कूली शिक्षा का कोई विकल्प नहीं बचा। हक़ीकत तो यह है कि इन बच्चों के पास सीखने की कोई और व्यवस्था नहीं थी। ऐसा मालूम होता था कि सीखने के लिए एकमात्र प्रेरणा जो कुछ भी वह ख़ुद से कर सकते थे उससे या फिर टीवी देखकर मिल रही थी।

निज़ामुद्दीन बस्ती के लिए आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर (AKTC) कोई नया नाम नहीं है। हम 2007 से निज़ामुद्दीन अर्बन रिन्यूअल इनिशिएटिव नामक एक पहल को बस्ती में अमल में ला रहे हैं। यह एक सार्वजनिक-निजी भागीदारी (Public-private partnership) है। इसका उद्देश्य विरासत संरक्षण को समुदाय के लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रारम्भिक प्रयास के रूप में इस्तेमाल करना है। हमारा शिक्षा-कार्यक्रम निज़ामुद्दीन बस्ती में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक बच्चों की पहुँच सुनिश्चित करने का कार्य 2008 से कर रहा है।

लॉकडाउन और उसके बाद भी इस क्षेत्र के बन्द रहने के कारण समुदाय को बहुत ज़्यादा परेशानियाँ झेलनी पड़ीं। ख़ासकर उन 78 प्रतिशत लोगों को जो अनौपचारिक क्षेत्रों में काम करते थे और दैनिक मज़दूरी पर निर्भर थे। आगा खान एजेंसी* ने इस स्थिति में वहाँ सूखा राशन बाँटा, जागरूकता पैदा की, मास्क बाँटे और सरकार को सीरो-सर्वेक्षणों में सहयोग किया। सामुदायिक सम्पर्क के माध्यम से हमने उन संवेदनशील परिवारों की पहचान की जिन्हें अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता थी।

महामारी का अन्त होता नहीं दिख रहा था। स्कूल और आँगनवाड़ियों के निरन्तर बन्द होने से बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव पड़ रहा था। डेटा तथा उपकरणों तक उनकी पहुँच सीमित या फिर बिलकुल नहीं थी। इन सब स्थितियों को देखकर आगा खान फ़ाउण्डेशन ने सामुदायिक शिक्षकों के माध्यम से अभिभावकों के साथ काम करने का फ़ैसला किया ताकि वे सीखने में अपने बच्चों की मदद कर सकें।

महामारी पर प्रतिक्रिया

शैक्षिक सेवाओं को जारी रखना अब पहले से भी ज़्यादा चुनौतीपूर्ण हो गया था, क्योंकि स्कूल में पढ़ने वाले अधिकांश बच्चों के लिए सीखने के ऑनलाइन साधनों का प्रबन्ध करना सम्भव नहीं था। आँगनवाड़ियों के बच्चों के लिए तो ऐसा कर पाने की सम्भावना और भी कम थी। अप्रैल 2020 में हमने व्हॉट्सऐप के माध्यम से काम शुरू किया क्योंकि तब निज़ामुद्दीन बस्ती नियंत्रण क्षेत्र (containment zone) में थी। लेकिन जल्द ही एहसास हुआ कि यह रणनीति अपर्याप्त थी। प्रारम्भिक सर्वेक्षण से पता चला कि सिर्फ़ 250 बच्चों के पास ही स्मार्टफ़ोन की सुविधा है। यह संख्या आगा खान फ़ाउण्डेशन के स्कूल सुधार कार्यक्रम के तहत शामिल बच्चों की कुल संख्या के 20 प्रतिशत से भी कम थी। हालाँकि वर्तमान में लागत कम करने के लिए ऑनलाइन और ऑफ़लाइन दोनों विधियों का उपयोग किया जा रहा है।

प्रारम्भ में आगा खान फ़ाउण्डेशन टीम ने बच्चों को व्हॉट्सऐप के ज़रिए कार्य भेजे। अवधारणाओं को समझाने के लिए वीडियो बनाए ताकि सीखने की प्रक्रिया जारी रह सके। हालाँकि जल्द ही पता चला कि यह शिक्षकों और बच्चों दोनों के लिए संघर्षपूर्ण था। क्योंकि प्रौद्योगिकी के माध्यम से बच्चों के साथ जुड़ने और उन्हें सिखाने के लिए प्रौद्योगिकी की सूक्ष्म समझ होनी चाहिए। इस बात पर विचार करना ज़रूरी था कि शिक्षकों द्वारा केवल निर्देश/तस्वीरें/वीडियो आदि भेजने के लिए प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करने की बजाय इसे सीखने की एक पारस्परिक प्रणाली कैसे बनाया जाए। एक और सोचने वाली बात यह थी कि ज़्यादातर मामलों में बच्चे केवल रात में ही मोबाइल का उपयोग कर पाते थे, जब उनके अभिभावक

(ज़्यादातर पिता) काम से लौटकर आते थे। इस पर महँगे डेटा शुल्क (ख़ासकर तब जब आमदनी में कमी हो रही हो) की वजह से कई बच्चे अपने किए हुए कार्यों को शिक्षकों को वापिस भेजने के लिए अपलोड नहीं कर पाते थे। इससे शिक्षक बच्चों के सीखने और उनकी प्रगति के बारे जान नहीं पाते थे। ऐसा लगता है कि सरकारी कार्यक्रम इस ज़मीनी हक़ीक़त की समझ नहीं रखते।

जब यह स्पष्ट हो गया कि सभी बच्चे ऑनलाइन माध्यम से नहीं जुड़ सकते, तो आगा खान फ़ाउण्डेशन ने सीखने को बढ़ावा देने के लिए समुदाय आधारित गतिविधियाँ करने का फ़ैसला लिया। सामुदायिक शिक्षकों ने आवश्यक सावधानियों के साथ व्यापक सर्वेक्षण किए और उन बच्चों की पहचान की जिन्हें सहायता की आवश्यकता थी। चूँकि यह मुख्य रूप से प्रवासी इलाक़े हैं तो कई बच्चे अपने माता-पिता के साथ गाँव वापस चले गए थे। मूल सर्वेक्षण (बच्चों के जाने से पहले किया गया) में से जो बच्चे यहाँ रुके हुए थे उनमें से तीन प्राथमिक स्कूलों में दाख़िल 700 बच्चों और सात आँगनवाड़ी केन्द्रों में दाख़िल 120 बच्चों को घर और सामुदायिक शिक्षा के लिए चिह्नित किया गया।

नए तरीक़े अपनाए

कोरोना-पूर्व शिक्षण के जो तरीक़े थे वह सीखने को आकर्षक बनाने के लिए तैयार किए गए थे। इनमें कक्षा में प्रायोगिक गतिविधियों का इस्तेमाल करना और बच्चों के अनुभवों को सीखने के केन्द्र में रखना शामिल था। असामान्य समय (जिसमें वर्तमान समय भी शामिल है) में भी बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में अत्यधिक परिवर्तन नहीं होता है। यदि बच्चे सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रियाओं में जुड़े हों, तो वे सीखेंगे। लिहाज़ा, अब चुनौती ऑनलाइन माध्यम से सीखने के नए तरीक़ों में अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों को भागीदार बनाने की थी। यही बात शिक्षक बच्चों के घरों में दोहराने की कोशिश कर रहे थे।

कार्य शुरू हुआ प्राथमिक स्तर पर बच्चों को वर्कशीट देने से। इन वर्कशीट को बच्चे अपने अभिभावकों की मदद से पूरा कर सकते थे। इसके लिए अभिभावकों या बच्चों ने हर हफ़्ते स्कूल से वर्कशीट लीं और सामुदायिक शिक्षक ने किए जाने वाले कार्य के बारे में उनसे चर्चा की। प्रत्येक बच्चे ने क्या सीखा इसका आकलन करने के लिए उन्होंने पिछले हफ़्ते की वर्कशीट इकट्ठा कीं। वर्कशीट इस तरह डिज़ाइन की गई थीं कि संरचित और असंरचित गतिविधियों के बीच सन्तुलन बना रहे। मसलन यदि गणित के सवाल दिए गए थे तो बच्चों को कहानी लिखने और चित्र बनाने या किसी कहानी में ख़ुद को एक किरदार के रूप में कल्पना करने के अवसर देना था। उन्हें अपनी कल्पना को काग़ज़ पर उतारने या दी गई आकृतियों से पहेलियाँ बनाने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया था।

राफिया (6 वर्ष) और मरियम (3 वर्ष) क्रमशः स्कूल और आँगनवाड़ी में नामांकित हैं। बच्चों को एनसीईआरटी की बरखा शृंखला से 'मिली का गुब्बारा' नाम की एक कहानी पढ़ने के लिए दी गई थी। आमतौर पर बच्चों को प्रोत्साहित किया जाता है कि कहानी सुनने के बाद वे अपनी मर्ज़ी के चित्र बनाएँ। राफिया ने मरियम को कहानी पढ़कर सुनाई और उसे चित्र बनाने के लिए कहा। फिर उसने मरियम द्वारा बनाए हुए चित्र पर 'गुब्बारा' लिख दिया क्योंकि शिक्षक हमेशा अभिभावकों से कहते हैं कि बच्चा चित्र के बारे में जो भी कहे, उसे वे चित्र के ऊपर लिख दें। यह उद्गामी साक्षरता (Emergent Literacy) की एक ख़ास गतिविधि है। मरियम को कहानियाँ सुनाते हुए राफिया अपने पढ़ने और लिखने का भी अभ्यास कर लेती है।

पाँचवीं कक्षा के इज़ान और तीसरी कक्षा के नूर मोहम्मद उन अधिकांश बच्चों में से हैं जो अपना काम पूरा करने के लिए पार्क में बैठते हैं। ज़्यादातर बच्चों के घरों में पर्याप्त जगह नहीं है। बड़े होने के नाते, इज़ान दो अंकों के जोड़ में 'हासिल' (CARRY-OVER) जैसी अवधारणाओं को सीखने में नूर की मदद करता है। इस तरह काम बिना किसी रुकावट के आसानी से खेल में बदल जाता है और इसमें दोनों बराबरी से शामिल होते हैं।

आँगनवाड़ी केन्द्रों में दाख़िल बच्चों के लिए एक अलग रणनीति अपनाई गई है। शिक्षक प्रत्येक सप्ताह एक तयशुदा दिन पर हर परिवार के साथ उन गतिविधियों के बारे में चर्चा करते हैं जिन्हें अभिभावक अपने बच्चों के साथ घर पर कर सकते हैं। शिक्षक उन्हें कोई कहानी पढ़कर या बच्चों के साथ गतिविधियाँ करके भी दिखाते हैं। अभिभावकों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे रोज़ाना कुछ समय बच्चों के साथ कार्य करते हुए बिताएँ। शिक्षक प्रश्नों के उत्तर और स्पष्टीकरण देने के साथ के साथ फ़ीडबैक भी लेते हैं।

बच्चों को विभिन्न गतिविधियों में उपयोग करने के लिए रंग, चॉक, ड्राइंग पेपर और मिट्टी (क्ले) सहित कई सामग्रियाँ दी जाती हैं। प्रत्येक सप्ताह अभिभावकों के साथ लगभग दस गतिविधियों की चर्चा की जाती है। इनमें से वे प्रत्येक दिन बच्चों के साथ दो गतिविधियाँ करते हैं। बच्चों को एक

कहानी-पुस्तिका, एक कविता और वर्तमान थीम से सम्बन्धित दो वर्कशीट भी दी जाती हैं। शिक्षक इस 'पैकेज' के बारे में अभिभावक या बड़े भाई-बहन को बताते हैं।

अभिभावकों को अपने निकटतम परिवेश को देखने और इस बात पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि यह सीखने में कैसे मदद कर सकता है। अभिभावकों द्वारा क्रम से जमाने (Seriation), मिलान करने, छँटाई करने और पैटर्न बनाने की गतिविधियों के लिए बर्तनों, सब्ज़ियों और कभी-कभी तो जूते-चप्पलों का भी उपयोग किया जाता है। रोटियाँ बनाते समय या सब्ज़ियाँ छाँटते समय गिनती सिखाई जाती है। सन्तुलन कौशलों का अभ्यास करने के लिए सभी प्रकार की लाइनें बनाने के लिए फ़र्श का उपयोग किया जाता है। अभिभावकों को अपने अनुभवों के साथ-साथ दी गई उद्गामी साक्षरता की वर्कशीट और सरल चित्रों के माध्यम से कहानियाँ सुनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

विचार

यह कार्यक्रम जारी रहेगा कम-से-कम तब तक जब तक शैक्षणिक संस्थान खुल नहीं जाते। हालाँकि यह समय अभिभावकों और बच्चों के लिए कठिन रहा है, पर हमने इसे बच्चों की शिक्षा से अभिभावकों के जुड़ाव के सुगमीकरण और शिक्षकों द्वारा उनका भरोसा जीतने के एक अवसर के रूप में भी देखा। यह एक ऐसा कार्य है जिसे हम अतीत में सफलतापूर्वक नहीं कर पाए थे। अपने बच्चों के सीखने से जुड़ने के लिए अभिभावकों का उत्साह हमारे लिए काफ़ी ख़ुशनुमा अनुभव रहा। यह अनुभव इस धारणा को ख़ारिज करता है कि वंचित परिवारों के लोग अपने बच्चों की पढ़ाई पर पर्याप्त ध्यान नहीं देते।

सीखने के कई सारे तौर-तरीक़े रोज़मर्रा के जीवन में गुँथे हुए हैं और शिक्षक इनके दायरे का विस्तार करने में एक अहम भूमिका निभा सकते हैं। इसका एक उदाहरण यह है कि अभिभावक कई आयु-वर्ग के बच्चों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं जिनमें बड़े भाई-बहन अभिभावकों की देखरेख में या इसके बिना छोटे बच्चों की मदद कर रहे हैं। मिसाल के तौर पर एक अभिभावक शिक्षक (जो बीमारी के चलते अनुपस्थित थीं) की अनुपस्थिति के बारे में पूछताछ करने और उस सप्ताह की गतिविधियों को लेने के लिए उनके घर गए। गतिविधियाँ करवाने के लिए अधिकांश अभिभावकों का अपने बच्चों के साथ बैठना सीखने की प्रक्रिया से उनके सक्रिय जुड़ाव का संकेत है। गतिविधियों को इस तरह से डिज़ाइन करने का उद्देश्य इस विचार को पुख़्ता करना भी था कि औपचारिक साक्षरता ही एकमात्र तरीक़ा नहीं है जिसके ज़रिए अभिभावक अपने बच्चों के सीखने से जुड़ सकते हैं। अनौपचारिक अन्त:क्रिया और बच्चों के साथ मस्ती भी सीखने का एक तरीक़ा है।

हालाँकि हम महामारी के जल्द ही समाप्त होने और स्कूलों और आँगनवाड़ियों के फिर से खुलने की राह देख रहे हैं, पर हमें उम्मीद है कि अपने बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों का सक्रिय सहयोग (जो कि इस समय की विरासत है) आने वाले समय में भी जारी रहेगा।



अपने बच्चों के साथ कार्य करने के लिए अभिभावकों का शिक्षण

* आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर (AKTC) और आगा खान फ़ाउण्डेशन (AKF)



वर्धना पुरी दिल्ली विश्वविद्यालय में पीएचडी स्कॉलर हैं और प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा पर आधारित प्रोजेक्ट की सलाहकार हैं। उनसे **vardhna@gmail.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है।



ज्योत्स्ना लाल प्रोग्राम्स फॉर द आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर निज़ामुद्दीन अर्बन रिन्यूअल इनिशिएटिव की निदेशक हैं। वह निजामुद्दीन बस्ती में सामाजिक विकास की पहलों को संचालित करती हैं। उनसे **jyotsna.lall@akdn.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है।



हैदर मेहदी रिज़वी आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर निजामुद्दीन अर्बन रिन्यूअल इनिशिएटिव में कार्यक्रम अधिकारी (शिक्षा) हैं। उनसे **hydermehdi.rizvi@akdn.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी

सीखने और सिखाने की चाहत

यश कुमार सिंघल

कोविड-19 महामारी ने दुनिया को हैरत में डाल दिया। महामारी ने सभी को उनकी स्थिति और पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना प्रभावित किया है। स्कूलों के बन्द होने और परीक्षाओं के रद्द होने से दुनिया भर के सौ करोड़ से भी अधिक विद्यार्थी प्रभावित हुए हैं। इस वज़ह से शिक्षा उन क्षेत्रों में से एक बन गई जिस पर इस महामारी का सबसे बुरा असर पड़ा है।

संस्थाओं ने ऑनलाइन कक्षाओं से अस्थायी राहत देने की कोशिश की है,लेकिन उनकी भी अपनी समस्याएँ हैं। विद्यार्थी भौतिक रूप से होने वाली कक्षा के व्यवहारिक अनुभवों और अपने सहपाठियों से होने वाली चर्चा से वंचित हो रहे हैं। इसके साथ ही लैपटॉप या मोबाइन आदि पर बिताने वाले समय में वृद्धि, अनसुलझे सवाल, शिक्षकों पर काम का भार और सभी तक प्रौद्योगिकी की असमान पहुँच भी प्रभावी शिक्षा के लिए चुनौती बनी है। शिक्षा-प्रणाली पर बुरा असर पड़ना शुरू हो गया क्योंकि यह प्रणाली इतनी बड़ी आपा-धापी के बीच काम करने के लिए पर्याप्त रूप से लचीली या अनुकूल नहीं है। शिक्षा-प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन की ज़रूरत काफी समय से रही है। कोविड-19 से आए ठहराव में इस बारे में सोचने और बदलाव लाने का सर्वोत्तम मौका है। जैसा हम जानते हैं कि विद्यार्थियों की समस्याएँ, विद्यार्थियों से बेहतर कोई नहीं समझ सकता, इसीलिए इस मामले को हमें ही अपने हाथों में लेने की ज़रूरत है।

ऐसे समाधान ढूँढ़ना, जो काम के हों

लॉकडाउन के दौरान, मेरे विद्यालय ने एक *चेंजमेकर प्रतियोगिता* का आयोजन किया। इसमें मैंने अपने कुछ दोस्तों के साथ भाग लिया। प्रतियोगिता में हमें महामारी के दौरान सीखने की प्रक्रिया को प्रभावशाली और समावेशी बनाने के लिए एक समाधान ढूँढ़ना था। फिर इस समाधान को एक परियोजना के रूप में जजों के एक पैनल के समक्ष पेश करना था जो इसके लिए फण्ड प्रदान करते। कई दिनों के विचार-मंथन, अपने विचारों को सूचीबद्ध करने और उन उनसे प्रेरणा प्राप्त करने के बावजूद मेरी टीम और मेरे हाथ कुछ नहीं लगा।

माइक्रो–स्कूलिंग

समाधान पेश करने के आखिरी दिनों में मैंने अपने माता-पिता की मदद से *माइक्रो-स्कूलिंग* के बारे में सोचा। तर्काधार काफी सरल है : हम स्कूल नहीं जा सकते, क्योंकि अगर शहर के सभी हिस्सों से इतने सारे लोग एक जगह इकट्ठा होंगे, तो वायरस को ट्रैक करना असम्भव हो जाता है। ऐसे में हर दिन सैकड़ों व्यक्ति आसानी से इस वायरस के वाहक बन सकते हैं। इसलिए, माइक्रो-स्कूलिंग के पीछे मुख्य विचार यह आया कि - *अगर हम स्कूल जा नहीं सकते, तो स्कूल हमारे पास क्यों नहीं आ सकता?*

इसके बारे में कुछ इस तरह सोचिए। हम घर में अपने परिवार के साथ रह रहे हैं, उनके साथ बातचीत कर रहे हैं, गले लग रहे हैं...यह सब वायरस से संक्रमित होने के डर के बिना कर रहे हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि हमारे घरों में कोई भी संक्रमित नहीं है। इसी तरह, अगर शहर को भी ऐसे छोटे हिस्सों में बाँट दिया जाए जहाँ बिलकुल या बहुत थोड़े संक्रमण के मामले आए हैं, तो उन छोटे हिस्सों या सुरक्षा के उन दायरों के भीतर हर व्यक्ति स्वतंत्र रूप से एक-दूसरे से मिल सकेगा! इस तरह, ऑनलाइन स्कूल की समस्याओं के बिना शिक्षा ज़ारी रखने के लिए एक ही मोहल्ले के विद्यार्थी और शिक्षक आवश्यक सावधानियों के साथ छोटे–छोटे समूह में मिल सकते हैं।

और सिर्फ विद्यार्थी और शिक्षक ही क्यों? हर उम्र और पृष्ठभूमि से 'शिक्षार्थी' और 'स्वयंसेवक' सीखने का एक नेटवर्क बनाने के लिए एक-दूसरे से अपने ज्ञान व कौशलों को साझा कर सकते हैं, नतीजतन, पूरे समुदाय की शिक्षा को आगे बढ़ाया जा सकता है। कक्षाएँ भी खुली हवा में आयोजित की जा सकती हैं, एक गुरुकुल की तरह एक–दूसरे के साथ चर्चा, प्रदर्शन व वार्तालाप से ज्ञान का आदान-प्रदान किया जा सकता है। और यह सब, वायरस की चिन्ता किए बगैर।

शुरुआत

परियोजना को किसी फण्ड की ज़रूरत नहीं थी, इसलिए हम *चेंजमेकर प्रतियोगिता* नहीं जीते। मेरे दोस्तों ने इसके बाद इस परियोजना में रुचि खो दी। लेकिन यह विचार मेरे मन में घर कर गया था और इसे मैंने अपने आवासीय परिसर के भीतर ही आजमाने का फैसला किया। बदलाव लाने के लिए मैं जल्दी में बनाए गूगल फॉर्म, एक साधारण पोस्टर और अपनी बहन के छोटे व्हाइटबोर्ड के साथ निकल पड़ा।

पहले पायलट सत्र में मेरे पास सिर्फ दो विद्यार्थी थे। मुझे याद है कि मैं अपने आवासीय परिसर के पार्क में खड़ा मिडिल स्कूल के दोनों बच्चों को पुन्नेट स्केयर और रक्त के प्रकार पढ़ाने की कोशिश कर रहा था। तभी प्राथमिक स्कूल की एक बच्ची आई और उन दोनों बच्चों के साथ ही बैठ गई। वह भी सीखने के लिए उत्सुक थी।

इतनी कम उम्र की लड़की को आनुवांशिकी की अवधारणा सीखते देख मुझे एहसास हुआ कि यह सब सीखने और सिखाने की चाहत से होता है। उसके उत्साह ने मुझे अगले दिन पुनः आने की प्रेरणा दी। इस बार हमारे साथ नौ विद्यार्थी थे और इसी तरह एक-एक दिन करके हमारी कक्षा का आकार बढ़ता चला गया। सत्रों की संख्या भी बढ़ने लगी। सत्रों में स्वयंसेवकों द्वारा विज्ञान, गणित और अँग्रेज़ी की पढ़ाई के साथ-साथ पेशेवरों द्वारा डिज़ाइन प्रक्रिया, वास्तुकला, जन-भाषण देने के साथ-साथ जर्मन भाषा भी सिखाई जाने लगी।

मेरा अनुभव

माइक्रो-स्कूलिंग करते कुछ हफ़्ते ही हुए थे जब मैंने राज्य सरकार द्वारा ऑनलाइन कक्षाओं पर प्रतिबन्ध लगाने सम्बन्धी समाचार पढ़ा। विद्यालयों के पूरी तरह बन्द होने पर भी विद्यार्थियों की शिक्षा चलती रहे, इस सोच के साथ मैंने कक्षा तीन से पाँच के पाठ्यक्रम के हिसाब से कुछ कक्षाओं का आयोजन किया। हमारी पहली कक्षा में केवल एक ही विद्यार्थी था। कक्षा भिन्न के बारे में थी। सत्र के दौरान ही मेरी इस छोटी कक्षा ने पास खेल रहे दो बच्चों का ध्यान आकर्षित किया। हालाँकि, पहले वे थोड़ा हिचकिचाए लेकिन उनकी जिज्ञासा उनकी हिचकिचाहट पर भारी पड़ गई और जल्द ही वे कक्षा में शामिल हो गए। इससे साबित होता है कि सीखने की चाह भी संक्रामक होती है।

मैं दिल से मानता हूँ कि यह परियोजना आपातकालीन स्थिति में शिक्षा का एक अद्भुत समाधान है और ऐसी परियोजना इस महामारी के बाद भी जारी रखी जा सकती है। मुझे उम्मीद है कि अन्य लोग भी मेरे उदाहरण का अनुसरण करेंगे और समुदाय की अन्य समस्याओं को भी हल करने का प्रयत्न करेंगे। शिकायत करने का मतलब है कि आपने समस्या की केवल पहचान की है, लेकिन हमें एक क़दम आगे बढ़कर समस्या का हल ढूँढ़ने का भी प्रयास करना चाहिए।

फिलहाल, मैं एक लेख पर कार्य कर रहा हूँ, जिससे अन्य क्षेत्रों में रह रहे विद्यार्थियों को माइक्रो-स्कूल स्थापित करने में मदद मिलेगी। इसके माध्यम से मैं शिक्षार्थियों और स्वयंसेवकों के इस फैलाव को और अधिक बढ़ाना चाहता हूँ। मैं इस बात को भी फैलाना चाहता हूँ कि *स्कूल बन्द हो सकते हैं पर सीखना बन्द नहीं हो सकता!*







यश कुमार सिंघल इवेंचर अकैडमी बेंगलूरु में हाई स्कूल के विद्यार्थी हैं। आगे चलकर वे जीवविज्ञान अनुसन्धान को अपना पेशा बनाने के लिए पढ़ाई कर रहे हैं। वे हमेशा नई चीज़ें सीखने की कोशिश करते रहते हैं और उसे औरों से बाँटते भी हैं। वे रसोई या अपने स्कूल की प्रयोगशाला में प्रयोग करने के साथ ब्लॉगिंग का आनन्द लेते हैं। उनसे **yashksschool@gmail.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी

ऑनलाइन व्यावसायिक विकास कार्यक्रम | कुछ विचार

निमरत खण्डपुर

सन्दर्भ

कोविड-19 महामारी शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के लिए तरह-तरह के अनुभव लेकर आई है। हालाँकि इसके कारण कहीं अधिक लोग, काफ़ी कम लागत पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग ले पाए हैं, लेकिन कार्यक्रमों से शायद बेहतर नहीं कहा जा सकता।

पहली बात तो यह कि प्रतिभागियों की *संख्या* में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है - अगर छह महीने पहले कहा जाता कि आपको 400 शिक्षकों के लिए एक व्याख्यान-शृंखला संचालित करनी है तो शायद मुझे समझ नहीं आता कि यह कैसे हो पाएगा! जहाँ तक ऑनलाइन कार्यक्रमों का सम्बन्ध है, संख्याओं की एकमात्र सीमा यही है कि टेक्नोलॉजी प्लेटफ़ॉर्म कितने लोगों की *अनुमति* देता है और उस तक पहुँचने के लिए मोबाइल फ़ोन की क्षमता कितनी है। यही नहीं चैट-बॉक्स पर नज़र रखना भी मुश्किल हो जाता है, भले ही कुछ ही प्रतिभागी सवाल पूछ रहे हों या किसी विचार पर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हों।

दूसरी बात, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म व्यापक भागीदारी का *भ्रम* पैदा कर सकता है। चूँकि हर बार, आप जवाब देने वाले व्यक्ति को नहीं देख सकते। यदि वीडियो बन्द है या अगर प्रतिक्रिया किसी ऐसे व्यक्ति की है जो आपके सामने ग्रिड पर नहीं है या चैट सन्देश तेज़ी से आ रहे हैं और भले ही कुछ ही लोग बार-बार सुगमकर्ता को जवाब दे रहे हैं, तो भी ऐसा प्रतीत होता है कि प्रतिभागियों के मध्य एक समृद्ध चर्चा चल रही है। इस बात की पूरी सम्भावना है कि शेष प्रतिभागी प्रौद्योगिकी के मुद्दों से जूझ रहे हों या जिस विषय पर चर्चा चल रही है, उससे किसी कारणवश न जुड़ पा रहे हों। इस प्रकार, ऑनलाइन अनुभव की तुलना में फेस-टू-फेस कार्यक्रम में सुगमकर्ताओं को प्रतिभागियों की रुचि और समझ का आकलन करने में कहीं अधिक आसानी होती है और वे आवश्यकतानुसार, चर्चाओं में बदलाव कर पाते हैं।

तीसरी बात, कार्यक्रमों की *अवधि* सीमित होती है क्योंकि स्क्रीन-समय को कम-से-कम रखना होता है। हमारे अनुभव में, डेढ़ या ज़्यादा-से-ज़्यादा दो घण्टे तक प्रतिभागी और सुगमकर्ता सार्थक रूप से कार्यक्रम के साथ जुड़े रह सकते हैं। और अन्त में एक मुख्य बात, कार्यक्रमों की *नियोजन* प्रक्रिया ही बदल गई है। फेस-टू-फेस सत्रों के सामान्यतः किए जाने वाले नियोजन से लेकर अब बहुत कड़ाई के साथ समय सीमाओं और बेहद संरचित तरीक़ों को ध्यान में रख कर नियोजन करने तक के बदलाव में समय लगा है – अब प्रत्येक क्षण की योजना बनानी पड़ती है और सत्रों को तैयार करने के लिए विस्तृत *स्टोरीबोर्ड* बनाने पड़ते हैं। अब संसाधनों को ऑनलाइन विधा के अनुरूप निर्मित किया जाना चाहिए या नए संसाधन जुटाने और/या बनाए जाने चाहिए। अर्थात फ़ेस-टू-फ़ेस कार्यक्रमों में जो लचीलापन होता है जैसे कि विषयान्तर कर सम्बन्धित क्षेत्रों पर चर्चा करना या ऐन मौके पर किसी गतिविधि को संशोधित कर लेना आदि, ऑनलाइन विधा में इस सबके बिना ही काम चलाना पड़ता है।

कार्यप्रणाली

पहले लॉकडाउन के बाद से, पिछले कुछ महीनों में कई कार्यक्रम पूर्वगामी कार्यप्रणाली के अनुसार किए गए है - कार्यक्रम के *उद्देश्यों*, मंच की प्रकृति और सुगमकर्ताओं तथा प्रतिभागियों की *क्षमता* को स्पष्ट रूप से पहचानने पर ज़ोर दिया गया। नियोजन का एक प्रमुख घटक यह है कि प्रत्येक प्रतिभागी को अपनी बात कहने का अवसर देने की कोशिश करना, भले ही यह अन्य प्रतिभागियों द्वारा न भी 'सुनी' जाए। इसके लिए न केवल भागीदारी पर नज़र रखनी होगी बल्कि व्हाट्सएप या अन्य मंचों पर सौंपे गए कार्यों से सम्बन्धित प्रस्तुतियों के माध्यम से भी इस पर ध्यान देना होगा।

यह प्रयास किया गया है कि प्रतिभागियों की संख्या फेस-टू-फेस कार्यक्रम के समान हो। लेकिन वेबिनार की बात अलग है, जिसमें वक्ता एक मुख्य विषय पर अपने विचार रखते हैं और समय-समय पर दर्शकों से सवाल या टिप्पणियाँ आमंत्रित की जाती हैं। हालाँकि वेबिनार इस अर्थ में उपयोगी हैं कि उनसे लोगों के एक बड़े समूह तक पहुँचा जा सकता है, लेकिन उनका उद्देश्य प्रतिभागियों को जानकारी देना या उन्मुख करना है न कि केन्द्रित रूप से उन्हें किसी विचार के साथ जुड़ने में मदद करना।

वैसे तो कई बार प्रतिभागियों की संख्या 30-40 तक रही है, लेकिन ऐसा भी हुआ है कि जब लगभग 200-300 प्रतिभागियों को एक ही कार्यक्रम में हिस्सा लेना था। दूसरी

स्थिति में दो तरीक़े अपनाए गए। एक तो यह कि यदि पर्याप्त संख्या में सुगमकर्ता उपलब्ध हों तो समानान्तर सत्र चलाए जाएँ, और दूसरा, वेबिनार करना, जिसके बाद प्रतिभागियों के छोटे समूहों में योजनाबद्ध तरीक़े से अन्त:क्रिया हो।

समानान्तर सत्रों के लिए 30-50 प्रतिभागियों के समूह बनाए गए हैं। समूहन के लिए अपनाए गए कुछ मानदण्ड इस प्रकार हैं : प्रतिभागियों को समूहों में बाँटने के लिए विशेषज्ञता का विषय क्षेत्र, जेंडर और जिले/स्कूल जिससे प्रतिभागी सम्बन्धित थे तथा कुछ मामलों में विभिन्न शैक्षिक योग्यता वाले लोगों का भी मिश्रण किया गया।

समानान्तर सत्रों में नियोजन और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है - भले ही प्रत्येक समूह के विषय क्षेत्र अलग-अलग हों, लेकिन वहाँ सुसंगतता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, ऐसा नहीं हो सकता कि कोई एक समूह, सामग्री और शिक्षाशास्त्र पर मुख्य रूप से ध्यान केन्द्रित करे जबकि दूसरा समूह कक्षा प्रबन्धन पर। इसलिए प्रत्येक समूह के फोकस क्षेत्र का ध्यान और आवश्यक विशिष्टता को बनाए रखते हुए, समूहों में समानता सुनिश्चित करने के लिए सुगमकर्ताओं को आपस में कई चर्चाएँ तथा योजना की पुनरावृत्ति करने की ज़रूरत पड़ती है। यह बात तब भी लागू होती है जब समूह समान विषय-क्षेत्रों को सम्बोधित कर रहे हों, क्योंकि प्रत्येक सुगमकर्ता को सत्रों की योजना बनाने और प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर अपनी योजना को बदलने की स्वायत्तता होनी चाहिए।

निर्दिष्ट कार्य

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, जब बड़ी संख्या में एक साथ सुगमकर्ता न मिल पाएँ तो प्रतिभागियों के छोटे समूहों के बीच अन्तःक्रिया करवाई जा सकती है। एक तरीक़ा यह है कि सुबह एक आम वेबिनार किया जाए जिसमें सुगमकर्ता प्रतिभागियों के लिए कोई कार्य या चर्चा के लिए प्रश्नों का सेट तैयार करें, और यदि प्रासंगिक हो तो कोई वीडियो या पढ़ने के लिए लेख साझा करें। फिर एक उपयुक्त अन्तराल के बाद, सुगमकर्ता द्वारा निर्धारित कार्य के आधार पर प्रतिभागी छोटे समूहों में चर्चा करें। चर्चा का सुगमीकरण किसी साथी प्रतिभागी द्वारा किया जाए जिसका दिए गए कार्य के लिए उन्मुखीकरण किया गया हो। यहाँ भी सुगमकर्ताओं की सहायता की गुंजाइश उपलब्ध नहीं है। अन्त में प्रत्येक प्रतिभागी विशिष्ट प्रश्नों के लिए अपनी प्रतिक्रियाओं को भेजें, जिसे सुगमकर्ता अगले सत्र में पढ़ और शामिल कर सकते हैं।

ब्रेकआउट कक्ष

दूसरा विकल्प है *ब्रेकआउट* सत्रों का उपयोग जो कुछ मंचों पर उपलब्ध है। इसमें सुगमकर्ता प्रतिभागियों को किसी कार्य के लिए उन्मुख करते हैं और फिर उन्हें ‘ब्रेकआउट कक्ष’ में भेजते हैं (लेकिन अफ़सोस कि यह सुविधा केवल ज़ूम पर ही उपलब्ध है)। प्रतिभागियों द्वारा जो कुछ साझा किया जाए उसका उपयोग सत्र को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

हालाँकि ब्रेकआउट कक्ष छोटी समूह चर्चाओं के लिए उपयोगी होते हैं, लेकिन चर्चा में समय लगता है और सुगमकर्ता के लिए एक कक्ष से दूसरे कक्ष में जाना मुश्किल होता है। स्क्रीन के समय को न्यूनतम रखने की आवश्यकता एक सर्वकालिक कसौटी है और अक्सर ब्रेकआउट कक्ष का अधिक उपयोग नहीं हो पाता। इसके अलावा, हो सकता है कि प्रत्येक समूह को अपने विचारों को प्रस्तुत करने का अवसर नहीं, मिल पाए और सत्र को थोड़ा जल्दी समेटना पड़े।

इन सभी विकल्पों को प्रतिभागियों के विभिन्न समूहों के साथ आज़माया गया और प्रतिभागियों की संलग्नता और सुगमकर्ता की सुविधा के लिहाज़ से जो विकल्प सबसे ज़्यादा सन्तोषजनक लगा, वह था 20-30 प्रतिभागियों के छोटे समूहों के साथ दिन में दो सत्रों का आयोजन करना। पहले सत्र का नेतृत्व सुगमकर्ता द्वारा किया गया, इसके बाद दिन के दूसरे सत्र में विशिष्ट कार्यों पर आधारित चर्चा हुई।

निर्दिष्ट कार्यों का बेहतर ढंग से उपयोग करना

समय का अच्छी तरह से उपयोग करने के लिए एक दिन में दो सत्रों की व्यवस्था की जा सकती है और सत्रों के बीच में प्रतिभागियों को किसी उपयुक्त कार्य के साथ संलग्न किया जा सकता है। आमतौर पर यह कार्य उन *व्हाट्सएप* समूहों पर भेजे जाते हैं, जिन्हें ख़ासतौर पर इस कार्यक्रम के लिए बनाया जाता है। यह कार्य इस अर्थ में अत्यन्त उपयोगी है कि इससे प्रतिभागी अपने सीखने की समीक्षा कर पाते हैं और यदि सम्बन्धित प्रस्तुतियाँ हैं, तो सुगमकर्ता अभी तक के ट्रांजैक्शन/कार्यों का आकलन कर पाते हैं। किन्तु फेस-टू-फेस कार्यक्रम में छोटे समूहों के सुगमीकरण से प्रतिभागियों को जितनी सहायता मिलती है या सुगमकर्ताओं द्वारा जो समर्थन मिलता है, वह इसमें सम्भव नहीं है।

जब ठोस परिणाम की अपेक्षा हो तो यह कार्य और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। उदाहरण के लिए, शिक्षक-शिक्षा संस्थानों के लिए नियोजन-दस्तावेज विकसित करने के लिए एक ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया था। जब इस काम को सम्बन्धित लोग आमने-सामने बैठ कर करते हैं तब भी यह एक जटिल कार्य होता है। इसमें तीन स्तरों पर बदलाव की आवश्यकता होती है : सबसे पहले तो प्रतिभागियों को नीति और सर्वोत्तम अभ्यासों (best practices) की रोशनी में अपने वर्तमान कामकाज को बदलना पड़ता है; दूसरा, उन विशिष्ट कार्यों की पहचान करनी पड़ती है जो उन्हें आगामी

वर्षों में करने होंगे और; तीसरा, उन संसाधनों की पहचान करनी होती है जो इस बदलाव में मदद कर सकें। यह दृष्टिकोण शिक्षक-शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न प्रमुख क्षेत्रों के विशेषज्ञों के साथ बातचीत का सम्मिश्रण था और कार्यों की साझेदारी, विस्तृत टेम्पलेट्स पर आधारित थी जिसमें विशेषज्ञों के साथ-साथ साथियों के इनपुट के लिए विशिष्ट प्रश्न दिए गए थे।

कार्यक्रम के लिए आवश्यक चिन्तन हेतु प्रतिभागियों को तैयार करने के लिए एक पूर्व-कार्य के बावजूद, इस कार्य ने निर्धारित ऑनलाइन समय से अधिक समय लिया। जबकि फेस-टू-फेस कार्यक्रम में अन्तःक्रिया के लिए अधिक समय मिलता, सहकर्मियों के साथ चर्चा हो पाती और सुगमकर्ता से सहायता मिलने की भी गुंजाइश होती। इससे अधिक कार्यकुशलता से प्रतिफलों को हासिल करने में मदद मिलती।

कार्यों का उपयोग करना सुगमकर्ता पर भी बहुत दबाव डालता है, उसे सभी प्रस्तुतियाँ देखनी होती हैं, और जिन बातों पर फिर से चर्चा करने की या अलग तरीक़े से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है, उन्हें साथ रखना होता है। साथ ही प्रस्तुतियों का व्यक्तिगत सन्दर्भ देने से प्रतिभागी भी आश्वस्त होते हैं कि उनके विचार किसी प्रकार के डिजिटल शून्य में नहीं जा रहे हैं। इसका तात्पर्य यह भी है कि कार्य जो भी हो, उसकी प्रस्तुतियाँ संक्षिप्त होनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सुगमकर्ता उन्हें जल्दी से पढ़ लें और उनकी समझ बना सकें। इसलिए ज़रूरी है कि प्रतिभागियों के लिए सरल टेम्पलेट या प्रश्न बनाए जाएँ ताकि सुगमकर्ता उनकी टिप्पणियों और चिन्तनों को त्वरित और कुशल तरीक़े से देख सकें। हालाँकि यह प्रतिभागियों की स्वायत्तता को प्रतिबन्धित करता है, लेकिन यह समझौता करना आवश्यक है।

अपने अनुभव पर चिन्तन

टेक्नोलॉजी सम्बन्धित मुद्दे सभी कार्यक्रमों के दौरान बने रहते हैं। जहाँ सुगमकर्ताओं ने कई बार हार्डवेयर से जुड़ी परेशानियों की सूचना दी, तो प्रतिभागियों को अक्सर कनेक्टिविटी को लेकर दिक़्क़त पेश आई, जिसके कारण वे सत्रों के कुछ हिस्सों में भाग नहीं ले पाते थे। कई सत्रों में समय की बाध्यता भी रही। कुछ सुगमकर्ताओं ने महसूस किया कि उन्हें चर्चाओं को समाप्त करने या प्रतिभागियों से अधिक प्रतिक्रियाएँ पाने के लिए अधिक समय की आवश्यकता थी। 15-10 मिनट ज़्यादा होने से कुछ प्रतिभागी बैटरी की समस्या या फ़ोन के गर्म होने के कारण लॉग आउट हो गए।

कई बार संरचना की आवश्यकता और माध्यम की सीमाओं के कारण गतिविधियों को एकतरफ़ा होना पड़ता था। ब्लैक/व्हाइटबोर्ड की कमी (वैसे टेक्नोलॉजी प्लेटफ़ॉर्म पर यह विकल्प उपलब्ध होता है लेकिन इसका उपयोग करने के लिए विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है) या समूह के काम को साझा न कर पाने के चलते प्रतिभागियों द्वारा स्वयं के अनुभवों का उपयोग करके विचारों को विकसित करने की प्रक्रिया अवरोधित हुई। कुछ समूहों में यह बात स्पष्ट रूप से नज़र आई कि ब्रेकआउट सत्रों के दौरान सुगमीकरण की कमी के कारण चर्चा भली प्रकार से नहीं हो पाई। बाद में प्रतिभागियों द्वारा साझा किए गए चिन्तनों से संकेत मिला कि वे सत्रों के दौरान जितना योगदान कर सके, वास्तव में वे उससे कहीं अधिक समृद्ध प्रतिक्रियाएँ देने में सक्षम थे।

सुगमकर्ताओं को भाव-भंगिमाएँ समझने की आदत होती है जिसका इसमें पूर्ण अभाव था। इससे कई बार यह समझना मुश्किल हो जाता था कि प्रतिभागी चर्चा को कहाँ तक समझ पा रहे हैं।

एक और मुद्दा यह था कि प्रतिभागियों को ऑनलाइन मंच का आदी होने में समय लगता था - प्रतिभागियों को तकनीकी समर्थन देने के लिए एक समर्पित व्यक्ति की आवश्यकता साफ़ नज़र आती है। सत्र के संचालन के दौरान तकनीकी के मुद्दों से निपटना सुगमकर्ता के लिए असम्भव है। इसी तरह अगर एक ही सुगमकर्ता हो तो उन्हें सत्र के संचालन में बहुत मुश्किल होती है, ख़ासकर इसलिए कि प्रतिभागी चैट फंक्शन का बहुत उपयोग करते हैं। चूँकि कंप्यूटर की विंडो में प्रतिभागियों की सीमित संख्या नज़र आती है, इसलिए हो सकता है कि 'उठाया हुआ हाथ'(Raised Hand) नज़र से चूक जाए।

यह आवश्यक है कि सुगमकर्ता एक विस्तृत योजना बनाएँ, विभिन्न टेक्नोलॉजी प्लेटफ़ॉर्म के उपयोग का अभ्यास करें और सत्र संचालन की शैली में तुरन्त बदलाव कर, ऑनलाइन विधा के अनुरूप शैली अपनाएँ। सुगमकर्ता को सावधान भी रहना चाहिए – उन्हें लग सकता है कि सब कुछ ठीक चल रहा है क्योंकि चैट की आवाज़ आती रहती है और कोई अन्य बाधा नहीं होती है (प्रतिभागी तब तक 'म्यूट' पर होते हैं जब तक कि उन्हें चर्चा में योगदान न करना हो)। पर निश्चित रूप से यह जान पाना मुश्किल है कि सभी प्रतिभागी कार्यक्रम के साथ जुड़े हुए हैं।

अन्त में, एक संरचित तरीक़े से सत्रों का समेकन करना बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि सत्र के आख़िर में यह सभी चर्चाओं को एक साथ जोड़ता है, जिससे अगर प्रतिभागियों से कुछ छूट गया हो तो वे उसे समझ सकते हैं।

अन्तिम विचार

इस बात से कोई इन्कार नहीं है कि तकनीकी पहुँच को बढ़ाती है। एक अकेला वक्ता कई लोगों तक पहुँच सकता है, लेकिन यह भी सच है कि सार्थक बातचीत छोटे समूहों में और कुछ

समय बीतने के साथ-साथ ही सम्भव है। इसलिए अगर एक समुदाय के रूप में शिक्षक, छोटे समूहों में मिलकर कुछ सीखना चाहें तो यह एक प्रभावी साधन हो सकता है, बशर्ते कि वे समय-समय पर औपचारिक व्याख्यान या बातचीत या सामग्री बनाने जैसी गतिविधियों के लिए एक-दूसरे से वैयक्तिक रूप में भी मिलें।

इस बात का ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि इस विधा में भी रिश्ते विकसित हो सकते हैं - जब समूह छोटे होते हैं, तो कुछ दिनों में सुगमकर्ता और प्रतिभागी एक-दूसरे को जानने लगते हैं और बातचीत जीवन्त तरीक़े से होने लगती है। ऐसे समय में, जब हमें अपने जीने और सीखने के तरीक़ों में काफ़ी नाटकीय बदलाव करने पड़े हैं, तो यह जानकर ख़ुशी होती है कि मानवीय अन्त:क्रिया की प्राथमिकता अभी भी है, भले ही उसकी मध्यस्थता तकनीकी द्वारा की जा रही हो।



निमरत खण्डपुर पिछले नौ वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साथ हैं। वर्तमान में वे स्कूल ऑफ कंटीन्यूइंग एजुकेशन एंड यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेंटर, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं जहाँ वे व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में योगदान देती हैं। निमरत मुख्य रूप से शिक्षा नीति, शिक्षक-शिक्षा और आकलन के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। उन्होंने शिक्षक-शिक्षा पाठ्यचर्या और सामग्री विकास में भी योगदान दिया है। उनसे **nimrat.kaur@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल

छोटे बच्चे और मनोवैज्ञानिक संकट

पिंकी सोलंकी

मैं अपने क्लाइंट (बच्चों और वयस्कों) से दूर बैठी हुई हूँ और उन्हें स्क्रीन पर देख रही हूँ। वे मुझे बता रहे हैं कि वे महामारी का सामना किस तरह से कर रहे हैं। मैं साफ़-साफ़ देख पा रही हूँ कि हर कोई कितना चिन्तित है। यह कहना मुश्किल है कि किस पर अधिक प्रभाव पड़ा है। इस महामारी का सामना करते हुए वे अन्दर-ही-अन्दर कैसे टूट रहे हैं, उसकी गहराई को पहचानना और परिवार के प्रत्येक सदस्य पर भौतिक सीमाओं के ह्रास के कारण पड़ने वाले प्रभाव की गम्भीरता का आकलन करना मुश्किल है। यहाँ पर अधिक ध्यान, बहुत छोटे बच्चों (प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों) पर दिया गया है। क्योंकि किशोरों और वयस्कों की तुलना में वे अपनी भावनात्मक और अधिगम की ज़रूरतों के लिए परिवार पर बहुत अधिक निर्भर होते हैं। हालाँकि परिवारों और बच्चों के अनुभवों को रिपोर्टिंग के आधार पर वर्गीकृत किया जा रहा है, लेकिन यह रेखांकित करना महत्त्वपूर्ण है कि घर और स्कूल की सीमाओं के बीच जो अलगाव होता है, उसकी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। दोनों स्थानों में अलग-अलग वातावरण और नियंत्रण के अनुभव होते हैं जो बच्चे के समग्र विकास के पूरक होते हैं। भौतिक सीमाओं के ह्रास और कक्षाओं का व्यक्तिगत सीमाओं में आ जाने से बच्चा इन दो अलग-अलग स्थानों के फ़ायदों से वंचित हो गया है।

मैं बच्चों द्वारा अनुभव किए जा रहे मनोवैज्ञानिक संकट की समझ को व्यापक बनाने के उद्देश्य से परामर्श (काउंसलिंग) सत्रों में बार-बार सामने आने वाले कुछ विषयों पर प्रकाश डाल रही हूँ।

शुरुआत में यह कहना ज़रूरी है कि कक्षा एक ऐसी जगह है जहाँ बच्चे भावनाओं को लेकर आते हैं, उनका निर्माण करते हैं और उन्हें वापस ले जाते हैं। परिवार से कक्षा तक और फिर वापस परिवार तक जो सीखने का एक अनवरत सिलसिला होता है, वह हमारे जीवन में कोविड-19 के आने के कारण बुरी तरह से बाधित हुआ है। जैसा कि वायगोत्स्की(Vygotsky) के विकास के सिद्धान्त में कहा गया है, ज्ञान और समझ का निर्माण एक सामाजिक गतिविधि है। वयस्क और बच्चे आपस में अन्तःक्रिया करते हैं और साथ में नए ज्ञान (अन्तर-मानसिक/इंटरमेंटल)का निर्माण करते हैं। इस प्रक्रिया के बाद ही यह सम्भव है कि बच्चा व्यक्तिगत चिन्तन और समझ के लिए नए ज्ञान को आत्मसात कर सके(अन्तरा-मानसिक चरण/ इंट्रामेंटल स्टेज)। अन्तरा-मानसिक **गतिविधि को** अन्तर-मानसिक(सामाजिक गतिविधि)से गति मिलती है। अधिगम के लिए अन्तर-मानसिक क्षेत्र को सफलतापूर्वक बनाए रखना आवश्यक है। यदि शिक्षार्थी और शिक्षक के बीच का संवाद उनके मन को एक-दूसरे से जोड़े रखने में विफल रहे तो अन्तर-मानसिक विकास क्षेत्र नष्ट हो जाता है और अधिगम रुक जाता है।

आइए, अब हम देखें कि कोविड-19 के कारण हुए बदलावों ने अन्तर-मानसिक विकास क्षेत्र पर कैसे असर डाला है और उससे बच्चों की अन्तरा-मानसिक स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ा है। इसके लिए हम एक पिता का उदाहरण लेंगे।

रॉबर्ट एक युवा, एकल पिता हैं। उनका कहना है : 'इतने कम समय में इतने सारे बदलाव हुए हैं कि वरुण (उनका साढ़े पाँच साल का बेटा) और मुझे यह समझ नहीं आता कि हम इससे सामंजस्य कैसे बिठाएँ। किसी-किसी दिन तो लगता है कि मुझे पता है कि मुझे क्या करना है, लेकिन मैं अपनी नौकरी करने के साथ-साथ उस विचार को लागू नहीं कर पाता। पिछले 4 वर्षों से मैं एक केयरटेकर और अपने माता-पिता के सहयोग से अपनी नौकरी, घर और बेटे की देखभाल काफ़ी अच्छी तरह से कर रहा हूँ। लेकिन मार्च में देश में आई महामारी के कारण मेरे माता-पिता अब मुझसे मिलने नहीं आते और केयरटेकर के पति की नौकरी छूट जाने के कारण वह वापस अपने गाँव सिरसी चली गई है। अस्थायी केयरटेकर को वरुण ज़्यादा अच्छी तरह से नहीं जानता, यह बात वरुण की मनोदशा को बहुत गम्भीर रूप से प्रभावित करती है।'

कोविड-19 के शुरुआती प्रभावों में से एक प्रभाव यह था कि हमारे आसपास की सभी व्यवस्थाओं के कार्य करने के तरीक़े अचानक पूरी तरह बदल गए, फिर चाहे वह परिवार हो, स्कूल हो या फिर कार्यालय। परिणामस्वरूप, इससे पहले कि लोग परिचित और सुरक्षित स्थानों के खो जाने का शोक मनाते, उन्हें आचरण के नए नियमों से निपटना पड़ा। इस स्थिति ने विशेष रूप से छोटे बच्चों में भय और दुष्चिन्ता को बढ़ा

दिया, जो आमतौर पर इनसे निपटने के लिए स्कूल और घर में किसी वयस्क पर निर्भर होते हैं। वरुण के मामले में, जब उसे अपनी केयरटेकर, अपने दादा-दादी और साथियों का साथ नहीं मिला, यहाँ तक कि उसका स्कूल भी बन्द हो गया तो उसे अपनी भावनाओं पर नियंत्रण करने के लिए पूरी तरह से अपने पिता और शिक्षकों पर निर्भर होना पड़ा। और यह दोनों भी नए और अपरिचित माहौल के साथ संघर्ष कर रहे थे। इस प्रकार मानो बच्चे की ज़रूरतों और वयस्क की ज़रूरतों में प्रतिस्पर्धा शुरू हो गई। इसने सभी स्तरों पर दुष्चिन्ता को बढ़ाया जिससे *अन्तर-मानसिक सम्बन्धों* के पोषण की सम्भावना गड़बड़ा गई।

दूसरे, पिछले छह महीनों पर नज़र डालने पर हमें नएपन की कई सतहें देखने को मिलती हैं। हमेशा की तरह शैक्षिक वर्ष के अन्त में स्कूल बन्द हो गए। लेकिन अन्ततः जब वे खुले तो बच्चों को अचानक एक अनजान परिवेश में झोंक दिया गया यानी ऑनलाइन कक्षाओं में, जिसमें कक्षा नई थी, शिक्षक अपरिचित थे और सहपाठी ऐसे कि जो एक-दूसरे के नाम तक नहीं जानते थे। जिन बच्चों ने स्कूल में नया-नया प्रवेश लिया था उनके लिए तो यह स्थिति और भी ख़राब थी। बुनियादी नियम तो यह है कि छोटे बच्चों को नए कार्यों, दिनचर्या और परिस्थितियों से धीरे-धीरे परिचित कराया जाए। क्योंकि किसी किशोर या वयस्क के दिमाग़ की तुलना में उनके संज्ञानात्मक और भावनात्मक विकास में अवशोषण की क्षमता का अभाव होता है। 2020 के वातावरण में नएपन की मात्रा बहुत ज़्यादा थी, ऊपर से इसमें अधिगम के लक्ष्य भी जुड़ गए और इससे पहले कि बच्चे इनके साथ तालमेल बैठा पाते, उनसे यह अपेक्षा की गई कि वे सीखना शुरू कर दें। कोई आश्चर्य नहीं कि हम अकादमिक क्षेत्रों में बच्चों में निवर्तन (withdrawal) लक्षण की बढ़त देख रहे हैं। यह इस बात का संकेत है कि शिक्षार्थी और शिक्षक के बीच का अन्तर-मानसिक सम्बन्ध बच्चे की ज़रूरतों के अनुरूप नहीं है और इससे अन्तरा-मानसिक अवशोषण में कमी दिखाई दे रही है।

आइए, इसे और अच्छी तरह से समझने के लिए हम रॉबर्ट के उदाहरण को फिर से देखें। *'मैंने देखा है कि मेरा बेटा हर सुबह बहुत उदास और बेचैन-सा रहता है। जब वह स्कूल जाता था तो ऐसा नहीं था। मुझे यह भी लगता है कि कक्षाओं में भी उसकी रुचि कम हो रही है। शिक्षकों के बार-बार कहने के बावजूद वह कोई लेखन कार्य भी नहीं कर रहा है। पिछले साल वह अपनी पढ़ाई के साथ कहीं अधिक जुड़ा हुआ था। मुझे लगता है कि उत्साह कम होने के कई कारण हैं जैसे कि स्कूल के लिए तैयार होने, बस स्टैंड पर इन्तजार करने, रास्ते में दोस्तों के साथ बातचीत करने का मज़ा अब उसे नहीं मिल पा रहा। उसके छोटे-से मन को इतने सारे बदलावों के साथ समायोजन करने में दिक्क़त हो रही है और स्पष्ट शब्दों में कहूँ तो न तो मैं उसकी ज़रूरतों को पूरा कर पा रहा हूँ और न ही उसके शिक्षक।'*

मैं पिछले दो वर्षों से रॉबर्ट को थैरेपी के दौरान देख रही हूँ और पहली बार मैंने पाया कि वह अपने बेटे की सहायता नहीं कर पा रहा है। यह इस बात की ओर इशारा करता है कि बच्चे अपने अस्तित्व के लिए आदिम रक्षात्मक उपायों की ओर जा रहे हैं जो उनकी उत्तरजीविता के लिए आवश्यक है, लेकिन चूँकि वयस्कों में इस समझ का अभाव है कि 'उनके साथ क्या हो रहा है', इसलिए उन्हें वास्तव में इस चुनौती का सामना करना पड़ रहा है कि वे बच्चों को, अपनी भावनाओं से जुड़ाव बनाए रखने में कैसे मदद करें। आधुनिक मनोविज्ञान के जनक और मनोविश्लेषण के संस्थापक सिगमंड फ्रायड (Sigmund Freud), उन बचावों पर विस्तार से प्रकाश डालते हैं जो दुष्चिन्ता के सन्दर्भ में विकसित होते हैं। मानव की जीवन-प्रवृत्ति स्वाभाविक/अचेतन रूप से वास्तविकता को विकृत करके उत्तरजीविता को सक्रिय करती है। जैसा कि ऊपर के मामले में देखा जा सकता है, वरुण सिर्फ कुछ बचावों को प्रदर्शित कर रहा है जैसे कि अस्वीकरण, दमन, प्रतिगमन, अलगाव और अपनी इन्द्रियों को असंवेदनशील करने की दिशा में एक सहज बदलाव आदि। यह सारी बातें व्यक्तिगत और शैक्षिक स्थानों में उसके निवर्तित व्यवहार के माध्यम से स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

बच्चों में ह्रास की भावना

अन्तर-मानसिक और अन्तरा-मानसिक दोनों स्तरों पर ह्रास की भावना है। एक सामान्य स्थिति में, इन स्थानों का भौतिक-अलगाव और उनमें होने वाली गतिविधियों में छोटे बच्चों को *स्पर्श, गन्ध, दृष्टि, ध्वनि और अन्त में* शब्दों के माध्यम से ख़ुद को भली प्रकार से अनुभव करने का अवसर मिलता था। पिछले छह-सात महीनों में, 'स्वयं' (self) का अनुभव और सीखने का अनुभव केवल दो इन्द्रियों तक सीमित है, अर्थात् सुनना और स्क्रीन देखना। मेरे अनुभव में, परिचित बाहरी भौतिक सम्पर्क स्वयं और अपनी इन्द्रियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करता है और सीखने की प्रक्रिया के दौरान अपनी भावनाओं को सम्भालने के कई अवसर मिलते हैं – यह बातें अब गायब हो गई हैं।

सम्पर्क के नए तरीक़े बहुत हद तक स्वयं पर निर्भर हैं। यहाँ हमें फिर से छोटे बच्चों के विकास के चरण से सम्बन्धित सीमा के बारे में बात करनी होगी। यह सीमा उनके सीखने के साथ स्वस्थ जुड़ाव के आड़े आती है यदि उन्हें अपने अधिगम के लिए की जाने वाली तैयारियों के साथ जूझना पड़े जैसे कि लैपटॉप को ऑन करना, कनेक्शन का ध्यान रखना आदि।

नतीजा यह होता है कि उनका शरीर तो सीखने के लिए ऑफ़ हो जाता है और दिमाग़ सीखने के उपकरणों की व्यवस्था करने में व्यस्त। संक्षेप में, मैं कह सकती हूँ कि छोटे बच्चों के जीवन में तीन Cs से सम्बन्धित कार्य करने और सीखने की अधिकतम संतुष्टि को इस महामारी ने छीन लिया है।

- कम्फर्ट (आरामदायक स्थिति) : जब कोई बच्चा एक ही कक्षा में रोज़ जाता है, अपना लंच बैग उसी टेबल पर रखता है, अपनी डेस्क पर बैठता है और सुबह का कार्य शुरू करने के लिए शिक्षक का इन्तज़ार करता है। तो इस तरह जानी-पहचानी चीज़ों के साथ जो बच्चे की सहज, आरामदायक स्थिति है वह उसके सीखने का समर्थन करती है।
- कनेक्शन (सम्बन्ध) : यह सम्बन्ध गतिसंवेदी (kinaesthetic) स्तर पर होता है जो बच्चे के शरीर को अपने आस-पास के वातावरण और साथियों के बीच भौतिक रूप से चलने-फिरने, छूने और महसूस करने के माध्यम से मिलता है।
- कन्टेनमेंट (नियंत्रण) : अपने साथियों और शिक्षक की उपस्थिति के कारण उसका यह विश्वास बढ़ जाता है कि उसकी दुष्चिन्ता (अगर कोई अप्रत्याशित बात उसे परेशान करे) की रोकथाम होगी।

छोटे बच्चों को ऐसे अवसर बहुत अच्छे लगते हैं जब कोई उन्हें देखे और वर्तमान समय में इन अवसरों का न होना उनके लिए एक अन्य ह्रास है। यहाँ इस बात पर ज़ोर देना ज़रूरी है कि स्कूली शिक्षा के प्राथमिक वर्षों में जब बच्चे की पीठ थपथपाई जाती है तो उसे उपलब्धि की भावना का एहसास होता है। वे जो कुछ करते हैं, जब उसे मान्यता दी जाती है तो वे आत्म-मूल्य (self-worth) का अनुभव करते हैं और सामाजिक अन्तःक्रिया के माध्यम से जो अनुभव कायम रहता है वह यह है कि, *'मैं करता हूँ, इसलिए मुझे देखा जाता है और जब मुझे देखा जाता है, तो मैं अच्छा हूँ।'*

विकास के सिद्धान्तकार एरिक एरिकसन (Erik Erikson) ने अपने पहचान-सिद्धान्त में इसे विस्तृत रूप से समझाया है। इसमें उन्होंने 6 से 11 साल के बच्चों के लिए विकास के चरणों को परिभाषित किया है, जिसमें बच्चे सामर्थ्य हासिल करने के संघर्ष का समाधान करते हैं। इस उम्र के बच्चे, कार्य करते समय मेहनत और हीनता के बीच यात्रा करते रहते हैं और मेहनत की भावना जितनी अधिक होती है, सामर्थ्य का विकास उतना ही अधिक होता है। ऑनलाइन कक्षाएँ इस देखे जाने की सम्भावना को मिटा रही हैं और इस मापदण्ड पर बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास को सीधे-सीधे प्रभावित कर रही हैं। उदाहरण के लिए एक माँ ने बताया कि उनकी बेटी ने अपनी नोटबुक में लिखना बन्द कर दिया। उसे लगा कि वह क्यों लिखे जब उसकी शिक्षिका उसे सितारे देकर पुरस्कृत नहीं करतीं। एक अन्य अभिभावक ने बताया कि उनका 8 वर्षीय बच्चा स्कूल से इसलिए प्यार करता था क्योंकि उसे तैराकी और बास्केटबॉल की प्रतियोगिताओं से पहचान मिली थी। अब अगर उसे नज़र में आना है तो उसके सामने एक ही रास्ता है, वह है अकादमिक गतिविधियों का रास्ता। इसलिए उसे लगता है कि दरकिनार होने की बजाय कक्षाओं में उपस्थित न रहना ही ठीक है।

जिन बच्चों को सामाजिक दुष्चिन्ता (social anxiety) होती है या वे अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले होते हैं, वे अन्तर-वैयक्तिक सम्पर्क कम पसन्द करते हैं और उन्हें न दिखने से फ़ायदा हो सकता है। काउंसलिंग के लिए आनेवाले एक दम्पति साझा कर रहे थे कि उनके दोनों बच्चों ने ऑनलाइन कक्षाओं के प्रति बेहद विपरीत प्रतिक्रियाएँ दिखाई हैं। उनकी 6 साल की बेटी बहिर्मुखी है और अब वह स्कूल और स्कूल के बाद के समय में किसी भी प्रकार के अधिगम में कोई रुचि नहीं दिखाती। जबकि उनका 10 वर्षीय बेटा बचपन से ही अन्तर्मुखी है और वह ऑनलाइन शिक्षण से प्राप्त अधिगम के विषयों के आधार पर बहुत-सी गतिविधियों और कार्यों को ख़ुद ही निर्मित करने लगा है।

अन्त में, जो विषय अक्सर परामर्श के दौरान सामने आता है, वह यह है कि छोटे बच्चों द्वारा प्रदर्शित विविध समायोजी व्यवहार उनके घर के वातावरण के साथ कैसे जुड़ते हैं, या तो वे उनके बोझ को बढ़ाते हैं या कम करते हैं। हम परिवारों की तीन बड़ी श्रेणियों को देखते हैं। सबसे पहले तो ऐसे परिवार आते हैं जहाँ बहुत पारस्परिक सम्प्रेषण होता है, माता-पिता, बच्चों की भावनाओं को बख़ूबी समझते हैं और घर पर बच्चों की पढ़ाई का समर्थन करने के लिए उपलब्ध होते हैं। दूसरा, वे परिवार जहाँ माता-पिता सामाजिक, भावनात्मक या व्यावसायिक कारणों से उपलब्ध नहीं होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप बच्चे या तो अपने माता-पिता के साथ सम्पर्क की कमी महसूस करते हैं या अब अचानक घर में उनकी भौतिक उपस्थिति को नापसन्द करते हैं। तीसरा, ऐसे परिवार जहाँ दुष्चिन्ता-अवशोषण की क्षमता न्यूनतम है और जहाँ बच्चे की घर पर चल रही स्कूली शिक्षा पर लगातार नज़र रखी जाती है और बाद में उसका प्रयोग उन्हें दण्डित करने के लिए किया जाता है।

पहले प्रकार के परिवारों में हमें ज़्यादा अड़चनें नहीं दिखाई दे रही हैं क्योंकि वहाँ बच्चों को रोकथाम और समर्थन का सही संयोजन मिल जाता है जो उनके सीखने की क्षमता का समर्थन करता है। दूसरे और तीसरे प्रकार के परिवारों पर संकट अधिक है क्योंकि वहाँ बच्चे लगभग उपेक्षा और दुर्व्यवहार

का सामना करते हैं। उदाहरण के लिए, एक युवा माँ अपने अनुभव का वर्णन इस प्रकार से करती हैं, *'मेरी बेटी पढ़ाई में कभी भी अच्छी नहीं रही है और इसलिए मुझे स्कूल में बुलाया जाता था, लेकिन मैं अक्सर अपनी बेटी का समर्थन करती और स्कूल के अधिकारियों से कहती कि वे बेटी की प्राथमिकताएँ समायोजित करें। लेकिन अब, जब मैं उसे घर में ही पढ़ते हुए देखती हूँ तो मुझे लगता है कि वह उसमें बिलकुल भी दिलचस्पी नहीं ले रही है और अपने कमरे से भाग कर मेरे पास आ जाती है। चूँकि अब रोज़ ही ऐसा होता है, इसलिए मुझमें उसे समझने के लिए आवश्यक ऊर्जा या मानसिक क्षमता नहीं है। वह अक्सर अपनी स्टडी टेबल पर वापस जाने से मना कर देती है, जिसके परिणामस्वरूप मुझे उसे डाँटना या थप्पड़ मारना पड़ता है। पहले यानी नियमित दिनों में उसके स्कूल से लौटने तक मैं अपना काम पूरा कर लेती थी और एक घण्टे आराम भी कर लेती थी। यानी मुझे शारीरिक और मानसिक रूप से आराम मिल जाता था और मैं उसकी पढ़ाई पर ध्यान दे पाती थी। लेकिन अब घर पर काम का बोझ बढ़ गया है और वह हर वक़्त मेरा ध्यान अपनी ओर चाहती है, इसलिए मैं पहले की तरह अब उसका सपोर्ट करने में ख़ुद को असमर्थ पाती हूँ ।'*

संकट को घटाना

सबसे पहले तो हमें इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर विचार करना है कि कैसे हम स्वयं (self) को सभी हस्तक्षेपों का फोकस बनाते हैं और प्रत्येक सदस्य की भावनाओं को स्वीकारते हैं और उसका समर्थन करते हैं। शिक्षकों पर भी हर स्तर से दबाव है। अतः हमें उनके प्रयासों को सराहना होगा और उनकी भावनाओं पर भी विचार करना होगा, उसके बाद ही हम यह अपेक्षा कर सकते हैं कि वे बच्चों का समर्थन करें। महामारी से माता-पिता भी उतने ही प्रभावित हैं, उन्हें यह बताना होगा कि वे और उनकी भावनाएँ दोनों महत्त्वपूर्ण हैं। बच्चा इन दोनों पर निर्भर है, उसे तो निश्चित रूप से इस बात का अनुभव होना चाहिए कि जो कुछ भी यह दोनों कर रहे हैं, उसकी तुलना में उसकी भलाई अधिक महत्त्वपूर्ण है। कुल मिलाकर एक व्यवस्थागत दृष्टिकोण की आवश्यकता है। हम देख रहे हैं कि कई स्कूलों ने शिक्षकों की सहायता के लिए परामर्श की सुविधा देनी शुरू की है और वे साप्ताहिक और पाक्षिक सत्र आयोजित करते हैं। इसी तरह, कई कम्पनियाँ, जो अपने कर्मचारियों को मुफ़्त परामर्श सेवाएँ नहीं दे रही थीं, उन्होंने अब यह सेवा शुरू कर दी है। इस तरह के प्रयास सहायक हैं, इनकी गहनता को और बढ़ाया जाना चाहिए।

इन सबके साथ बच्चों पर ध्यान देने की प्रक्रिया को सुदृढ़ करना आवश्यक है। शैक्षिक और पारिवारिक व्यवस्था का ध्यान इस समझ को बनाने पर होना चाहिए कि महामारी के दौरान बहुत से बच्चे कार्य करने वाली अवस्था (*doing mode*) में नहीं होंगे क्योंकि उनके शरीर नई परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बैठाने में लगे हुए हैं, फिर भी उनका अस्तित्व अभी भी मूल्यवान है। तो ऐसा कैसे किया जाए? सबसे आसान और सबसे उपयोगी तरीक़ा यह है कि बच्चों को *अनुभूति के धरातल* पर लाने का अधिक-से-अधिक प्रयत्न करना चाहिए। उन्हें इस बारे में बड़े सहज ढंग से बात करने देना चाहिए कि उनके साथ क्या हो रहा है। उदाहरण के लिए कई स्कूल अनौपचारिक सर्कल टाइम और जीवन-कौशल सम्बन्धी कक्षाएँ चला रहे हैं। इसी तरह जो बच्चे सम्प्रेषण की कमी के कारण बहुत अलग-थलग-सा महसूस कर रहे हैं, उन्हें अतिरिक्त सहायता देने के लिए स्कूल के परामर्शदाताओं द्वारा व्यक्तिगत रूप से परामर्श सत्रों और *अनुभूति जाँच* का आयोजन करना चाहिए। अन्त में, उपर्युक्त चर्चा के आधार पर कहा जा सकता है कि बच्चे अन्तर्वैयक्तिक सम्पर्कों के माध्यम से देखे जाने पर बहुत कुछ सीखते हैं, इसलिए ग़ैर-शैक्षिक गतिविधियों जैसे योग, संगीत, थिएटर आदि कक्षाओं को सामूहिक गतिविधि के रूप में करवाना काफ़ी फ़ायदेमन्द हो सकता है ताकि बच्चे अपनी रक्षात्मक अवस्था से बाहर आ सकें और अपने शरीर में और अधिक मौजूद रह सकें।

* पहचान की सुरक्षा के लिए नाम बदल दिए गए हैं।



पिंकी सोलंकी टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज़, मुम्बई की भूतपूर्व छात्रा हैं और वे रिलेशनल गेस्टाल्ट थेरेपी, एक्सप्रेसिव आर्ट्स थेरेपी और फेमिनिस्ट काउंसलिंग करती हैं। उन्हें भारत में शहरी और ग्रामीण समुदायों के साथ काम करने और यूनिसेफ, यूएनएफपीए, ऑक्सफेम, टाटा ट्रस्ट्स सहित सरकारी एजेंसियों के साथ काम करने का दो दशकों का अनुभव है। वर्तमान में वे ग़ैर-लाभकारी संस्था, विशाखा के कार्यकारी बोर्ड की सदस्य हैं और उनके मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रमों का मार्गदर्शन करती हैं। वे अपने निजी मनोचिकित्सा अभ्यास के माध्यम से व्यक्तियों, दम्पतियों और समूहों को परामर्श देती हैं। उनसे **pinkisolanki@gmail.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : नलिनी रावल

डिजिटल शिक्षा और विकलांग बच्चे

पूजा पाण्डे

परिचय

भारत में विकलांग बच्चों (CWD) के लिए स्कूली शिक्षा हमेशा से ही निराशाजनक रही है। जनगणना 2011 (एमएचए, 2011) के अनुसार, 5 से 19 वर्ष के आयु-वर्ग के विकलांग बच्चों की कुल संख्या का केवल 61 प्रतिशत ही स्कूल जाता है। हाल के अध्ययनों (*स्वाभिमान* 2020) ने सुझाया है कि डिजिटल अधिगम तक पहुँच न होने के कारण (PTI, 2020) विकलांग विद्यार्थियों की ड्रॉपआउट दर बहुत ज़्यादा हो गई है, जो बढ़ती जा रही है। कोविड के प्रसार के कारण स्थिति और भी ख़राब हो गई है क्योंकि नियमित कक्षाएँ अचानक डिजिटल हो गई हैं। विकलांग बच्चों, उनके माता-पिता और शिक्षकों की मुश्किलें भी बढ़ गई हैं। महामारी ने डिजिटल शिक्षा पर, जो इन बच्चों के लिए अपेक्षाकृत नया और अपरिचित क्षेत्र है, अप्रत्याशित निर्भरता पैदा कर दी है।

सन्दर्भ

विकलांग बच्चों की शिक्षा की ज़िम्मेदारी मुख्य रूप से दो मंत्रालयों के पास है, पर उनकी भूमिकाएँ भिन्न हैं। सामाजिक न्याय और कल्याण मंत्रालय के तहत विकलांगजन सशक्तिकरण विभाग (डीईपीडी), विकलांगजनों के पुनर्वास और शिक्षा से सम्बन्धित विशेष योजनाओं को शुरू करने और लागू करने के साथ-साथ पुनर्वास पेशेवर और विशेष शिक्षकों की शिक्षा और प्रशिक्षण को विनियमित करने के लिए ज़िम्मेदार है। शिक्षा मंत्रालय, विकलांग बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को, *समग्र शिक्षा अभियान* की योजनाओं और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण परिषद के तहत सम्बोधित करता है।

शिक्षा-प्रौद्योगिकी के सम्बन्ध में, विशेष रूप से, सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन टेक्नोलॉजी (सीआईईटी) द्वारा शैक्षिक प्रौद्योगिकियों, अर्थात् रेडियो, टीवी, फ़िल्म, उपग्रह संचार और साइबर मीडिया आदि के उपयोग को बढ़ावा दिया जाता है। सीआईईटी ने, स्कूली पाठ्यक्रम तक विकलांग बच्चों की पहुँच को आसान बनाने के लिए *बरखा* पठन शृंखला, ऑडियोबुक (DAISY का उपयोग करके) जैसी पहल की है (सीआईईटी, स्कूली पाठ्यक्रम तक पहुँच - एनसीईआरटी की पहल, 2017)।

इसके अतिरिक्त, केन्द्र सरकार की हालिया पहल (एनसीईआरटी की, सीआईईटी और आईसीटी पहल) जैसे कि पीएम का *ई-विद्या* मंच (टाइम्स, 2020), PRAGYATA दिशानिर्देश (शिक्षा मंत्रालय, PRAGYATA - डिजिटल शिक्षा के लिए दिशानिर्देश, 2020) (धारा 3.4) विकलांग बच्चों की ज़रूरतों को पहचानते हैं।

लेकिन ऐसी कोई भी समर्पित सार्वजनिक घोषणा या कार्यवाही नहीं है जो यह बताती हो कि महामारी के दौरान, विकलांग बच्चों के लिए कक्षा-शिक्षण और शिक्षा के अन्य रूपों के ऑनलाइन तरीक़ों का उपयोग कैसे किया जाएगा। नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार (आरटीई) अधिनियम के तहत यह बच्चे एक *'वंचित समूह'* के रूप में मुफ़्त और अनिवार्य शिक्षा के पात्र हैं।

नीतिगत समस्याएँ

शिक्षा के क्षेत्र में, भारत ने विकलांग बच्चों के शैक्षिक अधिकारों की रक्षा करने और एक मज़बूत क़ानूनी ढाँचा तैयार करने में उल्लेखनीय प्रगति की है। शिक्षा मंत्रालय के *सर्वशिक्षा अभियान* की जड़ें, सभी के लिए शिक्षा पर संयुक्त राष्ट्र विश्व घोषणा पत्र (ईएफए, यूएन) में हैं, जिसमें बच्चों के अधिकारों (विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों सहित) को शामिल किया गया है और शिक्षा के एक समावेशी वातावरण की माँग की गई है। इस घोषणा पत्र पर भारत ने भी हस्ताक्षर किए हैं।

अन्य जनादेशों ने इन माँगों को प्रबल किया है। तथापि, शिक्षा की तेज़ी से बदलती हुई प्रकृति और डिजिटल अधिगम की क्रमिक शुरुआत के कारण डिजिटल शिक्षा को समावेशी और सुलभ बनाने के लिए एक समानान्तर क़ानूनी और नीतिगत ढाँचे को विकसित करने की आवश्यकता है। समावेशी डिजिटल शिक्षा पर फ़िलहाल हमारे पास है केवल एक खण्डित और असमन्वित नीति।

डिजिटल समावेशन के मुद्दे को बुनियादी ढाँचे और डिज़ाइन के दृष्टिकोण से समझा जा सकता है। भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (TRAI) ने सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को सार्वभौमिक रूप से शिक्षा के लिए सुलभ बनाने के लिए 2018 में सिफ़ारिशों की एक सूची जारी की है (TRAI, 2018)। इस दस्तावेज़ में समन्वय और कार्यान्वयन

को लेकर चिन्ता दर्शायी गई है। इस सिफ़ारिश में यह निर्देश भी दिया गया है कि सरकारी वेबसाइट विकलांगजनों को सुलभ होनी चाहिए, जो अभी भी *ई-पाठशाला* सहित कई सरकारी वेबसाइटों पर लागू नहीं हुई हैं (राठी, 2019)।

विशेष रूप से शिक्षा के लिए, शिक्षा मंत्रालय ने स्कूलों में समावेशी और सुलभ डिजिटल बुनियादी ढाँचे के निर्माण पर ज़ोर देते हुए, स्कूली शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी(आईसीटी) के लिए राष्ट्रीय नीति जारी की है (MHRD, National Policy on ICT in School Education, 2012)। किन्तु इसमें डिजिटल शिक्षा प्रौद्योगिकियों में सार्वभौमिक डिज़ाइन सिद्धान्तों को शामिल करने के बारे में कुछ नहीं कहा गया है और यह अद्यतन वेब सामग्री अभिगम्यता दिशानिर्देशों (Web Content Accessibility Guidelines) को प्रतिबिम्बित नहीं करती है।

डिजिटल शिक्षा को पुराने और असमन्वित तरीक़ों से सुलभ कराया जा रहा है। आरटीई अधिनियम, 2009 ख़ुद भी केवल स्कूलों के भौतिक बुनियादी ढाँचे के लिए मानक और मानदण्ड प्रदान करता है। आरटीई अधिनियम की अनुसूची में केवल यह कहा गया है कि प्रत्येक कक्षा को शिक्षण और अधिगम उपकरण आवश्यकतानुसार उपलब्ध कराए जाएँगे, बिना इस बात पर विचार किए कि समावेशन के लिए इस उपकरण का डिजिटल होना भी ज़रूरी हो सकता है।

समाधान खोजना

नीतिगत सुधार

डिजिटल शिक्षा नीति पर फिर से काम करने के लिए पहला क़दम तो यह है कि समावेशी शिक्षा के लिए एक समन्वित दृष्टिकोण हो जो सार्वभौमिक पहुँच के मानदण्डों को सामग्री-निर्माण प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बनाए, न कि कोई पूरक अभ्यास। शिक्षा मंत्रालय को इलेक्ट्रॉनिक्स व आईटी मंत्रालय और विकलांगजन सशक्तिकरण विभाग के साथ समन्वय करना चाहिए और विकलांग शिक्षार्थियों के लिए डिजिटल शिक्षा के बुनियादी ढाँचे के लिए ऐसे मानकीकृत दिशानिर्देशों को तैयार करना चाहिए जो विकलांगजन अधिकार अधिनियम (Rights of Persons with Disabilities Act) के अनुरूप हों।

अगला क़दम यह है कि शिक्षा के सभी आईसीटी सेवा प्रदाताओं (सार्वजनिक और निजी) के लिए इन दिशानिर्देशों को अनिवार्य बना देना चाहिए। TRAI (2008) ने एक लम्बे समय से यह सिफ़ारिश की है कि विकलांगजनों के लिए सभी सरकारी वेबसाइट सुलभ कराई जाएँ, यह सुनिश्चित करना भी बहुत ज़रूरी है कि इस सिफ़ारिश का पालन किया जाए।

जहाँ तक विशिष्ट अधिनियमों और नीतियों की बात है तो डिजिटल शिक्षा की पहुँच पर व्यापक दिशानिर्देश विकसित करने के लिए स्कूली शिक्षा में आईसीटी की राष्ट्रीय नीति की समीक्षा की जानी चाहिए और उसे अद्यतन करना चाहिए। इसी प्रकार आरटीई अधिनियम की अनुसूची में संशोधन करना और उसमें समावेशी डिजिटल शिक्षा के उन मानदण्डों और मानकों को शामिल करना ज़रूरी है जो स्कूलों पर लागू होते हैं। इसके अलावा शिक्षा में आईसीटी के पहुँच सम्बन्धी मानकों को 'विकलांगजन अधिकार अधिनियम' की धारा 40 के तहत अधिसूचित किया जाना चाहिए।

अन्त में, समावेशी डिजिटल शिक्षा की आशाएँ बहुप्रतीक्षित, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर भी टिकी हैं, जिसमें अधिक सुलभ और समावेशी अधिगम की प्रौद्योगिकियों के निर्माण का विज़न बिखरे हुए रूप में दिखाई देता है।

अनुभव से सीखना

अभ्यासों और उदाहरणों से सीखना महत्त्वपूर्ण है। कोविड-19 ने हमारे सामने कुछ अभूतपूर्व चुनौतियों तो खड़ी की हैं लेकिन साथ ही नवाचार और चिन्तन के द्वार भी खोल दिए हैं। यह प्रौद्योगिकी-आधारित अधिगम के लिए समान अवसर प्रदान कर सकता है और न केवल विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों को बल्कि उनके शिक्षकों और माता-पिता को भी सशक्त बना सकता है। सभी बच्चों के समावेशन के लिए कई हितधारकों को एक साथ लाने और नवीन एवं अनुकूलनयोग्य समाधान तैयार करने की आवश्यकता है। विश्व बैंक (WB, 2020) जैसी कई बहुपक्षीय एजेंसियाँ, इस महामारी के दौरान शिक्षा में किए जा रहे नवाचार के दुनिया भर के सर्वोत्तम अभ्यासों पर विचार कर रही हैं।

इसके अलावा भारत के कई नागरिक समाज संगठन विकलांग बच्चों की शिक्षा पर कोविड के प्रभाव का आकलन करने के लिए क्षेत्र-आधारित अनुसन्धान और डेटा संग्रह का कार्य कर रहे हैं। कई रिपोर्टों और अध्ययनों ने बताया है कि स्मार्टफ़ोन, टीवी जैसे उपकरणों की कमी के कारण बच्चे ऑनलाइन अधिगम में भाग नहीं ले पा रहे हैं। अन्य लोगों के लिए यह कारण इस प्रकार हैं : उच्च गति वाले इंटरनेट की अनुपलब्धता, इन उपकरणों/ एप्लीकेशन को संचालित न कर पाना, सामग्री तक पहुँच न होना, विशेष शिक्षकों की अपर्याप्त तैयारी। कई स्वतंत्र संगठन (मनराल, 2020) भी बड़े सक्रिय रूप से ऐसी ऑनलाइन सामग्री का उत्पादन, वितरण और प्रोत्साहन कर रहे हैं जो अधिक व्यवहार्य, सुलभ और पहुँच योग्य हों, ताकि उन बच्चों को भी लाभ मिल सके जो अन्यथा शायद इसमें भाग न ले पाते। कुछ राज्य जैसे केरल ऐसी बुनियादी चीज़ों का प्रयोग कर रहे हैं जो अधिक सुलभ और व्यापक रूप से

उपलब्ध हों जैसे टेलीविज़न ताकि अधिगम की निरन्तरता सुनिश्चित हो सके, यहाँ तक कि *व्हाइटबोर्ड* (K, 2020) जैसी पहल के माध्यम से वे विकलांग बच्चों के लिए उनके अनुकूल कक्षाओं की व्यवस्था भी कर रहे हैं।

अगले क़दम

हालाँकि इस महामारी ने मानवता के लिए अभूतपूर्व कठिनाइयाँ पैदा की हैं, लेकिन साथ ही इसने आत्मविश्लेषण और नवाचार को भी प्रोत्साहित किया है। अभी तक केवल पहुँच की दृष्टि से देखा गया है समावेशन की दृष्टि से नहीं (पाण्डे, 2020), इसलिए यह एक ऐसा अवसर बन सकता है जिसमें प्रौद्योगिकी-आधारित शिक्षा के माध्यम से शिक्षा में समान आधारों का निर्माण करते हुए सभी बच्चों का समावेशन किया जा सके। विकलांग बच्चों को अक्सर डिजिटल अधिगम की रणनीति बनाने की योजना में शामिल नहीं किया जाता (यूनिसेफ, 2020), लेकिन अब इसे बदला जा सकता है। ई-अधिगम विधियों को अपनाने से विशेष शिक्षकों को कई बच्चों तक एक साथ पहुँचने में सहायता मिल सकती है। लेकिन यह सब तभी हो सकता है जब सरकार शिक्षा को वास्तव में समावेशी और सार्वभौमिक बनाने के लिए प्रौद्योगिकियों और क्षमताओं का निर्माण करने में सक्रिय रुचि ले। इसके लिए 'बेहतर रूप से संचालित और पर्याप्त सार्वजनिक निवेश, सुदृढ़ नीति-निर्माण और विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रशासकों तथा समुदायों की लोकतांत्रिक भागीदारी की ज़रूरत होगी।' (भारत, 2020)

References

Census. (2011). Table. Retrieved August 2020, from CensusIndia.gov: https://censusindia.gov.in/Meta-Data/metadata.htm#/tab1

Dept. of Telecommunications. (n.d.). USOF. Retrieved August 2020, from http://usof.gov.in/usofcms/miscellaneous/Concept%2520paper_USOF%2520Scheme_PwDs_A.G.Gulati.pdf

DoEPwD. (2020, April). What's New. Retrieved August 2020, from Disability Affairs: http://disabilityaffairs.gov.in/content/page/whats-new.php

K, A. N. (2020, July 10). TOI City. Retrieved August 2020, from The Times of India: https://timesofindia.indiatimes.com/city/kochi/white-board-helps-special-kids-grasp-online-lessons/articleshow/76880972.cms

Manral, A. (2020, June 25). Amid a pandemic, lockdown and govt apathy, NGOs ensure online education addresses learning needs of disabled children. Retrieved August 2020, from https://www.firstpost.com/india/amid-a-pandemic-lockdown-and-govt-apathy-ngos-ensure-online-education-addresses-learning-needs-of-disabled-children-8460271.html

Ministry of Law and Justice. (2016). The Rights of Persons with Disabilities Act. GOI.

Pandey, S. S. (2020, April 26). TOI Blogs. Retrieved August 2020, from The Times of India: https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/voices/excluding-the-excluded-indias-response-to-the-education-of-children-with-disabilities-during-covid-19/

PTI. (2020, July 18). HT Education. Retrieved August 2020, from Hindustan Times: https://www.hindustantimes.com/education/43-children-with-disabilities-planning-to-drop-out-due-to-difficulties-faced-in-e-education-survey/story-cMy55e6gQ1XDUqxB9U6M6I.html

United, N. (n.d.). Convention on the Rights of Persons with Disabilities. United Nations.



पूजा पाण्डे वर्तमान में विधि सेंटर फॉर लीगल पॉलिसी, नई दिल्ली के साथ समावेशी शिक्षा परियोजना पर काम कर रही हैं। उन्होंने 2017 में अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से डेवलपमेंट (लॉ, पॉलिसी एंड गवर्नेंस में विशेषज्ञता के साथ) विषय में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। इसके पहले वे पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया (PRIA) और यूनेस्को चेयर के साथ समुदाय-आधारित अनुसन्धान और उच्च शिक्षा की सामाजिक ज़िम्मेदारी पर काम कर चुकी हैं। वे शिक्षा, पहचान और सहभागी अनुसन्धान विधियों जैसे विषयों में रुचि रखती हैं। उनसे **poojaapandey.02@gmail.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

ऑनलाइन अधिगम | ग्रामीण इलाक़ों की वास्तविकता

राममोहन खानापुरकर

कोरोना वायरस महामारी के कारण पैदा हुए व्यवधान ने भारत के शिक्षा-क्षेत्र को बड़ी मुश्किल स्थिति में ला खड़ा किया है। अब या तो ऑनलाइन शिक्षा की नई प्रणाली को अपनाना था या ऑफ़लाइन के साथ शिथिल हो जाना था। ऑनलाइन शिक्षा का विकल्प कई स्कूलों के लिए एक भारी बोझ बन गया, विशेष रूप से वे स्कूल जो अल्प सुविधा प्राप्त ग्रामीण इलाक़ों में थे। इसका प्रमुख कारण था - ऑनलाइन शिक्षा को निर्बाध बनाने के लिए ज़रूरी बुनियादी ढाँचे का अभाव। इसके कारण आलोचकों ने अखिल भारतीय स्तर पर डिजिटल शिक्षा का अचानक समर्थन करने पर सवाल उठाया। महाराष्ट्र में, *एक्टिव टीचर्स फोरम* जैसे सर्वेक्षणों ने 'डिजिटल डिवाइड' (Digital Divide) की हतोत्साहित करने वाली वास्तविकता को दिखाया। इसे कम करने के प्रयास में, शिक्षा मंत्रालय ने विद्यार्थियों के लिए वैकल्पिक शैक्षिक कैलेंडर (*Alternative Academic Calendar - AAC*) जारी किया, जिसमें शिक्षकों, विद्यार्थियों और यहाँ तक कि माता-पिता को लॉकडाउन के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के लिए ख़ुद को तैयार करने के लिए दिशा-निर्देश दिए गए थे। यह दिशा-निर्देश यह मानकर दिए गए थे कि ऑनलाइन शिक्षा को अपनाने के लिए लोगों की थोड़ी-बहुत डिजिटल तैयारी होगी और संसाधन भी होंगे।

व्यावहारिक सच्चाई

वैकल्पिक शैक्षिक कैलेंडर (AAC) के अस्थायी डिजिटल समाधान प्रदान करने के घोषित उद्देश्य के विपरीत, इसने सीमित डिजिटल संसाधनों के साथ काम करने वाले शिक्षकों के लिए अतार्किक विकल्प प्रस्तुत किया। यह बात इस लेख के लिए साक्षात्कार देने वालों के बयान से पता चलती है। लॉकडाउन शुरू होने के बाद से भारत के ग्रामीण क्षेत्र गहन सामाजिक मन्थन के साक्षी बने जब आजीविका खो देने के कारण प्रवासी लोग शहरों से लौटने लगे। यहाँ तक कि गाँवों में छोटे-छोटे खेतों में काम करने वालों को भी अर्थव्यवस्था में मन्दी का दबाव महसूस हो रहा है। इस निराशाजनक पृष्ठभूमि में शिक्षकों से यह अपेक्षा की गई कि वे बच्चों को रोज़ ऑनलाइन शिक्षा में संलग्न करें। इसके अलावा लॉकडाउन के कारण शिक्षकों को आमने-सामने बैठकर चलने वाले कक्षा सत्रों का सहारा भी नहीं मिला। इसलिए कई दूर-दराज़ इलाक़ों के प्रथम-पीढ़ी के स्कूल जाने वाले बच्चों की औपचारिक शिक्षा में नियमितता बनाए रखने में अवरोध उत्पन्न हो गया।

कुछ ख़ास सरोकार

जनसांख्यिकी

जब महाराष्ट्र में पालघर ज़िले के जव्हार, मोखाडा और वाडा ब्लॉकों के ग्रामीण क्षेत्रों के जिला परिषद प्राथमिक स्कूलों के कुछ शिक्षकों के साथ चर्चा की गई तो दिलचस्प विवरण सामने आए।

इस क्षेत्र में अधिकतर अनुसूचित जनजाति के लोग बसे हुए हैं, जो मुख्य रूप से वरली, कोली मल्हार, ठाकुर, महादेव कोली और कटकरी जनजातियों के हैं। इनमें से कटकरी को विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इसकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति अन्य जनजातीय समूहों की तुलना में कमतर है। चूँकि परिवार समय-समय पर मज़दूरी करने के लिए शहरों में चले जाते हैं, इसलिए इन क्षेत्रों के कुछ बच्चे स्कूल छोड़ देते हैं। इससे शुरुआती कक्षाओं में पढ़ने वाले बच्चों के सीखने का स्तर बाधित होता है जो उनकी बाद की स्कूली शिक्षा पर भी अकादमिक प्रभाव डालता है। इसलिए शिक्षक यह अपेक्षा करते हैं कि बच्चे जून के मध्य से सितम्बर के अन्त तक स्कूल में आते रहें। उसके बाद अगर कोई बच्चा अपने माता-पिता के साथ प्रवास करता है तो भी अगले साल उसके अधिगम को किसी-न-किसी तरह से आगे ले जाया जा सकता है।

सम्पर्क में रहना

छोटे बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक ज़रूरतें होती हैं जो अक्सर स्कूल के सामाजिक वातावरण में होने वाली अन्तःक्रिया से पूरी होती हैं। शिक्षकों के साथ हुई चर्चा से पता चला कि उनकी मुख्य चिन्ता बच्चों को स्कूली शिक्षा की प्रक्रिया से जोड़कर रखने की थी – यह एक ऐसा उद्देश्य है जिसमें ऑनलाइन स्कूलिंग मदद नहीं करती। यह बात महाराष्ट्र सरकार के पहले (सतही) प्रयास से भी उपजी, जब 2015 में *एजूकेशनली प्रोगेसिव महाराष्ट्र ड्राइव* के तहत राज्य के स्कूलों को डिजिटल स्कूलों में परिवर्तित करने का प्रयास किया गया। लेकिन ग्रामीण पालघर ज़िले में फ़ील्ड विज़िट के

अनुसार वास्तविकता यह थी कि डिजिटल स्कूल की योजना ज़मीनी स्तर पर कुछ ज़्यादा हासिल नहीं कर पाई थी।

स्कूलों का प्रतीकात्मक महत्त्व

ऑनलाइन शिक्षा का वृत्तान्त, ग्रामीण पालघर क्षेत्र की संरचनात्मक रूप से विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से जुड़ा हुआ है। लॉकडाउन शुरू होते ही शहर की सुनसान सड़कों की तस्वीरें मीडिया में छाई हुई थीं। ग्रामीण क्षेत्रों ने तो केवल तब ध्यान आकर्षित किया जब शहरों से प्रवासी श्रमिकों के झुण्ड-के-झुण्ड अपने गाँवों की ओर जाने लगे। इसी तरह के प्रवास में ग्रामीण पालघर ज़िले के मूल निवासी, जो ठाणे, भिवण्डी, वसई, पुणे और पड़ोसी गुजरात के शहरों में ईंट की भट्टियों और औद्योगिक टाउनशिप काम करते थे, अपने गाँव लौट आए। जैसे-जैसे कोरोनोवायरस का आतंक फैला, ग्रामीणों ने अपने गाँवों में प्रवेश रोकने के लिए नाकाबन्दी शुरू कर दी। स्थानीय शिक्षकों को इस काम में लगा दिया गया कि वे प्रवासी मूल निवासियों की वापसी के कारण पैदा हुई घबराहट और सामाजिक तनाव को सम्बोधित करें। इसके अलावा, चूँकि स्कूल गाँव के क्षेत्र में आते थे, इसलिए शिक्षकों के पास स्कूलों के संसाधनों तक भी पहुँच नहीं थी।

ग्रामीण स्कूल के शिक्षक के लिए स्कूल तक पहुँच, प्रतीकात्मक रूप से महत्त्वपूर्ण है। किसी दूर-दराज़ के गाँव में स्थित स्कूल स्थानीय लोगों के लिए आशा का एक ऐसा स्रोत है जो ग़रीबी के स्थायी चक्र को तोड़ सकता है। इसके अलावा, दूर-दराज़ के गाँवों के स्कूल पारम्परिक अर्थों में कभी बन्द नहीं होते। बच्चे स्कूल के परिसर में कभी भी आ-जा सकते हैं। गाँवों में स्कूल एक सामुदायिक स्थान के रूप में कार्य करता है, इसलिए वह वहाँ के अन्य स्थानों से अलग है। यह पहलू शहरी क्षेत्रों की तुलना में अलग है, जहाँ स्कूल सिर्फ़ भौतिक संरचना होते हैं, कक्षा के समय के बाद खाली और लम्बी छुट्टियों के दौरान बेजान।

एक शिक्षक ने कहा कि लॉकडाउन के दौरान औपचारिक स्कूली शिक्षा के विचार को सक्रिय रख पाना मुश्किल था और यही बात चिन्ता का सबसे बड़ा विषय थी। जो भी इन इलाक़ों में काम करता है, वह जानता है कि स्थानीय समुदायों में औपचारिक शिक्षा की चेतना को बढ़ाने के लिए शिक्षक कितनी मेहनत करते हैं। शिक्षक नहीं चाहते थे कि लॉकडाउन के दौरान स्कूलों के बन्द होने के कारण वह चेतना कम होने लगे।

इस सन्दर्भ में देखा जाए तो ऑनलाइन शिक्षा, सीखने की प्रक्रिया को अवैयक्तिक और दूरवर्ती बना देगी, एक सक्रिय शिक्षक को निष्क्रिय कर देगी। इन इलाक़ों में शिक्षकों के सामने अलग तरह की चुनौतियाँ आती हैं, और उन्हें जानने के लिए इस पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है। इसलिए, जब सरकार ने ऑनलाइन शिक्षा का निर्णय लिया तो शिक्षकों को संशय था और उन्होंने अलग रास्ता चुना।

स्कूल को घरों तक ले जाना

एक अच्छे शिक्षक और बच्चों के बीच एक मज़बूत भावनात्मक बन्धन होता है, ख़ासकर ग्रामीण इलाक़ों में। वहाँ शिक्षक न केवल एक शिक्षक होता है, बल्कि वह एक परामर्शदाता, सामाजिक कार्यकर्ता, दोस्त और यहाँ तक कि कुछ विशेष परिस्थितियों में एक माता-पिता के रूप में भी कार्य करते हुए बच्चों की भलाई का ध्यान रखता है। गाँव की सामाजिक-आर्थिक संरचना में एक अच्छा शिक्षक बहुत सम्मानित व्यक्ति होता है और उसे घरों में जाने और घर के सदस्यों के साथ बातचीत करने के लिए किसी भी प्रकार की अनुमति की कोई आवश्यकता नहीं होती है।

इन पारिवारिक सम्बन्धों का लाभ उठाकर शिक्षकों ने स्कूल की गतिविधियों को बच्चों तक ले जाने का फैसला किया। उन्होंने यह भी महसूस किया कि इस रणनीतिक प्रक्रिया की आवश्यकता इसलिए भी थी क्योंकि औपचारिक शिक्षा को अभी भी इन क्षेत्रों के समुदायों में अनिवार्य आवश्यकता के रूप में नहीं माना जाता है। यानी इसका यह अर्थ भी हुआ कि औपचारिक अधिगम के लिए घर से जिस प्रकार समर्थन चाहिए - जैसे कि बच्चों के साथ अनौपचारिक रूप से बातचीत करना, पाठ्येतर पठन और लेखन आदि - वह यहाँ उपलब्ध नहीं होता है। घर के समर्थन और प्रिंट-समृद्ध परिवेश के अभाव में बुनियादी अधिगम बहुत कठिन हो जाता है। इसलिए शिक्षकों ने दृढ़ता के साथ महसूस किया कि सीखने में निरन्तरता बनाए रखने के लिए बच्चों तक पहुँचने का कोई अन्य माध्यम नहीं अपनाया जा सकता।

व्यावहारिक व क्रियात्मक दृष्टिकोण (Hands-on approach)

शिक्षकों ने निर्णय लिया कि वे प्रदत्त कार्य के पर्चों (असाइनमेंट शीट्स) को प्रिंट करके विद्यार्थियों को हर दूसरे दिन गाँव में एक निश्चित स्थान पर इकट्ठा करेंगे। स्कूल के बन्द होने के कारण जो बच्चे में खेतों में भटकने या अपने माता-पिता के खेतों पर काम करने के अभ्यस्त हो गए थे, उन्होंने ख़ुशी-ख़ुशी शिक्षकों की आज्ञा मान ली और लम्बी दूरी पैदल तय करके प्रातःकालीन सभा में पहुँचने से भी नहीं चूके। चूँकि शिक्षकों को प्रत्येक बच्चे के अधिगम के स्तर के बारे में गहरी समझ होती है, इसलिए उन्होंने बच्चों के लिए स्तर-विशिष्ट कार्यों की पहचान की और जो बच्चे कक्षा-उपयुक्त अधिगम के स्तर में पिछड़ रहे थे, उनकी आवश्यकताएँ भी पूरी कीं। बच्चों से कहा गया कि वे असाइनमेंट शीट घर ले जाएँ, उन

पर काम करें और अगली अगली बार वापस लेकर आएँ। एक शिक्षक लेमिनेटेड शीट्स ले आए, जिनपर लिखकर मिटाया जा सकता था और उनका इस्तेमाल बार-बार किया जा सकता था। एक अन्य शिक्षक ने अपने घर में पड़ी टाइल्स विद्यार्थियों को दीं और साथ में एक व्हाइटबोर्ड पेन भी दिया ताकि टाइल्स का प्रयोग एक अभ्यास-बोर्ड के रूप में किया जा सके।

शिक्षक बच्चों के सीखने की प्रक्रिया की समीक्षा करने के लिए हर दूसरे दिन गाँवों का दौरा करते। जव्हार के पहाड़ी क्षेत्रों के एक शिक्षक ने राज्य के लिए एक सामाजिक सर्वेक्षण करने के अवसर का उपयोग, उन बच्चों के साथ जुड़ने के लिए किया जो लॉकडाउन के कारण उनकी नज़रों से दूर थे। शहरी क्षेत्रों में सरकारी शिक्षकों को भी इस तरह के सर्वेक्षण करने पड़े। शहरों की आबादी घनी होती है और शिक्षकों को सर्वेक्षण करने के लिए अजनबियों के घरों में जाना पड़ता है, लेकिन अन्दरूनी ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वेक्षण करने वाले शिक्षक हर मिलने वाले के चेहरे को पहचानते हैं।

इसके अलावा जव्हार के आन्तरिक और पहाड़ी क्षेत्रों में गाँवों की यात्रा करना किसी अभियान से कम नहीं है, विशेष रूप से बारिश के मौसम में, जब मूसलाधार वर्षा में शाम को कोई भी पहाड़ी से उतरने का जोखिम नहीं उठा सकता है और ऐसी स्थिति में गाँव में ही रात बिताना बेहतर होता है। एक शिक्षक ने इस प्रकार के 'अभियानों' का उपयोग बच्चों के घरों के दरवाज़ों पर पाठ सम्बन्धी अभ्यासों के प्रिंट-आउट को चिपकाने के लिए किया। उन्होंने माता-पिता से अनुरोध किया कि वे बच्चों को इन अभ्यासों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। अगले दौरे में उन्होंने अभ्यास के बारे में बच्चों की समझ की समीक्षा की और नए अभ्यास चिपकाए। एक शिक्षक अपने साथ एक व्हाइटबोर्ड लेकर गए और उसे एक सुरक्षित स्थल पर रख दिया। इस प्रकार एक छप्पर वाले आँगन का साफ़ फ़र्श और व्हाइटबोर्ड, गाँवों में उनके अनियत दौरों के दौरान एक अस्थायी कक्षा में बदल जाता।

इस तरह के सभी दौरों के दौरान, बच्चों के साथ बातचीत करते समय शारीरिक दूरी का जितना अधिक सम्भव हो उतना पालन किया गया। बच्चों को दैनिक जीवन में बेहतर स्वास्थ्यकारिता और स्वच्छता का पालन करने के लिए भी कहा गया। इन शिक्षकों के प्रयासों के चलते इस कठिन समय में भी इस दुर्गम इलाक़े में सीखना जारी रहा।

गम्भीर सरोकार

शिक्षकों द्वारा किए गए प्रयास कितने ही साधारण क्यों न हों, लेकिन उनकी वजह से औपचारिक अधिगम की शृंखला टूटने नहीं पाई। जिस प्रणाली में सरकारी शिक्षक काम करते हैं, वह पदानुक्रमित है और टॉप-डाउन एप्रोच से बाध्य हैं। शिक्षकों को बहुत कम स्वायत्तता मिलती है और अगर वे इसका उपयोग करते भी हैं तो उनके वरिष्ठ अफ़सरों की सतर्क आँखें अक्सर उनके जोश को ठण्डा कर देती हैं। यद्यपि इस लेख के लिए साक्षात्कार देने वाले शिक्षक इस वास्तविकता के प्रति सचेत थे, फिर भी उन्होंने अपने मन की बात सुनी और अपनी स्वायत्तता का प्रयोग करके बच्चों तक पहुँचे। वे चाहते तो ऑनलाइन शिक्षा-लक्ष्य की अप्राप्यता का हवाला देते हुए बड़ी आसानी से एक निष्क्रिय दृष्टिकोण अपना सकते थे। लेकिन यह बच्चों की औपचारिक स्कूली शिक्षा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ही है कि उन्होंने ऑफ़लाइन शिक्षण की वास्तविकता को अपनाया और इसे ठीक करने की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित किया।

यदि इस पूरे शैक्षिक वर्ष में स्कूल न खुले और आमने-सामने की कक्षाएँ शुरू न हुईं तो क्या होगा? यह जानते हुए कि कक्षाओं के भीतर होने वाली वैयक्तिक अन्तःक्रियाओं का कोई विकल्प नहीं है, गाँवों में ग़रीब परिवारों के माता-पिता को लग सकता है कि अनियमित ऑनलाइन शिक्षा निरर्थक है। ऐसे में माता-पिता अपने बच्चों, ख़ासकर बेटियों को घर में रहने और घर के काम करने के लिए मजबूर कर सकते हैं। इसलिए शिक्षकों ने आमने-सामने बैठकर पढ़ाने के विचार को जीवित रखने का जो प्रयास किया है, वह ऐसे समय में बहुत मायने रखता है।

कोरोनोवायरस के कारण युवाओं को शिक्षित करते समय हमारी मान्यताओं, आकलन की कार्य-प्रणाली और प्रसार के तरीक़ों पर जो प्रभाव पड़ा है अब उन तरीक़ों का प्रलेखन करने का प्रयास किया जा रहा है। इन प्रयासों को सामाजिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षकों द्वारा की जा रही कोशिशों पर भी ध्यान देना चाहिए, जैसा कि इस लेख में उल्लिखित है। यदि यह शिक्षक न होते तो कई बच्चे ऑनलाइन शिक्षा की दरारों में फिसल कर गिर जाते और वहीं रह जाते तथा उनके सपने टूट जाते।



राममोहन खानापुरकर लोकनीति शोधकर्ता और शिक्षाविद हैं। वे दक्षिण एशिया की शिक्षा, इतिहास और सामूहिक स्मृतियों पर लिखते हैं। उन्होंने इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन, यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन, यूके से शिक्षा और अन्तर्राष्ट्रीय विकास में एमए किया है। उनसे **rammohan.khanapurkar.18@ucl.ac.uk** पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : नलिनी रावल

किशोरों एवं बच्चों में उत्पन्न तनाव से निपटना

शेरोन सिल्विया

'मुझे अपना स्थान (स्पेस) चाहिए। आप क्यों नहीं समझते? आप मेरी परवाह नहीं करते!'

एक अभिभावक अपने बारह साल के बच्चे को इस तरह से चिल्लाते हुए देखकर हैरान रह गए। उनके दिमाग़ में कुछ इस तरह के विचार चल रहे थे : 'हम इस संकट के समय में अपने बच्चे को सब कुछ मुहैया कराने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं! जब उसे हमारी सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है तो हम उसके साथ खड़े रहते हैं। लेकिन वह तो बिलकुल भी संतुष्ट नहीं है। दिन भर चिढ़ता रहता है और नाराज़ रहता है, ख़ुद से भी और हमसे भी।' छोटे बच्चों, विशेष रूप से किशोर बच्चों के अभिभावक इस तरह के अनुभवों को समझ सकते हैं क्योंकि माता-पिता और बच्चे दोनों के लिए यह संघर्ष वास्तविक है। आज हमें एक *न्यू नार्मल* के सामने लाकर खड़ा कर दिया गया है, जिसमें न केवल काम करने के नए तरीक़े और नए पारिवारिक जुड़ाव शामिल हैं, बल्कि दैनिक जीवन के तनावों से निपटने के उपाय भी नए हैं। कोविड-19 के कारण हम जिस अभूतपूर्व स्थिति का सामना कर रहे हैं, उसने हमारे बच्चों को विभिन्न मोर्चों पर प्रभावित किया है और उनका मनो-सामाजिक स्वास्थ्य उनमें से एक है। महामारी ने ज़बरदस्त असहायता की भावना पैदा की है जो घरों में भी दिखाई दे रही है।

दिनचर्या में भारी बदलाव

हर बच्चा प्रतिदिन एक निश्चित दिनचर्या का पालन करने का आदी होता है। वह रोज़ सुबह उसके लिए मानसिक रूप से तैयार होकर उठता है, एक ऐसी दिनचर्या जो उसे पूरे दिन के लिए तैयार करती है, जो उससे कुछ अपेक्षाएँ करती है और उसे सामाजीकरण के लिए तैयार करती है। इस महामारी के चलते उस दिनचर्या में बहुत कुछ बदल गया है, जिससे बच्चा असमंजस में पड़ जाता है। इसने भावनात्मक रूप से अलग-अलग आयु समूहों पर अलग-अलग तरह का बोझ डाला है। छोटे बच्चों को लगता है कि ज़्यादा कुछ नहीं बदला है, सिवाय इसके कि स्कूल बन्द हैं और उनके माता-पिता और परिवार के बाक़ी लोग घर पर हैं। उन्हें यह बदलाव अच्छा लग सकता है क्योंकि वे अपने परिवार के साथ घर पर समय बिताना पसन्द करते हैं। लेकिन किशोरों की बात अलग है। यह महामारी उनके जीवन को उलट-पुलट कर सकती है क्योंकि उन्हें अपने साथियों के साथ समय बिताने का इन्तज़ार रहता है। इस बात पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि कोविड-19 का विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूहों के बच्चों पर अलग-अलग तरह का प्रभाव पड़ा है। इसके कारण होने वाले प्रभाव में, इन समूहों की भौगोलिक अवस्थिति की भी भूमिका रही है।

हालाँकि यहाँ हमने इस बात पर ध्यान केन्द्रित किया है कि भारत में स्कूल जाने वाले बच्चों, परिवारों और उनके शिक्षकों पर इसका क्या प्रभाव पड़ा है। इस क्षेत्र की भावनात्मक चुनौतियाँ बहुत बड़ी हैं। आइए, हम इन चुनौतियों, बच्चों की ज़रूरतों और इनकी सहायता के लिए हम क्या कर सकते हैं, इन सब बातों पर गहराई से नज़र डालते हैं।

कोविड-19 के बारे में चर्चा

कोविड-19 से सम्बन्धित ख़बरें ज़्यादातर लोगों के लिए बहुत तनावपूर्ण हैं और बच्चों के लिए तो और भी अधिक क्योंकि वे इस मुद्दे की जटिलता को पूरी तरह से नहीं समझते हैं, लेकिन उन्हें इस महामारी से अपने परिवार के सदस्यों को खोने का डर बना रहता है। इसके अलावा मीडिया के कारण बहुत-सी गलत जानकारियाँ फैलती हैं, जिससे बच्चों को अनावश्यक परेशानी होती है। यही नहीं, दोस्तों से बातचीत के दौरान बहुत-सी ग़लत जानकारी का आदान-प्रदान होता है, जिससे डर की भावना और बढ़ती है।

आप क्या कर सकते हैं !

इस स्थिति से निपटने के लिए घर पर आप एक *सुरक्षात्मक (preventive)* रुख़ अपना सकते हैं। यह आवश्यक है कि अभिभावक महामारी के बारे में बच्चों को शिक्षित करें, सरल शब्दों में समझाएँ कि कोविड-19 से सम्बन्धित क्या-क्या सरोकार हैं। अपने बच्चे को ऐसी जानकारी देने से बचें जो उसे अनावश्यक रूप से कमज़ोर कर दे। मीडिया के समाचारों की तीव्रता और आवृत्ति को कम करें क्योंकि इनसे बच्चे बेवज़ह परेशान हो जाते हैं। इसकी बजाय विश्वसनीय साइटों का उपयोग करके उन्हें यह समझने में मदद करें कि वायरस क्या है और आज यह दुनिया पर कैसा प्रभाव डाल रहा है। अगर आप उनसे इसके बारे में बातचीत करने के लिए तैयार और इच्छुक होंगे तो उन्हें निराधार विचारों से छुटकारा मिलेगा।

स्कूल भी कोविड -19 के सम्बन्ध में आयु-उपयुक्त जानकारी भेज सकते हैं ताकि बच्चों को विश्वसनीय जानकारी प्राप्त हो सके। महामारी के दौरान किए जाने वाले सुरक्षा उपायों को बच्चों के साथ साझा करना चाहिए। उन पर चर्चा करनी चाहिए ताकि वे इस प्रक्रिया में अपना योगदान कर सकें और यह महसूस करें कि वे इस स्थिति से निपट सकते हैं।

बच्चों की बातें सुनना

अभिभावक अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त रहते हैं, जैसे घर के काम करना और अपनी व्यावसायिक प्रतिबद्धताओं का ध्यान रखना। हालाँकि पूरा परिवार घर पर ही रहता है, लेकिन विरोधाभास यह है कि अपने-अपने कार्य के बोझ के कारण, साथ रहते हुए भी वे एक-दूसरे के साथ ज़्यादा नहीं वरन कम समय बिता रहे हैं। परिवारों के पास एक-दूसरे के साथ बातचीत करने के लिए बहुत कम समय है। परिवारों में इस तरह की स्थिति बढ़ती जा रही है अतः बच्चों को घर पर, अपने दैनिक अनुभवों को साझा करने का अवसर नहीं मिलता।

ऑनलाइन शिक्षण में वृद्धि के कारण बच्चे कक्षाओं के नीरस चक्र में उलझ कर रह गए हैं, जिसमें किसी भी प्रकार की चर्चा के लिए अधिक अवसर नहीं मिलते हैं। देखा गया है कि ऑनलाइन क्लास के दौरान बच्चे अन्तःक्रियाओं से कतराते हैं। एक बच्चे ने हाल ही में मुझे बताया कि, 'शिक्षक को एक ही वक्त में बहुत सारे कार्य करने पड़ते हैं। इसलिए मैं कक्षा को परेशान करने की बजाय चुप ही रहता हूँ कि प्रश्न तो बाद में भी पूछ सकता हूँ।' अन्ततः वे प्रश्न अनुत्तरित ही रह जाते हैं।

आप क्या कर सकते हैं !

परिवारों को बच्चों के साथ चर्चा करने और आश्वासन देने के लिए अलग से समय निर्धारित करना चाहिए। काम तो कभी समाप्त नहीं होंगे क्योंकि महामारी के दौरान इस कामकाजी दुनिया की माँग ही ऐसी है। बच्चों को सबसे ज़्यादा सहायता अपने परिवार से मिलती है और इसलिए वर्तमान परिस्थितियों में परिवार को उनके साथ अधिक समय बिताना चाहिए। शिक्षक भी कक्षा में एकजुटता की भावना बढ़ाने के लिए कक्षाएँ शुरू करने से पहले पाँच मिनट के *साझाकरण समय* (Sharing Time) की योजना बना सकते हैं।

ऑनलाइन शोषण के प्रति सचेत रहना

विद्यालयों के बन्द होने के परिणामस्वरूप बच्चे सामाजिक शून्यता का अनुभव करने लगे हैं, जिसे भरने के लिए वे अन्य लोगों से, कभी-कभी तो अजनबियों तक से सम्पर्क करते हैं। बिना किसी विकल्प के घर के अन्दर ही रहने का संघर्ष बच्चों को बेचैन कर रहा है। स्कूलों के बन्द होने से बच्चों का जीवन संरचनाविहीन हो गया है। स्कूल के माहौल से उन्हें जो प्रेरणा व प्रोत्साहन मिलता था, उसकी कमी से उनकी नियमित सामाजिक अन्तःक्रियाएँ प्रभावित होती हैं।

इन सबका सीधा असर उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। बच्चों के लिए सम्प्रेषण और सामाजिक सम्पर्क के माध्यम मुख्य रूप से डिजिटल हो गए हैं। चूँकि उनके सामाजीकरण और अकादमिक कार्य ज़्यादातर ऑनलाइन रूप में हो रहे हैं, इसलिए उनका सामना साइबरस्पेस के विभिन्न ख़तरों से भी हो रहा है। आज प्रत्येक अकादमिक कार्य ऑन-स्क्रीन हो रहा है, इसलिए बच्चे अनिवार्य रूप से स्क्रीन के सामने अधिक समय बिताते हैं, जहाँ कई तरह की चीज़ें उनका ध्यान बँटाती हैं।

आप क्या कर सकते हैं !

यह बात मुश्किल लग सकती है, लेकिन बच्चों को घर पर रचनात्मक अवसर देने से उनका स्क्रीन-समय कम होगा। बच्चों को ऐसे कार्यों में समय व्यतीत करने के अवसर देना ज़रूरी है उनकी सृजनात्मकता को बढ़ाएँ और उन्हें रचनात्मक रूप से व्यस्त रखें। इसके कुछ उदाहरण यह हैं : चित्रकारी, पढ़ने का कोना और संगीत स्थल (घर का कोई ऐसा समर्पित स्थान जहाँ बच्चा संगीत सुन सके या कोई वाद्य यंत्र बजा सके)।

एक पहलू और भी है जिस पर विचार करना होगा। इंटरनेट के उपयोग के लिए सुरक्षा नियम बनाने होंगे। किसी भी ऑनलाइन सम्पर्क के बारे में विवेकशीलता बरतने पर ज़ोर देने के लिए शिक्षक भी साइबर सुरक्षा के नियमों को बार-बार बताएँ। सुरक्षा सम्बन्धी कुछ सरल नियम इस प्रकार हैं :

- अजनबियों और उन लोगों का अनुरोध स्वीकार न करें जिनके साथ आप सहज नहीं हैं।
- अपना पासवर्ड सुरक्षित रखें।
- स्कूल द्वारा आवश्यक शैक्षिक उद्देश्य के अलावा किसी अन्य उद्देश्य के लिए वेबकैम का उपयोग करने से बचें।
- व्यक्तिगत जानकारी के आदान-प्रदान से बचें।

ऐसे बच्चों पर ध्यान देना जिन्हें अधिक ख़तरा है

जिन बच्चों को मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ और सीखने की कठिनाइयाँ होती हैं, वे बच्चे इस महामारी के दौरान बाक़ी बच्चों की तुलना में अधिक चुनौतियों का सामना करते हैं। नियमित दिनचर्या का अभाव उन्हें निराश कर सकता है जो बेबसी की भावनाओं से उपजती है। उन्हें लग सकता है मानो एक दृढ़ आधार खो गया है, जिसके कारण उनके लक्षण पुनः प्रकट हो सकते हैं। एक संरचित शैक्षिक वातावरण उनके लिए सीखने का मूल है। जब यह अस्त-व्यस्त होता है तो दिक़्क़त शुरू होती है।

आप क्या कर सकते हैं !

इस समय में ऐसे बच्चों के लिए विशेष सेवाओं की व्यवस्था करना आवश्यक है। परिचितता बनाए रखने के लिए यह कार्य उन विशेष शिक्षकों के माध्यम से किया जा सकता है जो पहले से ही बच्चों के साथ काम कर रहे हैं।

माता-पिता भी अनिश्चितता के कारण पैदा हुई दुष्चिन्ता को कम करने के लिए बच्चों के लिए घर पर गतिविधियाँ और उनके लिए कार्य-योजना निर्धारित कर सकते हैं। जो स्कूल विद्यार्थियों को विशेष शिक्षा सेवाएँ प्रदान करते हैं, वे विद्यार्थियों के साथ अधिक समय बिताकर शिक्षण की अभिवृद्धि कर सकते हैं, जिससे बच्चे को अकादमिक और भावनात्मक, दोनों तरह का समर्थन मिल पाएगा।

घर पर दुर्व्यवहार और शोषण

थकावट एक ऐसा शब्द है जो आजकल घरों को अपनी चपेट में लिए हुए है। अभिभावकों पर काम का अत्यधिक बोझ है, वे अपनी नौकरी खोने के बारे में चिन्तित हैं और घरेलू कामों के लिए समय निकालने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इस सबके साथ बच्चों के दुर्व्यवहार से निपटना वाकई बहुत मुश्किल है। वहीं दूसरी ओर, पहले से तनावग्रस्त अभिभावकों के साथ घर पर समय बिताना बच्चों के लिए भी सुखद अनुभव नहीं है। कुछ घरों में इन तनावों का ख़ामियाज़ा बच्चों को भुगतना पड़ता है।

जहाँ माता-पिता खीजते या झल्लाते रहते हों, शायद झगड़ते भी हों, वहाँ घर में छाया तनाव बच्चों से अनदेखा नहीं रहता। बच्चे इन संकेतों पर ध्यान देते हैं और यह घटनाएँ एक अप्रिय सदमे के रूप में उनके सामने आती हैं। यूनिसेफ़ ने दावा किया है कि महामारी के दौरान *चाइल्डलाइन* में बच्चों की मदद करने के लिए कॉल की दर में 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो न केवल बुनियादी पोषण में मदद के लिए हैं, बल्कि उनमें दुर्व्यवहार और हिंसा के वातावरण से बचाने के लिए भी मदद माँगी गई है।

आप क्या कर सकते हैं !

माता-पिता एक ऐसा समय चुन सकते हैं जब वे ख़ुद शान्त हों ताकि वे बच्चे के दुर्व्यवहार से जुड़े सरोकारों पर ध्यान केन्द्रित कर सकें; क्योंकि एक परेशान वयस्क उसे सुधारने की कोशिश करेगा तो उससे समस्या हल नहीं होगी। माता-पिता स्कूलों के मानसिक कल्याण विभाग से भी मदद ले सकते हैं ताकि उन्हें अपनी परेशानियों को सुलझाने में सहायता मिल सके। घर पर होने वाले शारीरिक और यौन शोषण में वृद्धि हो रही है क्योंकि कई बच्चे दुर्भाग्य से अपने शोषणकर्ताओं के साथ घर पर ही फँसे हुए हैं और माता-पिता को इस प्रकार के संकेतों के प्रति सचेत रहना चाहिए। शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों को *चाइल्डलाइन* का उपयोग करने के बारे में बताएँ और आपातकालीन स्थिति में विशेषज्ञ, पेशेवर मदद और कार्रवाई के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।

भावनात्मक सहयोग की ज़रूरत

वर्तमान समय में बच्चे जिन परिवर्तनों का सामना कर रहे हैं, उनका भावनात्मक प्रभाव बेहद तीव्र है, जिसकी वजह से उन्हें उदासी, दुष्चिन्ता, क्रोध, असुरक्षा, आक्रामकता, हताशा, भय या अकेलेपन की भावनाओं का अनुभव हो सकता है। यह भावनाएँ कोविड-19 से सम्बन्धित समाचारों, घर में होने वाली अन्तःक्रियाओं, नियमित सामाजिक सम्पर्क में कमी या ऑनलाइन कक्षाओं से जुड़ी समस्याओं से पैदा हो सकती हैं। यह सभी बातें बच्चों को मानसिक और भावनात्मक रूप से सीधे प्रभावित करती हैं। इन भावनात्मक चिन्ताओं को दूर करने के लिए उन्हें वयस्कों के समर्थन के साथ-साथ मेंटल स्पेस की आवश्यकता होती है।

आप क्या कर सकते हैं !

माता-पिता को बच्चों के साथ समानुभूति रखनी चाहिए और उन्हें सुनना चाहिए। यदि बच्चों को एक रचनात्मक तरीक़े से इन भावनाओं को व्यक्त करने दिया जाए तो उन्हें मदद मिलेगी। बच्चे जैसा महसूस कर रहे हैं उसे व्यक्त कर सकें इसके लिए उन्हें कुछ *भावात्मक* शब्द दिए जा सकते हैं जैसे अकेला, उदास, ऊबा हुआ, चिन्तित, डरा हुआ आदि। एक आसान तरीक़ा और भी है, बच्चों को प्यार दें और उन पर ध्यान दें; इस तरह, जो भय उन्हें घेरे हुए है उसे दूर किया जा सकता है।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणालियों के चलते स्कूलों को भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देने में अधिक समय बिताना चाहिए। स्कूली पाठ्यक्रम के अन्तर्गत मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता पर चर्चा करने से स्कूल और बच्चे के बीच एक अच्छा एवं भरोसे का रिश्ता कायम होगा।

सामान्य भावनाओं को समझना

अकेलापन

सामाजिक सम्पर्क का अभाव या कमी के कारण बच्चों के अकेलेपन की भावना बढ़ सकती है। वैसे तो फ़ोन या इंटरनेट के माध्यम से सम्प्रेषण हो रहा है, लेकिन फिर भी एक ख़ालीपन है क्योंकि शारीरिक रूप से अपने साथियों से मिलना और बातचीत करना सम्भव नहीं हो पा रहा है।

ऊबना

हालाँकि एक नियत दिनचर्या का पालन करने से बच्चे फलते-फूलते हैं, लेकिन एक नीरस जीवनशैली ऊब की भावना को

बढ़ा सकती है। हालाँकि ऊब जाने पर बच्चे आमतौर पर रचनात्मक कार्य करते हैं, किन्तु इससे आलस्य का भाव भी बढ़ सकता है।

दुष्चिन्ता

अपने रोज़मर्रा के माहौल में अस्तव्यस्तता के कारण बच्चों में दुष्चिन्ता पैदा होती है। ऊपर से महामारी की ख़बरों के कारण वे बेचैन हो जाते हैं। जब बार-बार ऐसी नकारात्मक ख़बरें दोहराई जाती हैं तो वे उनके मन को प्रभावित करती हैं, ऐसा उन बच्चों में अधिक होता है जो इस जानकारी के साथ समायोजन नहीं कर पाते।

भय

कोरोनावायरस के कारण बहुत-सी जानें गई हैं। हर कोई इस भय के साथ जी रहा है कि कहीं वह अपने किसी प्रिय व्यक्ति को खो न बैठे। इस भय से असुरक्षा की भावना पैदा होती है, ख़ासकर बच्चों में, जो यह जानते हैं कि इस महामारी ने उन बुज़ुर्गों को सबसे अधिक प्रभावित किया है जो पहले से ही बीमारियों के शिकार हैं। उनके दादा-दादी और यहाँ तक कि माता-पिता भी इस श्रेणी में आते हैं।

अन्त में

यहाँ इस बात का उल्लेख किया जाना चाहिए कि जिन बच्चों को स्कूल जाना इसलिए अप्रिय लगता है क्योंकि वहाँ पर उन्हें साथियों की दादागिरी सहनी पड़ती है या जिनके पास समर्थन करने वाला मित्र-समूह नहीं है, उन्हें इस समय घर में राहत मिली है। घर पर होने के कारण उनके मन में शान्ति और सुरक्षा की भावना आई है।

इस समय में अपने बच्चों पर ध्यान देना ही उनकी सबसे बड़ी मदद होगी। यदि आपको लगे कि किसी बच्चे को आपकी मदद से ज़्यादा समर्थन की आवश्यकता है तो कृपया उन्हें काउंसलर या मनोवैज्ञानिक से उपचारात्मक सहायता लेने के लिए प्रोत्साहित करें। व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित काउंसलरों के सकारात्मक हस्तक्षेप से आपके बच्चे को आवश्यक समर्थन मिल सकता है। माता-पिता और शिक्षकों के रूप में यदि हम सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा दें तो एक सन्तुलित मनो-सामाजिक वातावरण पैदा होगा जो बच्चों के सीखने और विकास के लिए आवश्यक है।



शेरोन सिल्विया परामर्श मनोवैज्ञानिक (Counselling Psychologist) हैं। उन्होंने क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, बेंगलूर से परामर्श मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है। वे पिछले दस वर्ष से बेंगलूर में परामर्श देने का काम कर रही हैं विशेष रूप से बच्चों के साथ। वे संगीत, गायन, फ़ोटोग्राफ़ी और क्रोशिया के काम में आनन्द लेती हैं, लेकिन उन्हें ज़्यादा समय बच्चों के साथ काम करते हुए बिताना पसन्द है। उनसे **sharonsudden@gmail.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

परेशानी वाली एक बात यह भी है कि इस पर बहुत कम चर्चा या गम्भीर राष्ट्रीय बहस हो रही है कि शिक्षा और सीखने-सिखाने के मुद्दे को सम्बोधित करने के लिए क्या किया जा सकता है। ऑनलाइन शिक्षा की सुविधा उन्हें मिल रही है जो पहले से ही बेहतर हालत में हैं और ग़रीबों को उनके हाल पर छोड़ दिया गया है। आज जिस ऑनलाइन सम्प्रेषण को शिक्षा की संज्ञा दी जा रही है, उसकी निष्क्रियता (और यहाँ तक कि हानिकारक प्रभावों) के बारे में इतने सारे शिक्षकों और शिक्षाविदों की चेतावनी के बावजूद, सरकारें और कई कॉर्पोरेट समर्थक कोविड-19 लॉकडाउन के समय में एकमात्र समाधान के रूप में ऑनलाइन कक्षाओं के बारे में ही बात कर रहे हैं।

-विमला रामचन्द्रन, 'स्कूलों को फिर से खोलने की तैयारी : इसके लिए क्या करना होगा', पेज 1

राजस्थान के सरकारी स्कूलों में डिजिटल अधिगम

शोभिता राजगोपाल और मुक्ता गुप्ता

पृष्ठभूमि

कोविड-19 महामारी एक ऐसी अप्रत्याशित घटना है जिसके कारण बड़ी संख्या में लोगों की मृत्यु हुई है और विश्व की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा प्रभावित हुआ है। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों पर महामारी का प्रभाव बहुत व्यापक रहा है। भारत में स्कूलों और कॉलेजों के बन्द हो जाने से पूरे देश के विद्यार्थी प्रभावित हुए हैं, विशेष रूप से वे विद्यार्थी जो असुरक्षित और वंचित परिस्थितियों में रहते हैं। इस संकट के जवाब में राज्य के शिक्षा मंत्रालयों ने स्कूली शिक्षा में हुए व्यवधान से उपजे मुद्दों के समाधान के लिए रणनीतियाँ बनाई हैं। डिजिटल प्रणाली आधारित दूरस्थ शिक्षा को तेज़ी से बढ़ावा दिया गया है : विद्यार्थियों तक पहुँचने के लिए एसएमएस, *व्हाट्सएप*, रेडियो और टीवी कार्यक्रमों के माध्यम से पाठ्य/वीडियो/ऑडियो सामग्री का उपयोग किया जा रहा है।

राजस्थान सरकार ने अप्रैल 2020 में *व्हाट्सएप* के माध्यम से एक ई-लर्निंग मंच, *सोशल मीडिया इंटरफेस फॉर लर्निंग एंगेजमेंट* (SMILE) की शुरुआत की। इस पहल का उद्देश्य राज्य के सरकारी स्कूलों में नामांकित सभी विद्यार्थियों को ऑनलाइन कोर्स और कक्षाओं की सुविधा उपलब्ध कराना था।

यह लेख, SMILE के माध्यम से संचालित ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम के सम्बन्ध में विद्यार्थियों और शिक्षकों के अनुभवों का विश्लेषण करता है। यह राजस्थान के विभिन्न ज़िलों के सरकारी स्कूलों में उनके साथ हुई गुणात्मक बातचीत पर आधारित है। तर्क यह है कि स्कूली शिक्षा में आए वर्तमान व्यवधान को देखते हुए, विद्यार्थियों के साथ शैक्षिक जुड़ाव जारी रखने के लिए जो भी रणनीति बनाई जाए, उसमें समता और समावेशन को ध्यान में रखना चाहिए और ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए जिसमें सीखने की प्रक्रिया जारी रह सके।

सन्दर्भ

भौगोलिक रूप से राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है। यह एमपावर्ड एक्शन ग्रुप (Empowered Action Group - EAG) के तहत, निम्न सामाजिक-आर्थिक संकेतकों वाले आठ राज्यों में से एक है। शिक्षा के क्षेत्र में सरकार द्वारा काफ़ी निवेश के बावजूद ज़मीनी हक़ीक़त यह है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, समता और जेंडर से सम्बन्धित कई पुराने और प्रणालीगत मुद्दे, राज्य में शिक्षा के प्रतिफलों को प्रभावित करते हैं।

वर्तमान संकट और लॉकडाउन की बढ़ती हुई अवधि के चलते राजस्थान सरकार ने बोर्ड परीक्षाओं को स्थगित कर दिया। साथ ही कक्षा दसवीं और बारहवीं को छोड़कर सभी बच्चों को अगली कक्षा में प्रोन्नत करने का निर्णय लिया। महामारी के दौरान विद्यार्थियों के सीखने की निरन्तरता सुनिश्चित करने के लिए, ऑनलाइन शिक्षा देने की तीन नीतिगत पहल, अप्रैल और जून 2020 के बीच शुरू की गई थीं : *पहली, सोशल मीडिया इंटरफेस फॉर लर्निंग एंगेजमेंट (SMILE)*, जो कि *व्हाट्सएप* के माध्यम वाला ई-लर्निंग मंच है; दूसरी, *हवा महल और शिक्षा वाणी* – यह दोनों रेडियो आधारित अधिगम पहल हैं और; तीसरी, *शिक्षा दर्शन*, जो यूनिसेफ़ और Ekcovation (एक सामाजिक अधिगम मंच) के सहयोग से तैयार किया गया टेलीविज़न आधारित कार्यक्रम है।

SMILE के साथ फ़ील्ड के अनुभव

राजस्थान के दस ज़िलों में, पचास सरकारी स्कूलों के साठ शिक्षकों और विद्यार्थियों के साथ गुणात्मक बातचीत की गई। कोविड-19 के प्रतिबन्धों के कारण, शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में ऑनलाइन और फ़ोन के माध्यम से चर्चा हुई।

समग्र शिक्षा अभियान (SamSA) के अधिकारियों द्वारा ज़िला शिक्षा अधिकारियों के साथ एक वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से SMILE कार्यक्रम की शुरुआत की गई। SMILE कार्यक्रम को बॉक्स में दिए गए दिशानिर्देशों के अनुसार लागू किया जाना था।

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण संस्थान, SMILE के लिए नोडल एजेंसी है। विभिन्न वर्गों के लिए ई-सामग्री निम्नलिखित स्थानों से आती है : एनसीईआरटी की वेबसाइट, *ई-पाठशाला, दीक्षा* (DIKSHA) कार्यक्रम और अन्य मुक्त स्रोत। विषय के शिक्षक व्हाट्सएप ग्रुप में पीडीएफ प्रारूप में अतिरिक्त सामग्री भी अपलोड कर रहे हैं।

SMILE के कार्यान्वयन के लिए दिशानिर्देश

- ई-सामग्री को राज्य स्तर पर स्कूल शिक्षा विभाग *व्हाट्सएप* ग्रुप पर अपलोड किया जाएगा; इसे आगे मुख्य ज़िला शिक्षा अधिकारी (CDEO) ग्रुप को भेजा जाएगा, वहाँ से मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ग्रुप (CBEO) और फिर पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) ग्रुप या शहरी क्षेत्रों में नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक (FTB) नोडल अधिकारी को भेजा जाएगा।
- सभी PEEOs व्हाट्सएप ग्रुप के ग्रुप एडमिन होंगे। वे दो *व्हाट्सएप* ग्रुप बनाएँगे - एक शिक्षक का और दूसरा माता-पिता का।
- वीडियो की मदद से ऑनलाइन शिक्षण शुरू किया जाएगा।
- सामग्री सुबह 8 बजे CDEO ग्रुप पर अपलोड की जाएगी और फिर ब्लॉक स्तर CBEO ग्रुप को उपलब्ध कराई जाएगी।
- अगले दिन का दक्षता कार्यक्रम पिछली शाम को साझा किया जाएगा।
- केवल PEEO ही ग्रुप में सन्देश अपलोड कर सकते हैं। उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि केवल शैक्षिक सामग्री ही व्हाट्सएप ग्रुपों में साझा की जाए।
- CBEO, ट्रैकर शीट में *व्हाट्सएप* ग्रुप के विवरण अपलोड करेंगे।
- गूगल शीट को अपडेट करने की ज़िम्मेदारी CBEO पर है।
- शिक्षक राज्य स्तर पर अपनी सामग्री भी प्रस्तुत कर सकते हैं।
- RSCERT सामग्री तैयार करने के लिए नोडल एजेंसी है; सभी DIETs से यह अपेक्षा की जाती है कि वे ई-सामग्री की तैयारी और समीक्षा में अपना समर्थन दें।
- 40% से कम प्रविष्टियों वाले ज़िलों को अपने प्रदर्शन में सुधार करना चाहिए।
- विभाग का लक्ष्य इस पहल के माध्यम से सरकारी स्कूलों में नामांकित सभी बच्चों तक पहुँचना है।

(ज़िला अधिकारियों के साथ SPD (SamSa) द्वारा आयोजित वीडियो कॉन्फ्रेंस मीटिंग के कार्य विवरण का सार, अप्रैल 2020)

बच्चों की संलग्नता

ऑनलाइन संसाधनों का लाभ उठाने के लिए पहला क़दम है कार्यक्रम से लिंक स्थापित करना। फ़ील्ड के अनुभव और अनुक्रियाओं से संकेत मिलता है कि राजस्थान के अधिकांश ज़िलों में ऑनलाइन संसाधनों और विधाओं तक पहुँच एक चुनौती बनी हुई है।

विद्यार्थियों से हुई बातचीत बताती है कि पुराने विद्यार्थी और वे विद्यार्थी जो महत्त्वपूर्ण बदलाव के चरणों में हैं, अपने भविष्य के बारे में चिन्तित हैं। वे कोचिंग कक्षाओं में नहीं जा पा रहे या लाइब्रेरी तक नहीं पहुँच पा रहे। कुछ विद्यार्थी इस बात से नाख़ुश थे कि आवाजाही पर लगी रोक के कारण वे अपने दोस्तों से नहीं मिल सकते, पढ़ाई के बारे में उनसे सलाह नहीं ले सकते और न ही खेलने के लिए बाहर जा सकते हैं। विद्यार्थियों ने कहा कि कक्षा-शिक्षक ने उनके माता-पिता (ज़्यादातर पिता) से सम्पर्क किया था और पूछा था कि क्या वे अपने बच्चों को SMILE से जोड़ने के लिए तैयार हैं। शिक्षक पूरी प्रक्रिया की व्याख्या करते और माता-पिता से सहमति मिलने पर व्हाट्सएप ग्रुप में फ़ोन नम्बर जोड़ देते। कुछ ज़िलों के ग्रामीण स्कूलों के विद्यार्थियों की शिकायत थी कि शिक्षकों ने समय पर ऑनलाइन कक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी साझा नहीं की। उन्होंने बताया कि उन्हें अध्ययन करने और SMILE से जुड़ने की इच्छा थी, लेकिन स्मार्टफ़ोन, इंटरनेट पैकेज और बैंडविड्थ न होने के कारण इस कार्यक्रम का लाभ उठाना मुश्किल था। उनके लिए पाठ देखना तभी सम्भव होता था, जब उन्हें कोई फ़ोन उपलब्ध होता था।

सारे पाठ मेरे भाई के फ़ोन पर आते हैं। मैं उन्हें तभी देख पाती हूँ जब मेरा भाई काम से घर लौटता है। मैं हर रोज़ पाठ नहीं देख पाती हूँ।

हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति ऐसी है कि परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए फ़ोन खरीदना सम्भव नहीं है। (कक्षा बारहवीं की छात्रा, दौसा)

कार्यक्रम

यह सामग्री *व्हाट्सएप* ग्रुप पर रोज़ाना सुबह 9 बजे अपलोड की जाती है। वीडियो/ऑडियो/पीडीएफ फॉर्मेट में कक्षावार पाठ भेजे जाते हैं। विद्यार्थियों से यह अपेक्षा की जाती है कि

वे पाठ देखें और नोट्स बनाएँ। यदि पाठ लम्बा हो तो उसे दो दिनों में विभाजित किया जाता है। चूँकि विद्यार्थियों के पास नई कक्षा की पाठ्यपुस्तकें नहीं थीं, इसलिए एक ज़िले में, हिन्दी और संस्कृत की पूरी पाठ्यपुस्तकें अपलोड की गईं। हाल ही में वर्कशीट देना भी शुरू किया गया है और विद्यार्थियों को घर पर करने के लिए कार्य भी दिए गए हैं। विद्यार्थियों को सलाह दी गई है कि यदि वे किसी पाठ को समझ नहीं पा रहे हों तो वे विषय के अध्यापकों से सम्पर्क करें।

हमें इस तरीक़े से कभी नहीं पढ़ाया गया है, इसलिए हमारे लिए पाठ समझना आसान नहीं है। स्कूल में शिक्षक से सीखना कितना आसान होता है! (एक विद्यार्थी)।

जहाँ विद्यार्थियों को सीखने के लिए कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता हो, वहाँ यह सुनिश्चित कर पाना कि वे ख़ुद पढ़कर और बिना मार्गदर्शन के ही सीख लें, अव्यावहारिक लगता है।

जेंडर-विषमताएँ

घरों के भीतर जेंडर आधारित भूमिकाओं और ज़िम्मेदारियों के मद्देनज़र डिजिटल उपकरणों तक, सभी जेंडर की समान पहुँच भी एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। शहरी क्षेत्रों में शिक्षकों ने बताया कि लड़कियाँ काफ़ी प्रयास कर रही थीं और जिन लड़कियाँ की पाठ तक पहुँच बन पा रही थी उन्हें अगर कुछ समझने में दिक़्क़त पेश आती थी तो वे अक्सर फ़ोन किया करती थीं।

लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों की मोबाइल फ़ोन तक पहुँच कम है क्योंकि माता-पिता लम्बे समय तक अपने मोबाइल फ़ोन उन्हें देने के लिए तैयार नहीं होते हैं। उनको इस बात का डर है कि उनकी बेटियों को इंटरनेट पर 'ग़लत' जानकारी मिल सकती है या वे सहेलियों से बातें करने लगेंगी।

शिक्षक-दृष्टिकोण

शहरी और ग्रामीण दोनों स्कूलों में शिक्षकों का मानना था कि महामारी के दौरान शिक्षा बुरी तरह प्रभावित हुई है। उन्हें डर था कि जब स्कूल फिर से खुलेंगे, तो कुछ विद्यार्थियों को पढ़ाई में कठिनाई महसूस होगी। शिक्षकों ने स्कूलों में ड्रॉपआउट दरों में वृद्धि की आशंका भी प्रकट की क्योंकि प्रवासी परिवारों के कई बच्चे अपने माता-पिता के साथ अपने गृहनगर चले गए थे।

शिक्षकों ने बताया कि SMILE का उद्देश्य बच्चों को शिक्षा से जोड़ना और सीखना सुनिश्चित करना था जिससे *'पढ़ाई के प्रति रुझान रहे '*। कुछ शिक्षकों ने महसूस किया कि यह पहल फ़ायदेमन्द है क्योंकि इससे पढ़ाई में निरन्तरता सुनिश्चित हुई और लॉकडाउन की अवधि का उपयोग रचनात्मक रूप से किया जा रहा था। ऑनलाइन मंच के कारण सीखने में बच्चों की रुचि बनी रही। कुछ ग्रामीण स्कूली शिक्षकों ने, साफ़ तौर पर तो नहीं, लेकिन कहा कि लम्बी अवधि में SMILE की व्यवहार्यता के बारे में वे निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकते। उन्होंने महसूस किया कि डिजिटल सेवाओं और इंटरनेट कनेक्टिविटी के अभाव में ऑनलाइन अधिगम केवल आंशिक रूप से प्रभावी होगा।

शिक्षकों ने बताया कि कोविड-19 के दौरान ज़्यादातर मामलों में, माता-पिता को अपनी आजीविका के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा है। ऐसे में सिर्फ़ बच्चों के ही उपयोग के लिए स्मार्टफ़ोन और इंटरनेट का ख़र्च उठाना उनके लिए मुश्किल है। शिक्षकों ने महसूस किया कि जब कार्यक्रम शुरू किया गया था तो विभाग को इस बात का ध्यान रखना चाहिए था।

हमारे स्कूल में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की लड़कियाँ अधिक हैं। माता-पिता के पास स्मार्टफ़ोन खरीदने के लिए धन नहीं है; इंटरनेट कनेक्टिविटी अनिश्चित है; कई क्षेत्रों में बिजली भी नहीं है। (शिक्षक, बारां)

शिक्षकों (शहरी और ग्रामीण दोनों) के अनुमान के अनुसार वे जितने विद्यार्थियों के साथ जुड़ सके, उनका प्रतिशत स्कूलों में कुल नामांकन का 25 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक है। कई अभिभावकों के फ़ोन नम्बर उपलब्ध नहीं थे। शिक्षकों का विचार था कि इस पहल को बिना पूर्व-सूचना और तैयारी के लागू किया गया था। ज़िला/ब्लॉक के अधिकारियों और शिक्षकों ने केवल राज्य या ज़िला स्तर से मिलने वाले आदेशों का पालन किया। उन्मुखीकरण की कमी बाधा बन रही है क्योंकि कई शिक्षक दूरस्थ शिक्षा के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग से परिचित नहीं हैं। वैसे हाल ही में शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षण और अधिगम के कौशलों से लैस करने के लिए कुछ प्रशिक्षण और उन्मुखीकरण के कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं।

इसके अतिरिक्त शिक्षकों को रोज़ पाँच विद्यार्थियों से सम्पर्क करना होता है और पाठों पर फ़ीडबैक लेना होता है। शिक्षकों को गूगल फ़ॉर्म के दो सेट भरकर अपलोड करने होते हैं – एक, कॉल के विवरण रिकॉर्ड करने के लिए और दूसरा ई-सामग्री पर शिक्षक के सुझावों को जानने के लिए। यह दोनों मशीनी और समय लेने वाले कार्य हैं। एक राज्य अधिकारी ने टिप्पणी की कि ज़िलों में शिक्षकों के फ़ीडबैक की स्थिति असमान है।

शिक्षकों ने महसूस किया कि सरकारी स्कूलों में डिजिटल अधिगम पर ज़ोर देने से डिजिटल विभाजन बढ़ गया है क्योंकि सरकारी स्कूलों में बड़ी संख्या में विद्यार्थी कई कारणों से इसमें भाग नहीं ले पा रहे हैं।

निष्कर्ष

ऊपर चर्चित डिजिटल अधिगम का अनुभव SMILE कार्यक्रम की छिटपुट पहुँच को दर्शाता है। राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में यह अन्तराल स्पष्टतया दिखाई देते हैं। समस्या इस धारणा में थी कि यह मान लिया गया कि केवल एक सरकारी आदेश से विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों की अत्यधिक विषम जनसंख्या के लिए ऑनलाइन अधिगम की प्रक्रिया शुरू की जा सकती है; वह भी ऐसी स्थिति में जब चारों ओर तनाव और अभाव है और इन लोगों से यह अपेक्षा की गई कि वे आवश्यक समर्थन और तैयारी के बिना ही इस नए तरीक़े को अपनाकर उस आदेश का अनुपालन करें।

यदि ऑनलाइन सीखने की पहल का वांछित प्रतिफल सीखने में निरन्तरता प्रदान करना है, तो *व्हाट्सएप* के माध्यम से सामग्री/पाठों के प्रावधान और वितरण को अकादमिक जुड़ाव या गुणवत्तापूर्ण अधिगम के बराबर नहीं माना जा सकता। विद्यार्थियों का अनुभव बताता है कि विभिन्न बाधाओं का सामना करने के कारण ऑनलाइन सामग्री का इस्तेमाल करना आसान नहीं है।

जिस राज्य में शैक्षिक चुनौतियाँ बहुत होती हैं, वहाँ यह आवश्यक है कि बच्चों के अधिगम की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए समन्वित रणनीतियों का एक विवेकपूर्ण मिश्रण हो, जो विद्यार्थियों के सामाजिक, आर्थिक और संरचनात्मक अवरोधों को सम्बोधित करे। जो बच्चे ग़रीब परिवारों से आते हैं, उनमें अभाव की जो भावना पैदा होती है, वह उनके स्वास्थ्य और शिक्षा पर दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकती है। कई विद्यार्थी शैक्षिक धारा से बाहर निकलने के लिए मजबूर हो जाते हैं। शैक्षिक योजनाकारों और प्रबन्धकों को चाहिए कि वे इन सरोकारों को सम्बोधित करें और आने वाले समय में अधिक समावेशी, कुशल और लचीली शिक्षा प्रणालियों के निर्माण की दिशा में काम करें।

आभार

लेखिकाद्वय सोमोती लाल, सुनील शेखर, उषा और भंवर के प्रति आभारी हैं कि उन्होंने विभिन्न ज़िलों में शिक्षक और विद्यार्थियों के साथ बातचीत में मदद की।



शोभिता राजगोपाल विकास अध्ययन संस्थान, जयपुर, राजस्थान में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं। उन्हें सामाजिक विकास व नीति अनुसन्धान, प्रशिक्षण और नीति सलाह के क्षेत्र में तीन दशकों से अधिक का अनुभव है। उन्होंने राजस्थान और भारत की शैक्षिक प्रक्रियाओं में जेंडर-विषमताओं को समझने के क्षेत्र में व्यापक रूप से काम किया है। वर्तमान में वे CORTH, यूनिवर्सिटी ऑफ़ ससेक्स द्वारा शुरू किए गए 'ब्लड नैरेटिव्स' पर काम करने वाले अन्तर्राष्ट्रीय नेटवर्क ऑफ रिसर्चर्स से सम्बद्ध हैं। हाल ही में उन्होंने 'ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग इन सेकेंडरी स्कूल एजुकेशन इन इंडिया', Routledge, 2019 शीर्षक पुस्तक का सह-लेखन किया है। उनसे **shobhiraj@hotmail.co**m पर सम्पर्क किया जा सकता है।



मुक्ता गुप्ता बीस वर्षों से भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया में एक शिक्षक-प्रशिक्षक हैं। पिछले छह वर्षों से वे जेंडर और शिक्षा से सम्बन्धित मुद्दों पर एक स्वतंत्र शोधकर्ता के रूप में कार्य कर रही हैं। उन्होंने भारत में, ख़ासकर राजस्थान में, हाशिए के समुदायों के लाइफ स्किल एजुकेशन पर विशेष ध्यान दिया है। उन्होंने राजस्थान सरकार के लिए अध्यापिका मंच और मीना मंच मॉड्यूल विकसित करने में यूनिसेफ़ के साथ मिलकर कार्य किया है। वे लड़कियों के स्वास्थ्य और शिक्षा से सम्बन्धित परियोजनाओं में कई संगठनों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं, जैसे कि दूसरा दशक, विकास अध्ययन संस्थान, जयपुर और सन्धान। उनसे **mukta.gupta66@gmail.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : नलिनी रावल

शिक्षा की पुनर्कल्पना

शुभम गर्ग और विष्णु गोपाल मीणा

जनसांख्यिकी

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र सवाई माधोपुर के रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान और ज़िले के खण्डार ब्लॉक के आस-पास के गाँवों में कार्यरत है। ज़िले की कुल आबादी लगभग 14.5 लाख है, जिसमें लिंगानुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 897* महिलाओं का है। ज़िले की लगभग 80 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। ग्रामीण सवाई माधोपुर में महिला और पुरुष की साक्षरता दर (7+ वर्ष) क्रमश: 42.40 प्रतिशत और 79.40 प्रतिशत है। 2006 में पंचायती राज मंत्रालय द्वारा इस ज़िले को पिछड़ा घोषित किया गया था।

सवाई माधोपुर में काफ़ी हद तक कृषि आधारित अर्थव्यवस्था है। गुर्जर (पारम्परिक रूप से चरवाहे) और मीणा (एक अनुसूचित जनजाति लेकिन अब मुख्य रूप से कृषि करने वाले) यहाँ के बहुसंख्यक समुदाय हैं। अन्य जाति समूहों की एक छोटी लेकिन महत्त्वपूर्ण आबादी है— माली, बैरवा, हरिजन, भोपा, जग्गा और कुछ विमुक्त जनजातीय समूह जैसे कि गड़िया लोहार, मोगिया, बावरिया, कंजर आदि। पर्यटन एक अन्य क्षेत्र है जिसमें ग्रामीण आबादी क्लीनर, रसोइया या पर्यटक गाइड के रूप में कार्यरत है। उनमें से कुछ अपने स्वयं के ढाबे भी चला रहे हैं।

महामारी के प्रभाव

यह देखा गया है कि, ऐतिहासिक रूप से, प्रत्येक आपदा हमारे आस-पास अधिक असमानता और अन्याय पैदा करके राष्ट्र के सामाजिक ताने-बाने को कमज़ोर करती है। महामारी और उसके परिणामों के कारण हम सभी के जीवन में एक ठहराव आ गया है। वर्तमान में भारत विश्व स्तर के कोविड-19 मामलों में दूसरे स्थान पर है। अब हम ग्रामीण क्षेत्रों में भी वायरस का प्रवेश देख रहे हैं। सबसे ज़्यादा प्रभावित वे लोग हुए हैं जो पिरामिड के निचले भाग पर हैं, यानी हमारे समाज के सबसे कमज़ोर और हाशिए पर मौजूद समूह। महामारी के दौरान आजीविका के नुकसान के कारण यह समुदाय बहुत संकट में आ गए हैं।

महामारी से प्रभावित बच्चों में से सबसे अधिक प्रभावित वंचित समुदायों के बच्चे, विशेषकर लड़कियाँ, हुए हैं। यह दुर्भाग्य की बात है कि बच्चे अपने सीखने की जगहों से दूर रहने पर मजबूर हो गए हैं। वंचित परिवार के बच्चों के लिए स्कूल एक सुरक्षित स्थान होता है जो उन्हें न केवल ज्ञान और आवश्यक जीवन-कौशल प्रदान करता है, बल्कि विभिन्न शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से अपने सहपाठियों के साथ जुड़कर उनकी मनो-भावनात्मक ख़ुशहाली को भी सुनिश्चित करता है। बच्चों के जीवन के इतने महत्त्वपूर्ण विकासात्मक चरण में इन सब जगहों का अभाव उनके सीखने और समग्र विकास के लिए एक ख़तरा है।

वर्तमान में, यह बच्चे (ज़्यादातर लड़कियाँ) अपना अधिकांश समय घर के कामों में और आमदनी दिलाने वाली गतिविधियों जैसे कि खेती, पशु-पालन, सब्ज़ी बेचने आदि में बिताते हैं। उदय सामुदायिक पाठशाला, जगनपुरा की एक छात्रा सुनीता ने अपने परिवार को सहारा देने के लिए सब्ज़ियाँ बेचीं, क्योंकि लॉकडाउन के दौरान उसके दो बड़े भाइयों को उस होटल से निकाल दिया गया था जहाँ वे काम करते थे।

बच्चे शिक्षा से जितना दूर रहेंगे, स्कूल खुलने पर उनके वहाँ वापस आने की सम्भावना उतनी ही कम होगी। ऐसी परिस्थितियों में, सम्भव है कि बच्चे स्कूल छोड़ दें और आर्थिक रूप से अपने परिवारों को सहयोग करने लग जाएँ या फिर उनकी जल्दी शादी कर दी जाए। इसलिए यह ज़रूरी है कि शैक्षिक संगठन बच्चों को समावेशी शिक्षा प्रदान करने के वैकल्पिक और सुरक्षित तरीक़ों के बारे में सोचें।

डिजिटल लर्निंग — एक प्रभावी विकल्प?

डिजिटल लर्निंग को आजकल शिक्षा के एक वैकल्पिक तरीक़े के रूप में देखा जाता है। एनईपी 2020 में भी शिक्षा में टेक्नोलॉजी के उपयोग पर विशेष ध्यान और ज़ोर दिया गया है।

किन्तु हमारे जैसे विविधतापूर्ण समाज में वर्चुअल शिक्षा पर भरोसा करना हमारे बच्चों के हित में नहीं है। यह समावेशी शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद नहीं करेगा क्योंकि शिक्षा का अर्थ केवल शिक्षकों से बच्चों तक सूचना का प्रसारण करना नहीं है। यह एक समर्थनकारी वातावरण में ज्ञान और कौशल प्राप्त करने का एक अनुभवात्मक और अन्त:क्रियात्मक तरीक़ा है। बच्चे और शिक्षक के बीच सामाजिक जुड़ाव गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक आवश्यक

कारक है। यह महत्त्वपूर्ण तत्व वर्चुअल शिक्षा के तरीक़े में मौजूद नहीं होता क्योंकि इसमें शिक्षक और बच्चे एक-दूसरे से दूर रहते हैं।

इसका एक और नुक़सान यह है कि डिजिटल विभाजन असमानता को बढ़ावा देता है क्योंकि इसमें हमारे समाज के कमज़ोर वर्गों के बच्चे शामिल नहीं हो पाते। हम जिन समुदायों के साथ काम करते हैं उनमें से केवल दस से पन्द्रह प्रतिशत परिवारों के पास डिजिटल उपकरण हैं। यही नहीं ग्रामीण परिवारों में बच्चों को अक्सर घर पर पढ़ने के लिए जगह नहीं मिलती, क्योंकि परिवार बड़े होते हैं और घर छोटे। इन सभी बाधाओं के कारण हमने महसूस किया कि हम भविष्य में शिक्षा के इस तरीक़े को नहीं अपना सकते।

समावेशी शिक्षा की दिशा में छोटे क़दम

लॉकडाउन के दौरान हमने नियमित रूप से माता-पिता को फ़ोन करके बच्चों के साथ बातचीत की। उनके हाल-चाल जानना शुरू किया। हर बच्चे तक पहुँचना मुश्किल था क्योंकि जिन समुदायों के साथ हम काम करते हैं उनमें से कई लोगों के घरों में मोबाइल फ़ोन भी नहीं हैं।

जब लॉकडाउन में ढील दी गई तो हमारे शिक्षकों ने सरकार द्वारा अनुशंसित सुरक्षा उपायों का पालन करते हुए समुदायों का दौरा करना शुरू कर दिया। वे बच्चों और उनके माता-पिता से मिलने लगे। बच्चे अपने शिक्षकों को देखकर बेहद ख़ुश हुए। अभिभावक और बच्चे दोनों उत्सुकता से स्कूलों के फिर से खुलने का इन्तज़ार कर रहे थे। अभिभावकों ने माँग की कि हम उनके बच्चों को फिर से पढ़ाना शुरू करें ताकि उनके समय का रचनात्मक उपयोग किया जा सके। अभिभावकों और शिक्षकों के साथ इसकी व्यवहार्यता पर चर्चा करने के बाद, हमने बच्चों की शिक्षा फिर से शुरू करने का फ़ैसला किया।

सीखने की जगहें

जुलाई 2020 से हमने यानी— उदय सामुदायिक स्कूल ने — ग्राम समुदायों के भीतर सीखने की जगहें तय कीं और तभी से हम बच्चों के साथ जुड़ रहे हैं। विभिन्न आयु-समूहों के बच्चों के लिए उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं और सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं के आधार पर विभिन्न तरीक़े अपनाए गए।

प्राथमिक कक्षाएँ

7-14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए, गाँवों के भीतर अभिभावकों और शिक्षकों द्वारा सामूहिक रूप से सीखने की जगहें तैयार की गईं। इन जगहों में बच्चे एक-दूसरे के साथ मिल-जुल सकते हैं, खेल सकते हैं, सीख सकते हैं और ख़ुद को अभिव्यक्त कर सकते हैं।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा

हम तीन से छह साल की आयु के उन बच्चों के साथ प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के क्षेत्र में काम करते हैं, जो तीन उदय सामुदायिक पाठशालाओं और सवाई माधोपुर के फरिया एवं कटार गाँवों के दो सरकारी आँगनवाड़ियों में नामांकित हैं। हमारे शिक्षकगण अभिभावकों, ख़ासकर माताओं, के साथ मिलकर काम कर रहे हैं, ताकि बच्चों को ऐसी गतिविधियों में शामिल किया जा सके जो उनके गत्यात्मक और संज्ञानात्मक कौशल तथा मनो-सामाजिक विकास में मदद करती हैं। वे ऐसे कार्य तैयार करते हैं जिन्हें अभिभावक आसानी से समझ सकें और घर पर अपने बच्चों से उन्हें करवा सकें। शिक्षक लगभग आधे घण्टे से लेकर एक घण्टे तक अभिभावकों के साथ रहते हैं। इस दौरान वे पिछली गतिविधियों को देखते हैं और अगली गतिविधि साझा करते हैं।

हमारे शिक्षक बच्चों की पोषण सम्बन्धी आवश्यकताओं के बारे में भी अभिभावकों को बताते हैं। वे डब्ल्यूएचओ द्वारा अनुशंसित उस वृद्धि निगरानी चार्ट का उपयोग करके बच्चों के विकास की जाँच करते हैं जिसमें बच्चों के अविकसित या छोटे क़द वाला होने और कम वज़न होने के स्तर को इंगित किया गया है। हमने इस प्रक्रिया में आँगनवाड़ी के शिक्षकों और सहायक नर्स मिडवाइफ (ऑक्सिलरी नर्स मिडवाइव्स – एएनएम) को भी शामिल किया है। शिक्षकगण कोविड-19 से व्यक्ति और परिवार के बचाव के लिए सुरक्षा उपायों और स्वच्छता के महत्त्व के बारे में भी बताते हैं।



जगनपुरा गाँव के एक बच्चे के वज़न की जाँच करते शिक्षक



एक माँ के साथ प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा पर चर्चा करते हुए शिक्षक

शैक्षिक सत्र

इन सत्रों के संचालन का उद्देश्य बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करने के साथ-साथ इस कठिन समय के दौरान उनके मूल अधिकारों की रक्षा करना भी है।

तैयारियाँ

शिक्षकों ने अपना काम करने के लिए आठ से दस बच्चों के छोटे समूह बनाए। बच्चे स्थानीय ग्राम समुदायों से आते हैं और इसलिए उनके साथ जुड़ना मुश्किल नहीं था। हमने यह सुनिश्चित किया कि बच्चों को ज़्यादा दूर न जाना पड़े। गाँवों के भीतर खुली जगहों पर, जैसे किसी पेड़ के नीचे या एक खुली चौपाल/बरामदे में जहाँ हवा की आवाजाही और पर्याप्त रोशनी हो, हर दिन चार घण्टे के सत्र आयोजित किए जाते हैं। छोटे समूहों के साथ कम से कम एक मीटर की शारीरिक दूरी बनाए रखना आसान है।

समुदाय ने इन केन्द्रों में साबुन और पानी की व्यवस्था की है। शिक्षक और बच्चे दोनों कक्षाओं के दौरान मास्क पहनते हैं। अभिभावकों को घर पर बने हुए मास्क देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। बच्चे नाश्ता करके कक्षाओं में आते हैं। वे अपने साथ सीखने की किट, पानी की बोतल और बैठने के लिए चटाई लाते हैं ताकि उनके बीच कोई शारीरिक सम्पर्क न हो। हर 45-60 मिनट के बाद छोटे ब्रेक होते हैं और तब बच्चे और शिक्षक साबुन से हाथ धोते हैं। इन छोटी-छोटी बातों से बच्चों के साथ स्वच्छता और सुरक्षा-उपायों पर चर्चा करने के अवसर मिलते हैं और उनका पालन करने की आदत सुदृढ़ होती है।

अपनी टीम के साथ दैनिक गतिविधियों की समीक्षा साझा करने के लिए शिक्षक रोज़ाना उदय सामुदायिक पाठशालाओं में इकट्ठा होते हैं। बच्चों के साथ अपने काम की समीक्षा के आधार पर वे अगले दिन के लिए अपनी पाठयोजना तैयार करते हैं।



सुरक्षा उपायों के साथ बैठने की व्यवस्था



उदय स्कूल, फरिया में अपनी कार्यशील ठेला गाड़ी (पुल-कार्ट) के मॉडल को प्रदर्शित करता हुआ एक बच्चा

एकल-शिक्षक कक्षा

यात्रा के दौरान संक्रमण का ख़तरा अधिक हो सकता है। इस जोखिम को कम करने के लिए शिक्षक उसी गाँव में रहते हैं, जहाँ वे पढ़ाते हैं। प्रत्येक शिक्षक को एक समूह दिया जाता है, जिसके साथ वे हिन्दी, अँग्रेज़ी, गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और कला सभी विषयों पर काम करते हैं। बच्चे घर पर सह-शैक्षिक गतिविधियों पर काम करते हैं जैसे कि रचनात्मक लेखन और कला। चूँकि एक समूह में सीखने के विभिन्न स्तरों वाले बच्चे होते हैं, इसलिए शिक्षक बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति को अपनाते हैं। उदय सामुदायिक पाठशालाओं

के विषय-शिक्षक अपने साथी शिक्षकों को सम्बन्धित विषयों के लिए पाठयोजना तैयार करने में सहायता करते हैं।

रचनात्मक लेखन

सीखने की प्रक्रिया तब तक प्रभावी नहीं होती जब तक कि वह वास्तविक जीवन के अनुभवों से जुड़ी न हो। चूँकि स्कूल बन्द हैं और बच्चे अपने घरों के भीतर तक ही सीमित हैं, तो इस दौरान प्रत्येक बच्चे को अलग-अलग और असामान्य अनुभवों से गुज़रना पड़ा है। ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों को अक्सर ख़ुद को व्यक्त करने के अवसर नहीं मिलते हैं। रचनात्मक लेखन एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ बच्चे और शिक्षक इस बात पर विचार-विमर्श करते हैं कि उन्होंने महामारी के दौरान क्या अनुभव किया है और अपने अनुभवों और विचारों को चिन्तन, कहानियों, कविताओं, गीतों और निबन्धों के रूप में साझा करते हैं।

मेरा तोता

अप्रैल का महिना था और लॉकडाउन चल रहा था। हमारे स्कूल का अवकाश चल रहा था। एक दिन, हमारे बाड़े में एक नीम का पेड़ है, उसमे एक तोता बैठा था। मेरी निगाह उस तोते पर पड़ी। मैंने उस तोते की तरफ हाथ उपर किया, लेकिन वह नही उड़ा और वह मुझे उदास-उदास सा दिख रहा था। एक बार मैंने फिर उसको उड़ाने की कोशिश की, वह नहीं उड़ा। मैंने धीरे-धीरे अपना हाथ उस तोते की ओर बढ़ाया। वह नहीं उड़ा इसलिए मैंने उसको पकड़ लिया। तोता मुझे उदास ओर बीमार सा लग रहा था। मैं उसको वहां से उठाकर घर ले आई। उसको एक कटोरी में पानी रखी, कुछ अनाज के दाने डाले। उसने एक-दो दाने खाये ओर उसी जगह पर बैठा रहा। मैं रोज उसको दाना–पानी रखती। वह दो-तीन दिन बाद धीरे–धीरे घूमने लगा। अब वह ठीक हो गया था। वह कही जाता नहीं था। धीरे–धीरे वह हमारा दोस्त सा बन गया। लेकिन कुछ दिनों बाद एक दिन वह गायब हो गया। हमने उसको तीन–चार दिन तक खूब ढूंढा, लेकिन वह नहीं मिला। मै अभी तक भी उदास हू क्योकि मुझे मेरा तोता नहीं मिला।

लाली गुर्जर, कक्षा 7, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिरिराजपुरा

ऊपर दी गई कहानी सातवीं कक्षा की बच्ची ने हिन्दी में लिखी है। इसमें उसने एक घायल तोते को बचाने के बारे में बताया है; जिसकी देखभाल वह तब तक करती है जब तक वह ठीक होकर उड़ नहीं जाता। इससे स्पष्ट है कि रचनात्मक लेखन से बच्चों को भाषा सीखने, रचनात्मक अभिव्यक्ति करने और भावनाओं को समझने में मदद मिलती है जैसे कि ऊपर दी हुई कहानी में वह लड़की अपने तोते के चले जाने पर दुख व्यक्त करती है। हम उनके लेखन को संकलित करके अपनी द्वि-मासिक बाल पत्रिका मोरंगे में प्रकाशित करते हैं।

सामुदायिक पुस्तकालय

स्कूल बन्द हैं और इसलिए बच्चे स्कूल के पुस्तकालयों का उपयोग भी नहीं कर पा रहे हैं। इसलिए हमने अब सभी आयु समूहों के बच्चों को पुस्तकें उपलब्ध कराने के लिए समुदायों के भीतर पुस्तकालयों की स्थापना की है। बच्चे इन पुस्तकालयों को ख़ुद चलाते हैं यानी पुस्तकें देने, उनका रिकॉर्ड रखने और समय-समय पर नई पुस्तकें लाने के लिए शिक्षकों के साथ समन्वयन करते हैं।

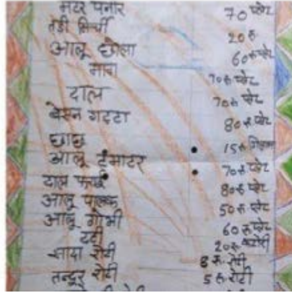


उदय, फरिया में किताबें पढ़ते बच्चे

परियोजनाओं के माध्यम से सीखना

चूँकि महामारी के दौरान बच्चों के साथ जुड़ने के लिए काफ़ी कम समय मिलता है, इसलिए ख़ुद-ब-ख़ुद चीज़ों का पता लगाने और सीखने के अवसरों पर ज़ोर दिया जा रहा है। शिक्षक सुगमकर्ता की भूमिका निभाते हैं। बच्चे कई रचनात्मक परियोजनाओं के माध्यम से काम के साथ जुड़े हुए हैं, जैसे कि पुस्तक के लिए चित्र बनाना, रेस्तराँ स्थापित करना, कोविड को दूर रखने के लिए अपने घर के लिए कुछ नियम बनाना आदि। यह सभी गतिविधियाँ उनके जीवन-कौशल, विशेष रूप से समीक्षात्मक चिन्तन और सामूहिक कार्य को बेहतर बनाती हैं। हर बच्चा हर महीने औसतन तीन परियोजनाएँ पूरी करता आ रहा है। जब कोई परियोजना पूरी होती है तो अगली परियोजना बनाने के लिए बच्चों और माता-पिता दोनों से फ़ीडबैक लिया जाता है।



उदय सामुदायिक पाठशाला, गिरिराजपुरा, में बच्चों द्वारा तैयार की गई परियोजना 'रेस्तराँ'

लड़कियों को प्रोत्साहित करना

मौजूदा स्थिति के कारण किशोर लड़कियों के लिए सबसे अधिक जोखिम वाली स्थिति पैदा हुई है। चूँकि ज़्यादातर समय वे घर के काम करने में लगी रहती हैं, अत: उनके स्कूल छोड़ने की सम्भावना बहुत अधिक है और उनकी शादी हो जाने की सम्भावना तो और भी अधिक है। हम उन लड़कियों के साथ जुड़ रहे हैं जिन्होंने हाल ही में आठवीं कक्षा पास की है। उनके साथ उनके शैक्षिक एवं जीवन कौशल पर काम कर रहे हैं ताकि स्वतंत्र रूप से कार्य करने और निर्णय लेने की उनकी क्षमता को मज़बूत कर सकें। साथ ही उन्हें अपनी शिक्षा जारी रखने में मदद कर सकें।

स्वास्थ्य और सफ़ाई

स्कूलों के बन्द होने की वजह से खेलकूद की गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है, जिसके चलते बच्चों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक-भावनात्मक विकास पर काफ़ी असर पड़ रहा है। समुदाय के अनुरोध पर हम प्रतिदिन दो से तीन घण्टे के लिए अपने स्कूल के खेल के मैदान खुले रखते हैं ताकि बच्चे वहाँ आकर खेल सकें। हमारे खेल के शिक्षक मैदान पर चल रही गतिविधियों की देखरेख करते हैं और बच्चों के लिए सुरक्षा उपायों का ध्यान रखते हैं।

शिक्षकगण कोविड-19 के प्रति समुदाय को सचेत करने की दिशा में काम कर रहे हैं। इस प्रक्रिया में, वे बच्चों के साथ महामारी और इसके प्रसारण को रोकने के उपायों पर बातचीत कर रहे हैं। बच्चे बीमारी से बचाव के उपायों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए अपने आस-पड़ोस में अभियान चला रहे हैं।

टेक्नोलॉजी की सहायता से क्षमता-निर्माण

सख़्त लॉकडाउन के दौरान, टेक्नोलॉजी हमारे शिक्षकों की क्षमता-निर्माण प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने में एक वरदान साबित हुई। टेक्नोलॉजी के कारण शिक्षकगण सह-अधिगम के लिए एक-दूसरे से जुड़ सके और उन्होंने अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास पर आधारित कई वेबिनारों में भाग लिया।

निष्कर्ष

इन प्रयासों के कारण, लॉकडाउन और उसकी वजह से हुए व्यवधान के बावजूद, हम उदय सामुदायिक स्कूलों में नामांकित सभी 325 बच्चों और उन दो सरकारी आँगनवाड़ियों तक पहुँच पाए, जिनके साथ हम काम करते हैं। एक महीने से अधिक समय तक हमारा काम देखने के बाद सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावक भी अपने स्कूलों से इसी तरह की पहल की माँग कर रहे हैं।

समुदाय के लोग यह देखकर ख़ुश हैं कि उनके बच्चे उनकी मौजूदगी में सीख रहे हैं और विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में संलग्न हैं। वे इस बात से भी सन्तुष्ट हैं कि जहाँ महामारी के कारण सरकारी स्कूल बन्द हैं, वहीं उदय सामुदायिक पाठशालाओं के शिक्षक इस चुनौतीपूर्ण समय में भी अनुशंसित सुरक्षा उपायों का मुस्तैदी से पालन करते हुए बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए काम कर रहे हैं।

** स्रोत: जनगणना डेटा 2011*
बच्चों की पहचान गुप्त रखने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।



शुभम गर्ग ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के कार्यकारी निदेशक हैं। यह संस्था सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए ग्रामीण समुदायों के साथ काम कर रही है। शुभम ग्रामीण शिक्षा केन्द्र में संचालन, साझेदारी और क्षमता निर्माण कार्यों की देखरेख करते हैं। उन्होंने ग्रामीण प्रबन्धन संस्थान, आनन्द (IRMA) से ग्रामीण प्रबन्धन में स्नातकोत्तर डिग्री ली है। उनसे **shubham.garg@graminshiksha.org.in** पर सम्पर्क किया जा सकता है।



विष्णु गोपाल मीणा ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के अकादमिक समन्वयक हैं। उन्हें स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में काम करने का बीस वर्षों का अनुभव है। उन्होंने उदय सामुदायिक पाठशालाओं की स्थापना और बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिए खेलों का उपयोग करने में अहम भूमिका निभाई है। विष्णु ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित बच्चों की पत्रिका मोरंगे के सम्पादक भी हैं। उनसे **vishnu.gopal@graminshiksha.org.in** पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : नलिनी रावल

ग्रामीण क्षेत्रों में समुदाय-समर्थित अधिगम

टुलटुल बिस्वास

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा घोषित महामारी कोविड-19 दुनिया को हमेशा के लिए बदल सकती है। इसने ज़िंदगियाँ तबाह कर दी हैं, बाज़ारों को अस्त-व्यस्त कर दिया है, हमारे सामाजिक ताने-बाने को चुनौती दी है और अभी इसके दीर्घकालिक प्रभावों को देखना बाक़ी है। इसने दुनिया भर में शिक्षा की औपचारिक गतिविधियों को पूरी तरह से रोक दिया है। बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे, वे अपनी कक्षाओं में भाग लेने, अपने साथियों के साथ बातचीत करने और औपचारिक शैक्षिक गतिविधियों के साथ जुड़ने में असमर्थ हैं।

पृष्ठभूमि

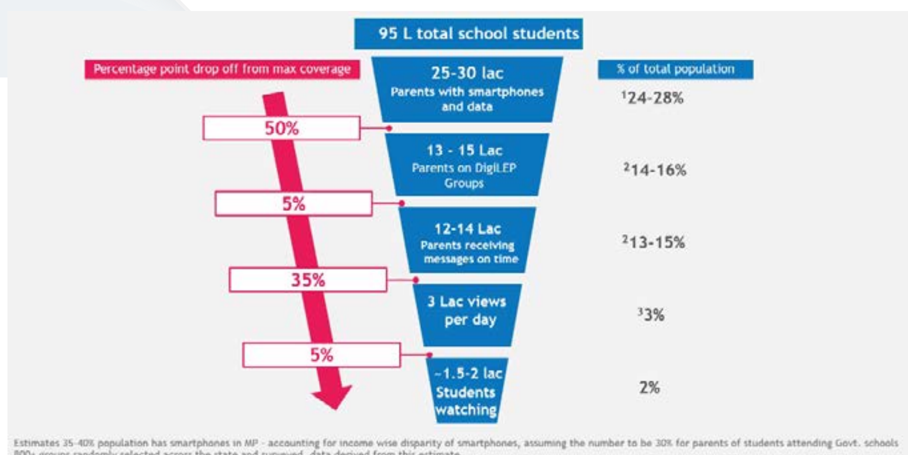
सरकारी स्कूल जाने वाले बच्चों को दोहरा नुकसान हो रहा है। एक तो उन्हें दोपहर का भोजन (मिड-डे मील) नहीं मिल पा रहा है, जो उनके लिए कम-से-कम एक वक्त का गर्म भोजन था और दूसरे वे लम्बे समय से किसी भी प्रकार के औपचारिक शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में भाग नहीं ले पा रहे। आँगनवाड़ियों के बन्द होने के कारण बच्चों के टीकाकरण में भी बाधा पहुँची है। स्कूलों के खुलने के बाद शायद हमारे सामने ऐसे बच्चे होंगे जिनकी प्रतिरक्षा क्षमता कमज़ोर होगी, पोषण में कमी आई होगी और औपचारिक अधिगम में अन्तराल आया होगा।

लॉकडाउन के शुरुआती कुछ दिनों या हफ़्तों में, माता-पिता, परिवार, समुदाय और यहाँ तक कि सभी परोपकारी संगठन भी आजीविका के साधन छिन जाने की तात्कालिकता और डर तथा अगले वक़्त के भोजन की चिन्ता से विह्वल थे। भारत के लाखों लोगों के सामने भोजन जुटाने के संघर्ष के अलावा यह चुनौती भी थी कि वे अपने लिए अचानक अनजान और अ-मित्रवत हो गए मेट्रो शहरों से, अपने सुदूर गाँव या घर तक कैसे पहुँचें। बच्चों और स्कूली शिक्षा को तो काफ़ी हद तक भुला ही दिया गया था।

फिर जैसे-जैसे महीने बीतते गए और गर्मियों की छुट्टियाँ ख़त्म होने को आईं, लेकिन महामारी रूपी सुरंग के ख़त्म होने के कोई आसार नहीं नज़र आए तो घबराहट बढ़ने लगी। निजी शिक्षण संस्थानों ने ई-लर्निंग पर विचार करना शुरू कर दिया और तब से अधिकांश महँगे व मध्यम दर्जे के निजी स्कूल नियमित रूप से ऑनलाइन कक्षाएँ संचालित कर रहे हैं। इसने देश के सम्पन्न और असम्पन्न लोगों को और अधिक विभाजित कर दिया है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। गाँवों में ई-लर्निंग के लिए बुनियादी ढाँचे की कमी और अपने स्वयं के घरों में कहीं अधिक अभाव ने सरकारी स्कूलों में जाने वाले और पहले से ही हाशिए पर रहने वाले बच्चों को शिक्षा से और भी वंचित कर दिया है।

राज्य शिक्षा केन्द्र, मप्र और सस्टेनेबल एक्शन फॉर ट्रांसफॉर्मिंग ह्यूमन कैपिटल (SATH), जो नीति आयोग द्वारा मध्यप्रदेश में डिजिटल शिक्षा का समर्थन करने वाली पहल है, द्वारा साझा किए गए डेटा से पता चलता है कि डिजिटल माध्यम से सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों तक पहुँचने की स्थिति कितनी

कई स्तरों पर अच्छे प्रयासों के बावजूद, हम अभी भी राज्य के कुल विद्यार्थियों में से केवल 2% विद्यार्थियों तक पहुँच पाए हैं।



निराशाजनक है। इससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि सरकारी स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों में लगभग 30 प्रतिशत के पास ही अपने ख़ुद के स्मार्टफ़ोन हैं। इसके अलावा डिजिटल लर्निंग एनहांसमेंट प्रोग्राम (डिजिएलईपी) के माध्यम से भेजी जाने वाली सामग्री की वास्तविक पहुँच/उपयोग सरकारी स्कूल के कुल विद्यार्थियों की संख्या का केवल दो प्रतिशत के लगभग है।

इसमें अगर ऐसे अभिभावकों और अन्य वयस्कों की वह बड़ी संख्या जोड़ दी जाए जो अधिगम की डिजिटल प्रक्रियाओं में अपने बच्चों की सहायता करने में अक्षम है तो सरकारी स्कूल के वंचित विद्यार्थियों की संख्या बहुत बढ़ जाएगी।

प्रत्येक पड़ोस को एक विद्यालय बनाना

लेकिन अब शोक करने का समय समाप्त हो गया है। अब तो यह बात महत्त्वपूर्ण है कि हम इस चुनौती को दूर करने के लिए अभिनव तरीक़े खोजें।

एकलव्य की टीमें मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाकों में 60,000 से अधिक बच्चों और सरकारी स्कूलों के लगभग 2000 शिक्षकों के साथ काम करती हैं। इन्हें भी अचानक विद्यार्थियों तक न पहुँच पाने की चुनौती का सामना करना पड़ा। गर्मियों के महीनों में हमारी टीमें आमतौर पर बहुत-सी गतिविधियाँ करवाने में व्यस्त रहती हैं जैसे विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए ग्रीष्मकालीन कैम्प शिक्षकों और गाँवों के उन युवाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाएँ जो हमारी शैक्षिक पहल का समर्थन कर रहे हैं आदि। टीमों ने मई 2020 में ही शिक्षकों के साथ बातचीत शुरू कर दी थी, यहाँ तक कि लॉकडाउन के समय भी यह कार्य चल रहा था। इन अन्तःक्रियाओं को ज़्यादातर उन चुनौतियों के इर्दगिर्द बनाया गया था जिनका सामना शिक्षक उन्हें सौंपी गई कोविड ड्यूटी को करते समय कर रहे थे। साथ ही इस चुनौतीपूर्ण समय में, सीखने की उनकी अपनी ज़रूरतें भी थीं। इन अन्तःक्रियाओं से हमारे सामने जो चित्र उभरे वे काफ़ी मिलते-जुलते और निराशाजनक थे क्योंकि अधिकांश शिक्षकों को यह कार्य सौंपा गया था कि वे अपने विद्यार्थियों के डिजिटल अधिगम को सुनिश्चित करें, लेकिन वे सेल फ़ोन के माध्यम से उनके साथ जुड़ने की कोशिश में सफल नहीं हो पा रहे थे और काफ़ी निराश थे।

सरकारी स्कूल के शिक्षकों के साथ हुए सम्पर्क और *राज्य शिक्षा केन्द्र* के साथ हुए संवाद ने हमारा ध्यान उस वृहद् डिजिटल विभाजन की ओर खींचा, जिसका हम अनुभव कर रहे हैं और इस बात पर पुनः ज़ोर दिया कि बच्चों को आमने-सामने बैठकर शिक्षा देने की आवश्यकता है। राज्य स्तर पर बैठकों की एक शृंखला में, *राज्य शिक्षा केन्द्र* की टीम ने शिक्षा में कार्यरत ग़ैर-सरकारी संगठनों को आमंत्रित किया और उनके साथ मिलकर, *हमारा घर - हमारा विद्यालय* (HGHV) नामक एक अभियान चलाया। इसमें शिक्षक अपने आस-पड़ोस का दौरा करते और बच्चों के लिए औपचारिक स्कूली गतिविधियों को आगे ले जाने में माता-पिता के साथ काम करते।

HGHV अभियान के तहत मोहल्ला या पड़ोस की कक्षाओं का विचार सामने आया – यह एक ऐसा विचार था जिसे एकलव्य ने पहले ही अपने कुछ क्षेत्रों में सफलतापूर्वक चलाया था और इसलिए उसकी ज़ोरदार वकालत की।

अनुभवों के आधार पर कार्य को आगे बढ़ाना

शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र (एसपीके) समुदाय आधारित शिक्षण केन्द्र हैं। ये सबसे अधिक हाशिए पर रहने वाले, पहली पीढ़ी के स्कूल जाने वाले बच्चों को औपचारिक शिक्षा देते हैं और उन्हें वह शैक्षिक सहायता प्रदान करते हैं जो मुख्यधारा के स्कूलों में बने रहने के लिए आवश्यक है। एसपीके ऐसे मॉडल हैं जो सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में मज़दूरी करने वाले, भूमिहीन खेतिहर मज़दूर, *दलित* और *आदिवासी* परिवारों के बच्चों को सार्थक रूप से सीखने का अवसर देते हैं। चूँकि शिक्षा केवल स्कूली शिक्षा का परिणाम नहीं है, इसमें घर, माता-पिता, भाई-बहन और पड़ोस के समर्थन का बहुत महत्त्व होता है, इसलिए एसपीके उन जगहों पर समुदाय-आधारित विकास करने का काम करता है जहाँ बच्चों को घर से समर्थन नहीं मिलता।

एसपीके का दूसरा और दीर्घकालिक उद्देश्य यह है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं के साथ-साथ सरकारी स्कूलों के समग्र कामकाज को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया जाए। इसके लिए गाँव के एसपीके तथा सरकारी स्कूल के स्थानीय शिक्षकों के बीच एक सक्रिय और सहयोगपूर्ण सम्बन्ध को बढ़ावा दिया जाता है।

एसपीके को चलाने के लिए अभिभावकों की समिति का गठन किया जाता है। समिति गाँव के एक स्थानीय युवा का चयन करती है। यह युवा सुगमकर्ता एसपीके में नियमित दो घण्टे शिक्षण-अधिगम कार्य करता है। एसपीके का सामुदायिक स्वामित्व शुरू से ही निर्मित कर दिया जाता है और प्रत्येक एसपीके केन्द्र में अभिभावकों के साथ मासिक बैठकें आयोजित की जाती हैं। एसपीके में आने वाले बच्चों के अभिभावक इसमें शामिल होते हैं और इन मुद्दों पर चर्चा करते हैं - अपने बच्चे की मासिक शैक्षिक प्रगति, कुछ बच्चों की अनियमितता या देर से आने के कारण, बच्चे की शिक्षा में अभिभावकों की सहायता की भूमिका, मासिक बैठकों में अभिभावकों की उपस्थिति, गाँव के स्कूल और स्कूल के शिक्षकों की कार्यप्रणाली, बच्चों के अधिगम में कहानियों और कहानियों की किताबों का स्थान आदि।

मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर

जैसा कि स्वास्थ्य और सुरक्षा उपायों का पूर्वानुमान है कि 2020-21 के शैक्षिक सत्र में भी स्कूल काफ़ी लम्बे समय बन्द रह सकते हैं और बच्चों के एकत्रीकरण और सामूहिक गतिविधियों की अनुमति तो बिलकुल नहीं दी जा सकती। अतः *एकलव्य* में हमने पड़ोस की स्कूली शिक्षा प्रणाली को अपनाने का फ़ैसला किया और एसपीके को और अधिक विकेन्द्रीकृत करके उसे प्रत्येक ऐसे इलाक़े/बस्ती तक ले गए जहाँ बच्चे रहते हैं।

इस प्रकार *मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर (मोहल्ला एलएसी)* का विचार उभरा, जो बच्चे के बिलकुल आस-पास के क्षेत्र में सीखने की एक ऐसी आरामदायक जगह है, जहाँ बच्चे अधिगम के सार्थक और आनन्दपूर्ण अनुभवों के साथ जुड़ाव जारी रख सकें और ऐसा करने में उन्हें अपने से बड़े भाई-बहन, स्थानीय युवा या माता-पिता की मदद मिल सके।

मोहल्ला एलएसी को पड़ोस या गाँव के भीतर खुले या हवादार स्थानों में आयोजित किया जाता है, जिसमें प्राथमिक स्कूल स्तर के अधिकतम पन्द्रह बच्चों को शामिल होने के लिए बुलाया जाता है। अगर संख्या अधिक हो तो एलएसी द्वारा अधिक बैच बनाए जाते हैं जिससे कि उचित शारीरिक दूरी और अन्य सुरक्षा सावधानियों को सुनिश्चित किया जा सके। *मोहल्ला* एलएसी सोमवार से शुक्रवार तक प्रतिदिन दो घण्टे कार्य करता है। शनिवार को योजना बनाने, पिछले सप्ताह की समीक्षा करने और सुगमकर्ताओं के क्षमता-निर्माण सम्बन्धी गतिविधियाँ की जाती हैं।

शुरुआती निवेश के रूप में जिन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है, वे इस प्रकार हैं - एक छोटी-सी चलती-फिरती लाइब्रेरी (सुगमकर्ता के लिए पुस्तकों का एक सेट जिसकी सहायता से वे बच्चों को पढ़ने के अवसर दे सकें), कुछ आवश्यक शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का एक सेट और न्यूनतम स्टेशनरी। उद्देश्य यही है कि सुगमकर्ता को शिक्षण-अधिगम सामग्री के रूप में रोज़मर्रा की सामग्रियों का उपयोग करने में सक्षम किया जाए ताकि बाहरी टीएलएम पर निर्भरता कम-से-कम हो और पर्यावरण से 'कर के सीखने' तथा एक-दूसरे से सीखने के विचारों को बढ़ावा मिले।

हम मध्यप्रदेश में लगभग 430 और महाराष्ट्र में लगभग 40 मोहल्ला एलएसी चला रहे हैं। इनसे प्राप्त अनुभव हमें बताते हैं कि सबसे महत्त्वपूर्ण और तात्कालिक आवश्यकता यह है बच्चों को घरों से बाहर निकलने, अपने साथियों से मिलने और लम्बे समय से वे जिस तनाव से गुज़र रहे हैं, उससे निपटने में उनकी मदद की जाए।



शाहपुर, बैतूल जिला, मध्य प्रदेश



शाहपुर, बैतूल जिला, मध्य प्रदेश



सांगाखेड़ा, होशंगाबाद जिला, मध्य प्रदेश



खेड़ला, होशंगाबाद जिला, मध्य प्रदेश



शाहपुर, बैतूल जिला, मध्य प्रदेश

जो बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं, वे सामाजिक-आर्थिक रूप से हाशियाकृत परिवारों से आते हैं। इन परिवारों में कई महीनों से बहुत अधिक तनाव है - घरों में दमघोंटू और अवसादक परिस्थितियाँ हैं। मोहल्ला एलएसी में बच्चों को घर की इन तनावपूर्ण स्थितियों से दूर रहने, साथियों से मिलने, लॉकडाउन सहित अन्य बातों के अपने अनुभवों के बारे में बातचीत करने, लिखने और चित्र बनाने आदि के अवसर मिलते हैं। चूँकि यह गतिविधियाँ पड़ोस में आयोजित की जाती हैं, इसलिए माता-पिता अक्सर यह देखने आ जाते हैं कि बच्चे इन मोहल्ला कक्षाओं में क्या कर रहे हैं! वे अपने बच्चों को मज़ेदार गतिविधियों में लिप्त पाते हैं, जो बुनियादी पढ़ने-लिखने और संख्या-ज्ञान से सम्बन्धित होती हैं।

चूँकि राज्य शिक्षा केन्द्र ने भी मोहल्ला कक्षाओं के विचार को स्वीकार किया है, इसलिए कई गाँवों के शिक्षक इनका समर्थन करने के लिए आगे आए हैं और सरकारी स्कूल के शिक्षकों और स्थानीय युवाओं के बीच एक तालमेल विकसित किया जा रहा है।

पथप्रदर्शक के रूप में बच्चे

कक्षाओं में शुरू से ही कुछ सर्वोत्तम एहतियाती तरीक़ों का पालन किया जा रहा है जिससे बच्चों में व्यवहार-परिवर्तन हो सकता है। कुछ उल्लेखनीय परिवर्तन इस प्रकार हैं :

- चूँकि छोटे, बन्द स्थान वायरस के तेज़ी से पनपने के लिए मुफ़ीद होते हैं, इसलिए *मोहल्ला* एलएसी को खुले स्थानों या अच्छी तरह से हवादार कमरों में आयोजित किया जाता है।
- सभी विद्यार्थियों और सुगमकर्ताओं के लिए मास्क पहनना अनिवार्य है।
- प्रत्येक मोहल्ला एलएसी में साबुन, साफ़ पानी और साफ़ सूती तौलिए प्रदान किए जाते हैं और हर कोई कक्षा में प्रवेश करने और बाहर जाने पर 20-30 सेकंड तक हाथ धोता है।
- सभी गतिविधियों के दौरान शारीरिक दूरी को बनाए रखा जाता है।

रोज़ इन प्रक्रियाओं का अभ्यास करते-करते यह बच्चे अब अपने घरों में भी बदलाव के दूत बन गए हैं।

समुदाय के साथ जुड़ाव

यह बात तो सभी जानते हैं कि अभिभावक और समुदाय अपने बच्चों की शिक्षा में एक बड़ी और महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान परिदृश्य में हमें यह सच्चाई और भी अधिक स्पष्ट रूप से महसूस होती है। अब समय आ गया है कि हम अधिगम को स्कूल की इमारत और निर्दिष्ट विषयों से परे जाकर देखें, भले ही स्कूल जैसी औपचारिक संरचना उपस्थित हो या न हो। शिक्षा के क्षेत्र में एकलव्य के सभी कार्यों का केन्द्रीय विचार यही रहा है कि शैक्षिक प्रक्रियाओं में सामुदायिक जुड़ाव का बहुत महत्त्व होता है। हमें इसका दीर्घकालीन अनुभव भी है, इसलिए हम कोविड के दौरान उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार थे और मौजूदा परिस्थिति के साथ सामंजस्य स्थापित कर पाए तथा हमने मोहल्ला एलएसी के विचार को लागू किया।

मोहल्ला एलएसी के संचालन के लिए गठित अभिभावकों की समितियों और स्थानीय स्कूल के शिक्षकों के साथ बातचीत करके इन सामुदायिक निकायों को अब मोहल्ला एलएसी के दिन-प्रतिदिन के कामकाज की समीक्षा करने की ज़िम्मेदारी सौंपी जा रही है। जो प्रवासी परिवार वापस लौट रहे हैं, उनमें सबसे अधिक हाशिए पर रहने वाले बच्चों को मोहल्ला एलएसी में लाने और बाद में उन्हें स्थानीय गाँव के स्कूलों में दाख़िला दिलाने के लिए भी जागरूकता फैलाई जा रही है।

यह सामुदायिक फोरम कोविड से सम्बन्धित सूचनाओं को साझा करने का मंच बन गए हैं, जिसमें वायरस को दूर रखने के तरीक़ों और विभिन्न सावधानियाँ बरतने के औचित्य के बारे में बताया जा रहा है।

समुदाय में शिक्षा से सम्बन्धित अन्य सन्देशों का आदान-प्रदान किया जाता है, जैसे कि घर पर ऐसी गतिविधियाँ करवाना जिन्हें बच्चे, माता-पिता के थोड़े से मार्गदर्शन के साथ कर सकें, बच्चों के लिए नियत दैनिक कार्यक्रम या दिनचर्या बनाना बावजूद इसके कि स्कूल नहीं खुले हैं और घर में, चाहे फिर वह एक झोंपड़ी ही क्यूँ न हो बच्चों की पढ़ाई के लिए एक छोटा कोना स्थापित करना।

हितकारी परिणाम

इस सबके परिणाम इस प्रकार हैं :

- अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा के साथ ज़्यादा जुड़ रहे हैं, घरों को सकारात्मक जुड़ाव का स्थान बना रहे हैं



वाजवणे, खेड़, पुणे जिला, महाराष्ट्र

तथा बचपन और अधिगम के अनुभव को पुनः जी रहे हैं।

- एक युवा सामुदायिक वर्ग का निर्माण हुआ है जो स्वेच्छा से बच्चों के अधिगम में मदद करने के लिए समय देते हैं और ग्राम-स्तरीय अधिगम केन्द्रों, माता-पिता और शिक्षकों के साथ बैठक आयोजित करते हैं। साथ ही इन सबके साथ मिलकर गाँव में ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित कर रहे हैं कि आस-पड़ोस का प्रत्येक घर एक स्कूल बन सके।

चूँकि स्कूल लम्बे समय तक बन्द रहने वाले हैं, इसलिए *मोहल्ला* एलएसी प्रयास ने एक नए सामाजिक बुनियादी ढाँचे का निर्माण किया है, जिसमें शिक्षक-समुदाय जुड़ाव सन्निहित है। इसने न केवल प्राथमिक विद्यार्थियों के अधिगम को सुनिश्चित करने के लिए, बल्कि महामारी के खिलाफ़ सुरक्षात्मक उपायों को सीखने और अपनाने एवं आस-पड़ोस, गाँव-टोलों को मज़बूती प्रदान करने के लिए समुदायों को मिल कर काम करने का एक मंच प्रदान किया है।

शहरी स्थितियों के विपरीत ग्रामीण क्षेत्रों में कोविड के मामले कम होते हैं, जनसंख्या घनत्व कम होता है, बस्तियाँ छितरी हुई होती हैं और संक्रमण भी काफ़ी कम फैलता है। इसलिए गाँवों का सामाजिक बुलबुला इस बात के अवसर प्रदान करता है कि समुदाय के नेतृत्व वाले शिक्षा-दृष्टिकोण को अपनाकर, स्कूलों के बन्द होने से बच्चों पर पड़ रहे नकारात्मक प्रभाव को कम किया जा सके। अब शहरी केन्द्रों को गाँवों के उदाहरण पर ध्यान देना चाहिए और उससे सीख लेनी चाहिए।

फोटो साभार : अमरवती, अंकित लिल्हारे, आकाश, नन्दा, खेमप्रकाश, सरिता अभंग



टुलटुल बिस्वास एकलव्य के शिक्षक शिक्षा, आउटरीच और एडवोकेसी कार्यक्रम का समन्वय करती हैं। वे उस टीम के साथ कार्यरत हैं जो शिक्षकों और ज़मीनी स्तर के शिक्षा कार्यकर्ताओं के लिए अधिगम के अवसरों, कार्यशालाओं, लघु पाठ्यक्रम को डिज़ाइन करती है और कक्षा-अभ्यासों में परिवर्तन लाने का प्रयास करती है। टुलटुल ने रसायन विज्ञान और समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है। लगभग तीन दशक से एकलव्य में हैं। इसके पहले वे संस्था की बाल विज्ञान पत्रिका, चकमक की सम्पादकीय टीम की सदस्य थीं। उन्हें लोक और शास्त्रीय संगीत में गहरी रुचि है। उनसे **tultulbiswas@yahoo.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

पत्र, सम्पादक के नाम



{ सभी प्रतिक्रियाएँ अँग्रेज़ी *अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व* के विभिन्न अंकों में प्रकाशित लेखों पर हैं। **अनुवाद :** नलिनी रावल}

पत्रिका का डिज़ाइन- इसका थीम आधारित दृष्टिकोण और पूरे अंक का किसी एक विषय विशेष पर केन्द्रित होना और उसके व्यापक समाधान/परिप्रेक्ष्य और अभ्यास प्रदान करना इस पत्रिका की विशेषता है, जो मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। हर अंक में ऐसा कुछ-न-कुछ होता है जिसका फील्ड में उपयोग किया जा सकता है। रुद्रेश के लेख, ***गुरु चेतना : टीचर्स प्रोफेशनल डेवलपमेंट*** (अगस्त,2018) में वातावरण को, शिक्षकों के सीखने के अनुकूल बनाने के लिए बिन्दु प्रदान किए गए हैं।

अगस्त, 2010 में प्रकाशित लेख, ***सोशल साइंस इन स्कूल : आंद्रे बेटिल*** ने हमें बताया कि इस विषय को छोटे बच्चों को पढ़ाने का क्या महत्त्व है। आकलन पर आरएस कृष्णा का लेख ***एक्जामस : दी नीड टू रिस्टोर क्रेडिबिल्टी एंड सेंनसिटी*** और उमाशंकर पेरियोडी का लेख ***बिओंड डेट्स एंड फाइट्स*** जो सामाजिक विज्ञान पढ़ाने के लिए अन्य संसाधनों के उपयोग तथा पाठ्यपुस्तकों पर निर्भरता कम करने पर था, बहुत सहायक व उपयोगी सिद्ध हुए।

टीएलएम पर आधारित विशेष संस्करण (दिसम्बर, 2018) ने मुझे एक विशेष थीम के शिक्षण-अधिगम को समग्र रूप से समझने में मदद की। जब हम पर्यावरण अध्ययन की कार्यशाला का आयोजन कर रहे थे तो हमने चन्द्रिका मुरलीधर और रोनित शर्मा के ***एन इवीएस टैक्सटबुक – कवर टू कवर*** शीर्षक लेख का उपयोग किया।

एवरी चाइल्ड कैन लर्न (पार्ट-1) अप्रैल,2020 अंक शिक्षकों और पाठकों में यह विश्वास पैदा करता है कि समता हासिल करना असम्भव नहीं है।

मेरा सुझाव है कि भविष्य में, स्कूल में मुख्य अध्यापक की भूमिका, सामुदायिक भागीदारी और पाठ-योजना जैसे विषयों को लिया जा सकता है।

अनिल औशा, *अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, कुडलिगी, बल्लारी,कर्नाटक*

अगस्त, 2020 अंक में अनिल सिंह द्वारा लिखित ***इनोवेटिंग प्रोसेस टू हेल्प एवरी चाइल्ड लर्न*** शीर्षक लेख मेरे लिए एक बहुत ही प्रेरक था। चुनौतियों से जूझने वाले बच्चों तक पहुँचने, उनकी स्थिति को समझने, उन्हें समायोजित करने के लिए संसाधनों का विस्तार करने और उन्हें केन्द्र में रखने करने के लिए अपनाए गए अभिनव उपाय मेरे लिए एक सुखद अनुस्मरण हैं कि फील्ड में अपना काम कैसे जारी रखा जाए। बच्चों में परिवर्तन की कहानियों को पढ़ना एक रोमांचकारी और प्रेरक अनुभव है।

आशा सिंह द्वारा लिखित ***एनीमेंटिंग चिल्ड्रन एनर्जी एंड एंगेजिंग माइंडस*** शीर्षक लेख से मुझे ऐसे कई विचार और अभ्यास मिले जिनका उपयोग करके मैं बच्चों की इस बात में मदद कर सकती हूँ कि वे अपने आस-पास की जगहों का अवलोकन करें और वहाँ से सीखें। विभिन्न अभ्यासों के अलावा इस लेख ने मुझे शहरी परिस्थिति बनाम ग्रामीण परिस्थिति में सीखने की शैलियों में अन्तर के बारे में जानकारी दी।

लर्निंग कर्व मुझे विभिन्न दृष्टिकोणों, अद्भुत अभ्यासों और ऐसे लोगों की कहानियों से प्रेरित करता है जो उल्लेखनीय काम करते हैं।

समीरा वासा, *बेंगलूरु ज़िला संस्थान, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, बेंगलूरु*

पत्र, सम्पादक के नाम



चूँकि हम प्रारम्भिक साक्षरता और संख्या-ज्ञान के क्षेत्र में गहन काम कर रहे हैं, अतः अगस्त, 2020 में प्रकाशित रोशनी देवांगन द्वारा लिखित ***लैंग्वेज टीचिंग इन प्री-प्राइमरी क्लासरूम : रीडिंग एंड राइटिंग*** शीर्षक लेख ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। जब भी हम प्राथमिक शिक्षकों के साथ औपचारिक या अनौपचारिक रूप से चर्चा करते हैं तो वे विद्यार्थियों को पढ़ना और लिखना सिखाने के बारे में अपनी चिन्ता व्यक्त करते हैं। भाषा-शिक्षण के वैकल्पिक तरीक़ों के महत्त्व और प्रभावी भूमिका पर कई चर्चाओं के बावजूद, शिक्षक अभी भी भाषा-शिक्षण के पारम्परिक तरीक़े ही अपनाते हैं। चूँकि यह विधि कुछ बच्चों के लिए कारगर साबित होती है अतः उन्हें लगता है कि दूसरे बच्चे इस पद्धति से इसलिए नहीं सीख पाते, क्योंकि उनकी कुछ व्यक्तिगत समस्याएँ होती हैं जैसे कि उनकी पृष्ठभूमि या आर्थिक स्थिति या उनकी शिक्षा के प्रति माता-पिता की उदासीनता आदि। लेकिन इस लेख में, लेखिका ने 'समग्र भाषा पद्धति' का उपयोग करके पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में भाषा-शिक्षण के अपने अभ्यास को साझा किया है और वे इसमें सफल भी हुई हैं। उन्होंने साझा किया है कि उन्होंने मौखिक भाषा को पढ़ने और लिखने से जोड़ा है। साथ ही, मात्रा-शिक्षण के लिए उन्होंने बच्चों के स्वयं के नाम या उनके परिवार के सदस्यों या शिक्षकों के नाम जैसे परिचित शब्दों का इस्तेमाल किया है। यह लेख बताता है कि समग्र भाषा पद्धति केवल पढ़ना-लिखना ही नहीं, बल्कि भाषा की समग्र समझ भी विकसित करती है।

ऋचा पटेल, *अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, रुद्रप्रयाग ज़िला संस्थान (उत्तराखण्ड)*

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व के पुराने अंक **http://azimpremjiuniversity.edu.in/Site Pages/resources-learing-curve.aspx** से डाउनलोड किए जा सकते हैं।

यह पत्रिका अँग्रेज़ी और कन्नड़ा में भी छपती एवं प्रकाशित होती है।

अपने सुझाव,टिप्पणियाँ, मत और अनुभव हमें इस ईमेल पते पर भेज सकते हैं :
learningcurve@apu.edu.in

मुद्रक तथा प्रकाशक मनोज पी. द्वारा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन फॉर डेवलपमेंट के लिए
आदर्श प्रा.लि.,4 शिखरवार्ता, प्रेस काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल पिन 462 011 से मुद्रित

एवं अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125 से प्रकाशित
मुख्य सम्पादक : प्रेमा रघुनाथ

Work with us!



Faculty positions in Education

We invite applicants from all areas of Education, particularly

- **Mathematics Education**
- **Science Education**
- **Social Science Education**
- **Language Education**
- **Early Childhood Education**
- **Inclusive Education**
- **Teacher Education**

write to us at facultypositions@apu.edu.in

To know more details

Visit: https://azimpremjiuniversity.edu.in/jobs

अगला अंक

नागरिकता के लिए शिक्षा

Azim Premji University
Survey No. 66, Burugunte Village,
Bikkanahalli Main Road, Sarjapura
Bengaluru, Karnataka – 562 125

080-6614 4900
www.azimpremjiuniversity.edu.in

Facebook: /azimpremjiuniversity
Instagram: @azimpremjiuniv
Twitter: @azimpremjiuniv